सामुद्रिक की लाल किताब के फ़रमान १९३९

लाल किताब के रचयिता
पंडित श्री रूपचन्द जोशी जी
१८ जनवरी १८९८ - २४ दिसम्बर १९८२

हिन्दी लिप्यांतरण
हरेश पंचोली
(विदयार्थी लाल किताब)
(अहमदाबाद)

ये सफ़ा असली “लाल किताब १९३९ फ़रमान” का नहीं है

प्रकाशक :- विद्यार्थी लाल किताब
हरेश पंचोली
(अहमदाबाद)
मूल्य : निशुल्क ("लाल किताब" के विद्यार्थियों के लिए)

"नयी किरण - नयी रोशनी"

"लालकिताब" ज्योतिष को प्यार करने वाले और उस पे विश्वास रखने वाले बहन-भाइयों एवम इस इल्म के विद्यार्थी और विद्वानो हम सब के लिए आज हर्ष का विषय है की आज लाल किताब के इतिहास में एक नया मील पत्थर स्थापित होने जा रहा है। आज १८ जनवरी २०१५ का दिन "लाल किताब" के रचयिता पंडित श्री रूप चंद जोशी जी का जन्म दिन है और इस पावन दिन को आधार बना कर "लाल किताब" ज्योतिष को नए आयाम प्रदान करने के लिए हमारे छोटे भाई "विद्यार्थी लाल किताब" (हरेश पंचोली) जी ने जो महत्वपूर्ण कदम उठाया है वो अत्यंत सराहनीय हैं। इस विद्या से उन का अटूट रिश्ता है, एक बहुत बड़ा विश्वास है और हमने एक अजब उत्साह देखा है उन में। इस विद्या को वो और आगे बढ़ते देखना चाहते हैं और इसी स्वप्न को साकार करने के लिए उन्होंने संकल्प लिया है की "लाल किताब" के सभी पांचों उर्दू ग्रंथो (१) "लाल किताब के फ़रमान १९३९" (२) "लाल किताब के अरमान १९४०" (३) "लाल किताब गुटका १९४१" (४) "लाल किताब तरमीम शुदा १९४२" (५) "लाल किताब १९५२" का हिन्दी रूपांतरण कर के इसे इंटरनेट पर डाला जाए ताकि ज्योतिष का हर प्रेमी सुगमता से इसका अध्ययन करके इसके गूढ रहस्यों को समझ सके और इस इल्म के मुख्य मक़सद "कर भला होगा भला" को सही अंजाम दे सके।

इसी संदर्भ में आज "लाल किताब" का प्रथम और मूल अंक "लाल किताब के फ़रमान १९३९" का हिन्दी रूपांतरण आम जनता के लिए निशुल्क इंटरनेट पर डाला जा रहा है। आज से पहले भी इस अंक के कुछ हिन्दी रूपांतरण सामने आयें हैं लेकिन उन में कुछ कमियाँ रही हैं जैसे की १९३९ वाली किताब की गलतियों का दुरस्तीनामा जो की "लाल किताब के अरमान १९४०" में दिया गया है जिन की शुद्धि नहीं की गई थी वो अब इस अंक में पूर्ण रूप से कर दी गई हैं विद्यार्थी जी के इस प्रयास से।

जहां तक "लाल किताब" के विषय वास्तु का संबंध है मैं संक्षेप में कहना चाहूँगा कि "लाल किताब" एक ऐसी अनुपम, अद्भूत और सरल विद्या है जिस के द्वारा इंसान के प्रारब्ध कर्मो को जाना जा सकता है एवं उन का अनुशीलीन - परिशीलिन किया जा सकता है और वर्तमान जीवन को सही ढंग से जीने की प्रेरणा देकर जीवन को सुख मय बनाया जा सकता है। दरअसल "लाल किताब" जीवन जीने की सही कला बताकर मानव समाज का मार्गदर्शन करने वाली एक अलौकिक विद्या है जिस की क़ीमत एक जानने वाले से छिपी हुई नहीं है।

अंत में मैं इस अच्छे कार्य के लिए विद्यार्थी लाल किताब जी को बधाई देता हूं और उम्मीद करता हूं की "लाल किताब के फ़रमान" का ये हिन्दी रूपांतरण ज्योतिष जगत के विद्यार्थिओ को मंज़िल तक ले जाने में उन की राहों को आसान करेगा।

श्री मिलख राज बाघला
फ़ाजिल्का वाले (चंडीगढ़)

राहें “लाल किताब” की

**“आवाज़ सुनता हर किसी की
न ही कोई फरियाद हो
सब से पहेले याद उसकी
फिर सभी दुनिया की हो”**

“लाल किताब” का नाम आयें और इन पांच सामुद्रिक रत्नों के रचयिता पंडित श्री रूप चंद जोशी जी का नाम याद न आयें ये हो नहीं सकता। पंडित जी ने अवाम को ये पांच रत्न दे कर ज्योतिष जगत में एक क्रांति ला दी है जिस से ज्योतिष जगत में एक नयें युग का आगाज़ हुआ है। यही एक ऐसा इल्म है जो हर किसी के लिए मुनासिब, आसान और कम कीमत के उपाओ बतलाता है। पंडित जी और “लाल किताब” की प्रसंषा के लिए मेरे शब्दकोश में इतनी क्षमता नहीं की मैं कुछ कहे सकु या बखान कर सकु पर ये अपना सौभाग्य समझता हूँ की परम पिता परमात्मा की कृपा, पंडित जी की गैबि प्रेरणा और आशीर्वाद के द्वारा "लाल किताब" ग्रंथ की श्रुंखला के प्रथम भाग "लाल किताब के फ़रमान १९३९" का उर्दू से हिन्दी के रूपान्तरण का काम पूरा कर पाया हूं।

आज पंडित श्री रूप चंद जोशी जी के ११८ वें जन्म दिन पर कोटी कोटी वंदन और पंडित के जन्म दिन पर ही "लाल किताब" के चाहने वालो के लिए इस शृंखला का पहला रत्न “लाल किताब के फ़रमान १९३९” को आम अवाम के लिए इंटरनेट पर निशुल्क रखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इस ग्रंथ को “लाल किताब के अरमान १९४०” में दी हुई दुरस्तीयों को दुरस्त कर के लिखा गया है ताकि इसे समझ ने में और आसानी हो जायें। इन पांचों रत्नों को एक के बाद एक कर के इंटरनेट पर रखा जाएगा जिस की वजह सिर्फ़ यही है की इस महान इल्म को आम अवाम तक पहोंचाया जा सके और ज़्यादा से ज़्यादा अवाम इस का फ़ायदा ले सके।

मेरे ख़्याल से “लाल किताब” एक ऐसा लफ़्ज़ है जो इस के चाहने वालों को दीवाना कर देता है। ये एक ऐसा मुक्कमल इल्म है जो हर एक सवाल का जवाब दे सकता है अगर आप का सवाल सही हो और आप में वो “लाल किताब” में से खोजने की ताकत हो। “लाल किताब” का हर लफ़्ज़ हमें अपने आसपास और हर जगह घूमता नज़र आ जाता है इस किताब की हर बात सही और सटीक मालूम लगती है जो आज से तकरीबन ७५ साल पहले लिखी गई थी। मुझे उम्मीद है की मेरे ये प्रयास इस महान इल्म को समाज के सामने सही रूप में लाने में, इस इल्म को समाज में सही स्थान प्राप्त करने में और समाज के मार्गदर्शन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी।

“लाल किताब” कुल पांच हिस्सों में लिखी गई थी जिस में से “लाल किताब के फ़रमान १९३९” और “लाल किताब के अरमान १९४०” ये इस इल्म की नींव है अगर इस इल्म को सही मायनों में सीखना है तो पहले इन दोनों रत्नों से शुरुआत करनी होगी। इस

के बाद और तीन रत्न है जो “लाल किताब गुठका १९४१” जिस में पंडित जी ने काव्य रचना से इस इल्म को आगे बढ़ाया है। “लाल किताब तरमीम शुदा १९४२” है जिस में १९४१ से एक कदम आगे उसी काव्य रचनाओं का अर्थ कैसे और क्या करना है ये समझाया है आखरी रत्न “लाल किताब १९५२”। इस रत्नों को पहले से आख़िर तक पढ़ना ही कोई मायने और मतलब देगा अगर इस को सिर्फ़ उपाओ के लिए पढ़ा जाएगा तो कोई मतलब हल न होगा।

इस ग्रंथ को लिखने में मेरी मदद करने वाले मेरे गुरु समान श्री मिलख राज बाघला जी (फ़ाजिल्का/चंडीगढ़) और मेरे दोस्त श्री हिमांशु पटेल (अहमदाबाद), श्री नाबीला सदाफ जी (बुरेवाला पाकिस्तान) कुमारी इंजीनियर (महेसाणा) का तह-ए-दिल- से शुक्रिया अदा करता हूं अगर इन सब ने मदद न की होती तो शायद आज इस रत्न को मुककमल कर पाना मेरे लिए नामुमकिन था। इस महान कार्य को करने का मन में बीज अंकुरित करने वाले मेरे दोस्त श्री अरुण यादव (रोहतक) और श्री गोपाल कामरा (दिल्ली) का मैं शुक्र गुजार हूं।

अंत में मैं अपने सभी पाठको से ये निवेदन करना चाहता हूं कि मेरे पूरे प्रयासों के बाद भी इस अंक के हिन्दी रूपान्तरण में कुछ कमियाँ रहे सकती है जीस के लिए मैं माफ़ी चाहूंगा और इन गलतियों को मुझ तक पहुँचाने वाला इस इल्म का सच्चा स्नेही व प्रेमी होगा।

विद्यार्थी लाल किताब

(हरेश पंचोली)

अहमदाबाद

कर भला होगा भला
आखिर भले का भला

सरसरी नोट

इस किताब में इल्म सामुद्रिक की अलिफ़ बे (३५ हरफ़) मुकम्मल तौर पर देने की कोशिश की गई है। इस लिए पहले तमाम की तमाम किताब को शुरू से आख़िर तक ख़ूब गौर से पढ़ना कोई मायने देगा क्यूंकी एक फ़रमान दूसरे से बिलकुल जुदा होता चला गया है। इस तरह पर तजुर्बे की मुद्दत व ज़्यादती का अरसा इस किताब का असल मतलब व फ़ायदा ख़ुद-ब-ख़ुद समझाएगा। सिर्फ एक ही दफ़ा पढ़ने से कोई मतलब हल न होगा।

(२) इस इल्म की बुनियाद पर किताब की जिल्द लाल हल्वानी रंग इंसानी हाथ में मुबारक फल देगी। लाल रंग के बगैर किसी भी और रंग की जिल्द गैर मुबारक होगी।

(३) किसी बात को आज़माने से पहले इस के मुतलका अपना ज़ाती फ़ैसले से गलत कहना दुरस्त न होगा।

(४) किताब के बगैर मनघड़त बात वहम पैदा करेगी।

مدھما
انامکا
ترجنی
کنشٹکا
گرہ اور
راشیوں
کا بلحاظ
رنگ باہمی
تعلق
مکر
کنبھ
کرک
سنگھ
کنیا
تلا
برچھک
میکھ
برکھ
متھن
انگوٹھا
سنیچر
سورج
بدھ
منگل نیک
منگل بد
شکر
چندر

लाल किताब के फ़रमान

कुदरत से क़िस्मत किस तरह आई

फ़रमान नंबर १

(फ़रमान व अरमान दोनों एक ही नंबर के हैं इस लिए इकट्ठे मिलाकर पढ़ने से पूरा मतलब हल होगा)

जब बच्चा पैदा होता है, बंद मुट्ठी लाता है और जब वह इस दुनिया से कूच करता है तो दोनों हाथों की मुट्ठियाँ खोल जाता है। छोटा सा बच्चा अमूमन मुट्ठी बंद ही रखता है और आसानी से किसी दूसरे को अपने हाथ की हथेली देखने नहीं देता। ज्यू - ज्यू बढ़ता है मुट्ठीयां खुली रखने का आदी होता जाता है और आख़िर एक दिन ऐसा आता है की वह भरी दुनिया से मुंह मोड लेता है, जिस्म अकड़ जाता है, और वही मुट्ठी ज़ोर से बंद करने पर भी बंद नहीं होती मतलब ये की वह बचपन में अपना कुदरती भेद और छोटी सी मुट्ठी का खज़ाना किसी को दिखाना नहीं चाहता और जब अपनी मुकर्ररा उम्र के लिए साथ लाया हुआ दाना-पानी और दुनिया का तमाम हिसाब किताब ख़तम कर चुकता है तो बाकी बची हुई चीज़ की मुट्ठी भर कर अपने साथ नहीं ले जा सकता। मुट्ठी बंद कर के साथ क्या लाया और कौन सी चीज़ की मुट्ठी भर कर अपने साथ न ले जा सका यही एक भेद है। जिसका मतलब इस मुट्ठी में ही भरा हुआ है। बंद मुट्ठी में क्या है. सिर्फ खाली जगह जिसका दूसरा नाम आकाश है। जिस में सिर्फ़ हवा भर पुर है। हवा से जब आग मिली तो पानी पैदा हुआ इस से मिट्टी मिली तो दुनिया का सब भंडारा पैदा हुआ। दूसरे ख़याल में बंद मुट्ठी के आकाश में ज़माने की हवा का मालिक बृहस्पत था। जिसमे गरमी के भण्डारी सूरज की चमक से चंदर के पानी और शुक्र की मिट्टी के बाद मंगल का खाना पीना और बुध की अक्ल व बोलना बुलाना, सनीचर का जादू मंतर और देखना व दिखाना, राहु की रहनुमाई व कल्पना कल्पाना और केतु से चलना फिरना गैरों से मिल मिलाना

या हुक्म कुदरती को अपना ही खुद बनाना सब के सब बंद पड़े थे। इस जनम मरण के सवाल का शुरू व आखिर यानी माँ पहले या बेटी मालूम करने का ढंग क्या हुआ? हाथ की हथेली पर ही सब कुछ लिखा हुआ है। जिसके पढ़ने में इल्म सामुद्रिक मददगार होगा।

फ़रमान नंबर २

बच्चे ने जब मुट्ठी खोली तो उसमें हाथ की हथेली और उंगलियों का हिस्सा जुदा जुदा मालूम होने लगा। हथेली का एक बड़ा मैदान इकट्ठा और हर एक उंगली जुदा जुदा पायी गई। हथेली कहीं से ऊंची, कहीं से नीची, कहीं लकीरें और कहीं निशान ज़ाहिर हुए। इस तरह से ऊंगलियों के भी कई कई टुकड़े जुदा जुदा कर के फ़िर इकट्ठे एक ही में मिले हुए नज़र आने लगे। हाथ की हथेली ख़ुश्की का इक निहायत ही बड़ा बर्रेआज़म या ब्रह्मांड माना गया। पहाड़ की तरह ऊपर को उभरी हुई जगह का नाम बुर्ज मुकर्रर हुआ। लकीरों को "रेखा" का नाम मिला। और पानी के दरिया लहरें मारते हुए इधर उधर भागते माने गए। किसी को उम्र रेखा किसी को क़िस्मत रेखा से याद किया गया। जो इकट्ठे मिल-मिलाकर एक समन्दर बना जिसकी वजह से इस इल्म का नाम भी "सामुद्रिक" या समन्दर की विदया ही ठहेराया गया।

फ़रमान नंबर ३

बुर्ज या पहाड़ जिस क़दर ऊंचे, लम्बे, चौड़े और मज़बूत होंगे उसी क़दर ही एक दूसरे की अच्छी व बुरी हवा की रोकथाम कर सकेंगे। दरिया की नदियां या समंदर के दरिया जिस क़दर गहरें और तह ज़मीन साफ़ वाले होंगे उसी क़दर ही उन में पानी की ज़्यादा चाल या पक्का असर होगा। जिस क़दर नदियां और दरिया कम गहरें और चौड़े होंगे उसी क़दर ही न सिर्फ पानी कम या असर हल्का होगा। बल्कि असर के वक़्त की रफ्तार भी मद्धम होगी। रेखा में मुख़्तलिफ़ निशान दरिया में बरेती जज़ीरे या रास्ता की रुकावटे होंगी। दरिया या रेखा जिस जिस पहाड़

या बुर्ज के इलाके से गुज़र कर आयेंगे उसी उसी क़िस्म की मिट्टी साथ ले आयेंगे। और जिस जिस क़िस्म की मिट्टी दरिया में मीली हुइ होंगी। उसी उसी क़िस्म का असर रेखा के दरिया में मौजूद होगा। और बुर्ज या पहाड़ के जड़ीबूटियों से होकर आई हुइ मद्धम, तेज़, मीठी, कड़वी हवा के असर का साथ होगा।

फ़रमान नंबर ४

हथेली के बर्रेआज़म के टुकड़े तादाद में सात बुर्जों के नाम से गिने गए हैं। बृहस्पत, सूरज, चंदर, शुक्र, मंगल दोनों, बुध, सनीचर। इन के अलावा दो और है। एक को तो राहु ▦ इस बर्रेआज़म की अंदरूनी तह में चलने वाली लहर माना गया है। दूसरे को केतु ш इस बर्रेआज़म की बैरुनी तह पर दौड़ती हुई और पहली लहर के हंमेशा बरखिलाफ़ और दुश्मनी पर रहनेवाली ज़हरीली हवा को कहा है।

बुर्जों और राशियों के घर व मक़ाम

नोट : इस नक्शे में बुर्जों के नंबर उम्र में असर करने के हिसाब से दिए गए हैं। यानी जिस तरह एक के बाद दूसरा नंबर हैं। इस तरतीब से ग्रह अपना अपना असर उमर पर करते है। मंगल बद को मंगल नेक का ही हिस्सा लेते है।

राहु की अंदरूनी लहर आग वाले पहाड़ों के लावा या पिघले हुए माद्दा की तरह भूचाल पैदा करती है। केतु की बैरुनी लहर दरिया और समंदर में तूफ़ान लाती हैं। आग या आतिशी लहर का माद्दा पानी के इलाके में आकर रुक जाता है। मगर तूफ़ानी हवा की लहर पानी को इधर उधर करने के अलावा तमाम सांस लेने वालों पर भी बुरा असर पैदा करती है।

फ़रमान नंबर ५

हाथ की हथेली के बर्रेआज़म के टुकड़ों के अलावा हाथ की उंगलियों की हर इक गांठ को राशि कह कर पुकारा गया हैं। जो बारह तरफ़ों की खबर देने के लिए तादाद में बारह हैं। १) मेख, २) बृख, ३) मिथुन, ४) कर्क, ५) सिंह, ६) कन्या, ७) तुला, ८) बृछक, ९) धन, १०)मकर, ११) कुम्भ, १२) मीन। हर एक बुर्ज या पहाड़ का दरिया या रेखा उसी पहाड़ या बुर्ज के अपने नाम से मुकर्रर किया गया हैं।

फ़रमान नंबर ६

बुर्ज, राशि और रेखा के अलावा मकान, जाए रिहाइश, ख़्वाब दूसरे शगुन माल-मवेशी, परिंदे या दूसरे दुनिया के साथी और "इल्म क्याफ़ा" इस इल्म के ज़रूरी पहलू गिने गए हैं। दरअसल सब के मालिक ने इंसान के साथ इसके कामों का हुक्मनामा उसके अपने कब्ज़े में ऐसे ढंग से दस्ती भेजा है। जो कभी गुम न होने पाए। इस हुक्म नामे में कोई तबदीली या धोकाबाज़ी नहीं की जा सकती। सिर्फ़ शक्की बात को दूरस्त हालत में बदला जा सकता है। इस हुक्मनामे के पढ़ने लिए ही ये इल्म दुनियादारों ने ज़ारी किया है। जो ज़ाहिरा तो वहम का ख़ुश्क झगड़ा मालूम होता है। मगर दरअसल कुछ मायने और समंदर की ज़ाहिरी रंगत की तरह अपनी तह में क़ीमती ज़वाहरात रखता है। जिन की असल कीमत एक जानने वाले से छुपी हुई नहीं। हथेली के ९ टुकड़े (सात ज़ाहिरा और दो जुदी लहरें) और उंगलियों की १२ गाँठे ९ निधि और १२ सिद्धि को याद करा लेगी। या यूं कहो की ९ पहाड़ों - बुर्जों या ग्रहों का असर कुदरत के नौ भरे

हुए ख़जाने या भंडार हैं। जिसे खर्चने के लिए हाथ की चारों उंगलियों या दुनिया की चारों तरफ़ें पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्खन (मशरिक़, गरब, शुमाल, जनूब) लगी हुई हैं। मतलब ये की राशियों के फल या असर में इंसानी ताकतों से अदली बदली करने की गुंजाइश है। मगर बुर्जों या ग्रहों का फल हमेंशा के लिए मुक़र्रर हो चुका है। जिसमें इंसानी अकल से कोई तबदीली नहीं कर सकते। हर एक उंगली की तीनों गांठों से तीन लोक या तीनों ज़माने (माज़ी, हाल, मुस्तकबिल या ज़मीन, आसमान, पाताल) के कारोबार से मुराद होगी। उंगलियों की नाखुनवाली पहली पोरीयों या गांठों पर चक्कर, शंख, सदफ़, ज़ाहिरा ज़िंदगी का ज़माना दिन के कामकाज बताते हैं। और हाथ की सब से आखिरी जगह गैबी हालत दिल की अंदरूनी चाल या रात का ज़माना (चंदर का बुर्ज़) बताती हैं। हथेली से इंसान के अपने काम आनेवाली चीजों से मुराद लेते हैं। और हाथ की पीठ को दूसरे के काम आने के लिए माना गया हैं।

फ़रमान नंबर ७

हर एक बुर्ज़ की पक्की जगह हथेली की हर एक गांठ पर हमेंशा के लिए उस जगह पक्की और क़ायम रहनेवाली मानी गई है। जहां की नक्शे में दिखलाया गया है। सात बुरजों या ग्रहों को तो पक्के तौर पर हाथ की हथेली पर जगह दे दी गई है। मगर दो ग्रहों राहु और केतु को सिर्फ साया ही माना गया है। केतु इस धड़ का साया है जो बगैर सिर के लाश होवे। और राहु इस सिर का साया है जो बगैर धड़ के सिर होवे। राहु के आग वाली माद्दा का पैदा किया हुआ भूचाल सिर्फ़ सिर के खयालात से ताल्लुक रखता है। और केतु का असर पावों की नकलों हरकत हुआ करती है। सूरज दिन का मालिक और चंदरमां को रोशनी देने वाला है। या सूरज आग और चंदरमां पानी या सूरज गुस्सा, गरमी और चंदरमां शांति और ठंडक देता है। इस लिए मानते हैं की जब राहु की आग से पिघले हुए माद्दे की लहर सूरज के बुर्ज पर या आग के पहाड़ में आती है तो हद से ज़्यादा पिघलने के सबब से धुआंधार ज़माना पैदा कर देती है। और सूरज

के सामने अंधेरा ही अंधेरा हो जाता है। ये "सूरज ग्रहण" का नज़ारा है। मगर वह माद्दा चंदर की तरफ बढ़ता है तो पानी की ठंडक से जम कर ठहर जाता है (जिस जगह दरिया, पानी आ जावे भूचाल की लहर रुक जाया करती है।) और चंदर या पानी के आगे दीवार की मानिंद बन जाता है। और इसके असर को सिर्फ़ मद्धम करता है। असर ज़रूर बुरा है मगर चंदर को कोई नुकशान नहीं दे सकता।

इस तरह केतु सूरज की आग को तो बुझा नहीं सकता सिर्फ इधर उधर चिंगारियाँ कर देगा। मगर जब चंदर के बुर्ज या समंदर और पानी पर जाता है तो ना सिर्फ़ पानी की तह को ऊपर नीचे और तूफ़ान वगैरह पैदा करता है बल्कि पानी या चंदर के समंदर को अपने दोस्त शुक्र की मिट्टी से बरबाद कर देता है। पानी हवा को क्या कहे? हवा इसमें हर तरह की ज़हर पैदा कर देती है। ये "चंदर ग्रहण" का वक़्त होगा।

फ़रमान नंबर ८

ग्रह का असल नाम गांठ है। और इस इल्म में भी हर बुर्ज की बुनियाद उंगलियों की जड़ और हथेली की गांठ पर मानी गयी है।

फ़रमान नंबर ९

हफ़्ते के दिनों की तरह इतवार (सूरज), सोमवार (चंदर), मंगल, बुध, बीरवार (बृहस्पत), शुक्र और सनीचर सात ही हैं। शाम के वक़्त को आंठवा राहु और सुबह के तड़के को नौवाँ केतु होगा।

फ़रमान नंबर १०

ज़मीन और आसमान की दरमियानी खाली जगह का नाम आकाश कहा है। जो बच्चे के पैदा होने के वक़्त इसकी बन्द मुट्ठी में भी मौजूद था। आकाश में हवा हुइ तो हवा में गरमी या आग आयी, आग से पानी और पानी से मिट्टी या कुल

ब्रह्मांड पैदा हुआ। इसी तरह ही इस इल्म में क़िस्मत को जगाने वाले बुर्ज या ग्रह इसी चक्कर में माने गए हैं और नीचे लिखी तरतीब से अपना अपना असर इंसानी क़िस्मत में दिखलाते हैं।

१) बृहस्पत :- हवा, रूह व सांस, पिता, गुरु, सुख

२) सूरज :- आग, गुस्सा, जिस्म, अक्ल, तमाम अंग, इल्म

३) चंदर :- पानी, शांति, दिल, माता, जायदाद-जद्दी

४) शुक्र :- मिट्टी, कामदेव, आज़जी, स्त्री, गृहस्त

५) मंगल :- खाना पीना, लड़ाई, हौसला, भाई,

६) बुध :- बोलना, दिमाग, हुनर, ज़बान, नसीहत, पेशा, दोस्ती

७) सनीचर :- देखना, चालाकी, मौत, बीमारी, लूटना

८) राहु :- सोचना,खयालात या दिलकी नकलों हरकत, **ससुराल** } नेकीबदी

९) केतु :- सुनना, पाँवों की नकलों हरकत } का हिसाब

ऊपर का असर सारी उमर पर ही इसी तरह होगा। एक ग्रह का असर ख़तम और दूसरे के शुरू के दरमियान ४० दिन फ़ालतू होंगे। यानी बुरे ग्रह की मियाद के ४० दिन बाद तक इसका बुरा असर हो सकता है। और शुरू होने वाले का अपनी मियाद से ४० दिन पहले ही असर हो जाना माना है। इकट्ठे असर के सिर्फ ४० दिन ही होंगे। मगर दोनों ग्रहों के जुदा जुदा चालीस चालीस दिन न होंगे। ये रियायती चालीस दिन कहलाते है। इसी असूल पर बच्चे के जनम से लेकर ४० दिन और मर जाने के बाद चालीस दिन का मातम या चालीसा मनाया जाता है। और इन्सानों में भी चालीसचंद्रा पूरा मनहूस होगा।

फ़रमान नंबर ११

बच्चा पैदा हुआ, बंद हवा से इस ज़माने की हवा में आया, ये ज़माना वह है जब की बच्चे का जिस्म नरम, पोला और तबीयत बिलकुल भोली भाली है, अभी सात ग्रह का असर मुकम्मल नहीं हुआ या सात साल तक दिमाग़ के खाने पूरे नहीं हुए।

लोक परलोक के मुश्तरका खयालात बच्चे में पैदा हो गए हैं। १२ साल तक या बारह (१२) राशियों की मियाद तक कोई बीमारी बच्चे की अपनी नहीं गिनते। (१) अब इसने गुरु से तालीम हासिल की और इस ज़माने की हवा का असर सोलह आने होने लगा। करम धरम करना सीखना और इज़्ज़त और बे-इज़्ज़ती का फर्क होना शुरू हुआ तो उमर का ज़माना वह आया जो रूहानी हालत का हुआ। पट्ठे जो बढ़ने थे बढ़ चुके तो बृहस्पत की उमर हुई (१६ साल)। (२) इलम व हुनर के बाद राजदरबार से ख़ुद अपने हाथों से धन-दौलत कमाना शुरू किया तो ये वक़्त अहद सूरज हुआ। बच्चा बालिग़ है। २१ साल से रेखा में भी कोई तबदीली नहीं मानते। अब उमर हुई (२२ साल)। (३) अपनी कमाई से माता की सेवा करने लगा तो चंदरमां का ज़माना हुआ और उमर हुई (२४ साल)। (४) स्त्री ताल्लुक बड़े परिवार गृहस्त आश्रम और बाल बच्चों का ज़माना शुक्र का अहद हुआ। (उमर हुई २५ साल) (५) खाना पीना भाईबंदों की सेवा, जंग व जदल, जिस्मानी दुख, बीमारी वगैरह का वक़्त मंगल (नेक व बद) गिना गया तो उमर हुई (२८ साल)। (६) बुद्धि के काम, तिजारत, ब्योपार, हुनर दस्तकारी, दिमागी लियाकतों वगैरह से धन दौलत का ज़माना बुध का अहद हुआ (राजदरबार में होते हुए ये काम नहीं कर सकता। इस लिए जब बुध के साथ सूरज हो तो बुध का असर नदारद) और उमर हुई (३४ साल)। (७) सन्यास या मकान, जायदाद, चालाकी की आँख से धन दौलत का ढंग पकड़ा तो सनिचर का वक़्त हुआ और उमर हुई (३६ साल)। (८) दुनिया के अन्देशे की फ़र्ज़ी सोच विचार खायालात की नकलों हरकत का ज़ोर हुआ तो राहु का ज़माना आया और उमर हुई (४२ साल)। (९) अपने आप से जब दुनिया का हल न हुआ तो इधर उधर सलाह मशवरा के लिए पावों की नकलों हरकत शुरू हुई या बच्चा चलने और दौड़ने लगा तो केतु का ज़माना हुआ और उमर हो गई (४८ साल)।

फ़रमान नंबर १२

"क़िस्मत की हेराफेरी" बड़ी रेखा शायद ही कभी बदला करती है शाखों

पक्का ग्रह   मसनुई ग्रह

का बदलना मुमकिन है। वो भी उमर के हर सातवे साल (७,१४,२१...) मगर २१ साल की उमर से रेखा में कोई तबदीली होनी नहीं मानते। ये बालिग होने का ज़माना है। उमर के हर सातवे साल तबदीली हालत (ख़्वाह बुरी तरफ होवे ख़्वाह भली तरफ) मानते है। "अल्प आयु" (छोटी उमर जिसका ज़िकर उमर रेखा में होगा) वालों की उमर के आठवें साल (८-१६-३२-४०-४८-५६ और ६४ तक) ज़िंदगी ख़तरा में गिनते हैं।

फ़रमान नंबर १३

बच्चे की रेखा का १२ साला उमर तक कोई एतबार नहीं।

फ़रमान नंबर १४

मर्द का दायां हाथ (सूरज) तदबीर ज़ाहिरा अपने आप का काम और बायां हाथ (चंदर) तक़दीर बुज़ुर्गों का हिस्सा गैबी मदद के हालात से मुतलका है। क्योंकि आमतौर पर इंसान दिमाग़ के बाइं तरफ के खानों से काम लेता है। जिन का ताल्लुक बायें हाथ पर होता है। और दिमाग़ के दायें तरफ के ख़ानों से कम ही काम लेता है। जिन का ताल्लुक बायें हाथ से है। इस लिए अगर कोई रेखा बायें हाथ पर ही होवे और दायें पर ज़ाहिर न हो तो इस रेखा का असर कम ही गिना है। क्योंकि इस असर को पैदा करने के लिए इंसान कभी ख़्वाब व ख़याल में ही न लाएगा। क़ुदरती तौर पर इसका अगर असर ज़ाहिर हो जावे तो मुमकिन है। मुफ़सिल दिमाग़ के खानों के हाल में ज़िकर है।

फ़रमान नंबर १५

औरत का यही हाल उलट हाथों से माना है।

फ़रमान नंबर १६ **(फ़रमान ५५ से मुश्तरका)**

रेखा का ऊपर को झुकाव और उठाव ( ) तरक़्क़ी या नेक असर और नीचे

को झुकाव बुरा असर बताता है। यहीं हाल शाखों के ऊपर को या नीचे को निकल कर जाने से गिना है।

फ़रमान नंबर १७

बगैर रेखा वाला हाथ कज़्ज़ाक, ड़ाकू, संगदिल होगा।

फ़रमान नंबर १८

बहुत ज़्यादा रेखा वाला मंदभाग और वहमी होगा।

फ़रमान नंबर १९-२०

१९) ज़्यादा चौड़ी रेखाए - बहुत कम नेक असर देगी।

२०) मद्धम सी रेखाए और बेमायनी होगी। देर बाद असर देगी।

फ़रमान नंबर २१

साफ़ रेखाएँ दुरस्त नतीजे और पुरमायने होंगी।

गहरी रेखाएँ और जल्द असर देगी।

फ़रमान नंबर २२

स्याह काली रेखाएँ मनहूस नतीजे वाली होंगी।

फ़रमान नंबर २३

ख़त्म होने से पहले ही दूसरी रेखा का शुरू हो जाना ═ रेखा टूटा होना नहीं होता बल्कि तबदीली हालात ज़ाहिर करता है। ख़्वाह वह तबदीली बुरी तरफ़ को होवे ख़्वाह भली तरफ को जाने लगे। अगर ऐसी तबदीली बुरी तरफ को जाती मालूम होवे तो दान से रिहाई और नेक असर होगा। जिस का ज़िक्र बुर्जों में हैं।

फ़रमान नंबर २४

रेखा में जज़ीरा सुर्ख निशान (मंगल-बीमारी) , ज़रद निशान (कुदरती कमजोरी), धब्बे (असर में रुकावट), मशलश (बुरा असर), दायरा (असर चक्कर में), सितारा (सूरज चंदर का ताल्लुक) त्रिशूल (सनीचर का ताल्लुक), सीधे ख़त बृहस्पत का ताल्लुक), लेटी हुई लकीर (शुक्र), टेढ़ी लकीर (चंदर), जाल (राहु), चारपाई (केतु)। अपना अपना असर जिन का ज़िकर बुर्जों में है। किया करते हैं। चौकोर हमेंशा नेक असर देता है। शाख़दार रेखा - शाख़ दर शाख़ संगली सी रेखा अमूमन मददगार या सीधी रेखा नेक होती है।

फ़रमान नंबर २५

रेखा का यकायक तुट जाना किसी आने वाले हादसे की वक़्त से पहले ही निशानी है।

फ़रमान नंबर २६

सिर्फ एक ही रेखा को देखकर किया हुआ फैसला कोई मुकम्मल फैसला नहीं होता है। बल्कि वहम पैदा करने का सबब होता है।

फ़रमान नंबर २७ **(सफ़ा १४२ मुश्तरका नोट से मुतलका)**

ख़ूब ज़ोर से मलने पर रेखा जिस तरफ से ज़्यादा सुर्ख या लाल हो जावे वही तरफ से रेखा या शाख़ के शुरू होने की तरफ होगी।

फ़रमान नंबर २८

बृहस्पत, सूरज, मंगल के बुर्जों की शाख़ से मर्द और मर्दों का ताल्लुक, शुक्र और चंदर से शाखें औरत व औरतों का ताल्लुक ज़ाहिर करती हैं। या सीधे ख़त

—— मर्द और दो शाखी ⟋— औरत होगी।

फ़रमान नंबर २९

एक रेखा के बामुक़ाबिल दूसरी रेखा═⫽ एक ही क़िस्म की रेखा होगी। बशर्ते की दोनों एक ही बुर्ज पर वाक़्य हो। ऐसी शाखों से मुराद होगी की कोई अपना ही भाई बहन साथ चल रहा होगा। या वह दूसरी शाख़ अपने ही ख़ून का ताल्लुकदार बताएगी।

फ़रमान नंबर ३०

तमाम ग्रहों की बड़ी रेखाएं (मूफ़फ़स्सल ज़िकर हर बुर्ज में अलाहदा - अलाहदा है।)

(१) बृहस्पत रेखा

दुरुस्त हालत का असर मज़हबी ताल्लुक और हुकूमत की ताक़त

टूटी फूटी का असर अगर गहरी व साफ न हो तो मुतास्सिब और ज़ाहिल होवे।

(२) सूरज रेखा

कामयाबी और बरकत होवे। सेहत और तरक़्क़ी मिले।
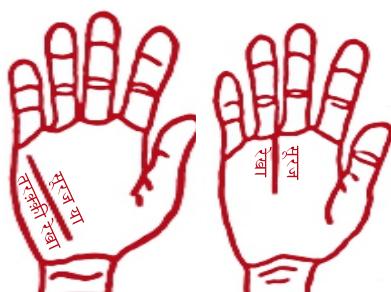
ख़राब शुदा रेखा से गुस्सा बद-मिज़ाज़ी ख़ुद-गरज़ी।

(३) चंदर रेखा

कुव्वत ख़याल या
दिल की ताक़त
शांति व सबर
होवे।

ख़राब टूटी
फूटी रेखा से
मायूसी
बुज़दिली और
सुस्ती हो।

(४) शुक्र रेखा

कामदेव
मुहब्बत बाज़ी
शादी व स्त्री
ताल्लुक।

ख़राब रेखा से
मेहरबानी न
करने की
आदत,
तबीयत का
बदल
जानेवाला
अक़ल ख़राब
वाला होगा।

(५) मंगल रेखा (मंगल बद)

ज़ंगी ताक़त
दिलेरी हौसले
का पक्का पन।
मंगल नेक रेखा
हर तरह का
आराम गृहस्त में
होवे।
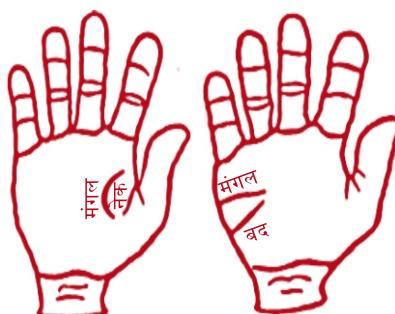
ख़राब रेखा से
घर फूंक कर
तमाशा देखने
वाला। शरीर
फ़सादी,
बीमारी में
मौते, बुज़दिल,
डरपोक होगा।

(६) बुध रेखा

अक़ल की बारीकी तिजारत इल्म हुनर दोस्ती की ताक़त ज़बान ज़बान से ही महल खड़े कर देवे।

ख़राब रेखा से झूठ बोलनेवाला और बेएतबारी की ज़िंदगी होवे। ज़बान का गंदा होवे।

(७) सनीचर की रेखा

कम बोलना, मतलब परस्ती और आँख की चालाकी की ताक़त, होशियारी, उम्र व मौत। बेशक अक़ल का अंधा मगर गांठ का पूरा।
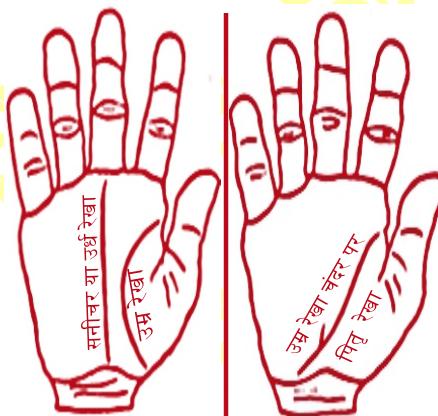
ख़राब रेखा से बद नसीबी गुमनाम जिंदगी वाला होवे।

(८) राहु से हसद और कीना दिल की दुश्मनी रखना। (९) केतु से पाँव चक्कर।

इन दोनों का न किसी ने कोई बुर्ज या घर मुकर्रर किया है। और न ही इन का कोई दरिया या रेखा माना है। किसी ने इन को सिर और धड़ का साया कहा किसी ने भूचाल का माद्दा और तूफ़ान की बुनियाद गिना। किसी ने नेकी बदी, दायें - बायें रहने और अमलनामा लिखने वाले फ़रिश्ते बताया। किसी ने धूप साया, रात दिन से याद किया। किसी ने मस्त हाथी और शरारती सुअर, कुत्ता। बहरहाल सब ने इन दोनों को पापी ग्रह

या पाप या बद फेली की तरफ ले जाने वाली ताक़तें ज़रूर माना है।

फ़रमान नंबर ३१

तमाम बुर्जों
बृहस्पत से
निकल कर
रेखा के
सूरज के बुर्ज
चली जावे

की मुश्तरका रेखाएं
अगर कोई रेखा
दिल रेखा और सि र
दरमियान सनीचर या
की तह की हद तक
इज़्ज़त रेखा होगी।

फ़रमान नंबर ३२

सूरज से अगर
सिर रेखा से
दिमाग़ी
उम्दा दिमाग़
तमाम नेक

रेखा निकलकर
जा मिले तो
लियाकत या
जिसमें सूरज का
असर मौजूद हो।

फ़रमान नंबर ३३

फरमान नंबर ३९ सफा १८ से मुतलका

चंदर से निकल कर
चंदरमा के बुर्ज से
रेखा निकल कर
हमसाया शुक्र की
शुक्र में चली जावे
या माँ की मुहब्बत
से दूर या फ़क़ीर
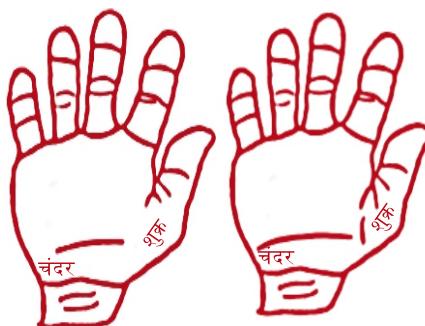
शाख़ यानी
अगर कोई
अपने
तरफ़ बल्कि
तो बहू बेटी
और कामदेव

साहिबे कमाल होगा। वरना दुनिया से बेहोश तमाम नशों का सरदार भंगी, चरसी, शराबी, पोस्ती ज़रूर होगा। बहरहाल वह दुनियावी मुहब्बत और इश्क़ से ज़रूर दूर होगा।

फ़रमान नंबर ३४

अगर ये रेखा ऊपर को उठी हुई दोनों की तरफ़ से भला मानस दरमियान〰से होवे तो माँ बाप ख़ालिस और पूरा होगा।

फ़रमान नंबर ३५

चंदर से बृहस्पत को जाने वाली रेखा अगर रास्ते में सिर रेखा तक ही रह जावे तो बुरे असर ही दिखलाएगी और अगर बढ़ती बढ़ती दिल रेखा में जा मिले तो दिल की शांति पूरी होगी और चंदरमा का तमाम नेक असर देगी।
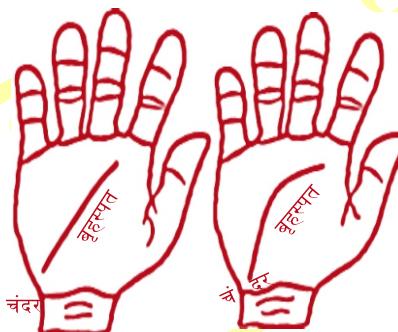
फ़रमान नंबर ३६

लेकिन अगर ये चंदरमा के बुर्ज से निकली हुई रेखा क़िस्मत रेखा में ही ख़तम होवे तो मामुली सफ़र और आम चंदरमा

के बुर्ज के मुतलका कामों में क़िस्मत का नेक असर देगी।

फ़रमान नंबर ३७

अगर ये चंदर के बुर्ज की रेखा क़िस्मत रेखा में न मिले और बराहे रास्त सूरज या सनीचर के बुर्ज में जा निकले तो निहायत ही बुरी ज़िंदगी होगी। ख़्वाह वह लाखोपति ही क्यूं न होवे मुसीबत पर मुसीबत ही देखता रहेगा।

फ़रमान नंबर ३८

अगर चंदर से बुध की तरफ़ मंगल बद तक ही रेखा रह जावे तो हौसला वाला लम्बे लम्बे समंदर पार सफ़र बतलाएगी। जिनके नतीजे भी नेक होंगे। ये रेखा अगर बुध की तरफ़ का रुख़ रखती हुई मालूम हो तो तिजारत के सफ़र से लाभ होगा। जो काफ़ी मुनाफ़ा होगा। और अगर सूरज के बुर्ज का रुख़ करती मालूम दे तो राजदरबार सरकारी ताल्लुक के कामों में सफ़र से बहुत ज़्यादा मुनाफ़ा होगा।

फ़रमान नंबर ३९ **फरमान नंबर ३३ से मुतलका**

अगर ये रेखा जिस तरह पहले सूरज के बुर्ज में ही जा निकली थी बुध के बुर्ज के अंदर चली जावे तो दिल की अंदरूनी ताक़त या अंदरूनी

अक़ल की बारीकी ज़ाहिर करेगी। मगर बैरुनी हालत में बुध और चंदरमा दोनों का फल ख़राब देगी। ख़ास कर माता या वालदा को अंधी (ऐसी हालत में माता कानी न होगी अगर होगी तो अंधी होगी क्यूंकी एक आंख पर शुक्र का असर गिना है।) कर लेगा। ख़ुद इसकी अपनी नज़र भी इस ख़तरे से बाहर नहीं हो सकती सबब ये है की बुध व चंदर दोनों के दरमियान मंगल बद बैठा है जो चंदरमा और बुध दोनों का ही बराबर का है और जंग व जदल इस का असर है और गहरी नज़र से ही मंगल लाल सुर्ख हो जाता है। चंदरमा व बुध दोस्त हैं। बुध का दिल साफ़ है मगर चंदरमा बुध से अंदरूनी दुश्मनी ही करता है। मंगल साथ दोनों का ही देता है। लड़ाई में वह पहले बुध या पेशावर या दस्ती काम से रोटी खाने वाले पर चंदर की तरफ़ हमले में साथ जाता है। और इसके भी एक की बजाए दो थप्पड़ लगा देता है। क्योंकि उसे पता है की चंदर बुध से दुश्मनी करता है। अब चंदर बुध मंगल की मदद से अपनी एक आंख (बुध वाला) और दोनों आंखो वाला (चंदरमा वाला) माता वालदा गिनवा कर फिर वही दोस्त बन बैठे और इकट्ठे रोटी खाने लगे। मगर दरअसल नतीजा क्या होगा। न चंदर (माता) सुखी न बुध का कुछ बनेगा। अंदरूनी अक़्ल करे तो क्या करे। इलाज क्या होवे। या बुध माता से अलाहदा रहे या अपना दस्ती काम बंद करे। चंदर अंदरूनी दुश्मनी ही करता जाएगा।

चंदरमा के बुर्ज से मंगल नेक को रेखा बहुत मुबारक है। जिस के कई नाम हैं।

फ़रमान नंबर ४०

धन रेखा निकल कर पर से उम्र बराबर मंगल नेक जावे तो धन से गिनी

अगर चांद से शुक्र के बुर्ज रेखा के होती हुई तक चली रेखा के नाम जावेगी

फ़रमान नंबर ४१

और अगर निकलकर बजाए उम्र हथेली के मैदान से
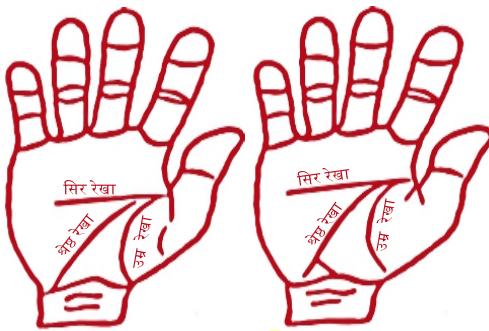
ये रेखा चांद से शुक्र के बुर्ज की रेखा के बराबर दरमियानी हो कर मंगल नेक तक चली जावे तो सिर श्रेष्ठ रेखा कहलाएगी।

फ़रमान नंबर ४२

और अगर चंदरमा पर पिता की रेखा (पिता

उम्र रेखा ही जा गिरे तो साथी या पितृ की रेखा) होगी।

फ़रमान नंबर ४३

शुक्र के बुर्ज से निकली हुई रेखा अगर सनीचर की तरफ़ को चले तो गृहस्ती साथ में दूसरे उसकी परवरिश

साथी होंगे। जो कमाई से पाएंगे।

और अगर ये शुक्र के बुर्ज की रेखा सिर्फ उम्र रेखा ही से शुक्र के मुक़ाम से निकले तो ऐसे साथी निहायत करीबी रिश्तेदार होंगे। और ज़िंदगी और कमाई दरअसल इनके लिए ही होगी। और अगर ये शुक्र से निकली हुई रेखा सनीचर के बुर्ज के अंदर तक चली जावे तो सनीचर का बुरा असर ज़ोर से होगा। या अगर सनीचर से निकल कर रेखा शुक्र के बुर्ज पर उम्र रेखा को आ काटे तो निहायत दुख की मौत होगी। अगर उम्र रेखा से निकली हुई शाख़ ऊपर सनीचर को क़िस्मत रेखा सनीचर की उर्ध रेखा के बराबर बराबर ही सनीचर में चली जावे तो सनीचर का बुरा असर न होगा। बल्कि ये नज़दीकि रिश्तेदार सनीचर के कामों मकान वगैरह के मतलका कारोबार से ताल्लुक रखते हुए इसकी कमाई को ख़र्च करेंगे या ऐसे शख़्स की ख़ुद अपनी कमाई मकानों पर ज़्यादा सर्फ़ होगी।

फ़रमान नंबर ४४

शुक्र के बुर्ज से रेखा अगर सूरज की तरफ चले और रास्ते में क़िस्मत रेखा में ही रह जावे तो ऐसी औरत (शुक्र की शाख़ स्त्री) की ताल्लुकदार क़िस्मत होगी या शादी होने पर ही क़िस्मत को रोशन और नेक असर बना देगी। ऐसी औरत स्याह रंग न होगी। बल्कि शुक्र या सूरज के रंग की होगी। और चमकीला चहेरा होगा।
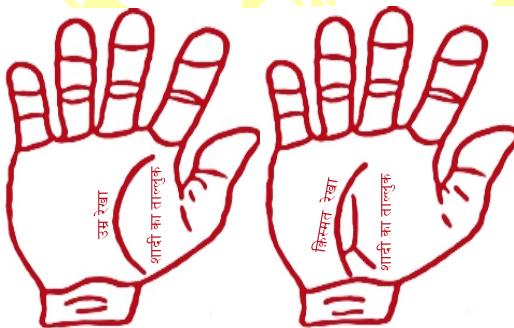
फ़रमान नंबर ४५

अगर ये शुक्र से निकली हुई सिर रेखा को अबुर कर के जिस तरह सनीचर बुर्ज के अंदर ही जा निकलने पर दुखी मौत का सबब हुई थी अब फ़िर सूरज के बुर्ज के अंदर ही चली जावे ....

....

तो चांद और सूरज के मिले हुए बुर्ज की तरह निहायत बुरी ज़िंदगी होगी।

तपेदिक होगा। **(सफ़ा ३१६ तपेदिक)** जिसकी वजह औरत होगी। यानी बुखार या दीगर स्त्री ताल्लुकात से बिगड़ा हुआ तपेदिक़ होगा।

फ़रमान नंबर ४६

अगर ये शुक्र से निकली हुई रेखा बुध का रुख़ करे या बुध की तरफ़ या बुध में चली जावे और रास्ते में सूरज रेखा से न कटे कटाए तो बुध का उत्तम फल होगा। दस्ती, दिमाग़ी काम और तिजारत नेक होंगे।
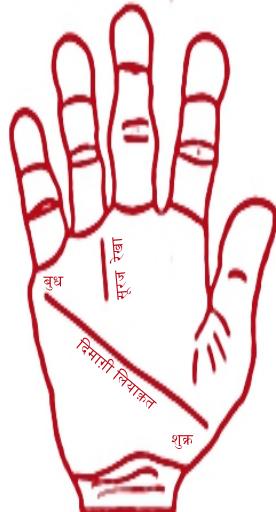
फ़रमान नंबर ४७

अगर शुक्र से मंगल नेक के रास्ते बृहस्पत पर (उम्र रेखा के अलावा रेखा जिसे गृहस्त रेखा भी कहेते हैं।) जा निकले तो औरत ख़ानदान या ससुराल से जायदाद वग़ैरह के फ़ायदे दिला देगी।

फ़रमान नंबर ४८

बुध से अगर रेखा दिल और सिर रेखा के दरमियान होती हुई बृहस्पत पर चली जावे तो राज योग

होगा। जिसमें सनीचर और सूरज दोनों का ही शुभ असर होगा।

फ़रमान नंबर ४९

सिर रेखा से अगर सूरज या बुध को रेखा चली जावे तो सूरज और बुध का निहायत उत्तम असर दस्ती, दिमाग़ी कामों में होगा। यही असर इस रेखा का बृहस्पत पर होगा। मगर ऐसी हालत में बुध (दस्ती काम व सब्ज़ रंग का ताल्लुक) कुछ खराबी और नुकसान करने वाला ही रहा करेगा। वह भी सिर्फ़ माली हालत पर। लेकिन ये रेखा (सिर की शाख़) सनीचर की तरफ़ को चलती हुई नुकसान न देगी। लेकिन अगर रास्ते में दिल रेखा या चंदर रेखा पर ही ख़तम हो जाए तो चंदर अपना बुरा असर ज़रूर करेगा, खूनी होगा।

फ़रमान नंबर ५०

लेकिन अगर चंदर या दिल रेखा से पार होकर ऊपर को बढ़ जावे तो नेक असर होगा। ख़्वाह ऐसी रेखा बुध, सूरज, सनीचर या बृहस्पत पर कहीं भी ख़तम हो जावे।

फ़रमान नंबर ५१

मंगल नेक से निकली हुई रेखा जो क़िस्मत रेखा में जा मिले औरत खानदान के गृहस्थियों का ताल्लुक और मंगल बद से क़िस्मत रेखा की तरफ़ कोई आई हुई रेखा अपने ही भाईबंदों का ताल्लुक बतायेगी।

फ़रमान नंबर ५२

(सफा २०६ खाना नबर ८ से मुतलका)

मंगल नेक वाली कोई बुरा नतीजा न देगी। मगर मंगल बद की तरफ़ से आई हुई रेखा सूरज की सेहत या तरक्की रेखा को आ काटे तो सख़्त मुखालफत रोज़गार में धोकाबाज़ी। बल्कि मंगल बद का असर मौते वगैरह दिखलाएगी। यानी इसकी (ऐसे हाथ वाले की) अपनी मौत तो न होगी। मगर अपने भाईबंद निहायत करीबी रिशतेदारों की मौतें ज़रूर दिखलाएगी। यानी मंगल नीच होगा। और बुध-राहु-केतु का बुरा असर ज़रूर होगा। अपनी आँखों और नज़र पर भी कोई असर खराब हो जावे तो हो सकता है।

फ़रमान नंबर ५३

उंगलियों की जड़ और हथेली की ऊपर के किनारे पर दो शाखी रेखा V या बुर्जों को मिलाने वाली रेखा यानी बृहस्पत और सनीचर, सनीचर और सूरज, सूरज और बुध सब के दरमियान वाली रेखा नेक असर देगी। सनीचर भी ऐसी हालत में अपना बुरा असर छोड़ देता है। और शुभ असर करता है। सनीचर का सांप हामिला औरत के सामने अंधा हो जाएगा। और हरगिज़ डंख़ न मारेगा। इकलौते बेटे पर भी हमला न करेगा। क्योंकि इकलौता बेटा भी सूरज उत्तम का सबूत है बशर्ते की वह पहला लड़का होवे।

दो नज़दीकि बुर्जों के अलावा अगर ये दो शाख़ीं पहले और

तीसरे या दूसरे और चौथे बुर्जों पर मुश्तरका भी हो "यानी एक सिरा तो बृहस्पत के बुर्ज पर हो और दूसरा सिरा सूरज के बुर्ज पर या एक सिरा तो सनीचर पर होवे और दूसरा सिरा बुध" पर तो भी नेक असर ही होगा। ख़्वाह ऐसी दो शाखी रेखा का शुरू दिल रेखा पर हो। ख़्वाह ये दो शाख़ी रेखा सिर रेखा से निकल कर ऊपर को भाग रही हो।

फ़रमान नंबर ५५

(फरमान नंबर १६ से मुश्तरका)

ऊपर को उठने वाली शाखों या ऊपर को मुंह रखने वाली दो शाखी V का असर नेक होगा। नीचे को निकल भागने वाली शाखों या नीचे की तरफ मुंह रखने वाली दो शाखी का कोई नेक असर न होगा।

फ़रमान नंबर ५६

सफा २६६ जुज ९ (i)

तीन शाखी ш m ┴ केतु होगा। अब सनीचर बराबर का होगा। केतु उल्टी चारपाई तीन पाए होता है। सनीचर का सांप चारपाई पर नहीं जाता। लेकिन अगर चौथी चीज या औरत की गुत या कोई कपड़ा मददगार होवे तो चारपाई पर चला जावेगा। और ड़ंग मार देगा। यानी चुगलखोरी और शरारत पैदा होगी।

फ़रमान ५७

"रेखा के असर का अब कौन सा साल है। "

		साल
१	कनक या जौ के दाने के बराबर के टुकड़े के पैमाने पर (⬭) रेखा का असर होगा। १० साल तक ख़्वाह कोई भी रेखा होवे।	१०
२	अगर तर्जनी उंगली की जड़ से हाथ किनारो के साथ साथ नीचे की	१६
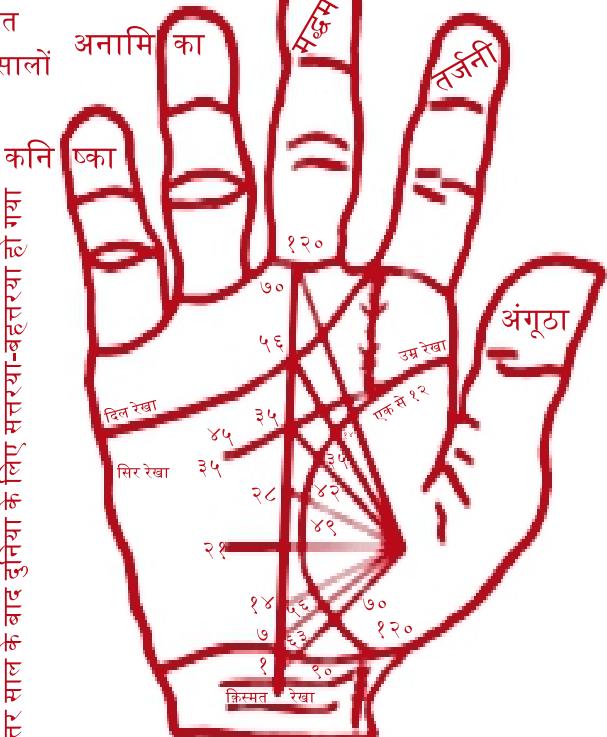
१२ साल तक बच्चे की रेखा और ७० साल बाद ख़ुद अपनी क़िस्मत का एतबार नहीं है

(पितृ ऋण)बाप बेटे की बाहमी उम्र और क़िस्मत के सालों का मुश्तरका असर

	क़िस्मत	१	७	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५४	६३	७०	१२०
औसत	उम्र	७०	६३	५४	४९	४२	३५	२८	२१	१४	०७	०१	१२०

	तरफ़ उम्र रेखा को काटता हुआ ख़त खींचे तो इस का पहला	साल
	मुकाम या रेखा की इस नुक़्ते तक लंबाई होगी।	१२
३	दूसरा मुकाम जब यहीं ख़त उम्र रेखा को आगे बढ़ कर फिर दूसरी दफ़े काटे।	९०
४	जिस जगह क़िस्मत रेखा उम्र रेखा से मिले	२१

५	जिस जगह क़िस्मत रेखा सिर रेखा से मिले	३५
६	जिस जगह क़िस्मत रेखा दिल रेखा से मिले	५४
७	हथेली की चौड़ाई और दिल रेखा के निस्फ़ का निशान जहां दिल रेखा को काटे वह मुकाम।	४५
८	सेहत या तरक़्क़ी रेखा जिस जगह उम्र रेखा से मिले या जिस निशान पर दोनों बाहम कट जावे।	उम्र का आख़िर

<u>इल्मे क़्याफ़ा</u>

<u>हाथ का अंगूठा</u>

<u>फ़रमान नंबर ५८</u>

(१) अंगूठे को हाथ के घुमाने वाली कीली माना है। बाज़ का ख़याल है की ज़मीन एक कीली पर घूमती है। बाज़ कहेते हैं की तमाम ज़मीन के बोझ को नारया बैल (अंगूठा शुक्र का घर और शुक्र को बैल माना है) ने अपने सींगो पर उठाया हुआ है। हु-ब-हु अंगूठे पर तमाम हाथ या बर्रेआज़म का बोझ माना है। अंगूठे की कीली पर ही हाथ घूमता है। अंगूठे की ताक़त दिल को चलाती है। चलता हुआ दिल ईन्सान के ज़िंदा होने की दलील है। जिस ज़िंदगी से ये तमाम तमाशा रात-दिन होता है। अंगूठे में कीली की तरह घुमाव देने की ताक़त इंसान की तमाम ताकतों को अपनी अपनी हदबंदी में कर देती है। और उदासी का अंधेरा हमेशा क़ायम नहीं रहे पाता। कहेते हैं की एक दिन तर्जनी उंगली ने हुकूमत के नशे में कहा की मेरा दिल चाहता है की खाऊँ खाऊँ। यानी जी कुछ खाने को चाहता है। आदत से मज़बूर हुकूमत की तबीयत वाले अपना क्या सब दूसरों का माल खा जाना ही पसंद किया करते हैं। या वह हरदम अपने ही खाने खेलने या पीने की ख़्वाहिश का सब से ज़्यादा ख़याल रखते हैं। या अपनी तबीयत से मजबूर हर दम खाऊँ खाऊँ ही करते रहते हैं। और दुसरों पर अपनी खा जाने की ताक़त या आदत का भय या ड़र डालते रहते हैं।

मद्धमा ने जवाब दीया की कहाँ से खाऊँ (ये नहीं बोली के कहाँ से खाएंगे) यानी ये उंगली सन्यास या बैराग की है। हर दम यही लहर पैदा करती है कहाँ से खाना है। किसको खाना है। ये सब ख़ुदा के बंदे है। किसका खाऊँ, क्या खाऊँ, क्यों खाऊँ, क्यों न खाऊँ, कहाँ से खाऊँ सैंकड़ों तरह

की सोच विचार इस दुनिया और परलोक का ध्यान वगैरह उदासी और मायूसी की हवा से सब खयालात मुर्दा कर देती है। राशियों और ग्रहों के हिसाब से भी मौत बीमारी और सनीचर का यही उंगली घर है। (तर्जनी से चल कर पांचवे नंबर पर चार तत आग, पानी, मिट्टी, हवा का पुतला अपनी चारों ताकतों से आगे बढ़कर या तर्जनी से चलकर चार खाने छोडकर दसवें द्वार या दरवाज़े से आगे चलकर दस इंद्रियाँ वगैरह लम्बा हिसाब किताब है। छोडकर चला) गर्ज की इस स्याह सूरत शाम रंग दरमियानी सब तरफ से दरमियाना या मध्यमा उंगली (ख़्वाह तादाद गिनो ख़्वाह हाथ के दो टुकड़े कर दो, ख़्वाह लोक परलोक के दरमियान से कहो, ख़्वाह हफ़्ते के सात दिनों का आख़री दिन और नए हफ़्ते के शुरू का पहला पहलू या दरमियानी हालत। या दिल की अंदरूनी ताकत को बाहरजाहेर करने वाली ताक़त या बाहर की तमाम चीजों को देख कर बाहर से अंदर जाकर बता आने वाली चीज या चहेरे की दरमियानी चीज आंख के दरमियानी घर की पुतली की नज़र या अन्धो और फर्क करने वाले आंखों के मालिकों में हद बंदी कुछ भी हो। आंख खुली तो दिन हुआ या जनम लिया। आंख बंद हुई अन्धेरा छाया, आंख पथराई मौत का आजार हुआ। नज़र गई, अंधेरा हुआ मौत आई, जहाँ या जहान से खतम हुआ। सनीचर का आख़िर यही कुछ देखा और वस्त की वस्ती या दरमियान की दरमियानी वही मध्यमा की मध्यमा सुन्न और आसुन्न या सन्यास पल्ले रहा। न कुछ खाया न हमसाया को खिलाया। तर्जनी मध्यमा से बात करके उदास हुई और मध्यमा भी सन्यासी या उदासी होकर सवाली हुई। दरबदर भिक्षा मांगने लगी। रात का अंधेरा ख़तम हुआ। सनीचर टला और दिन का ज़माना आया। सूरज चमका सब को हौसला हुआ। और अनामिका से सलाह पूछी। इसने जवाब दिया की इतनी उदासी क्यों और दरबदर भटकने से क्या मतलब। हम खुद काम कर सकते हैं। हमारे हाथ पांव चलते हैं। जिस्म हमारे पास है। बृहस्पत की हवा सनीचर की आग साथ है। मिट्टी नहीं तो पानी हम पहले बना लेते है। अगर पास नहीं तो फिर दे देंगे। " लाओ उधारा न मगर हौसला न हारो। " अब पहली दो बहनों को कुछ हौसला हुआ। और सोचने लगी मगर सोचने की या बोलकर मांगने की ताक़त

न हुई की किस ज़बान से और किस से उधारा लाए। इतने में सब से छोटी कनिष्का भी आ गई। वह ख़ूब सोचती और बोलती है। कहने लगी की कुछ बुद्धि पकडो उधारा लाना तो आसान है। मगर "देना भारा" मैं फ़ौरन ज़बान की ताक़त और सुरसती की मदद से जो कहो लाने के लिए सब से बोल सकती हूँ। मगर मुझे शक है की मैं छोटी सी हूँ। मेरी कोई हस्ती नहीं। (बुध की कोई अलाहदा काम करने की ताक़त नहीं मानी दूसरों के साथ मिलकर ताक़त पकड़ लेती है। गोल खाली दायरा माना है। गोल निशान, जिस्म पर गोल सिर का ढांचा और ज़बान मानी है। जो बगैर दिमाग़ और रूह या सूरज कुछ नहीं बनता। यानी बुध के दायरे में जब सूरज की ताक़त हो जावें या बुध और सूरज मिल जावें हर तरफ उत्तम फल और अमीरी होगी। ख़्वाह औरत या शादी रेखा ख़्वाह सिर से श्रेष्ठ या कोई भी और हालत हो) खाने की हवस पैदा हुई कमाकर उधारा वापस करने का हौसला हुआ। मगर सिर पर बोझ रखे बैठने की ताक़त न पैदा हुई। चारों भाई बृहस्पत, सनीचर, सूरज, बुध सोच विचार के चक्कर (बुध के दायरे में) चला रहे हैं। आख़िर अंगूठा जो बिलकुल दूर बैठा था सब को हौसला देता है की जब तक मैं ज़िंदा हूँ जो जी चाहता है खाओ। अगर मैं सब का बाप नहीं तो चचा तो ज़रूर हूँ। मुझे ही सब की शर्म है। परवाह नहीं जो चाहो खाओ। मेरा यही काम है के खाना खिलाना और बस। **(जब शुक्र नंबर १२ में उंच होवे)**

अंगूठे का काम सब को हौसला देना है। और पक्के तौर पर ख़्वाह सब के बोझ से कीली ही होना पड़े। यही वजह है की अंगूठे के बुर्ज शुक्र का दुनिया से कोई ताल्लुक नहीं। सिर्फ ऐश व इशरत करना और कराना। **(दूसरों की पालना करना और उनके लिए भंडारे क़ायम करना)**

बृहस्पत से मिले तो बृहस्पत, बड़ा बृहस्पत शुक्र का फल देने वाला हुआ। बुध से मिला तो शादी औलाद ही सब के सब इस के घर रखने लगा। बगैर शुक्र के बुध की बुद्धि या अक़्ल नाक़िस हुई। सनीचर से मिला तो अपने दोस्त की आंखों से दुनिया को बचाने लगा। और सेहत उमदा हुई। सूरज की दोस्ती से ख़्वाह ख़ुद तबाह हुआ। मगर इसे दोबाला किया। ख़ुद मिन्नतदारी ली। बेशक सूरज ने दुश्मनी न छोड़ी

मगर जब दाव लगा। (सूरज घर से बाहर हुआ या सूरज रेखा न हुई) तो जनमुरीद कर के छोड़ा। जब सब के सब इस के ताल्लुकदार हुए तो मौत को भूल कर सब ने औरत को याद किया। गर्ज़ ये की शुक्र की कानी आंख की चमक लहर के इश्क़ से न गुरु बृहस्पत बचा। जो सब को पढ़ा रहा था और न बुध जो बोल-बोल कर सब को सुना रहा था, न सनीचर बोला जो सब को खा रहा था और सब को दिखा-दिखा कर खा रहा था, सूरज का तो कुछ भी न रहा। वह तो शुक्र की तलाश में जनमुरीद हो बैठा और सुबह से शाम से सुबह इसी शुक्र के पांव की मिट्टी पर शुक्र की तलाश करते हुए आज तक इसी चक्कर में फिर रहा है। देवताओ की दुर्दशा करने वाली ताकत को आख़िर ऊपर से नीचे फेंका गया तो वह अंगूठे की जड़ में शुक्र का बुर्ज अंगूठे की हमसाया हुई या कीली के सिर पर आ बैठी। यानी अंगूठे ने सब मिट्टी का बोझ या तमाम दुनिया का बोझ बतौर कीली मंज़ूर किया। और हौसला न छोड़ा। ये है अंगूठे के हौसले वाले आदमी का हाल। इसका हौसला दिली और पक्का होगा। किसि को नुकशान पहुचाने का हौसला हरगिज़ नहीं होगा। किसी की मदद का हौसला होगा। मुहब्बत्त से दलील देगा और दलील के सहारे हौसले क़ायम कर देगा। मगर सनीचर की उदासी का साथ न होगा।

२) <u>अंगूठे के हिस्से</u> - जिस तरह शुक्र के बुर्ज को दुनियावी क़िस्मत से कोई ताल्लुक नहीं है। सिर्फ इश्क़ व मुहब्बत की ही एक आंख कहलाता है। इसी तरह ही अंगूठे या इस की ताकत को बाकी उंगलियों से कोई मतलब नहीं। इस का ताल्लुक सिर्फ दिल या जी से है। यानी जी है तो जहान। दौलतमंदी और अमीरी दिल से है, न की मालो दौलत से। दुनिया में ये दिल का ही दरिया है। जिस में हजारों लहरें आती हैं और जाती हैं। इन लहेरों के आने और जाने की ताक़त को अंगूठे की ताक़त माना है। दिल का दरिया तो चंदर रेखा या दिल रेखा है। मगर इस में लहेरों की ताक़त जो है वह अंगूठे की ताक़त है। शुक्र और चंदर आपस में दुश्मन हैं।

इस लिए दिल के दरिया में लहेरों का आना जाना ही इंसानी तबीयत में तूफ़ान पैदा कर देता है। दिल के दरिया में शुक्र या अंगूठे ने ऊँची लहर पैदा की तो ताज व तख़्त की ख़्वाहिश हुई। दूसरे वक़्त ये लहर गिरि तो न चंदर का समुंदर बाकी है न दुनियावी खयालात का निशान। वही शुक्र की रेत ही रेत रहे गई। न तख्त की ख़्वाहिश न बख़्त (बद नसीबा) का भय या डर। इस ताक़त के तीन हिस्से क़रार दिए हैं।

(अलिफ़) (१) मनमर्ज़ी, (२) मन्तक - दलील बाज़ी (३) मुहब्बत - अंगूठे की नाखून वाली पोरी या हिस्से को . . . . . दिली मर्ज़ी की ताक़त की जगह दरमियानी हिस्से को दलील बाज़ी सोच विचार की ताक़त तीसरी या निचली जगह या शुक्र के बुर्ज वाली गांठ को मुहब्बत का भंडार या खज़ाना माना है। (इंसानी नफ़सानी ताक़त) या यूं कहो की नाखून वाला हिस्सा रूहानी ताक़त, दरमियानी हिस्सा जिस्मानी ताक़त और निचला या जड़ वाला हिस्सा नफ़सानी ताक़त से मुतलका है। यही उसूल तमाम उंगलियों की पोरियों का है।

(बे) अंगूठा जिस क़दर लंबा हो उसी क़दर ज़्यादा शहवत पर क़ाबू होगा। इन तीनों ही हिस्सो को उम्र या ज़िंदगी के तीनों हिस्सो से मुतलका करते हैं। यानी सब से ऊपर का हिस्सा या नाखून वाला हिस्सा बचपन, दरमियान जवानी, सब से निचला या आखरी हिस्सा बुढ़ापा ज़ाहिर करता है।

(सीन) अंगूठा या नाखून वाला हिस्सा जिस क़दर मोटा हो मुफ़लिस और जिस क़दर छोटा होता जावे उसी क़दर वहशी या हैवानी ताक़त का माद्दा ज़्यादा होता जावे या ज़िद्दी होता जावे या तंग हौसला हो जावे। साथ ही वह शख़्स कम दौलत भी होवे। नाखून वाला हिस्सा अगर हाथ की हथेली के बाहर की तरफ़

या हाथ की पीठ की तरफ़ झुके तो नरम दिली और अगर उलट हो तो तबीयत उलट हो। अंगूठे की जड़ की गांठ वाला हिस्सा जिस क़दर छोटा होता जावे उसी क़दर ज़्यादा जादू मंतर की ख़्वाहिश होगी और जनमुरीद होगा।

(३) **फरमान १७ सफा ८५ से मुकाबला करें** अंगूठे पर जौ का निशान ये निशान अंगूठे की तीनों पोरियों की जड़ पर माना जाता है। साफ व सालिम हो तो उस हिस्सा उम्र में सुख आराम दौलतमंदी का ज़माना होगा। और अगर टूटा हुआ होवे तो उम्र के उस हिस्से का हाल ख़राब होगा। जिस हिस्से की जड़ में ये टूटा हुआ निशान होवे। यानी नाखून वाली पोरी और दरमियानी पोरी के दरमियान का जौ उम्र के दो हिस्से बचपन और जवानी पर असर करेगा। साफ हुआ तो बचपन और जवानी उम्दा होगी। जनम चानन पक्ष का। और अगर टूटा हुआ होवे तो बचपन और जवानी का सुख तसल्ली बख़्स न होगा। बल्कि ख़राब होगा। इस तरह ही दरमियानी हिस्से और निचले हिस्से के दरमियान का जौ अगर टूटा हुआ होवे तो जवानी और बुढ़ापा ख़राब होंगे। बचपन पर इस का ख़राब असर न होगा। निचले हिस्से की जड़ का जौ सिर्फ़ बुढ़ापे से मुतलका है। ख़राब और टूटा हुआ जौ का निशान बुढ़ापे में मंदभागी और बदनसीबी की अलामत है। इस जगह सूरज रेखा का ताल्लुक ज़रूर साथ देगा। यानी अगर इस निचले हिस्से की जड़ पर यानी शुक्र के बुर्ज के खात्मा और अंगूठे के इस निचले हिस्से के दरमियान में अगर जौ का निशान सालिम होवे तो बुढ़ापा उम्दा सुख। और अगर टूटा होवे तो मंदा हाल। इस जगह अगर जौ की बजाए रेखा ?? शाख़दार होवे तो भी नेक असर होगा। यानी सूरज का नेक असर होगा। बशर्ते की सूरज के बुर्ज पर सूरज रेखा व सूरज का बुर्ज भी क़ायम होवे। अंगूठे पर सीधे **III** बृहस्पत के ख़त पड़े हों तो भी निहायत नेक असर देंगे।

निचले हिस्से पर यहीं ख़त नर औलाद जिन में से दो शाखी लकीरें लड़कियां वगैरह मुराद होती हैं। नाखून वाले हिस्से पर चक्कर, शंख, सदफ़ का हाल इन की तादाद कुल हाथ के सारे के सारे ही गिनकर असर देखा जावेगा। अंगूठे का सिरा अगर आगे से बारीक होता जावे तो हौसले की ताक़त कम होती जायेगी। और अगर मोटा होता जावे तो हौसला मोटा होता जायेगा। या महेनती और जिद पर अड़ जाने वाला होता जायेगा

फ़रमान नंबर ५९
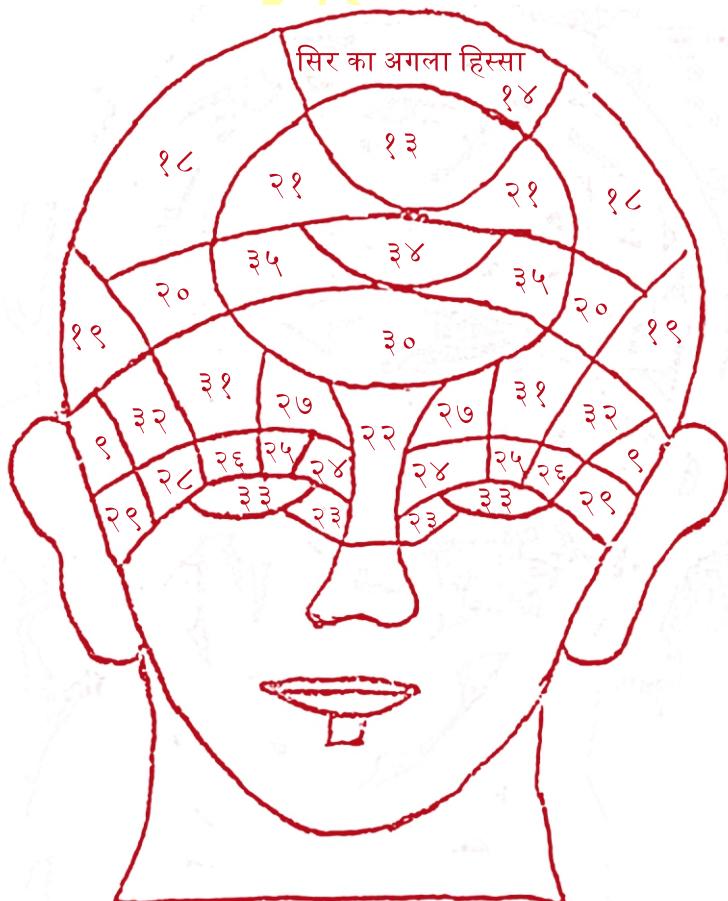
दिमाग़ के लिहाज़ से सिर का अगला हिस्सा
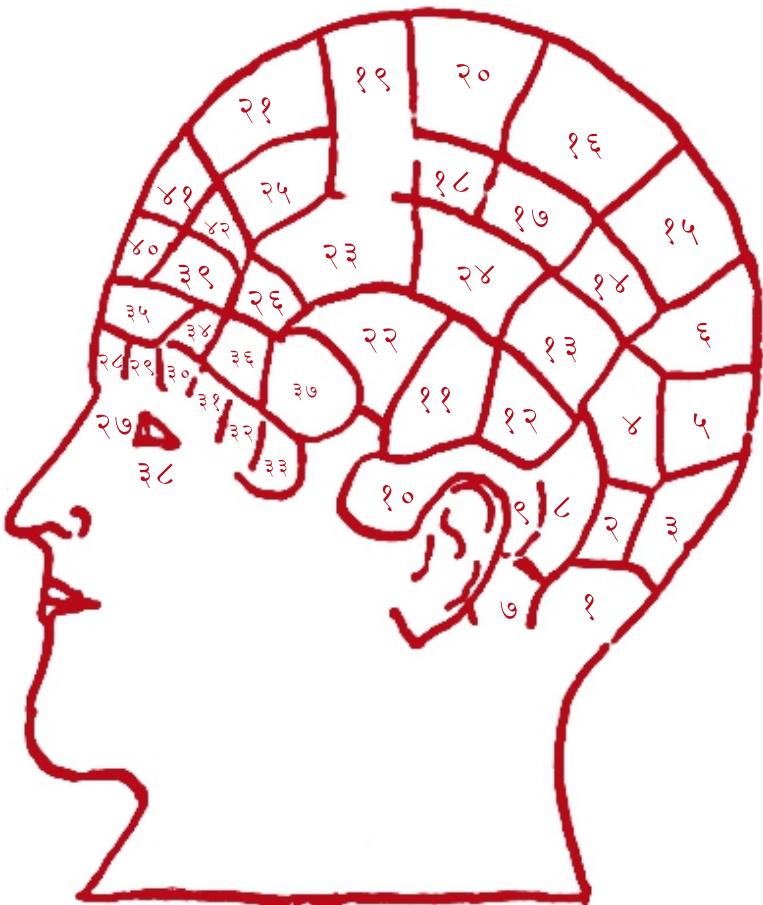
दिमाग़ के खाने

कान के सुराख़ से ९० दर्जा पर सिर और अब्रू (भवां - भरवटे) की तरफ खींचा हुआ खत दिमाग़ के हिस्से को पेशानी से अलाहदा कर देगा।

दिमाग़ के हर एक खाने का महल वाक़ूया नक़्श से पूरे तौर पर वाज़े होता है।

दिमाग़ का पिछला हिस्सा

गृहस्ती ताकते शुक्र

कुंडली खाना नंबर	दिमाग़ का खाना नंबर	ताक़त	कैफ़ियत
१	१	इश्क़ बाज़ी	ये ताक़त मर्द और औरत में १६ से ३६ साला उम्र में तरक्की पर होती है।
२	२	शादी की ख़्वाहिश	इश्क़ से पहली मुहब्बत का नाम उलफ़त और इश्क़ के बाद का गलबा इश्क़ होगा।
३	३	प्यार या वालदेनी मुहब्बत	नंबर १-२ का नतीजा ही है। मगर इस का खाना अलाहदा है।
४	४	दोस्ती या मुलाक़ात की ताक़त	ऐब पर परदा डालना और ख़ूबी पर नज़र डालना।
५	५	वतन की मुहब्बत	कुत्ता दोस्ती में मालिक को नहीं छोडता बिल्ली हुबल वतनी में मकान को नहीं छोडती। मालिक नेकुत्ता पाला। मकान बदला तो कुत्ता साथ गया। इसे मालिक से मुहब्बत है पिछले मकान से मुहब्बत नहीं। मालिक ने बिल्ली पाली। मकान बदला तो बिली पिछले मकान की तरफ भागी। बिली को मकान से मुहब्बत है।
९	६	दिलचस्पी या पक्की मुहब्बत	हर काम के लिए तैयार - लगा रहने वाला - काम पूरा किए बगैर न छोड़ना।

खुदगरज़ाना रगबते (सनीचर) बजरिया राहु

शुक्र से मुश्तरका			
७	७	ज़िंदगी बढ्ने की ताक़त	चपटे सिर में ज़्यादा तंग सिर में कम होती है
मंगल	सेमुश्तरका		
१	८	हमला रोकने की ताक़त	कामयाबी हो या न हो मगर अपना काम नहीं छोड़ता ख़्वाह लाख मुसीबत हो।
९	९	बदला लेने की ताक़त	ख़ुद बदला लेना वरना औलाद को बदला लेने की नसीहत कर मरे।
बुध से मुश्तरका			
३	१०	ज़ायका	पक्का हाज़मा, मज़बूत जिस्म।
११	११	ज़ख़ीरा जमा करने की ताक़त	पहला हिस्सा नेस्त यानी जमा करते जाना ख़्वाह काम आए या गल सड़ कर बरबाद हो जाए। लोमड़ी - दूसरा हिस्सा लियाक़त

कुंडली खाना नंबर	दिमाग़ का खाना नंबर	ताक़त	कैफ़ियत
११	११		का। जवानी में जमा बुढ़ापे में आराम। शहद की मक्खी। तीसरा हिस्सा - नालायकी, चोरी - दूसरे का माल उड़ा कर उसी वक़्त खा जाना।
राहु से मुश्तरका			
१२	१२	राज़दारी	फ़रेब पोशीदा, हर काम चालाकी से, अपना भेद छुपाना।
		हमदर्दी की ताक़तें (सनीचर) बजरिया केतु	
जा	ती		
१०	१३	होंशियारी की ताक़त	सिर्फ़ उम्मीद पर बैठे रहने की बजाए लम्बी सोच से वक़्त से पहले ही काम कर लेना।
मंगल से मुश्तरका			
८	१४	तकव्वुर या खुदपसंदी	अपने से अच्छा किसी को न समझना।
बृहस्पत से मुश्तरका			
२	१५	खुद्दारी	ख़ुद अपनी इज्जत मगर हसद से बरी और अपनी इज्जत के लिए दूसरे की बेइज्ज़ती न करना।
केतु से मुश्तरका			
६	१६	इस्तकलाल	काम में हमेशा लगे रहना। ख़्वाह भला काम हो ख़्वाह बुरा।
		बुज़ुर्गाना ताक़तें (मंगल)	
३	१७	अदल या मुनसिफ़ मिज़ाज	एक को दूसरे पर ज़्यादती करते नहीं देख सकता।
		शरीफ़ाना ताक़तें (बृहस्पत)	
बुध से मुश्तरका			
६	१८	भरोसा या उम्मीद	खाना होंशियारी ठीक तो उम्दा असर वरना फ़ोकी उम्मीद बाइसे तबाही।
जा	ती		
९	१९	मज़हब या रूहानी ताकत	कमज़ोर खाना नास्तिक होगा।
५	२०	इज्जत या बुज़ुर्गी (सूरज)	दूसरे की इज्जत और अपनी फर्ज़ से पूरी अदायगी अंदर बाहर से नेक।
४	२१	हमदर्दी या रहम मिज़ाजी (चंदर)	तंग पेशानी में कम। चौड़ी चपटी में ज़्यादा। चौड़ी व बुलंद में बहुत ज़्यादा।
		दिमाग़ी ताक़तें (सूरज) ज़ाहिरा दुनियावी बरताओ	
बृहस्पत से मुश्तरका			
५	२२	अक़्ल	चौड़ी पेशानी का सामना हिस्सा उभरा हुआ होता है।
६	२३	पसंदीदगी	औरत और हर चीज़ खूबसूरत होवे। खूबी या सिफ़त की परवाह नहीं।
७	२४	हौसला	मुझ से दूसरा अपनी शान न बढ़ाने पावे।

कुंडली खाना नंबर	दिमाग़ खाना नंबर	ताक़त	कैफ़ियत
पापी ग्रहों से मुस्तरका			
८	२५	नक़ल करने की	बहरूपियापन इसी से हो सकता है।
९	२६	ताक़त मसखर्गी	हद से ज़्यादा बेवकूफ़ कर देती है। **(भोलापन - सादा लोह**

महसूस की ताक़तें (चंदर)

कुंडली खाना नंबर	दिमाग़ खाना नंबर	ताक़त	कैफ़ियत
३	२७	ऊपर के दिए हुए खानों के नतीजे में जिस का ज़िक्र इल्म सामुद्रिक में ज़्यादा नहीं है	गौरो ख़ौस की ताक़त
४	२८		पुरानी याददास्त।
५	२९		कद व क़ामत औसत तनासूब की ताक़त
६	३०		दबाव बोझ मुसाविपन की ताक़त।
७	३१		रंग व रूप में फर्क वगैरह।
८	३२		सफाई शाइस्तगी धुलापन।
९	३३		ईल्मे रियाज़ी के उसूलों की ताक़त।
१०	३४		जगह मुक़ाम की याद।
बृहस्पत से मुश्तरका			
११	३५		पेशानी, वाक़यात गुज़रते हुए की याद। (बृहस्पतसे मुस्तरका)
१२	३६		वक़्त।
१	३७		राग।
२	३८		ज़बानदानी।
३	३९		वजह सबब की ताक़त।
४	४०		मुकाबला इक चीज़ का दूसरी से।
५	४१		इंसानी ख़सलत।
६	४२		रजामंदी।

अंदरूनी अक़्ल (बुध)

फ़रमान नंबर ६०

दिमाग़ के बारह खाने

इंसानी दिमाग़ के यहीं १२ खाने कुंडली में ग्रहों के पक्के तौर पर मुक़र्रर घर हैं। जो बारह राशियों से याद किये गए हैं। दिमाग़ के दाएँ और बाएँ

दिमाग़ का दायां या बायां हिस्सा

हिस्से में इसी गिनती के हैं। आम इस्तेमाल में दिमाग़ का बयान हिस्सा आता है और कभी ही अचानक कुदरती तौर पर एक हिस्से के असर में दूसरे हिस्सा का कोई खाना रेख में पहली राशि मेख जिस में सूरज उंच है मेख ठोकना या सब से उत्तम हालत की ताक़त वाले सूरज को पहले ही घर में बंद कर देना या दुनिया की तमाम ताक़तों के बरख़िलाफ़ काम कर दिखाना डाला करता है। ईन तमाम खानों का असर इंसान के दायें और बायें हाथ से मुतलका है। क़ुदरत के सितारों का असर दिमाग़ के खानों पर होगा। दिमाग़ का अक़्स हाथ की रेखा के दरियाओं के पानी से ज़ाहिर होगा। दिमाग़ का बायाँ हिस्सा दायें हाथ पर और दिमाग़ का दायाँ हिस्सा बायें हाथ पर रेखा के दरियाओं में अपना अक़्स डालता है। जिस तरह से दिमाग़ में ये टुकड़े मुकर्ररा जगह और मुकर्ररा हिंदसों से माने गए हैं। इसी तरह ही इन का असर देखने के लिए सामुद्रिक में बुर्ज और ग्रह हंमेशा के लिए खास खास जगह पर मुकर्रर कर दिए गए हैं। जिन की तफ़सील और बाहमी ताल्लुक का नक़्शा मंदरजे जेल है।

खाना नंबर दिमाग़	मुतलका	ग्रह		ताक़त	हरकत	खाना नंबर कुंडली
१	ईश्क़	शुक्र	औरत	मिट्टी	इश्क़	७
७	ज़िंदगी बढ़ने की ताक़त	बृहस्पत	औलाद	उम्र और लाभ	लालच	११
८	हमला रोकने की ताक़त	मंगल बद	मौत	ख़ाना	बदी	८
१३	होंशियारी	सनीचर	जायदाद	देखना	मक्कारी	१०
१४	तकब्बुर	राहु	शरारत	सोचना	दिमाग़ी हरकत	१२

खाना नंबर दिमाग़	मुतलका	ग्रह		ताक़त	हरकत	खाना नंबर कुंडली
१५	ख़ुददारी	बृहस्पत	सुख	औलाद	शोहरत	५
१६	इस्तक़लाल	केतु	सुनना	चलना	पाँव की हरकत	६
१७	मुनसिफ़ मिजाज़ी	मंगल नेक	भाई मौत	पीना	नेकी	३
१८	भरोसा	बुध	सिर	बोलना	अक़ल	७
१९	मज़हब	बृहस्पत	गुरु इल्म	हवा	सांस	९
२०	बुज़ुर्गी	सूरज	पिता-जिस्म	आग	गुस्सा	१
२१	हमदर्दी	चंदर	माता-दिल	पानी	शांति	४

३५ पेशानी पर सब की मुश्तरका क़िस्मत लिखी है।

दिमाग़ का खाना नंबर ३५ हंमेशा ज़माने की हवा से टकराता और इंसानी क़िस्मत पर बृहस्पत का असर डालता है। इसके पीछे खाना नंबर २० सूरज और खाना २१ चंदर चमक रहे हैं। जिन दोनों के ऊपर खाना नंबर १३ सनीचर का घर है। दिमाग़ के तमाम खाने ७ साल में पूरे तौर पर मुकम्मल हो जाते हैं। गोया ७ बुरजों का असर १२ राशियों में हो चुकता है। और ३५ साल में तमाम ग्रह अपना अपना दौरा पूरा कर लेते है। १२ साल तक बच्चे की रेखा का एतबार नहीं। और १२ साल के बाद क़िस्मत के बदलने की उम्मीद और ३५ साल के बाद दूसरा चक्कर माना गया है। ये खाने दिमाग़ के दायें बायें हु ब हु एक ही हैं। इस लिए ग्रहों में माना है की जो ग्रह पहले ३५ साला चक्कर में बुरा असर देगा। दूसरे चक्कर में पहला असर न देगा। यानी अगर दायें तरफ का असर होगा तो बायां हिस्सा बाद में असर देगा। बाप बेटे की उम्र और क़िस्मत का बाहमी ताल्लुक ३५ साला चक्कर के सबब ७० में ख़तम गिना है।

दायाँ या बायाँ हाथ, नेकी-बदी, तख़्त-बख़्त (शाही- गदाई) तदबीर व तक़दीर, राहु - केतु, नर - मादा (मर्द - औरत) गर्ज़ की हर दो पहलू मुक़र्रर करते हैं। इंसान का ज़ाती हाल या इंसान का कुल दुनिया से ताल्लुक और सब की मुश्तरका क़िस्मत का मैदान या माथा हर शख़्स अपने साथ लिए फिरता है।

१२ घंटे का दिन १२ घंटे की रात। १२ महीने का साल १२ राशियों का असर और १२ साला मासूम बच्चा। और १२ साल के बाद अच्छे दिनों की उम्मीद सब के सब ३५ में शामिल हैं। और ज़माने की हवा या बृहस्पत की तलाश की फ़िक्र में ज़र्द रंग हो रहे हैं। तमाम ग्रहों के रंगों की असर दुनिया की सब चीजों पर असर करता है। ३५ हरफ़ों की ज़बान या इल्म खुद चुप मगर लोगों को बोलना सिखला रही है। और सामुद्रिक में ३५ साला चक्कर सब ताकतों के असर के बड़े मैदान या इंसानी हाथ पर ज़ाहिर है। निकलते सूरज के मुंह पर लाली या जंगल में मंगल हो रहा है। और हाथ के अंदर नेक व बद की रेखा व चक्र इंसान सांप घोडा वगैरह ज़ाहिर हो रहे हैं। और यही ३५ का हिन्द्सा जानवरों की ज़बान से भी यही असर ज़ाहिर करता है। जो दरअसल इंसानी दिमाग़ की नकल है। एक दिमाग़ की अक़ल से दूसरा दिमाग़ नक़ल सीखता है। दिमाग़ बुध बुद्धि या अक़ल की नकल से जानवरों में तोते का सिर गोल हुआ। रंग सब्ज़ हुआ और ज़बान से बोलने लगा की लटपट ३५ चतुर सुजान कहो गंगा रामां श्री भगवान। इस इंसानी दिमाग़ की नक़ल में भी वही असर है जो असल का असर था।

लफ़्ज़	ग्रह	कुंडली का खाना	कैफ़ियत
लट	सनीचर	१०	लट पटा उम्र। लूटना लुटाना मक्कारी
पट	बृहस्पत	२	पत इज्ज़त दौलत
३५	बृहस्पत	११	पेशानी सब की क़िस्मत
चतुर	बुध	७	चतुराई अक़ल
सुजान	मंगल	३	आदिल तो मंगल नेक
कहो	केतु	६	कहना सुनना
गंगा	बृहस्पत	५	गंग दरिया समंदर आ आवे औलाद
रा	राहु	१२	को मुझे मैं मेरा तकब्बुर
मां	चंदर	४	माता दिल शांति
श्री	सूरज	१	सब से उत्तम सब का बुज़ुर्ग
भाग	शुक्र	७	लक्ष्मी औरत ज़मीन
वान	मंगल बद	८	वाला, मालिक, बान-तीर, सब का आखिर, मालिक, मौत

ग्रह कुंडली के शुरू का खाना नंबर एक मंगल नेक का घर जो नेक सूरज का उत्तम असर और आखरी खाना नंबर ८ बृछक मंगल बद ▲ मौत होता है। जनम और मरण में मंगल साथ है।

क़िस्मत के दोनों बड़े सितारे सूरज और चंदर हर वक़्त साथ में पीछे बैठे होते हैं। और दोनों आँखों से इंसान के मददगार हैं। सनीचर आँख का मालिक है। मगर सूरज चंदर दोनों ही इस के दुश्मन हैं। इस लिए काम काज में जिस शख़्स का दायाँ हाथ ज़्यादा चलता होवे उस की दायीं आँख और जिस का बायां हाथ चलता होवे बायीं आँख दूसरी की निस्बत कमज़ोर होगी। मतलब ये की जिस तरफ सनीचर का असर होगा वह कमजोर होगी। या ग्रहों की ३५ साला चाल में अगर एक तरफ सनीचर का बुरा असर नहीं आया तो दूसरी तरफ ज़रूरी है की आयेगा। जिन की दोनों आँखों की नज़र यकसा हो वह बेशक दोनों चक्करों में बचे रहेंगे। सूरज पहले वक़्त का मालिक है या दायें तरफ का और चंदर दूसरे वक़्त रात या बायीं तरफ का। इस लिए जिन की दायीं नज़र उम्दा है सूरज के वक़्त में सनीचर का अमूमन बुरा असर न होगा। और अगर होगा तो चंदर क वक़्त में हो सकता है। इस तरह दूसरी आँख की नज़र से असर होगा। इस असूल पर दिमाग़ के लिहाज़ से सनीचर का खाना नंबर १३ होंशियारी जो आँखों की जानहै या जो आँखों की सिफ़त है और सनीचर की सिफ़त है। खाना नंबर २० और २१ के उपर होता हुआ भी आँखों में सनीचर के घर जाने के वक़्त फिक्र में रहेता है। और बृहस्पत की मदद ढूँढता रहेता है। और सनीचर जब उंच होवे तो बृहस्पत का काम देता है। दायाँ सांस चलने के वक़्त सूरज का असर होगा। और बायें में चंदर का असर होगा। इसलिए शुभ और ज़्यादा देर रहने वाले काम सूरज की उम्र १०० साल तक रहने वाले या बहुत ज़रूरी काम दायें सांस के चलते वक़्त और मामूली काम चंदर के असर या बायें सांस के चलने के वक़्त जायज़ गिने गए हैं। दो हर्फी बात में दायाँ हिस्सा सूरज का और बायां हिस्सा चंदर का है।

इसी उसूल पर तिल (स्याह दाग़) अंग फड़कना वगैरह के लिए दायां ही पहलू को नेक गिना है। और हाथ भी दायां नेक ही गिना गया है और आगे दायें हाथ का भी
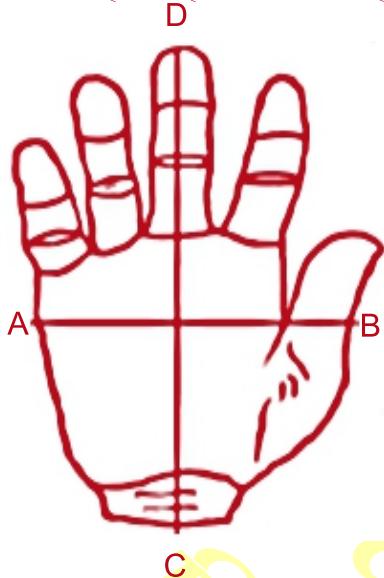
दायाँ हिस्सा असल मुबारक है। खत AB के ऊपर हिस्सा या मध्यमा की तरफ का ऊपर का हिस्सा और कलाई वाला निचला हिस्सा इसी तरह ही खत CD से तक़सीम शुदा अंगूठे तरफ का टुकड़ा हाथ का दायां और कनिष्का की तरफ का टुकड़ा हाथ का बायां हिस्सा होगा। ख़्वाह हाथ बजाते खुद दायां ही है। इस दायें हिस्से पर घोड़े सांप मंदिर वगैरह मुतफ़र्रिक निशान मुबारक होंगे। और सनीचर का असर भी कम होगा। यानी रेखा में भी जो सनीचर की उर्ध रेखा से निकल कर दायें हाथ के दायें हिस्से में जावे और हाथ के ऊपर के हिस्से का रुख करें नेक होंगी। मकान वगैरह बनेंगे। बायें तरफ हाथ के निचले हिस्से क रुख रखने वाली रेखा मकान बनना बंद या बने हुए गिराएगी बुरा असर होगा। इसी लिए ही मंगल बद ने भी बायें हिस्से में जगह ली है। जो मौत का घर है।

फ़रमान नंबर ६१

चहेरा व माथा

अब्रू से ऊपर और दिमाग़ की हद से नीचे (कान के सुराख से ९०° दर्जा पर सिर और अब्रू को खींचा हुआ ख़त दिमाग़ के हिस्से को पेशानी से अलाहदा कर देता है। पेशानी होगी।
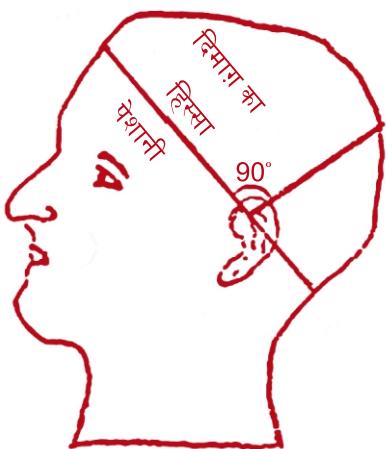
१. चहेरा की चौड़ाई - कुल चहेरे की लंबाई का २/३ दो बटा तीन। अगर कुल के तीन हिस्से करें तो तीनों हिस्सो से "दो हिस्से" नेक होती है। ये चौड़ाई जिस क़दर इस मिक़दार से घटे उसी क़दर नेक असर ज़्यादा बढ़े और मुबारक होवे।

२. पेशानी की चौड़ाई - कुल चहेरा की लंबाई का १/४ एक बटा चार। अगर कुल चार हिस्से करें तो चार में से "एक हिस्सा" नेक होती है। पेशानी की इस मिक़दार से जिस कदर चौड़ाई बढ़े इसी कदर नेक असर ज़्यादा बढ़े और मुबारक होवे।

इस तरह लंबा चहेरा और चौड़ी पेशानी वाला - हमदर्द, बुलंद मर्तबा होगा।

चौड़ा चहेरा व तंग पेशानी - खुदगर्ज़ व मंदभाग होगा।

अगर नाक की तरफ से दोनों कानों का दरमियानी फासला ज़्यादा होवे तो चहेरा चौड़ा गिना जाता है।

३. पेशानी का ऊपर का हिस्सा जिस क़दर बाहर को उभरा हुआ होवे उसी कदर ज़्यादा कुव्वते दरयाफ्त और चाल चलन उम्दा होगा।

४. पेशानी का निचला हिस्सा जिस कदर बाहर को उभरा हुआ होगा। उसी कदर कुव्वते ख़्याल ज़्यादा नेक तरफ काम करने वाली होगी।

५. कुशादा पेशानी में अक़्ल की बारीकी ज़्यादा होगी।

६. पेशानी पर तिकोन तराज़ू मछली त्रिशूल अंकुश पदम पंखा तलवार या परिंद का निशान कोई भी एक हो तो अज़ीज़ों व रिशतेदारों का सुख नसीब न होवे। **(सफा ३१८ अल्प आयु व सफा १६७ जुज ३६ व सफा १६३ जुज २०)**

७. कौवे के पांवो का निशान होवे तो कम उम्र मंदभाग होगा।

सात या ज़्यादा लकीरें हों तो कज़्जाक होगा।

८. पेशानी पर टूटी फूटी लकीरें बहुत हों या उन का झुकाव नीचे की तरफ मानिंद हो तो अल्प आयु होगी। यानी कम उम्र और ज़िंदगी उम्र के हर आठवें साल ८-१६-२४-३२-६४ तक खतरे में होवे।

९. पेशानी व चहेरा का क़िस्मत पर बहुत असर लिया गया है। यानी क़िस्मत का सही व दुरस्त जवाब इस बात मुतलका है।

१०. पेशानी पर तिलक लगाने की जगह ▲ या ┻ हो तो हुक्मरान आसुदा हाल होगा **(सफा १४६ जुज २५)**

११. चौड़े चहेरे वाले में ख़ुदगर्ज़ाना रगबतें यानी दिमाग़ के खाना नंबर ७ से १२ तक की ताक़तें यानी (७) ज़िंदगी बढ़ने की ताक़त, (८) हमला रोकने की ताक़त, (९) बदला लेने की ताक़त, (१०) ज़ायका (११) ज़ख़ीरा जमा करने की ताक़त, (१२) राज़दारी ज़्यादा होंगी, जहानत कम होगी। और जिस क़दर चहेरा चौड़ाई से लबाई वाला होता जावे उसी क़दर ये ख़ुदगरज़ाना ताक़तें कम होती जाएगी और जहानत बढ़ेगी। या लंबे चहेरे वाला हमदर्द होता चला जायेगा।

१२. मरद का चहेरा व मुंह दोनों ही चौड़े हों - ख़ुदगर्ज़ होगा।

१३. मरद का चहेरा व मुंह दोनों ही लंबे हो तो नेक बख़्त होगा।

१४. औरत का चहेरा लंबा व मुंह लंबा - बद बख़्त होगी।

१५. औरत का चहेरा चौड़ा व मुंह लंबा - नेक नसीब होगी।

१६. पेशानी पर सुर्ख़ रंग रगहाए या नाडें कम उम्र होने की दलील है।

सब्ज़ रंग की नाड़ें मुबारक होंगी। ख़्वाह मरद की ख़्वाह औरत की हों।

फ़रमान नंबर ६२

सिर **(बुध)**

सिर गोल और आंखें गोल - ख़ुश नसीब। औरत अमीर खानदान से होगी।

सिर छोटा पेट मोटा हो तो बेवकूफ होगा।

फ़रमान नंबर ६३

सीना या पुश्त की हड्डियाँ **(राहु)** तादाद में अगर हों

कुंडली का खाना नंबर	हड्डियों की तादाद	
२	८	राजा या हुक़्मरान होगा।
३	९	रईश जायदाद वाला।
१०	**४**	फ़िक्र व ग़म में गर्क़ होवे।
६	१२	ब्रह्मशनास या परमात्मा की छिपी हुई ताक़त को पहेचान ने वाला और मालिक को हाज़िर नाज़िर मानने वाला हो।

कुंडली का खाना नंबर	हड्डियों की तादाद	
७	१३	हमेंशा बीमार रहे।
८	१४	मालदार होवे। बुरी करतूत खोटे काम करने वाला हो।

फ़रमान नंबर ६४

गरदन (केतु) पर बल या सिकन पड़ते हों तादाद में

कुंडली का खाना नंबर	गरदन पर बल	
८	१	उम्र दराज़ होवे।
९	२	दौलतमंद होगा। मगर दस्ती काम से।
१०	३	दौलतमंद होगा। मगर बदफ़ैल होगा।
११	४	दलिद्दर व परेशानी का घर होवे।
१२	बगैर बल	दौलत मंद होवे।

फ़रमान नंबर ६५

पेट (मंगल बद) पर अगर बल पड़ते हों और तादाद में हों

कुंडली का खाना नंबर	बल की तादाद	
२	१	जंग व जदल व लड़ाई से मारा जावे।
३	२	अय्याश होवे।
४	३	लेक्चरार। नसीहत करने वाला होवे।
५	४	साहिबे इल्म और साहिबे औलाद होवे।
६	५	हुक़्मरान होवे।
१०	बगैर बल	दौलत मंद होवे।

फ़रमान नंबर ६६

जिस्म पर बाल (सनीचर)

हर एक बाल के सुराख को मुसाम कहते हैं।

(१) एक मुसाम से अगर बाल पैदा होवे तादाद में हों

कुंडली का खाना नंबर	तादाद बाल	
७	१	हुक्मरान दौलतमंद अक़्लमंद।
६	२	हुनर मंद अक़्लमंद।
२	३	ख़ुदा परस्त।
३	४	मुफ़लिस - बेहुनर।

कुंडली का खाना नंबर	जुज़
१२	(२) सिर पर टटरी हो (बगैर बाल जगह) दौलतमंद होगा।
११	(३) दाढ़ी मूंछ के बाल कम हों या बिलकुल न हों तो कम हौसला उम्मीदों में मायूसी ख़ुद पैदा करदा जायदाद न होवे।
५	(४)सारे जिस्म पर ज़्यादा बाल हों तो बदनसीब होगा।
९	(५) पुश्ते पाये या पेशानी पर बाल हों तो मंदभाग होगा।
८	(६)छाती पर ज़्यादा बाल हों तो उम्र ही गुलामी में गुज़रे।
४	(७) छाती पर बाल बिलकुल न हों तो ना क़ाबिले एतबार। इसके दिल का कोई भरोसा न होगा।
१	(८) तमाम जिस्म पर हद से ज़्यादा बाल तंग हाल होगा।

फ़रमान नंबर ६६ A

दांत (बुध)

(१) अगर बाहर को निकले हुए हों तो अक़्लमंद मगर क़िस्मत के साथ की कोई तसल्ली नहीं होगी। **(कुंडली का खाना नंबर ६)**

(२) तादाद में ३० से कम और ३२ से ज़्यादा ख़्वाह मरद हो ख़्वाह औरत हो मनहूस मंदभाग। **(कुंडली का खाना नंबर १२)**

(३) तादाद में ३२ हों जो अनभोल या अचानक सहवन बोले पूरा होवे। कहा हुआ सुख़न या दुरबचन खाली न जावे। ऐसे आदमियों को सताना नेक फल न देगा। ख़ुद भी ऐसे आदमियों को गुस्से से परहेज़ चाहिये। ऐसे आदमियों से बुरी आवाज़ अमूमन ज़्यादा निकल जाया करती है। **(कुंडली का खाना नंबर २)**

(४) तादाद में ३१ हों तो सयादतमंद होगा नेक असर देगा। (कुंडली का खाना नंबर ४)

<u>फ़रमान नंबर ६७</u>

(१) सपाट हाथ

उंगलियों के दरमियानी जोड़ मोटे और सिरे इनके गोल हों तो ऐसा शख़्स महेनती इरादा का पक्का होवे। जिस बात पर अड़े पीछे न हटे।

(२)

मुरब्बा हाथ

उंगलियों के सिरे चौड़े हो हुकूमत का ख़्वाहिशमंद।
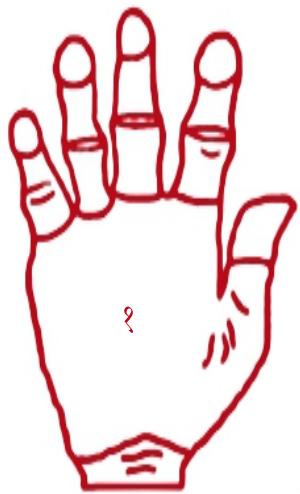
इरादे का पक्का होवे।

(३)मशलशी हाथ

उंगलिया नोकदार और जोड़ इनके मोटे हों तो हुस्न परस्ती पर मर मिट जाने वाला हो।
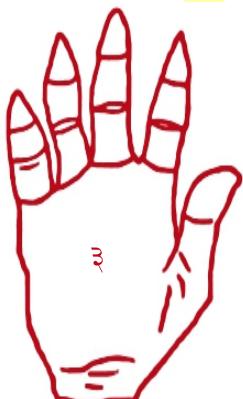
(४) रूहानी हाथ

उंगलियों के जोड़ मालूम ही न हों और नाखून वाली पोरी नोकीली सी हो तो मज़हब पर मर जाने वाला हो। जो क़िस्मत करेगी देखा जावेगा के कौल आदि होगा। ऐसे शख़्स से किसी को भी फ़ायदा न होगा। आदत का लापरवाह होगा। माली हालत दरमियाना होगी।
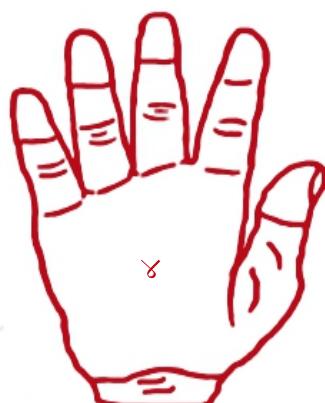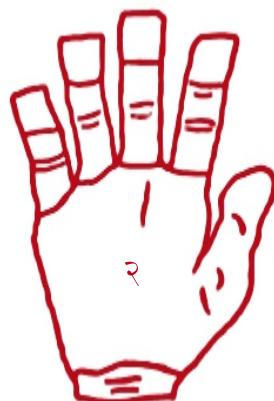
(५) मन्तकी हाथ

अंगूठा लंबा उंगलियों के जोड़ बाहर को या मोटे हथेली का कनिष्का के नीचे का हिस्सा बाहर को निकला हुआ। मालूमात की जड़ तक पहुँचने वाला होगा।

(६)

मुतफ़रका हाथ
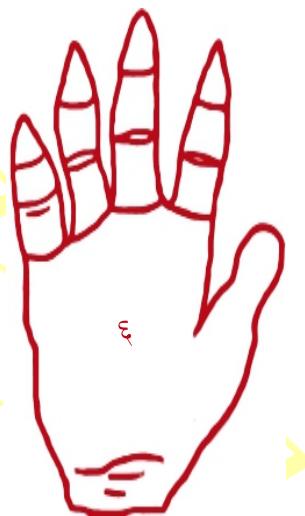
अंगूठा छोटा उँगलियाँ तराशी हुई सी हों तो मवेशी पालने का शौकीन होवे। और मवेशों से फाइदा उठावे।

(७) अंगूठा लंबा उंगलियों के सिरे चौरस या मुरब्बा हों तो झगड़ालू होगा।
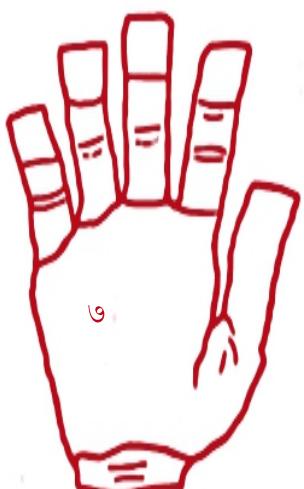
(८) अंगूठा व उँगलियां दोनों चौड़े हों तो मामूली ज़िंदगी बसर करने वाला होवे।
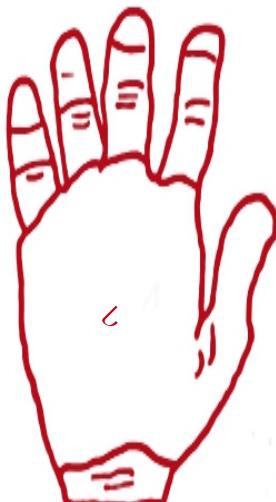
फ़रमान नंबर ६८

हाथों की रुनमाइ (ज़ाहिरदारी)

१	सख़्त हाथ वाला	हकूमत करने में यावर होगा।
२	नरम हाथ वाला	आराम तलब होगा।
३	नरम और फैले हुए	सुस्त तबीयत मंदभाग होगा।
४	सख़्त और मज़बूत	सबर और फुर्ती वाला होगा।
५	छोटा सा हाथ	ज़िंदगी गुलामी में गुजारनेकी अलामत है।
६	लंबे हाथ वाला	छानबिन की लियाक़त से ज़िंदगी उम्दा बना लेने वाला होगा।
७	लंबा बदनुमा सख़्त	जल्लाद, बेरहम, मंदभाग होगा।
८	हाथ और पांव दोनों ही छोटे छोटे	मतलब परस्त, ख़ुद अपने लिए मंदभाग दूसरों के लिए मनहूस हो।
९	साफ और उम्दा हाथ	अक़्ल व भलमानसी ज़ाहिर करता है।

ख़ुलास्तन

१०. अगर उँगलियाँ लंबी लंबी हों तो हाथ भी लंबा होगा। तो सिर और कद भी लंबा या बड़ा होगा। तो ख़ुशगुज़रान होगा। बशर्ते की हथेली की लंबाई मध्यमा की लंबाई से ज़्यादा होवे। अगर हथेली में गहेराई होवे तो ख़ुद कमाई कर के ख़ुशगुज़रान होगा। और अपने बाप की निस्बत मरतबा में बढ़ जायेगा। और जायदाद में इज़ाफ़ा करेगा। और अगर हथेली की लंबाई मध्यमा से कम हो और हथेली में गहेराई की बजाये ऊंचाई हो यानी हथेली बाहर को उभरी हुई हो जिस पर पानी जमा न हो सकता होवे। (हाथ को ख़ूब अकडा कर पता लग जाता है) तो बुज़ुर्गों की जायदाद ख़ुर्द-बुर्द कर जाने के अलावा दूसरों से भी कर्ज़ा उठा खा - पी कर बरबाद कर जावेगा। यानी पानी से भरे तालाब को ख़ुश्क किया। तय की मिट्टी भी उड़ा देगा।

फ़रमान नंबर ६९ (हथेली)

हथेली भारी या मोटी - लालची होगा। मामूली दर्जे की ज़िंदगी वाला हो क्यूंकी

इस हालत में तर्जनी हासिद - मध्यमा - बेबुनियाद खयालात। अनामिका मशहूरी पसंद। कनिष्का - बेवफ़ा ज़ाहिर करती है।

२. हथेली लागर या पतली कमज़ोर सी गरीबाना हालत व गरीबाना रोज़गार वाला होगा।

३. हथेली लंबी ज़बान में ज़ाहिरदारी या ज़ाहिर करने की ताक़त ज़्यादा हो। जिस क़दर लंबाई ज़्यादा होवे उसी कदर ये ताक़त ज़्यादा होवे।

४. लंबी व गोल हथेली वाला। हुक्मरान खुश गुज़रान, आसुदा हाल होवे।

शक़्ल नंबर ५ व ६ हथेली
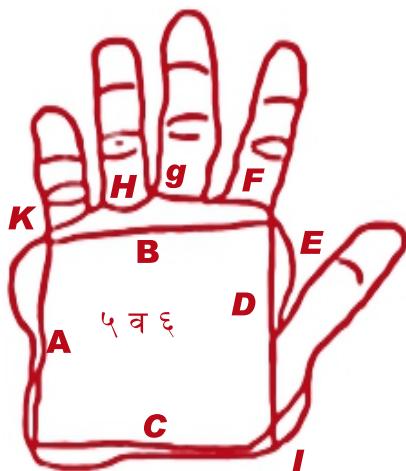
५ हथेली की चारों तरफ़े

A बुध से चंदर की तरफ की लंबाई वाला हिस्सा।

जिस क़दर ज़्यादा लंबाई उसी क़दर ज़बान की ताक़त ज़्यादा और जिस क़दर कनिष्का की जड़ से बाहर को उभरी हुई या निकली हुई इसी क़दर रसूख़ पैदा करने की ताक़त और रसूख़ पैदा किया हुआ ज़्यादा हो।

B बृहस्पत से बुध की तरफ़ उंगलियों की जड़ वाला हिस्सा।

जिस क़दर लंबाई ज़्यादा उसी क़दर ज़हनी और दिमाग़ी ताक़त ज़्यादा होगी। और उसी क़दर बुध के बुर्ज की पाएदारी होगी।

C शुक्र से चंदर वाला हिस्सा जिस क़दर लंबाई इसी क़दर ख़्वाहिशाते नफ़सानी या शुक्र की ताक़त ज़्यादा या शुक्र का असर ज़्यादा होगा।

D शुक्र की जड़ से बृहस्पत के आख़िर तर्जनी की जड़ तक का हिस्सा जिस क़दर लंबाई ज़्यादा उसी क़दर ज़ाती हिस्सा, हौसला में ज़्यादा या अंगूठे की ताक़त ज़्यादा या मंगल नेक का नेक असर ज़्यादा होगा।

हथेली की बैरुनी हुदूद का असर

E - १ अंगूठे और तर्जनी की जड़ का दरमियानी फासला (जिस में मंगल नेक और बृहस्पत है) हौसला और अंदरूनी दिली ताकत की मजबूती से मुतलका है।

F - २ तर्जनी और मध्यमा की जड़ों का दरमियानी फ़ासला (बृहस्पत और सनीचर का दरमियान) कुव्वत खयालात सोच विचार की ताक़त से मुतलका है।

G - ३ मध्यमा और अनामिका की जड़ों का दरमियानी फ़ासला (सनीचर व सूरज का दरमियान) खयालात की आज़ादी ज़ाहिर करता है। मौके के मुताबिक लट्टू की

तरह फ़ौरन पहलू बदल लेने वाला होगा।

H - ४ अनामिका और कनिष्का की जड़ों का दरमियानी फ़ासला (सूरज और बुध का दरमियान) ख़ुद काम करने की ताक़त व आदत ज़्यादा दूसरों की कमाइ की तरफ़ उम्मीद रखने की बजाए ख़ुद अपनी कमाई में बरकत पर शूकर व सबर करने वाला हो।

K - ५ कनिष्का की जड़ और बुध का हिस्सा हथेली से बाहर को निकला हुआ सिर्फ़ बुध के बुर्ज की हद - बोलने की ताक़त से लोगों में रसूख़ पैदा करने की ताक़त ज़्यादा।

L - ६ शुक्र की जड़ से चंदर की जड़ का हिस्सा जो बाजु की चौड़ाई या कलाई की चौड़ाई होगी।

दिली मुहब्बत और लगन शुक्र या औरत की लगन कुव्वते नफ़्सानी (इश्क़ व मुहब्बत) माता की मुहब्बत पितरों या बुज़ुर्गों की सेवा की ताक़त से मुतलका होगा।

फ़रमान नंबर ७० हाथ की उंगलिया

अमूमन हाथ की पाँच उंगलिया होती हैं। और अगर तादाद में छह हो तो कम उम्र और मंदभाग होगा। वरना लंबी उम्र और ख़ुशहाल व उम्दा हाल होगा। अंगूठा नर उंगली कहलाता है। जिस का ज़िक्र अलाहदा हुआ है। बाकी चारों उंगलिया बारह राशियों की मालिक हैं। जिन से तमाम दुनियावी कारोबार मुतलका है। हर एक उंगली की जुदा जुदा ताक़त है। और उंगली की हर एक पोरी या टुकड़े या राशि का जुदा जुदा असर है।
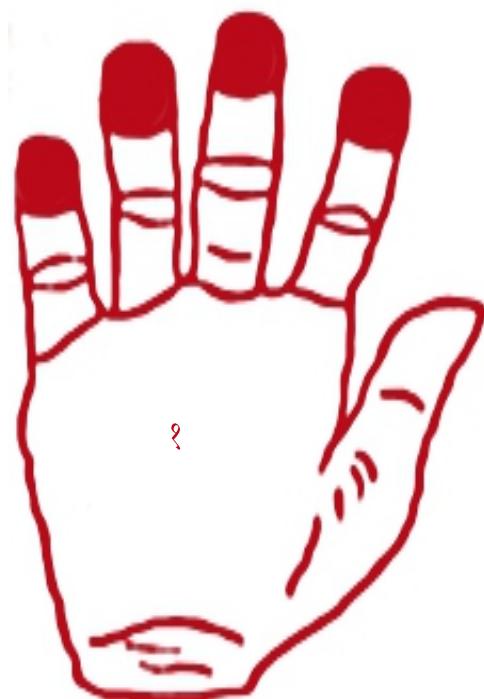
१. नाख़ून वाली पोरी या टुकड़ा रूहानी ताक़त

२. दरमियानी हिस्सा जिस्मानी ताक़त
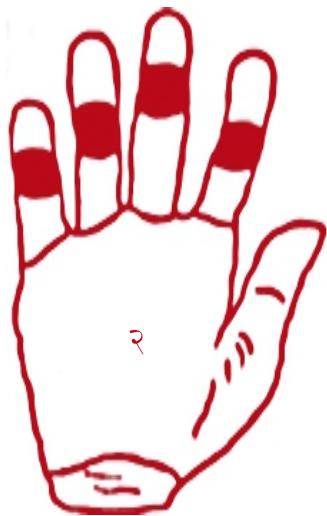
३. निचला हिस्सा नफ़्सानी ताक़त।

अंगूठा
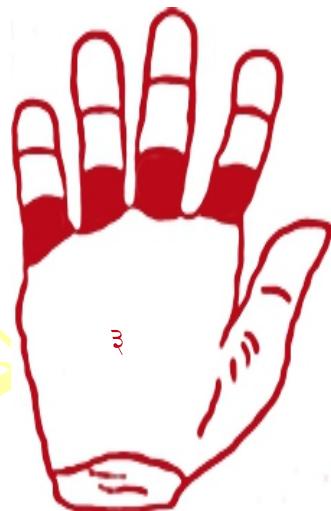
अंगूठे की लंबाई उंगलियों से ख़ास मुतलका है।
और इन के असर में कमी बेशी कर देती है।

४. अनामिका मध्यमा से बड़ी दौलत मंद मगर हासीद व कंजूस।
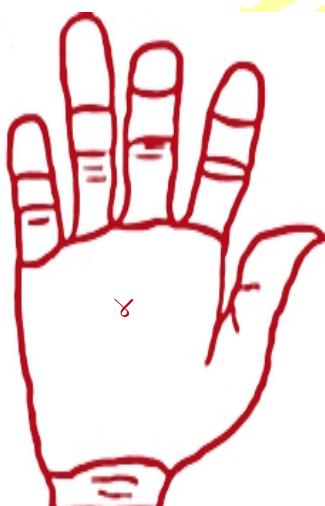
५. मध्यमा अनामिका से बड़ी दानिशमंद साहिबे इज़्ज़त। (आम दुनिया वी हाल)
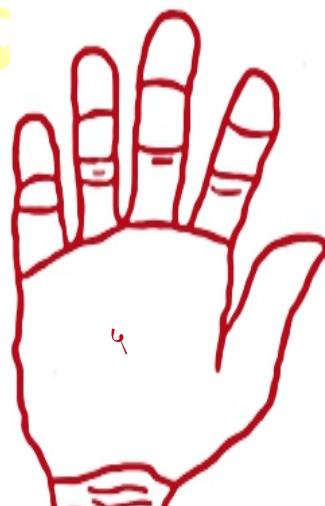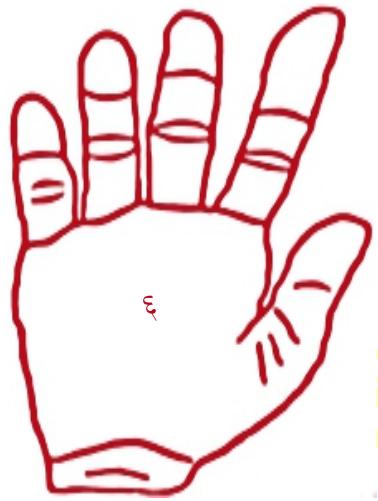
६. तर्जनी मध्यमा से बड़ी पादरी या मुल्की लहर के खयालात करम धरम वाला सोच कर कम खर्च करने वाला।

७. अनामिका तर्जनी से बड़ी मशहूर ज़िंदगी वाला होवे।

७A. तर्जनी और मध्यमा बराबर तो नेपोलियन जैसा ज़माने में एक बहादुर होगा
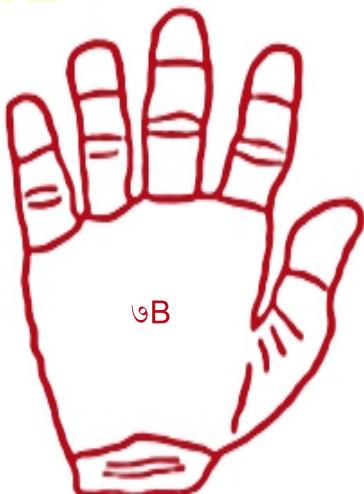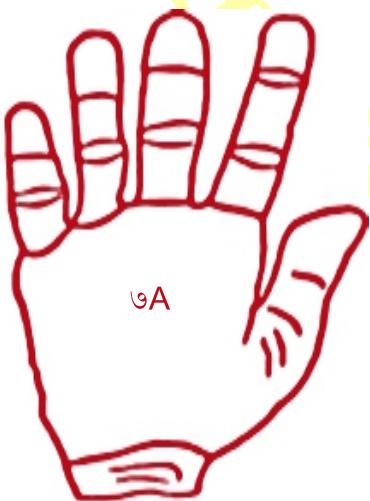
७B. तर्जनी और अनामिका बराबर मशहूर ज़िंदगी का मालिक हो।
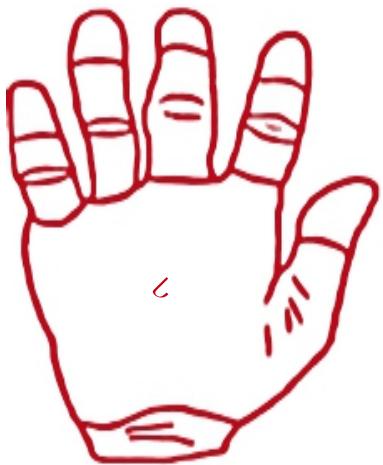
८. मध्यमा और अनामिका बराबर
मशहूर जवाहरिया होवे।
सूरज सनीचर बराबर जमा तफ़रीक
बराबर।
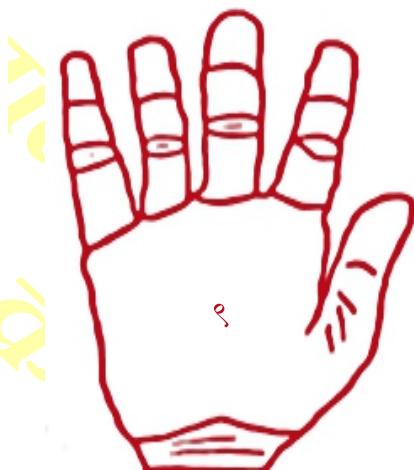
९. कनिष्का और अनामिका बराबर
तहरीर व तक़रीर में यकसां माहिर।

उंगलियों का असर

बलिहाज़ लंबाई हर की अपनी अपनी

नाम उंगली	लंबी	बहुत लंबी	बहुत ही लंबी	बहुत छोटी
१०.तर्जनी	हुकूमत	सोच विचार	हकूमत का जला हुआ	हासिद
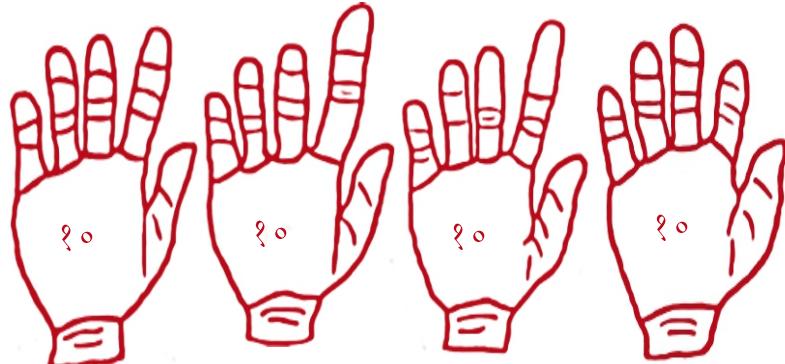
नाम उंगली
११.मध्यमा
लंबी
जल्द
समझने वाला
बहुत लंबी
अलेहदगी
बहुत ही लंबी
मुर्दा खयाल
खयालात
बहुत छोटी
बेबुनियाद
११
११
११
११
१२. अनामिका
दस्ती काम
मशहूर बहरूपिया
शौकीन खयालात
मशहूरी पसंद
१२
१२
१२
१२
१३. कनिष्का
बोलने की ताकत
तक़रीर
ज़ुबान से नुक़्स
तक छुपा लेवे
बेवफ़ा
१३
१३
१३
१३
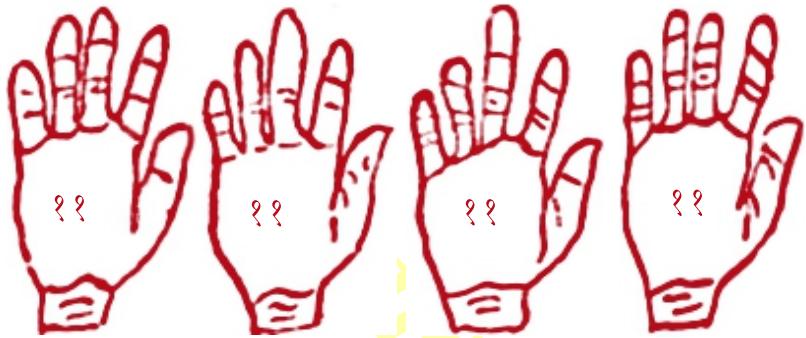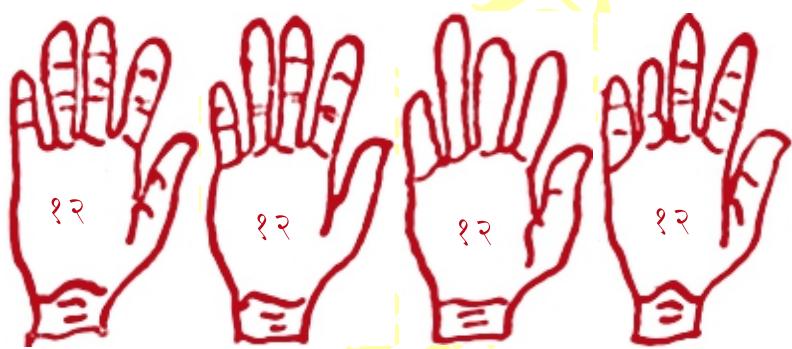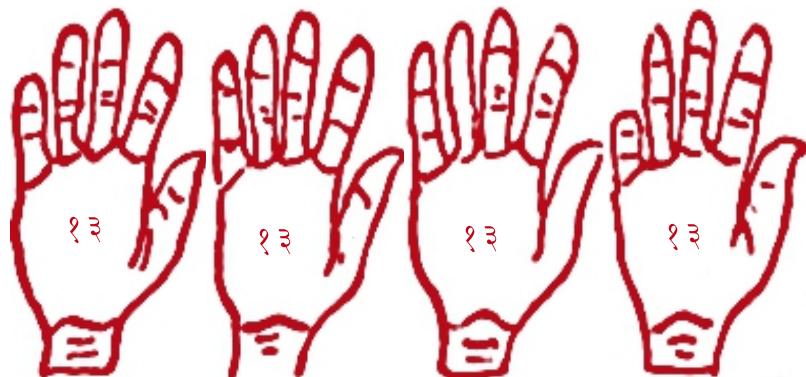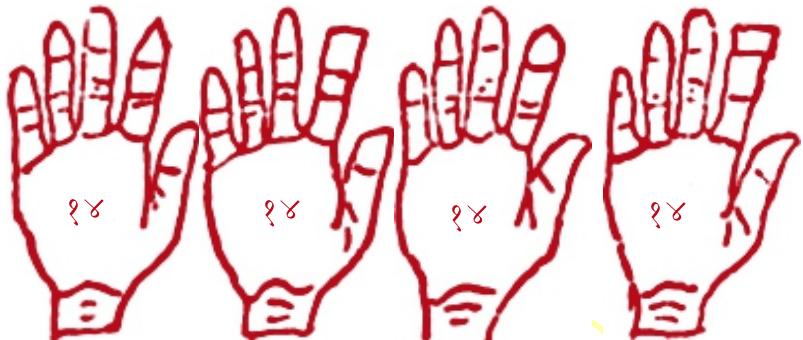
नाम उंगली
१४.तर्जनी
उंगलियों के सिरे
नोकदार
चौड़ा
गोल
मुरब्बा
नेक, ईमानदार,
तेज़ फ़हम
बहादुर
साहिबे तदबीर
सच्चाई पसंद
१४
१४
१४
१४
१५. मध्यमा
बच्चों के खयालात
वहमी
अक़्लमंद
दानिशमंद
१५
१५
१५
१५
१६. अनामिका
सच्चाई
हुनरमंद
बहादुर
लालची
१६
१६
१६
१६
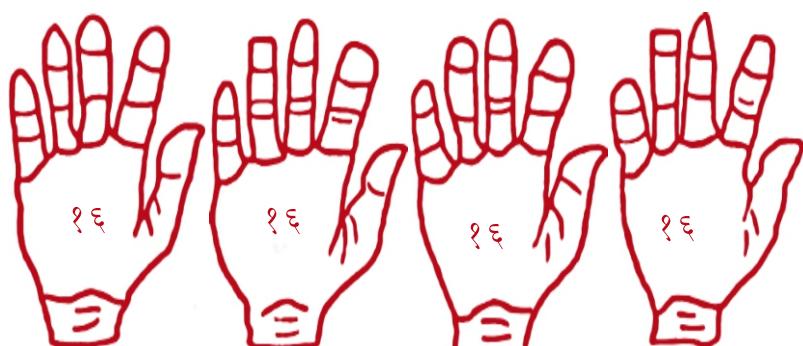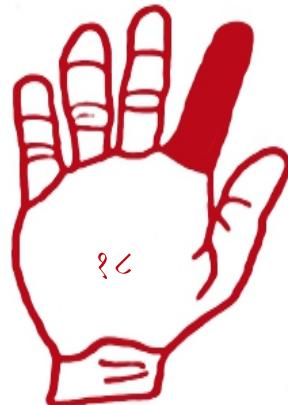
नाम उंगली
नोकदार
चौड़ा
गोल
मुरब्बा
१७. कनिष्का नशीहत करने वाला
हाज़िर जवाब
ज्ञानी
पुख्ता राय
१७
१७
१७
१७
सीधी उंगली का असर
१८. तर्जनी. . . . हुकूमत की उंगली:
इरादा की पुख़्तगी, बुलंद ख़याली।
१८
१९. अनामिका . . . . ख़ुददस्ती महेनत की
आदत, हुनरमंदी
पेशावरी।
१९
२०
२०. कनिष्का . . . . . बोलने की ताक़त,
दिमाग़ी ताक़त
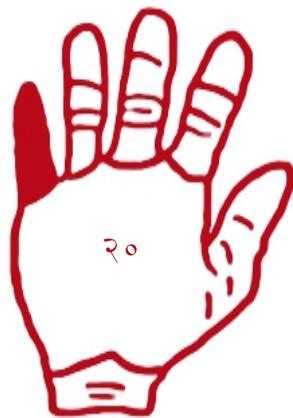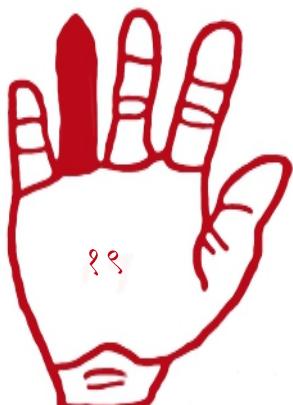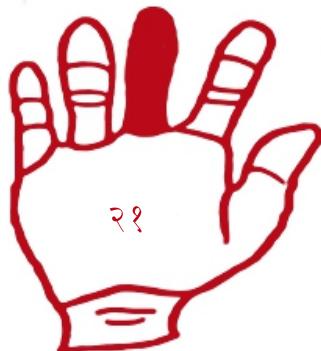
२१. मध्यमा . . . . सन्यास उदासी, अलेहदगी, गोशा पसंदी

२२. जो उंगली टेढ़ी हो जावे अपनी ताक़त छोड़ देती है। और जिस उंगली की तरफ़ झुक जावे . . . . उसी उंगली का असर पैदा होगा।

उंगली के झुकाव से मुराद ये है की उंगली की बनावट में टेढ़ापन होवे।

२३. उंगलिया नाखून वाले सिरे से नीचे की तरफ़ जड़ को अगर गाजर की तरह दर्जा-ब-दर्जा मोटी होती जावें और उनको बाहम मिलाने से जड़ों में कोई सुराख़ न रहे तो सारी उम्र आराम। ख़ुश ख़ुराक, ख़ुश पोशाक, उम्दा हाल मजबूत जिस्म होगा। तंगदस्ती कभी न होगी। यानी बवक़्त ज़रूरत रुपये का बंदोबस्त मौजूद होगा। अमूमन अय्याश होगा। उंगली की बनावट का झुकाव का असर ना की ज़ाहिरा झुकाव।
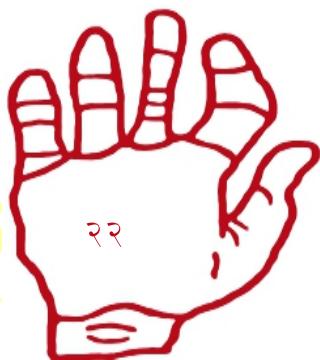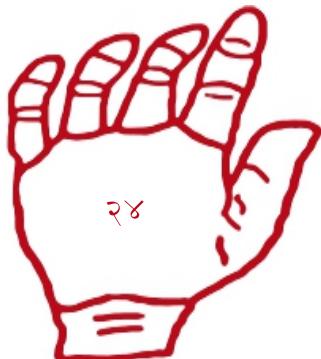
उंगली	झुक जावे	जिस तरफ़
तमाम	तर्जनी	इरादा पक्का, आज़ाद तबीयत बढ़ने का ख़याल हौसला भरी उम्मीद का आदमी होगा।

उंगली	झुक जावे	जिस तरफ़
तर्जनी	मध्यमा	मन्दर्जा बाला का उल्टा होगा।

उंगली	झुक जावे	जिस तरफ़
तमाम	मध्यमा	हद से ज़्यादा उदासी अलेहदगी पसंद

उंगली	झुक जावे	जिस तरफ़
मध्यमा	तर्जनी	दुनिया को छोड़ जाने वाला। मुर्दा ख़याल उदासी।
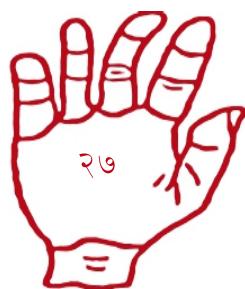
उंगली	झुक जावे	जिस तरफ़
मध्यमा	अनामिका	एक लम्हा ख़ुश दूसरा लम्हा उदास। अजीबो गरीब तबीयत

२९

उंगली	झुक जावे	जिस तरफ़
अनामिका	मध्यमा	बुरी शोहरत पसंद (मद्धम सी हालत में)
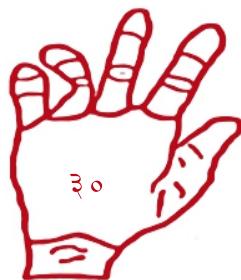
उंगली	झुक जावे	जिस तरफ़
अनामिका	कनिष्का	दस्ती काम, ब्योपारी पैसे का पुत्र

उंगली	झुक जावे	जिस तरफ़
कनिष्का	अनामिका	अमली लियाक़त दस्ती काम को तिजारत से अच्छा समझने वाला।
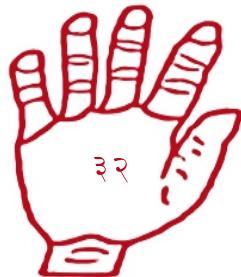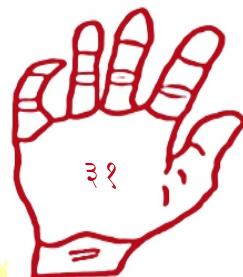
हाथ की उंगलियों के नाखून

नाखून ९ महीने में पूरा हो जाता है। इस लिए फटे हुए नाखूनों से बीमारी के वक़्त का पता लग जाता है।

३२. गोल इल्म व हुनर वाला, शर्मसार होवे।

३३. चौड़े पट्ठों की बीमारी होवे।
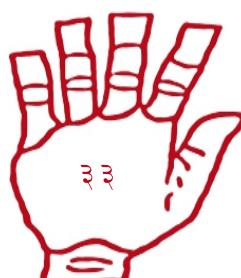
३४. छोटे तंग दिल - लालची - जल्दबाज़ - रंजीदा।
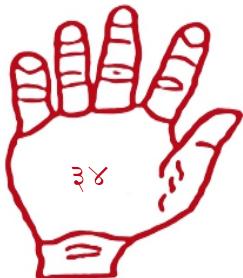
३५. बहुत छोटे कम अक़्ल - जल्दबाज़।

३६. दरमियान अच्छे और मुबारक असर वाले।
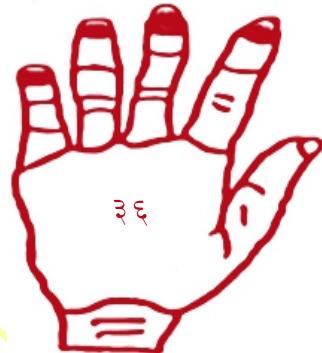
३७. लम्बे फेफड़े और छाती की बीमारी, जिस्मानी हालत कमज़ोर होवे।
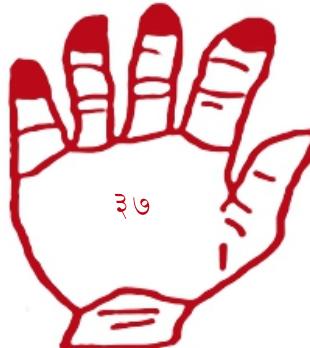
३८. लम्बे और बहुत तंग पुश्त की बीमारी होवे।
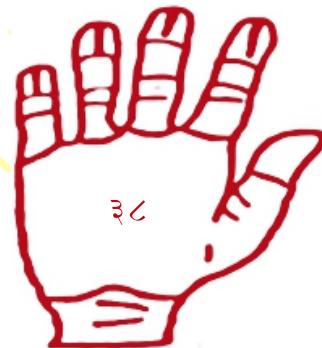
३९. पतले और झुके हुवे टेढ़े नाजुक हालत ख़राब मायनों में।
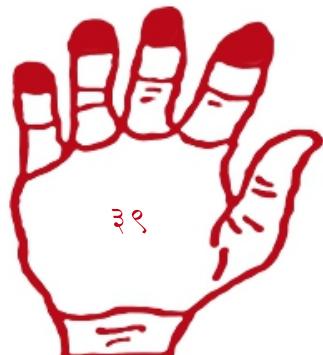
४०. सब्ज़ रंग .... शरीर फसादी
नीला रंग .... }
सफ़ेद रंग .... } ख़ून की कमी, बीमार
ज़र्द रंग .... दिल की बीमारी
स्याह रंग................ उम्र भर कम दौलत
सोने या सिक्के का रंग... परेशानी
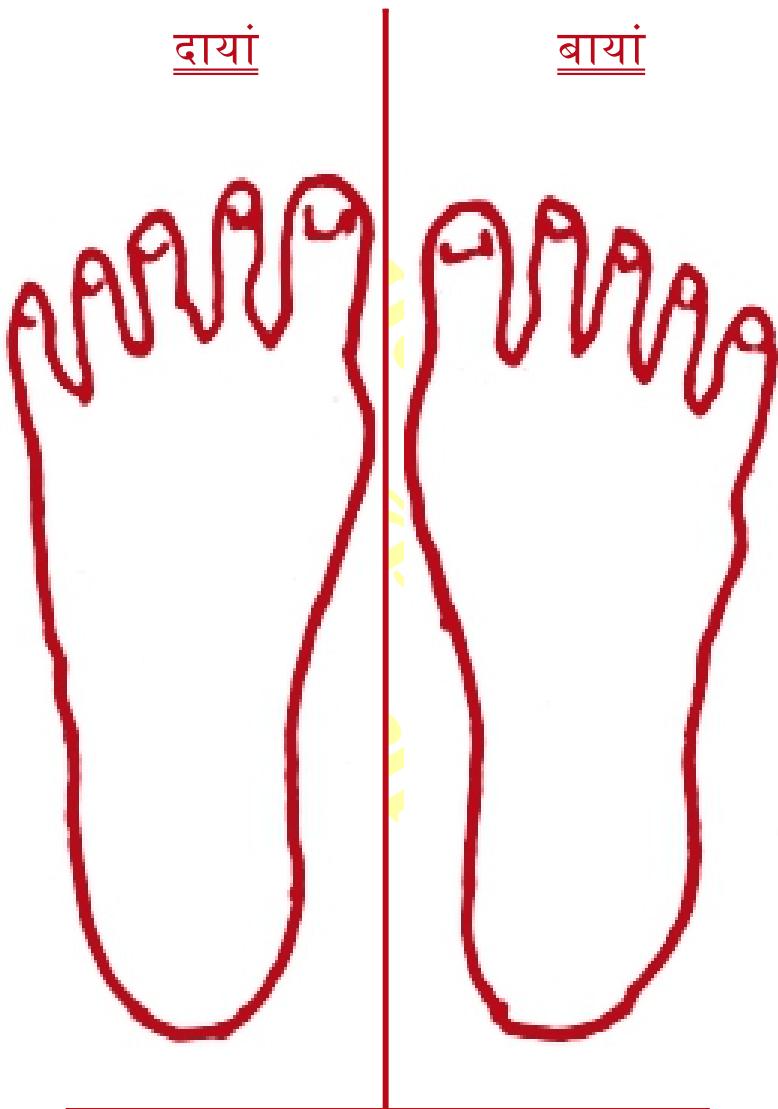
उंगलियों के वही नाम है जो हाथ की उंगलियों के हैं और
बुर्ज़ व राशियाँ वगैरह सब कुछ हाथ की मानिंद गिना हैं

फ़रमान नंबर ७१

पांवो का हाल

पांव का वही हिसाब है जो हाथ का है. . . . पांव हंमेशा ज़मीन से लगता है। और ज़मीन को शुक्र माना है। शुक्र का बुर्ज अंगूठे पर होता है। इस लिए पांव की सिर्फ.... एक रेखा हाथ की रेखाओं से फर्क पर होती है। बाकी बातों में पांवो की सब रेखा हाथ की रेखा की मानिंद देखी जाती हैं। पांवो में रेखा अगर एड़ी से निकल कर अंगूठे तक चली जावे तो सवारी का सुख होगा। चक्कर, शंख, सदफ़ का पांवो की उंगलियों पर होने का असर औलाद में ज़िक्र है। और बाकी मुतफ़र्रिक निशानात का हाथ के ख़ास निशानो में ज़िक्र है। उंगलियों को छोडकर (पांवो की) अगर चक्कर, शंख, सदफ़ का निशान दायें पांव पर हो तो बुर्ज या ग्रह के क़ायम होने का नेक असर हाथ की तरह होगा। मगर बायें पांव पर चक्कर, शंख, सदफ़ बुर्ज के नीच होने का असर देंगे। अगर बायां पांव दायें से बड़ा हो तो कम हौसला और डरपोक होगा।

फ़रमान नंबर ७२

पांवो की उंगलिया

१) अंगूठा व तर्जनी बाहम मिले हुए हों : - मंदभाग होगा।
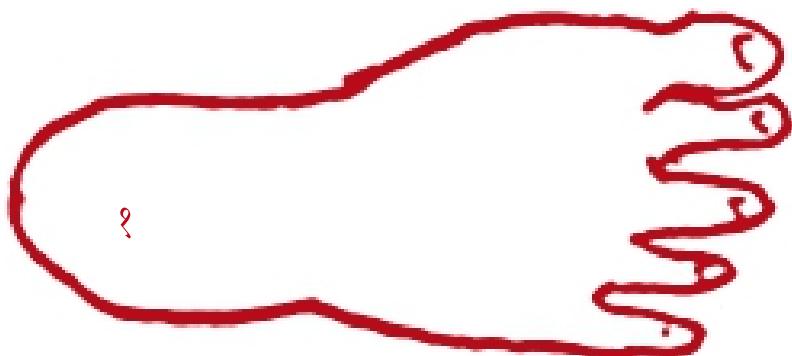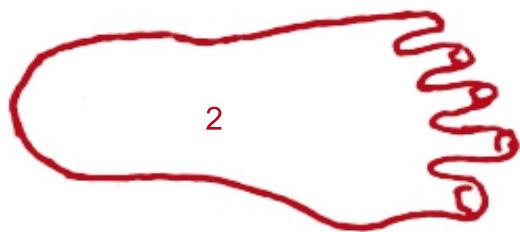
२) अंगूठा छोटा हो
एक जगह न रहे।
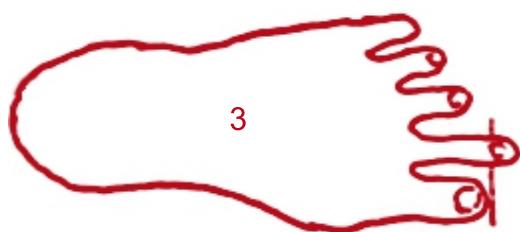
३) अंगूठा छोटा और
तर्जनी बड़ी हो
पहले लड़का या लड़की
का सुख न हो।
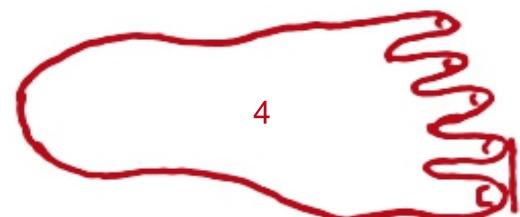
४) अंगूठा और तर्जनी
बराबर ख़ुशगुज़रान

५) अंगूठा बड़ा और
तर्जनी छोटी
दूसरों का गुलाम रहे।
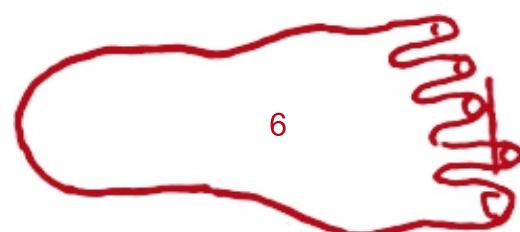
६) तर्जनी मध्यमा से
बड़ी होवे :
औरत ख़ानदान गरीब,
औरत से रंजीदा हाल
रहे।
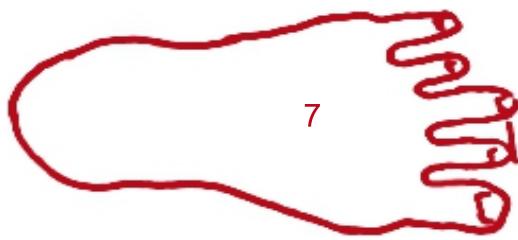
७) तर्जनी मध्यमा से
थोड़ी छोटी हो
औरत का सुख पूरा होवे।
7
८) तर्जनी मध्यमा से
बहुत छोटी हो
औरत का सुख हल्का हो।
8
९) अनामिका मध्यमा से
छोटी हो
औरत हल्का हो।
9
१०) कनिष्का अनामिका
से कदरे बड़ी हो
नेक नसीब।
10
११) कनिष्का अनामिका
से बहुत बड़ी
मनहूस मंदभाग।
11
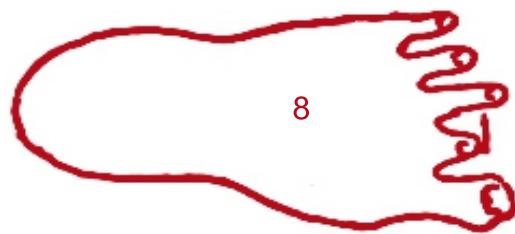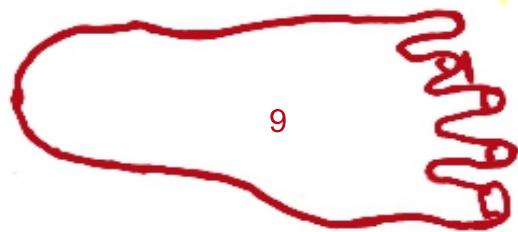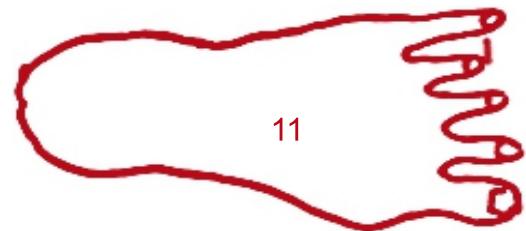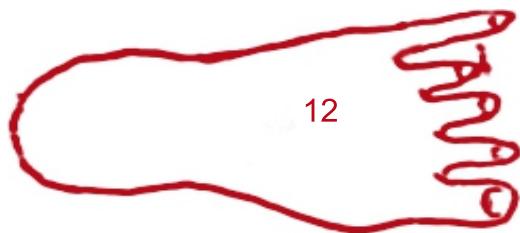
१२) कनिष्का अनामिका
से बहुत बड़ी हो
ज़लील होवे।
12
१३) कनिष्का अनामिका
से छोटी हो
नेक असर होवे।
13
१४) कनिष्का अनामिका
के बराबर हों
औलाद का सुख मगर
अपनी उम्र कम होवे।
14
१५) पांचों बराबर या
दराज़ हुक्मरान होवे।
15
१६) पांचों बातरतीब एक
से दूसरी बड़ी होती जावे
साहिबे औलाद होवे।
16
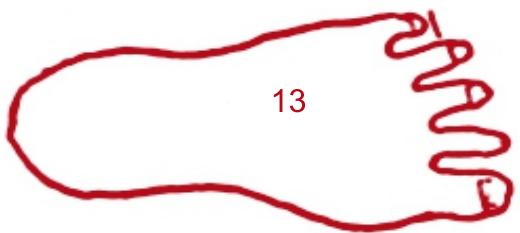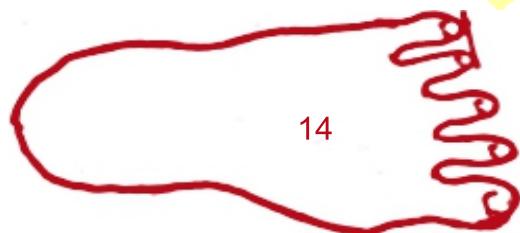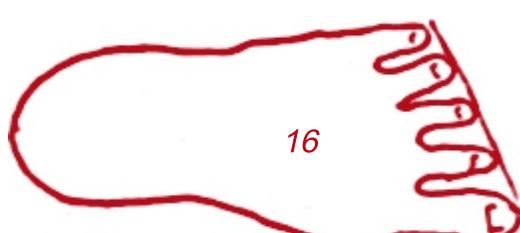
पांवो की उंगलियों के नाखून

सुर्ख तांबा के रंग के राजा या हुक्मरान होवे। **(सूरज)**

नीलगु . . . . . आली मरतबा **(राहु)**

ज़र्द . . . . दीवान साहिब (बृहस्पत)

स्याह . . . . . . चोर डाकू फिर भी मंदा हाल। **(सनीचर)**

फ़रमान नंबर ७३

मुंह का दहाना

खुला व कुशादा . . . . साहिबे हौसला

तंग . . . . डरपोक

चौड़ा . . . . दरमियानी जिंदगी अमूमन परेशानी

बड़ा लंबा . . . . शहवत परस्त

फ़रमान नंबर ७४

अब्रू **(राहु केतु के ताल्लुक से सनीचर का सुभाओ)**

जिस क़दर आंख के नजदीक और कमान की तरह गोलाई पर हों उसी कदर ही ज़्यादा नेक दिल और नेक काम करने वाला होगा। जिस कदर आंख से दूर और सीधे (—) हों उसी क़दर ही संगदिल और बुरे काम करने वाला होगा। कमान की तरह का झुकाव दिल का झुकाव या रहम दिल होना ज़ाहिर करता है।

फ़रमान नंबर ७५

कान **(केतु)**

मर्द के कान लंबे . . . . उम्र लंबी मगर अक़ल कम।

औरत के कान लंबे . . . . क़वी हाज़मा और अक़्लमंद।

मर्द के कान छोटे . . . . अक़्लमंद

औरत के कान छोटे . . . . बेवक़ूफ़।

फ़रमान नंबर ७६

रगहाये या नाड़े मर्द व औरत (बुध)

सब्ज़ रंग . . . . नेक सुभाओ ख़ुशनसीब।

फ़रमान नंबर ७७ (बुध मय राहु केतु)

१। ज़बान व तालु स्याह रंग ऐसे मर्द की औलाद मर जावे। लावल्द होवे। औरत को सुख न हो। क़बीले को बदनाम और बरबाद करने वाला होवे।

२। अगर औरत ऐसी ज़बान व तालु स्याह रंग वाली हो तो अपनी औलाद से महरूम हो जावे। मगर दूसरों पर इसका मर्द की तरह कोई बुरा असर न होगा।

३। स्याह ज़बान अमूमन स्याह या तबाह कुन बात निकालेगी। जो ३२ दाँत की तरह खाली न जायेगी। मगर काली ज़बान वाला ३२ दाँत वाले से ज़्यादा मनहूस होगा। यानी काली ज़बान वाला ३२ दाँत वाले से बुरा कहने में जो खाली न जायेगा ज़्यादा होगा। या मुक़ाबले में ज़बान से कहे हुए या मुंह से निकाली हुई बात के सच होने की ताक़त (ख़्वाह नेक बात हो ख़्वाह बुरी) काली ज़बान में ३२ दाँत वाले से ज़्यादा होगी। अगर काली ज़बान काला तालु और साथ ही आँख भी सांप की तरह गोल और गहरी और स्याह रंग हो तो ख़ुद भी बरबाद और साथियों को भी तबाह करे।

फ़रमान नंबर ७८

क़द (बृहस्पत)

१। लंबा हो (मर्द) . . . . नरमदिल धर्मात्मा।

२। लंबा हो (औरत) . . . . सादा लोह भोली तबीयत।

अपनी उंगली के पैमाने से (तीन उंगली की एक गिरह, ४ गिरह की बालिश्त दो

बालिश्त का हाथ, दो हाथ का गज यानी ३६ इंच या ४८ उंगली या एक उंगली ३/४ इंच मगर अपने हाथ के पैमाने से हो।) कुल इंच को १.१/३ जरब दो तादाद उंगली होगी। ६८ उंगल बद नसीब ५२ उंगल नेक नसीब होगा।

फ़रमान नंबर ७९

बाज़ू (मंगल नेक)

जिस क़दर लंबे उसी क़दर बख्तावर या नसीब वाला। अगर घुटने से भी ज़्यादा नीचे की और लंबे हों तो राजयोगी गिना है।

फ़रमान नंबर ८०

छाती (मंगल बद)

१। फ़राख़ और बुलंद .... दौलतमंद।

२। नाहमवार .... मौत अचानक।

३। छाती पर बाल न हों .... चालबाज़, धोखेबाज़।

४। छाती पर ज़्यादा बाल .... अय्याश तबीयत कम अक़्ल उम्र भी ग़ुलामी में गुज़ारे।

फ़रमान नंबर ८१

पीठ (केतु)

१। उभरी हुई .... रईस, हुक्मरान।

२। चौड़ी .... मुफलिस।

३। छोटी .... ज़माने का ग़ुलाम।

फ़रमान नंबर ८२

लब (मंगल हर दो)

१। मोटे और लंबे ..... कम अक़्ल (२) बहुत लंबे ..... चोर बदमाश।

३। बारीक और सुर्ख रंग . . . . मुअत दिल मिज़ाज।

४। बलिहाज़ रंग सुर्ख . . . . दाना अक़्लमंद, भला मानस, खुशगुजरान होवे।

५। बलिहाज़ रंग सफ़ेद,स्याह, नीला रंग . . . . बदबख़्त, मुफलिस।

६। एक बड़ा दूसरा छोटा . . . . बदबख़्त

७। नीचे का बड़ा . . . . जल्द नाराज़ होने वाला।

फ़रमान नंबर ८३

ख़ुद दस्ती तहरीर (चंदर)

बड़ा व मोटा हरफ़ - फ़राख दिल।

साफ सादा पढ़ा जाने वाला - मजबूत व सख्त दिल वाला

लंबी लंबी लकीरे चद्ध मद्ध - बगैर सोच जल्दी करने वाला।

सीधा साफ - क़ुदरती अक़्ल वाला।

बारीक-व-बराए नाम -अमली लियाकत वाला

गोल व बराबर बराबर हरफ़ - उम्दा फैसला करने वाला।

छोटा छोटा हरफ़ बुझा हुआ - शर्मनाक व डरपोक।

खूबसूरत व फुलदार सजावटी - लाफ़ज़न, गप्पी।

फ़रमान नंबर ८४

आंख (चंदर का खाना नंबर ४)

१। जिस क़दर बड़ी उभरी हुई या बाहर को निकली हुई और हल्का रंग हो उसी क़दर ज़्यादा नेक सुभाओ और जल्द समजने वाला होगा। और रूहानी ताकत वाला होगा।

२। जिस क़दर छोटी, गोल, अंदर को घुसी हुई या गहरी और हल्का रंग होवे उसी क़दर ज़्यादा मतलब परस्त, शरीर मक्कार और तुन्द मिज़ाज होगा।

३। जिस क़दर और जिस जानवर से मिलती जुलती होवे इंसान में इसी क़दर ज़्यादा और इसी जानवर के सुभाओ और दिल की खुफ़िया काम करने वाली ताक़तें होंगी।

४। छोटी आंख - दिल का हौसला छोटा, दिल तंग।

५। लंबी आंख - दिल की नक़ल व हरकत लंबी।

६। गोल आंख - सफ़र कई और हर सफ़र में साल कई या ज़्यादा(एक जगह पर) लगेंगे।

७। गहरी आंख - ख़ुदगर्ज़, बेवफा।

८। गोल गहरी व स्याह मानिंद चश्मा सांप का सुभाओ।

९। गोल गहरी व भूरी - बहुत शादियाँ मगर फिर भी औरत का सुख न होवे।

१०। अगर ज़बान व तालु स्याह का साथ होवे तो - ख़ुदा की पनाह। एक सांप दूसरा उड़ने वाला हर तरह मनहूस।

११। बड़ी और रोशन - अक्लमंदी।

१२। आतशी (सुर्ख रंग) भड़कने की ताक़त।

१३। धीमी और झलक मारती हुई समझने की ताकत।

१४। नर्म नज़र - नरमी तबीयत की ज़ाहिर करती है।

१५। सब्ज़ - जल्द समझने वाला।

१६। अंधा - खुदगर्ज़ होगा। (१७) काना - बुरा सुभाओ।

१८। भेंगा - सब से ऊपर फरेबी।

१९। बिल्ला - खोटे काम करने वाला, बदफ़ेल।

फ़रमान नंबर ८५

रफ़्तार (केतु)

१। आहिस्ता मद्धम रफ्तार - खराब हाफिज़ा। सुस्तउलवजूद। हर काम में देरी करने वाला।

३। तेज़ मगर छोटा कदम - बुलंद ख़याल, ठंडा सुभाओ। हर काम में साबित कदम होने वाला।

४। आदतन झुक कर चले - अक़्ल वाला। नेक महेनती बगैर दलील बात न मानने वाला होगा।

५। तेज़ व तुंद रफ़्तार - कम अक़्ल। हासिद, ख़ुद राय ख़ुद पसंद।

६। कदम बड़ा मगर चलने में लंग मारे - लालची बुरा करने में ज़्यादा होवे।

७। रफ़्तार में लंग या नुक़्श हो - बदला लेने वाला, हासिद, झुठा चुगलखोर होवे।

८। एक जगह चैन से न बैठने वाला - बेहूदा, हासिद, कंजूस होवे।

९। सीना व पेट निकालकर चले - मिलनसार, ज़िंदादिल, मगरूर, कहने सुनने पर मान जाने वाला।

१०। सिर और कमर हिला कर चले तिरछी चाल वाला - नापाक आदत वाला हो। बुज़ुर्गों की बुराई और बदखोई करने वाला, लानती ज़माना होवे।

११। मंदरजा बाला से बरी - नेक तबीयत, नेक क़िस्मत।

१२। जिस जानवर की चाल से मिलती हो - इसमें वही आदत, इस का वही हाल, वही तबीयत और वैसी ही क़िस्मत का मालिक होगा।

फ़रमान नंबर ८६

गुफ़्तार (बुध घर का)

१। गला फुला कर बात करे - अपने मतलब में दूसरे के खून की परवाह न करे।

२। बात करते वक़्त कोई न कोई अंग हाथ या पांव वगैरह हिलावे - बेहूदा, बदफ़ेल, शोहरत पसंद होगा।

३। बात करते वक़्त दांतों का मांस नज़र आवे - कम उम्र होगा।

४। जल्द जल्द बोलने वाला - बुरा सुभाओ, मतलब परस्त।

५। संभलकर नरमी और आहिस्ता आहिस्ता सोचकर बोलने वाला - दाना अक़्लमंद।

६। नाक में बोलने वाला - मगरूर चश्म।

७। चैन से बैठ कर न बात करे - बेहूदा, हासिद, कंजूस।

फ़रमान नंबर ८७

आवाज़ (बुध का पक्का घर)

१। बुलंद ऊंची और वज़नी - बहादुर मरतबे वाला।

२। बुलंद भारी मानिंद गरज बादल हो - नेक हुक्मरान

३। मानिंद ढ़ोल - राग विद्या का शौकीन।

४। मानिंद मोर - मशहूर, सरदारे फ़ौज।

५। मानिंद चकोर - दौलतमंद, बेपरवाह, बेलिहाज़।

६। मानिंद मुर्गाबी - दुनियादार, लज्जत पसंद।

७। कौआ, चील, गीध - अपने मतलब में दूसरे के खून होने की भी परवाह न करे।

८। मुतकबिराना सख़्त कड़वी आवाज़ - बद नियत कम अक़्ल।

९। बुलंद और भारी - दियानतदार, बुलंद हिम्मत, रज़ामंद मगर मगरूर होवे।

१०। बुलंद मगर बारीक - दूर अंदेश, सच्चा, ज़हीन मगर ख़ुशामद पसंद, जल्द नाराज़ होने वाला, खिजू।

११। बुलंद बारीक मगर नाख़ुश आवाज़ - झगड़ालू शरीर, दुख देने वाला, बुरा करने वाला, ख़ुद राय मगर जिस्म मजबूत होगा।

१२। ना मुलायम व भारी - कम अक़्ल, कम हिम्मत।

१३। मुलायम व भारी आवाज़ - सुलह पसंद, हौसले वाला।

१४। कमज़ोर व कांपती हुई आवाज़ वाला - हसद करने वाला, वहमी, कमज़ोर, खौफ़ खा जाने वाला।

१५। दो आवाज़ वाला - फ़रेबी, कमीना।

फ़रमान नंबर ८८

छींक का विचार **(सनीचर राहु मुश्तरका)**

१। सामने से या दायें तरफ से एक या तीन छींक।	कभी नेक नतीजा न होवे।
२। पीछे से या बायें तरफ से दो अदद छींक होवें।	हमेंशा नेक नतीजा होगा।
३। पीछे से आवाज़।	मनहूस गिनी गई है।

फ़रमान नंबर ८९

अंग फड़कना **(चंदर)**

दायां अंग फड़कना मुबारक। बायां गैर मुबारक।

फ़रमान नंबर ९०

सांस **(बृहस्पत)**

१। दोनों सांस या सिर्फ दायां सांस चलता हो - नेक काम या देर तक क़ायम रहने

वाली चीज का शुरू करना मुबारक होगा।

२। बायीं सांस के वक़्त किया गया काम - मामूली सा नतीजा देने वाला होगा, कोई खास नेक न होगा।

फ़रमान नंबर ९१

ख़्वाब का नतीजा (राहु)

१। नींद के पहले वक़्त का ख़्वाब - छ: महीने में असर देवे। **(नीच)**

२। नींद के दूसरे वक़्त का ख़्वाब - तीन महीने में असर देवे। **(घर का)**

३। नींद के तीसरे या आखरी वक़्त का ख़्वाब - फ़ौरन असर ज़ाहिर करे। **(उंच)**

४। ख़्वाब में किसी को मार देना, सांप या दुश्मन को हलाक़ करना। बुलंदी पर चढ़ना, पहाड़ पर जाना - तरक्क़ी होने की दलील है।

५। पानी के किनारे या पानी पर ख़्वाब में देखी हुई बात - जल्द सच्ची होवे।

६। मौत देखना - उम्र दराज़ ख़ुशी होवे।

७। ब्याह शादी देखना - ग़मी व मातम सुनने में या देखने में आवे।

फ़रमान नंबर ९२

नेक काम को जाते हुवे शुरू में शगुन (मुतफ़र्रीक)

१। कुम्भ या घड़ा पानी से भरा - दूध - कन्या - फ़ूल - ब्याह शादी वगैरह अगर दायीं तरफ से मिले तो - शुभ असर होगा।

२। लकड़ी औज़ार या हथियार आगे से उलट छींक वगैरह होवे तो बद असर की निशानी होवे।

३। कुत्ता या बिल्ली बुलंद आवाज़ से रोए जानवर मंडलाने लगे - तो मौत की निशानी।

४। नेक जानवर काला कुत्ता, गाय, हिरण वगैरह मिले - तो नेक फल की निशानी।

फ़रमान नंबर ९३

हथेली पर ख़ास निशान (केतु का खाना नंबर ६)

मर्द के सिर्फ दायें हाथ की हथेली पर नेक असर देंगे। और दायें हिस्से पर शुभ असर होगा।

	नंबर	निशान	असर	
सनीचर का उत्तम फल बृहस्पत से मिला हो	१	मछली	दौलतमंद, नेक भागवान, चिराग़ खानदान	सनीचर मीन राशि में (राहु..३/६ केतु ९/१२)
सूरज व बृहस्पत	२	शेर	बहादुर, बेधड़क मगर बेरहम	सूरज खाना नंबर २ में
सनीचर राहु	३	सांप	ख़ज़ाने का मालिक ये सांप ज़हरीला न होगा, इच्छाधारी सांप गिना जाताहै और शेषनाग होगा।	सनीचर खाना नंबर दायें हाथ पर १२ बायें हाथ पर २ में होगा
राहु व मगल	४	हाथी	मानिंद राजा	राहु खाना नंबर ३व६में
सूरज व सनीचर	५	कौआ	फ़रेबी, काग सुभाओ।	सनीचर खाना नंबर १ में (राहु केतु दोनों रद्दी)
शुक्र व सनीचर	६	गाय बैल	ज़रायत में फ़ायदा उठावे	शुक्र खाना नंबर १२ में
मंगल बद व सनीचर	७	चुल्हा	चोर फ़रेबी	मंगल खाना नंबर ४ सनीचर खाना नंबर १
नेक मंगल सनीचर	८	कमान	बहादुर, दिलावर	मंगल खाना नंबर ३ में
बुध उत्तम	९	फुल	दौलतमंद उम्दा जिंदगी	बुध खाना नंबर ६ में
बृहस्पत का डंडा	१०	झन्डा	मज़हबी इल्म में मशहूर	बृहस्पत नंबर ७ में
चंदर बृहस्पत	११	छत्र	दौलतमंद धजाधारी	चंदर खाना नंबर २ बृहस्पत खाना नंबर४
सूरज बुध	१२	पहाड़	मानिंद वज़ीर, साहिबे तदबीर	सूरज खाना नंबर १ बुध खाना नंबर ७
सनीचर बुध	१३	गांव	रईस	सनीचर खाना नंबर ७ बुध खाना नंबर ११
मंगल बद बृहस्पत	१४	ढाल	बुज़दिल, दलीदरी	मंगल बद खाना नंबर ४ बृहस्पत खाना नंबर ८
मंगल सूरज	१५	तलवार	दुश्मन पर ग़ालिब	मंगल खाना नंबर एक में

सिर्फ दायें हाथ की हथेली पर नेक असर देंगे

	नंबर	निशान	असर	
उंच चंदर	१६	घोडा	दौलतमंद, शह सवार	चंदर खाना नंबर २ में
बृहस्पत घर का मालिक	१७	समन्दर	पुजा पाठी, परहेज़गार	बृहस्पत खाना नंबर २ में
सनीचर केतु	१८	चौसर चोपाट	साहिबे इक़बाल, खिलाड़ी	सनीचर खाना नंबर ६ केतु खाना नंबर १०
बुध अपने घर का	१९	कलम	मिर मुंशी, अहले कलम	बुध खाना नंबर ७
मंगल नेक बृहस्पत	२०	अंकुश, कान का	तीनों ही निशान इकट्ठे	बृहस्पत खाना नंबर १ मंगल खाना नंबर १
शंख चक्र		दायरा, कुंडल	हो तो बड़ा अमीर हो	बृहस्पत खाना नंबर १
राहु बुध बृहस्पत	२१	मूसल	कंजूस	बुध खाना नंबर १२ में
बुध बृहस्पत	२२	ऊखल	रोटी से भी तंग ऊखल पूत न जमदा, धी अंधी अच्छी	बृहस्पत खाना नंबर ७
मंगल बद की रेखा	२३	छड़ी	तंग दस्त	मंगल खाना नंबर ४
दोनों इकट्ठे गृह	२४	सूरज या चांद	मानिंद राजा दूसरों से खराज लेवे मगर मौत अचानक होवे।	ख़्वाह खाना नंबर १ में ख़्वाह खाना नंबर ४ में
सनीचर	२५	दरख़्त	जायदाद का मालिक	सनीचर खाना नंबर१०
मंगल नेक	२६	चोकी	तख़्त का मालिक	मंगल खाना नंबर १०
सूरज चंदर	२७	रथगाड़ी	राजा महाराजा सवारी का सुख हो	सूरज खाना नंबर ४
बुध शुक्र	२८	तराज़ू	ब्योपारी आढ़ती	दोनों ग्रह खाना नंबर ७ में

सिर्फ दायें हाथ की हथेली पर नेक असर देंगे

	नंबर	निशान	असर	
बृहस्पत घर का	२९	पालकी	बहुत आराम पावे	बृहस्पत खाना नंबर २
सनीचर उत्तम	३०	आंख	दौलतमंद मगर फ़रेब से धन कमावे	सनीचर खाना नंबर ११
बुध बृहस्पत	३१	नाक	मामूली ब्योपारी	बुध खाना नंबर १२
सनीचर	३२	त्रिशूल	ज़िंदगी अच्छी व उम्दा गुजरे	सनीचर खाना नंबर१२
स्याह निशान लग्न होगा	३३ और सब से बड़ा	खाल या तिल छोटा स्याह निशान छाप बड़ा स्याह निशान हो तो पदम होगा	दायें हाथ की हथेली पर मुट्ठी बंध करने पर मुट्ठी के अंदर छुप जावे तो दौलतमंद। अगर हथेली की पीठ पर या बायें हाथ पर हो तो फिज़ूल खर्च और रूपिया जाया करे। जिस्म के सामने हिस्से पर और जिस्म के दायें टुकड़े पर नेक असर हो। बायें तरफ और पीठ की तरफ गैर मुबारक होवे।	
	३४	पदम जो राहु होता है	इक से ४ तक राजा साहिबे इकबाल। ५ से ८ तक महाराजा। आठ से आगे ९ या ज़्यादा योगी।	

सिर्फ दायें हाथ की हथेली पर नेक असर देंगे

नंबर	निशान	असर
३५	गदा (हथियार) गुर्ज़	एक हो तो सरदार हुक्मरान दो से ५ तक वालिये तख़्त वरना ख़ुदा परस्त परहेज़गार हो। ५ से ज़्यादा हो तो ब्रह्मज्ञानी।

पेशानी पर निशानात का असर सिर्फ उम्र पर होगा। जिसका ज़िक्र उम्र रेखा में हुआ है।

फ़रमान नंबर ९४

पांव पर निशान

दायें पाँव के पब पर कनिष्का के नीचे बुध पर या शुक्र के बुर्ज या अंगूठे की जड़ पर अगर शंख सदफ़ हो तो वही असर होगा जो हाथ ...... पर होता है।

चक्कर :- आसुदा हाल, साहिबे इकबाल होगा।

त्रिशूल - अंकुश :- आला अफ़सर और मुनसिफ़ मिज़ाज।

चश्मे फ़िल :- (हाथी की आंख) साहिबे तख़्त हो।

अगर बायें पाँव में हो तो राहज़न, चोर, डाकू होवे। मगर फिर भी तंग दस्त।

पांव की हथेली या पब पर चक्कर के लिए **फरमान नंबर १२३ जुज़ ५ सफ़ा १७०**

फ़रमान नंबर ९५

जाये रिहायश **(बारह राशियाँ)**

१। शुभ लगन और नेक शगुन से शुरू किए हुए मकान के लिए मंदरजे जैल बातें पूरा करने के लिये निहायत मुबारक होंगी।

२। मकान बनने से पहेले तमाम और सारी की सारी तह ज़मीन को एक ही गिनकर उसके कोने या गोशे देखे जावे। चार गोशा सबसे उत्तम होगा। जिस का हर एक कोना नब्बे दर्जे ९० डिग्री के ज़ाविया का हो। मंदरजे गोशे हरगिज़ न हो तो मनहूस गिने है।

आठ-अठराह-तेरह-तीन। बिच्चों चूक (मछली) भुजा बलहीन(मुर्दा)।

पांच कोण का मंदिर रचे कहे विश्वकर्मा कैसे बचे।

३। तह ज़मीन के गोशे देखने के बाद और मकान बनने से पहले दीवारों का रकबा बुनियादे छोड कर हर एक हिस्से या कमरे की अंदरूनी दरी या रकबा जुदा जुदा देखा जावे। जो मकान के मालिक या स्वामी जिसने मकान

बनाना है और ख़ुद भी इस में रिहाइश करनी है के अपने हाथों की पैमाइश में रकबा देखा जावे। यानी पैमाइश के लिए ख़ुद इस का अपना हाथ होवे। ख़्वाह वह अठराह इंच का होवे ख़्वाह उन्निस इंच का या सताराह इंच का पैमाना इस के आपने हाथों की लंबाई का होवे। हाथ की लंबाई कहाँ से कहाँ तक होगी।

१। कोहनी(बाज़ू) के सिरे की हड्डी से लेकर अनामिका के आखिर तक या

२। कोहनी(बाज़ू) पर जो जोड़ के सिरे के अलावा दूसरी हड्डी होती है वहां से लेकर मध्यमा के आखिर तक। ये नंबर २ की हदबंदी दूरस्त और उत्तम है।

क़ायदा

४। $\dfrac{\text{तुल जमा अर्ज़ ज़रब तीन से घटाया गया एक}}{\text{तक़सीम किया आठ पर}}$ = जो बाकी बचा वह असर होगा

यानी तुल पंदराह हाथ - अर्ज़ सात हाथ हो तो

१५ जमा ७ = २२

को ३ से ज़रब दिया तो ६६ से कम किया गया एक = ६५

अब हमने ६५ को ८ पर तक़सीम किया तो बाकी जवाब एक रहा। इसी तरह से जवाब एक, दो, तीन, चार, पांच, छ, सात, आठ, या सिफ़र हो सकता है।

५। जवाब में अगर ताक़ यानी १-३-५-७ हो तो नेक असर होगा।

और अगर जवाब में जुफ़्त यानी २-४-६-८ हो तो मनहूस असर होगा। वह किन किन बातों से मुतलका होगा। अगर बाकी बचने वाले हिन्दसे होवे।

६। एक तो :- वह मकान मकानों में मानिंद राजा उत्तम और बुलंद हैसियत होगा।

७। दो हों :- मानिंद कुत्ता। गरीब, निर्धन।

८। तीन हों :- मानिंद शेर होगा। आदमियों के लिए उमदा और मुबारक दीवानखाना, बैठक या दुकान, कारोबार - तिजारत के लिए निहायत मुबारक होगा। मगर औरतों और बच्चों के लिए गैर मुबारक होगा। ऐसे मकान में

मर्दों की हमेशा बरक़त होगी। और दुनियावी जंग जदल के मुतलका सब काम शुभ असर देंगे।

मकान का अगला हिस्सा चौड़ा और पिछला हिस्सा तंग हो तो भी शेर दहाना यानी शेर बब्बर की तरह सिर भारी दम का हिस्सा छोटा सा या तंग या शेर दहाना भी वही असर दिखाता है जो तीन बाकी का था। दोनों बातों में शेर या बृहस्पत का नेक असर होगा।

९। चार हों :- मानिंद गधा होता है। रात दिन मज़दूरी की मगर एवज़ में ख़ुराक के लिए वही गंदी गिज़ा मिली। किसी ने गधे का ख़याल न किया न मिली तो न ही मिली।

१०। पांच हों :- मानिंद गाय होगा। जिस में औरत ज़ात बाल बच्चे वगैरह सब के सब सुख व आराम पाएंगे। और शुक्र का पूरा और उत्तम फल होगा। बल्कि मच्छ रेखा उत्तम का असर होगा। मकान पीछे से चौड़ा और अगला हिस्सा तंग मानिंद बैल हो तो भी गऊ घाट कहलाता है। जिस का वही नेक असर है जो पांच बाकी का था।

११। छ हो :- मानिंद तकिया मुसाफ़िर होवे। यानी केतु अपना बुरा असर देगा। न माता रहे न पिता सुख ले। न औलाद आराम करे न यार दोस्त साथ मिले। हरदम मुसाफ़िर और वह भी मुसीबत का मारा हुआ।

१२। सात हों :- मानिंद हाथी होगा। फ़ील खाना। मवेशियों का तबेला उमदा और मुबारक (राहु)।

१३। आठ या सिफ़र :- मानिंद चिल्ल, गिद्ध, मुरदा घाट। मौत का घर सनीचर का हेडक्वार्टर और ख़तम।

१४। मकान में आने जाने का सब से बड़ा दरवाज़ा या शार-ए-आम वाला अगर जिस तरफ़ मशरिक़ या पूरब हो सब से उत्तम हर वक़्त आदमियों की नेक आमद व रफ़्त और तमाम सुख नसीब रहें।

१५। मगरीब या पश्चिम :- दर्जा दोयम का उत्तम होगा।

१६। शुमाल या पहाड़ की तरफ़ :- नेक है। नेकी के लिए यानी लंबे

सफ़र - पुजा पाठ - शुभ काम - लंबे मामलात। नेकी के काम करने के लिए आने जाने का रास्ता होगा। जिस का असर नेक होगा। रूहानी और परलोक के मामलात में।

१७। जनूब या दखन : - सब से मनहूस है। ख़ास कर औरत ज़ात के लिए मौत का सबब है। आदमी भी कोई सुख नहीं पाते। अग्निकुंड का जेल खाना। जिस में जल बुझ कर मरने के सिवा और कुछ नसीब न होगा। "छड़ा तबेला या रंडियो का" अफ़सोस करने की जगह या मौते गिनने का मुक़ाम।

१८। शहतीरों का रुख़ : - दाख़िले के दरवाज़े के मुसावी या बराबर हो तो मुबारक। (शुक्र की छत उत्तम) और अगर काटती हुई शक्ल या सोते वक़्त छाती को अबूर करें (सनीचर की छत मौत, बीमारी)।

१९। कड़ियाँ बाले : - कुल तादाद को अगर चार पर तक़सीम करें और जवाब में बाकी हो :

१) एक तो : - मानिंद राजा इन्द्र हो, उत्तम फल।

२) दो हों : - मानिंद यम, मौत के यम दूत हों।

३) तीन हों : - मानिंद राजा यानी राजयोग हों।

२०। मकान में अगर बाहर से हवा किसी सीधे रास्ते या शार-ए-आम से बिलकुल सीधी ही आकर दाखिल होवे तो बच्चो के लिए निहायत मनहूस या हवा-ए-बद या बुरी रूह का दाख़ला गिना जायेगा। जो हंमेशा बुरा ही असर देगा। कोई न कोई अचानक मुसीबत खड़ी ही होती रहेगी।

२१। सेहत के उसूल पर दूसरी चीजों के अलावा ख़याल ज़रूरी है की रात को सोते वक़्त चारपाई का सिरहाना मशरिक़ या पूरब में रहे तो मुबारक असर होगा। दिन को दिमाग़ से काम लिया सूरज ने मदद दी तो रात को रूह ने काम संभाला और चंदरमा ने मदद दी। पांव दखखन या जनूब या पूरब (या मशरिक़) में सोते वक़्त होना मनहूस है। शुमाल का कोई ख़याल नहीं। यानि नेकी या रूहानी काम ख़्वाह सिर से

करें। ख़्वाह पांवों के ज़रिये नेकी करना हर तरह से मुबारक है। इस में पहले हाथ या पहले पांवों का सवाल उठता ही नहीं है। ख़्वाह सोये हुए सोच विचार रूह से हो ख़्वाह जागते जिस्म से हो मुबारक है।

<u>मकान के अंदर की चीजें मुबारक असर देंगी जब : -</u>

२४। सिंहासन या बैठक : - पूरब या मशरिक़ की दीवार की दरमियानी हिस्से में हो।

२५। आग की जगह : - दक्खन या जनूब मशरीक़ी गोशे में हो।

२६। पानी की जगह पुजा पाठ : - पहाड़ या शुमाल मशरीक़ी गोशे में मुबारक होगा।

२७। लक्ष्मी अस्थापन, धन दौलत की जगह : - दक्खन या जनूब मग़रीबी गोशे में मुबारक।

२८। खाली जगह महेमान वगैरह के लिए : - पहाड़ या शुमाल मग़रिबी गोशे में मुबारक।

२९। चूल्हे का मुंह : - "शरकन गरबन" हो - तो मुबारक रहे।

३०। मकान से बाहर निकलते वक़्त पानी की जगह दायें हाथ और आग बायें हाथ बल्कि पीठ पिछे रह जावे तो निहायत मुबारक है।

३१। मकान के नज़दीक अगर पीपल का दरख़्त हो तो इस दरख़्त की सेवा से बहुत नेक फल होगा। और अगर इस की सेवा या इस की जड़ों को पानी न डाला जायेगा तो जहां तक इस का साया जायेगा तबाही और बरबादी करता रहेगा। यहीं हाल नज़दीक के कुएं का है। अगर इस में कभी कभी बतौर श्रद्धाभाव थोड़ा सा दूध डाल दिया जावे तो नेक फल

और अगर गंदा करें तो तबाही का हाल होगा। घर में कीकर का दरख़्त लावल्द किए बगैर न छोड़ेगा। इस से बचाओ - सूरज निकलने से पहले तारों की छांवों में जब की अभी अंधेरा ही होवे चालीस दिन हर सनीचर वार हफ़्ते में एक दफ़ा और गाहे-ब-गाहे हंमेशा पानी डालना चाहिये।

फ़रमान नंबर ९६

ख़ुशी **(खाना नंबर ४)** **ग़मी**

१। अंगूठा छोडकर बाकी तमाम उंगलियों पर यानी ४ (उंगली) ज़रब २ (हाथ) ज़रब ४ (निशान) कुल ३२ निशान जौ (अनाज गंदुम⌒जौ) वाकें हो तो दुख सुख बराबर होंगे। इस ३२ के हिन्दसे को पक्की बात माना है। और ३२ दिन का ही (ज़्यादा से ज़्यादा दिन एक महीने में देसी हिसाब में माने गए हैं। और मुंह में भी ज़्यादा से ज़्यादा ३२ दांत नेक असर वाले माने हैं। अगर ३३ ख़त हों तो ३२ ग़मी के हिन्दसे के मुक़ाबले में ३३ ख़ुशी के हों। लेकिन अगर ये निशान ३२ से कम यानी ३१ हों तो

तो ३२ ग़मी के हिन्दसे के मुक़ाबले में ३१ ख़ुशी के दिन होंगे। इसी तरह ही जीतने हिन्दसे या ख़त उंगलीयों पर क़ायम हों उतने ही दिन ३२ के मुक़ाबले में ख़ुशी के होंगे।

सिर्फ एक ही हाथ पर (दायें पर)

२। १२ राशियां और ९ ग्रह कुल २१ के हिन्दसे का हिसाब जायज़ रखा है। यानी २१ निशान से ज़्यादा वाला दुनिया के तमाम हिसाब किताब ९ ग्रह और १२ राशियों से बाहार होगा या दूनीया से किनारा कश होगा।

सिर्फ दाहिना हाथ अलाहदा लेकर अगर इस पर निशान हों:-

कुंडली का खाना नंबर	निशान नंबर	
१	१२	- तो सारी उम्र दौलतमंद और ख़ुशगुज़रान होगा।
७	१३	- तो हंमेशा रंज व मुसीबत होवे।
४	१४	- तो औसत दर्जे की जिंदगी हो।
१०	१५	- तो चोर, लुटेरा, डाकू हो।
८	१६	- तो बदबख़्त जुआरिया होवे।
३	१७	- तो बे इज्जत और बे-इतबार होवे।
९	१८	- तो भला आदमी, भले काम। नेक तबीयत होवे।
५	१९	- तो धर्मात्मा राज दरबार में इज्जत हो।
६	२०	- तो साहिबे तदबीर, अक़्लमंद होवे।
१२	२१	- तो कमबख़्त और बदनसीब होवे।
२	२१ से ज़्यादा	तो दुनिया से जुदा ही रहने वाला। दुनिया छोड़ देने वाला होवे।
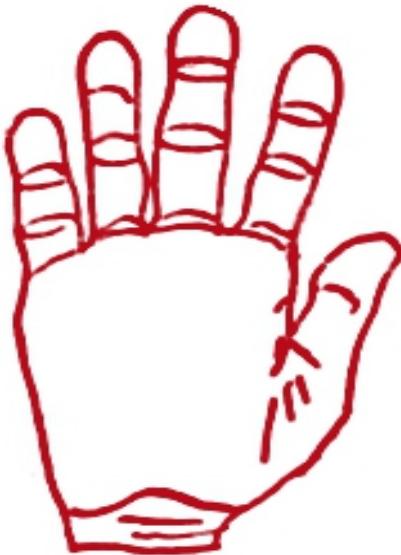
फ़रमान नंबर ९७

बचपन-जवानी-बुढ़ापा

(फरमान ५८ सफा ३२ जुज ३ से मुकाबला करें)

जौ का निशान (कनक जौ अनाज)

सिर्फ अंगूठे पर उम्र के तीनों हिस्सों का हाल ज़ाहिर करता है। अगर ये निशान वाके हो

हिस्से पर	सही व सालम हो	टूटा फूटा हो
(१) नाखून वाले हिस्से पर	बचपन, जवानी, बुढ़ापा तीनों में ही आराम पावे। और दौलतमंद होवे।	बचपनऔरजवानी मंदा। बुढ़ापे में सुख नसीब होवे।
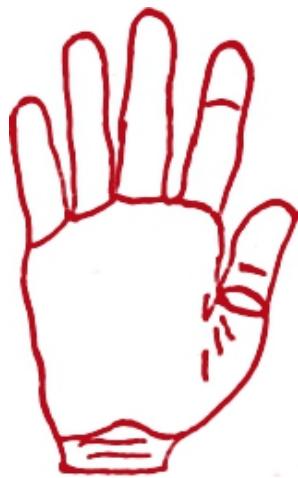
(२) हीस्से पर	सही व सालम हो	टूटा फूटा हो
दरमियानी हिस्से पर	उम्दा व नेक भाग	बचपन उम्दा बुढ़ापा व जवानी मंदा हाल दिखावे।
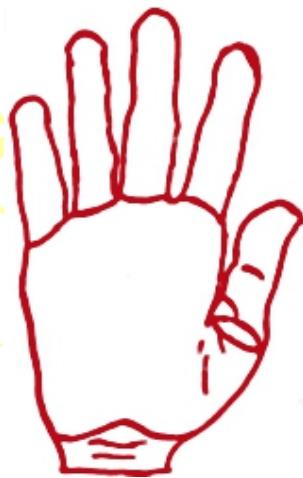
(३) हिस्से पर	सही व सालम हो	टूटा फूटा हो
तीसरे हिस्से पर	उम्दा व नेक भाग	बचपन व जवानी आराम बुढ़ापा मंदा होवे।
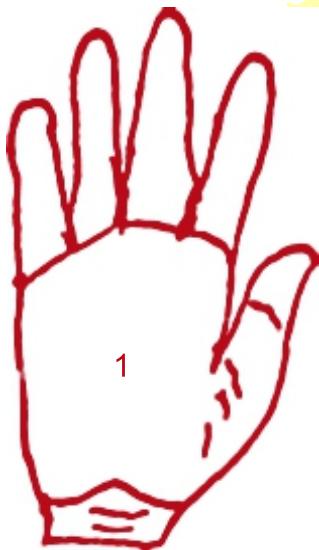
फ़रमान नंबर ९८

उंगलियों को बाहम मिलाने पर इन की जड़ों में कोई भी सुराख न हो तो तीनों हिस्से उम्दा। सूरज रेखा वाके हो तो भी तीनों उम्दा और अगर उंगलियों के सुराख मौजूद हो और सुराख होवे।

(४) कनिष्का और अनामिका के दरमियान सुराख हो तो बचपन में तकलीफ़ हो।

(२) सुराख होवे
अनामिका और मधमा के दरमियान सुराख होवे
तो जवानी में तकलीफ़ हो।

(३) सुराख होवे
मधमा और तर्जनी के दरमियान सुराख हो
तो बुढ़ापे में तकलीफ़ होवे।

3
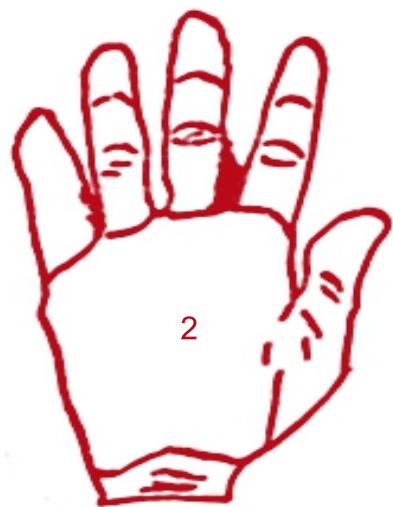
(४) उंगलियों के दरमियान सुराख होने से बवक़्त ज़रूरत या अचानक रुपे
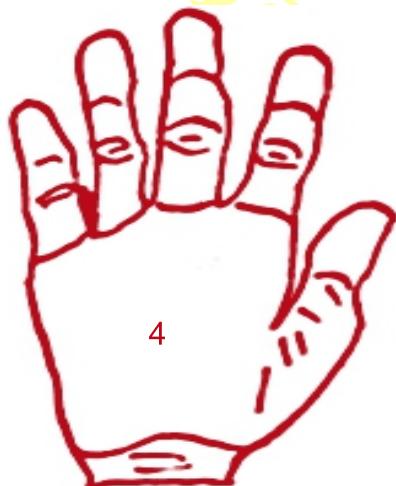
के मिलने या न मिलने से मुराद है। आमदन, खर्च, कमाई या बचत से कोई ताल्लुक नहीं। वह बात हथेली से ताल्लुक रखती है। उंगलियों में अगर कोई भी सुराख न हो तो वक़्त ज़रूरत रुपे का बंदोबस्त हाज़िर है। तीनों सुराखों से अगर अगर तीन रुपे की ज़रूरत फर्ज़ कर ली जावे और हाथ में एक सुराख मौजूद हो तो दो रुपे हाज़िर होंगे। और एक की कमी होगी। अगर दो सुराख हो तो एक रूपिया हाज़िर और दो की कमी होगी। और तीनों सुराख हों तो तीन से

तीन की ही कमी होगी।

फ़रमान नंबर ९९

बर्ताव (खाना नंबर ६)

सिर रेखा और दिल रेखा के दरमियानी मुस्तैल

१। सिर रेखा या बुध रेखा, दिल रेखा या चंदर रेखा बाहम दुश्मन है। जिस क़दर ये दोनों एक दुसरे के नज़दिक होती जावें सिर और दिल की ताक़तें आपस में दुश्मन होती जावेगी। यानी जिस क़दर इन दोनों रेखाओं के दरमियान का मैदान तंग होता जावे। उसी क़दर ही वह ज़्यादा तंगदिल इंसान होता जावे। यानी बुध की तासीर तेज़ और ख़राब अमेज़िश वाली होती जावेगी। बुध मंगल और बृहस्पत दोनों का दुश्मन है इस लिए ऐसा आदमी आम दुनियावी लेन-देन में तुर्श सा बर्ताव करने लगेगा। मंगल नेक की इंसाफ की तबीयत के बदले में बे-इंसाफ और एक तरफ़ी रियायत करने वाला होगा। और बृहस्पत का मज़हबी असर मुतअस्सीब ज़ाहिलाना हालत में ज़ाहीर होगा। मंगल बद या भाईबंदों, रिशतेदारों वगैरह से भी नफ़रत करने वाला ही होता जावेगा।बहरहाल बर्ताव नेक न होगा। अगर ये मुस्तैल यकसां हालत की बजाए

(२) सूरज के बुर्ज के नीचे ज़्यादा चौड़ी होवे तो इज्जत और बे-इज्जती में कोई फ़र्क ही न जानेगा। या इस के दिल पर इज्जत और बे-इज्जती कोई असर न करेगी।

३। अगर सूरज के बुर्ज के नीचे ज़्यादा तंग होवे तो :-

तंगदिली की वजह से शर्म शर्माने में अपना ही नुकशान करने वाला होगा।

४-५। बृहस्पत के नीचे ज़्यादा चौड़ी होवे या सनीचर के नीचे ज़्यादा चौड़ी हो तो दौलत व जायदाद को हरदम अज़ीज़ रखने वाला या बेहद कंजूस होगा।

६। बुध के नीचे मंगल बद के मुकाम पर ज़्यादा चौड़ी होवे तो :-

ज़्यादा फ़राख़ दिल या बहुत ही सखी सरवर होने के सबब तबाह होवे और नुकशान करावे।

७। अगर बृहस्पत की तरफ से चलकर मंगल बद की तरफ दर्जा ब दर्जा चौड़ी होती जावे तो :-

दूसरों को दिया हुआ पैसा कभी वापिस न आवे। ख़्वाह वापस करने वाला

देने का नाम ही न लेवे। और अगर वह ईमानदार वापस देने की नियत वाला हो भी तो वह बेचारा वापस करने के क़ाबिल ही न रहे।

८। अगर मंगल बद की तरफ से बृहस्पत को चौड़ी होती जावे :-
तो दिया हुआ रूपिया ज़रूर वापस आवे साहूकारा उम्दा होवे।

फ़रमान नंबर १०० A

(ख़र्च बचत) सिर रेखा, उम्र रेखा और सेहत रेखा की तिकोण

१) ये मैदान हाथ की हथेली पर बिलकुल खाली मैदान है। जिस के तीनों किनारे (उम्र रेखा हवाई लहर, सेहत रेखा या तरक़्क़ी रेखा हवा में उड़ती हुई भाप और सिर रेखा या बोलने की आवाज़) तमाम के तमाम हवाई चीजें बैठी हुई हैं। क़िस्मत रेखा का दरिया, उर्ध रेखा या मच्छ रेखा का दरिया, धन रेखा या श्रेष्ठ रेखा का दरिया वगैरह इसे अपना रास्ता बना सकते है। यानी इन दरियाओं में से जिस दरिया का पानी इस मैदान में होगा वही असर ज़ाहिर होगा।

२। और अगर किसी वजह से इस मैदान में कोई भी दरिया न हो तो रेगिस्तान या रेत का ख़ुश्क समन्दर होगा। जिस की रेत में किसी भी धात की चमक न होगी। रेत की तबीयत का आदमी और निहायत ही थोड़ी गर्मी से आग बबूला और सर्दी से ठंडा होने वाला होगा। क़िस्मत की तरफ से उत्तम न होगा। बुध के अर्से तक बगैर दौलत या तंग दस्त सा ही होगा। ये मंदी क़िस्मत का वक़्त ३४ साल तक होगा। जो उसकी ८ १/२ साल या १७ साल (बुध के अर्से का नीस्फ़ या चौथाई) उम्र से शुरू हो सकता है। क़िस्मत का मंद भाग इस के अपने सिर की खराबियों का नतीजा होगा। ख़ुद कमाई की बजाए दूसरों का मोहताज या क़र्ज़ा उठा कर आमदन खर्च करेगा। मगर बचत नहीं गिनी जा सकती।

३। इस मैदान या मशलश में चलने वाला दरिया या रेखा इस बरेती को दो हिस्सों में तक़सीम करेगा। हाथ के दायें या अंगूठे की तरफ की मशलश खर्च ज़ाहिर करेगी। और नेक हिस्से
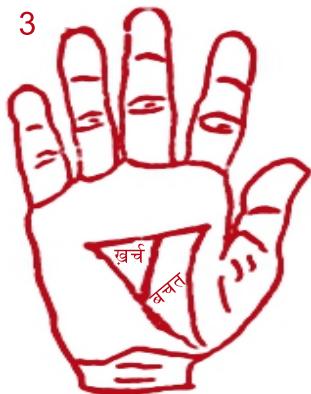
या दुनियावी मदद से मुतलका होगी। बायें तरफ या मंगल बद की तरफ को मशलश चंदर नेक का असर या बचत बतायेगी। इन दोनों मशलशों का बाहमी रक़बा ख़र्च और बचत की औसत बताएगा। यानी अगर कुल बड़ी मशलश के लिए सारी आमदन एक रूपिया फर्ज़ हो तो रक़बे के हिसाब से ख़र्च व बचत में निसबत होगी।

४। अगर बड़ी मशलश के तीनों कोने बंद हो तो खर्च और बचत बंधे हुए होंगे या गिने जा सकते है। या अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ हद बंदी के लिए हिसाब किताब में लिखे लिखाए जा सकते हैं। मगर रुपे खर्च के रक़बे से बचत के रक़बे में नहीं बदला जा सकता। सिर्फ़ ख़र्च बचत का हिसाब रख कर ख़र्च शुदा व बाकी बचत की रकम मालुम की जा सकती है। **(सफा १९६ जुज १४ से मुतलका)**

५। और अगर उम्र रेखा और सेहत रेखा के मिलने का कोण खुला ही होवे तो ख़र्च बचत का हिसाब किताब भी नहीं रखा जा सकता। या अगर ख़र्च कम कर दिया जावे तो आमदन भी ख़ुद ब ख़ुद कम हो जावेगी।

६। यही उसूल सिर रेखा और सेहत रेखा के मिलने वाली तरफ के कोने से बचत का होगा।

7

सिर रेखा

सेहत रेखा

उम्र रेखा

७। अगर ऊपर कहा हुआ मैदान मानिंद गड्ढा होगा तो किस्मत का दरिया रवानी और उम्दा पानी और ख़ुद अपनी कमाई का ख़र्च बचत होगा। वरना कर्जा वगैरह से गुजारा करेगा।

फ़रमान नंबर १०० B

क़र्ज़े और जायदाद जद्दी में इजाफ़ा

१। हथेली की लंबाई **(खाना नंबर ११)** जिस क़दर लंबी होवे इसी क़दर रूपिया पैसा इस के हाथ में आवे जावे। और जिस क़दर मधमा **(खाना नंबर १२)** की लंबाई **(हथेली से ज़्यादा)** होवे इसी क़दर दुनिया या रुपे को छोड़ने वाला या इसी क़दर ख़र्च हो जावे।

२। हथेली जिस क़दर गड्ढेदार हो इसी क़दर अपनी कमाई से आमद दौलत होवे।

और

३। जिस क़दर हथेली दरमियान से ऊंची और ऊपर को उठी हुई होवे इसी क़दर कर्जे या दूसरों का रुपेया ख़्वाह बददियानती कर के ख़्वाह किसी और तरह उड़ा कर ले आयेगा। यानी अगर गहरी हथेली की लंबाई ५ इंच हो तो ५ आमदन ख़ुद कमाई की। मधमा करीब ३ इंच तो ख़र्च कर देवे ३ यानी बाकी दो जमा छोड़ जावे। उभरी हथेली वाला बुज़ुर्गों की

3

बाहर को
ऊभरी हुई
हथेली
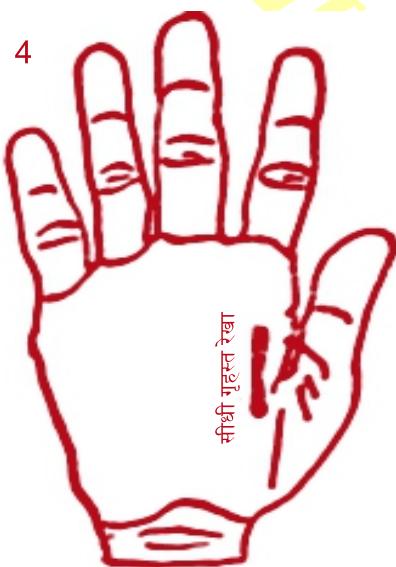
जायदाद ख़ुद-बुर्द कर जायेगा। यही ५ और ३ की औसत दोस्ती दुश्मनी, अच्छे और बुरे पहलु की होगी।

४। गृहस्त रेखा अगर सीधी अलिफ़ की मानिंद खड़ी हो तो माक़ूल आमदन होते हुए भी करज़ाई होगा।

फ़रमान नंबर १०१

उंगली	नंबर	राशि	शक्ल रफ्तार	रंग	तासीर	सुभाओ	घर का मालिक	उंच फल	नीच फल	असर किन किन बातों पर होगा
त	१	मेख	मेढ़ा	सूरज	गरम - खुश्क	आतशी	मंगल	सूरज	सनीचर	जिस्म-राज दरबार-रूहानी- गुस्सा बाप के लिए दौलत
र	२	बृख	बैल	दही रंग	सर्द - खुश्क	ख़ाकी	शुक्र	चंदर	नदारद	दौलत - इज्ज़त
ज नी	३	मिथुन	जोड़ी मर्द औरत	सब्ज़	गरम - तर	बादी	बुध	राहु	केतु	भाई- ससुराल (ख़ुद)- नज़र- जंगी
म	१०	मकर	मगर मच्छ	स्याह	सर्द - खुश्क	ख़ाकी	सनीचर	मंगल	बृहस्पत	वालिद - तमाम गृहस्ती मुतलका
ध्य	११	कुंभ	पानी भरा घड़ा	स्याह	गरम - तर	बादी	सनीचर	नदारद	नदारद	आमदन उम्र भर
मा	१२	मीन	मछली	नीला-ज़र्द	सर्द - तर	आबी	बृहस्पत-राहु	शुक्र- केतु	बुध-राहु	ख़र्च - स्त्री सुख - बजरिया औलाद
अ	४	कर्क	केकड़ा	दूध का	सर्द - तर	आबी	चंदर	बृहस्पत	मंगल	ज़मीन - सफ़र - माता - पानी - दिल
ना	५	सिंह	शेर नर	सुर्ख तांबा	गरम - खुश्क	आतशी	सूरज	नदारद	नदारद	औलाद - इल्म व अक़्ल - ईमानदारी
मी का	६	कन्या	लड़की	सब्ज़-चितकबरा	सर्द - खुश्क	ख़ाकी	बुध - केतु	बुध - राहु	केतु	मामू - दुश्मन - बीमारी - सफ़र लड़के का सुख
क	७	तुला	तराज़ू	दही का	गरम - तर	बादी	शुक्र	सनीचर	सूरज	औरत-ब्योपार-गोयाई-लड़की-बहन
नी	८	बृछक	बिच्छू	सुर्ख	सर्द - तर	आतशी	मंगल	नदारद	चंदर	मौत - बीमारी
ष्का	९	धन	दरियाई गाय	ज़र्द	गरम - तर	आतशी	बृहस्पत	केतु	राहु	मज़हब-करम-धरम-परोपकार-बाबा

हर सातों राशि (दरमियान में ५ छोड़ कर) पर वही उंच होगा जो पहली पर नीच था। ग्रह व राशि क असर मुश्तरका लेते हैं।

मकर
कर्क
मेख़
कुम्भ
सिंह
बृख
तुला
मीन
मिथुन
बृछक
कन्या
धन
फ़रमान नंबर १०२
ब-मुजब राशि के पक्के घर
2
बैल
मेख़
12
मछली
कुम्भ
मिथुन
बृख
मीन
11
3
मेढा
जोड़ा
कर्क
1
घड़ा
4
केकड़ा
1
तुला
मगर मच्छ
धन
सिंह
मकर
दरियाई
गाय
5
7
शेर नर
कन्या
बृछक
9
तराज़ू
लड़की
6
बिच्छू
8
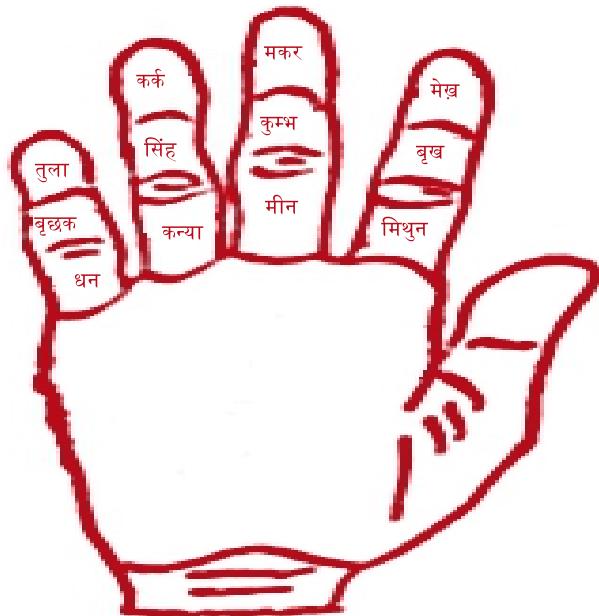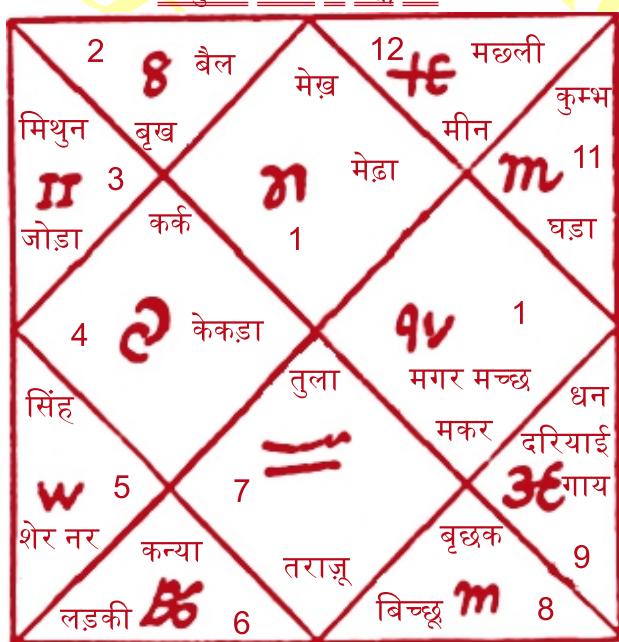
फ़रमान नंबर १०३

ब-मुजब हर ग्रह या बुर्ज के पक्के घर
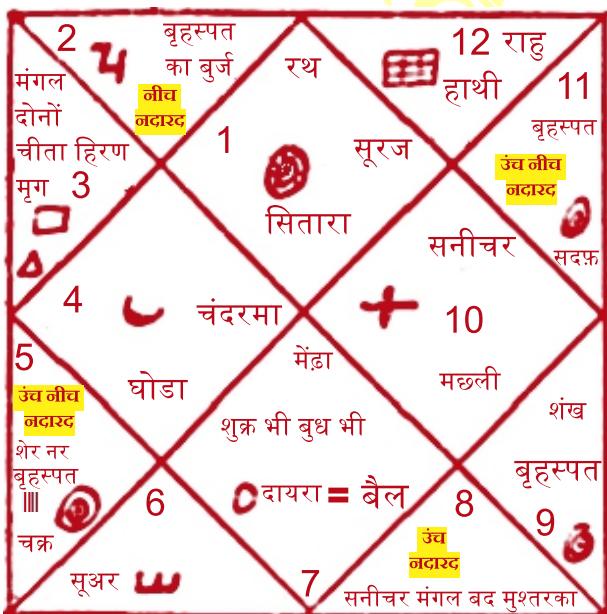
बाज घरों में राशि व ग्रह कुंडली के हिसाब से फ़र्क मालूम होगा यानि फ़रमान १०१ ता १०३ के मुक़ाबला से ये बात ज़ाहिर होगी।दरअसल कुंडली में राशि नंबर से मकान की तह ज़मीन मुराद होगी और ग्रह कुंडली के हिसाब से मकान की इमारत मुराद होगी। मिसाल

खाना नंबर ११ दरअसल राशि के हिसाब से सनीचर की मालकीयत फ़रमान नंबर १०१ है। मगर ग्रह कुंडली के हिसाब से खाना नंबर ११ से बृहस्पत का घर है ब-मुजब फ़रमान नंबर १०३। अब फ़रमान नंबर १०१ में खाना नंबर ११ से मुराद ये होगी की ज़मीन पर तो सनीचर का असर है। पर मकान की इमारत पर बृहस्पत का।
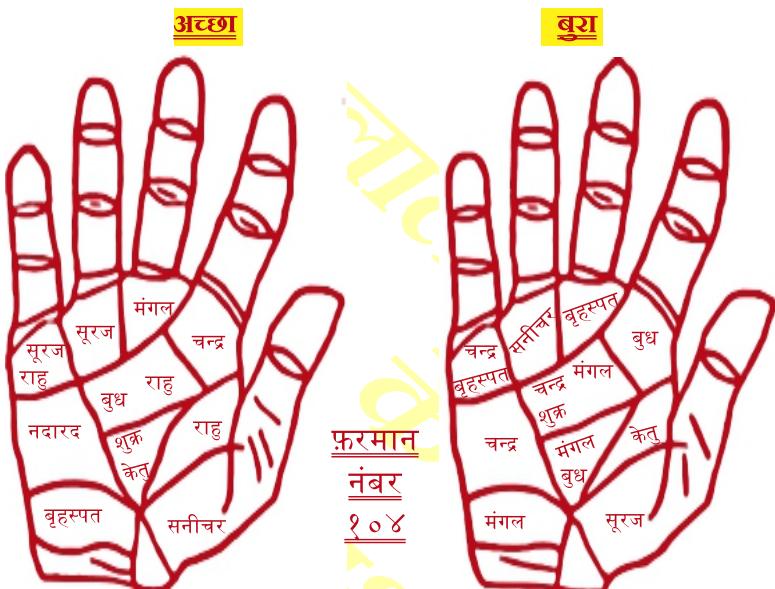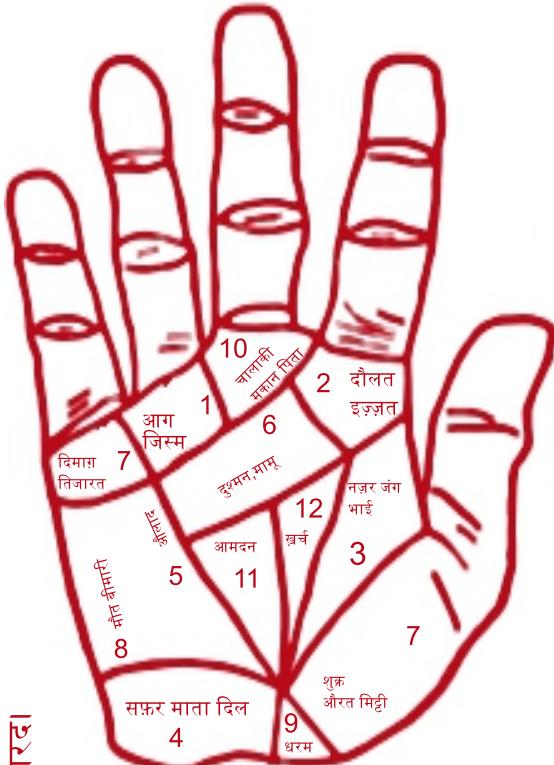
फ़रमान नंबर १०५
10
चालाकी
मकान पिता
2 दौलत
इज़्ज़त
आग
जिस्म
1
6
दिमाग़ 7
तिजारत
दुश्मन,मामू
नज़र जंग
भाई
12
ख़र्च
3
औलाद
आमदन
5
11
मौत बीमारी
7
8
शुक्र
औरत मिट्टी
सफ़र माता दिल
4
9
धरम
दौलत इज़्ज़त
1
खर्च स्त्री सुख
12
नज़र
भाईबंद
नर माद्दा
जंग
3
2
आग जिस्म
ख़ुद अपना आप
रूह गुस्सा
आमदन
11
4
10
सफ़र
माता दिल
पानी शांति
जायदाद
पिता
चालाकी
मकान
7
5
औलाद
नरैना
शुक्र:-
औरत मिट्टी खेती
बुध : - दिमाग़
ब्योपार पेशा
करम धरम
परोपकार
6
सफ़र दुश्मन
मामू लड़कियां
8
9
मौत बीमारी
सूरज और मंगल के मुक़ाबले बुध का फ़ल नदारद।
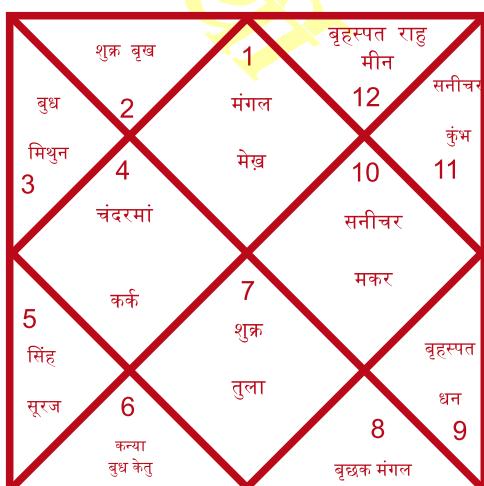
फ़रमान नंबर १०६
सनीचर
शुक्र
मंगल
बुध
केतु व बुध
बुध
मंगल बद
खाना नंबर ५ सूरज
सनीचर
बृहस्पत राहु
शुक्र
सफ़र माता दिल
बृह-
स्पत
शुक्र बृख
2
1
मंगल
मेख़
बृहस्पत राहु
मीन
12
सनीचर
कुंभ
11
बुध
मिथुन
3
4
चंदरमां
कर्क
10
सनीचर
मकर
5
सिंह
सूरज
7
शुक्र
तुला
6
कन्या
बुध केतु
8
बृछक मंगल
बृहस्पत
धन
9
घर का मालिक ग्रह बलिहाज़ राशि
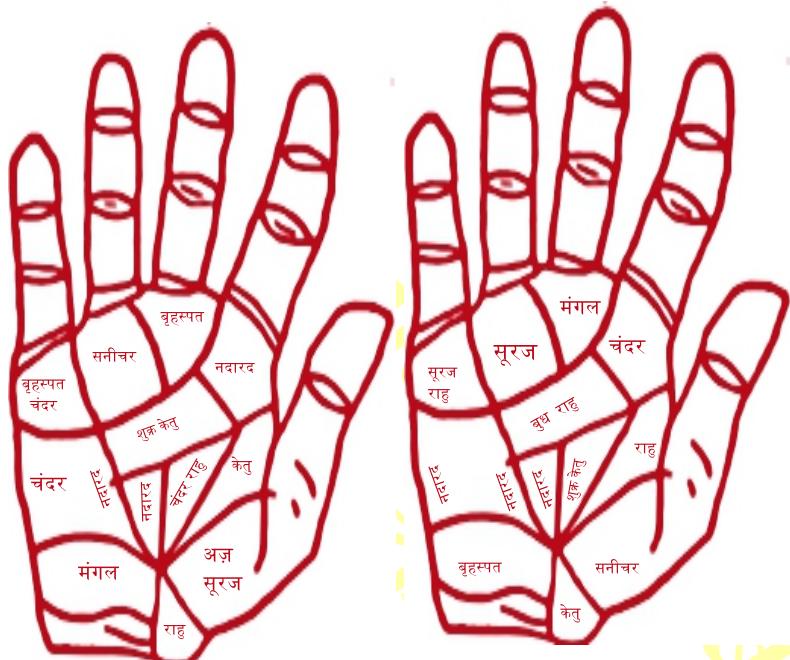
फ़रमान नंबर १०७

उंच फल नीच फल के ग्रह ब-लिहाजा राशि

फ़रमान नंबर १०८
सूरज
मंगल
चंदर
शुक्र
सनीचर
राहु
केतु से मद्धम
शुक्र
बुध
चंदर
बृहस्पत
चंदर मंगल
सूरज शुक्र
मंगल बुध
चंदर
सूरज
चंदर
राहु
केतु चांद ग्रहण
राहु से मद्धम
बृहस्पत के दुश्मन
शुक्र बुध
1
राहु के दुश्मन सूरज
शुक्र मंगल
12
11
मंगल के
दुश्मन
बुध केतु
2
सूरज के दुश्मन
शुक्र से सनीचर राहु केतु
से मद्धम
सनीचर
बृहस्पत
मुश्तरका
4
10
3
चंदर के दुश्मन केतु
राहु मद्धम करें
सनीचर के दुश्मन
सूरज चंदर मंगल
7
5
सूरज
बृहस्पत
मुश्तरका
शुक्र के दुश्मन
सूरज, चंदर, राहु
बुध के दुश्मन चंदर
बृहस्पत
शुक्र
मुश्तरका
6
8
केतु के दुश्मन
चंदर मंगल
सनीचर चंदर
मंगल मुश्तरका
9
हर खाना के मालिक ग्रह के दुश्मन ग्रह

कुंडली में बाहमी ताल्लुक़

हर ग्रह अपने से सातवें (दरमियान में ५ छोड़कर) १०० फ़ीसदी नज़र से

२५% तिकोन

खाना नंबर १ और ७ ⎫ १०० फ़ीसदी नज़र रखते हैं।
खाना नंबर ४ और १० ⎭ अमूमन दुश्मन होते हैं।

खाना नंबर ५ और ९ ⎫ ५० फ़ीसदी नज़र और अमूमन दोस्त
खाना नंबर ३ और ११ ⎭ होते हैं।

खाना नंबर २ और ६ ⎫ पनफ़र ख़राब फ़ल मगर राशि का उंच
खाना नंबर ८ और १२ ⎭ ग्रह अपनी राशि में उत्तम फ़ल देगा। २५% नज़र

नीचा बुर्ज और ग्रह जिस का निशान न मिले नीच फल और नीच राशि का होगा और अगर बुर्ज क़ायम हो और निशान इसका न मिले तो अपने घर का मालिक गिना जावेगा। बुर्ज की मुतलका रेखा से शक दूर होगा। मंगल ४-८ होगा तो मंगल बद होगा। बृहस्पत ५-९ हो तो उत्तम होगा। सनीचर ३-१० हो तो उत्तम होगा। हाथ में अगर कोई रेखा (या निशान ग्रह) न ही होवे तो बुर्जों की ऊंचाई नीचाई से ही कुंडली मुकम्मल होगी। मच्छ रेखा के वक़्त राहु केतु उंच घरों में यानी राहु ६ व ३ केतु ९-१२ उंच घर। काग रेखा के वक़्त ये दोनों ग्रह नीच घरों के होंगे यानी राहु ३-६ में उंच घर और ९-१२ नीच घर, केतु ९-१२ उंच घर, ३-६ नीच घर।

बुर्ज व राशियों की ग़लत फ़हमी

बुर्जों को पक्के तौर पर जगह ब जगह मुकर्रर कर दिया गया है। इसी तरह से ही राशियों की लिए हमेशा के वास्ते जगह मुकर्रर कर दी गई है। बुर्जों के लिए रहने की जगह को बुर्ज या ग्रह का घर कहेंगे। और राशि के लिए मुकर्रर की हुई उंगली की पोरी को राशि का घर कहेंगे। हर बुर्ज या ग्रह का निशान मुकर्रर है। ईसी तरह से हर राशि का निशान भी मुकर्रर है। ग्रह के निशान से ग्रह का जिस्म ताक़त या असर लेंगे। मगर इस के लिए जो जगह हथेली पर हंमेशा के लिए मुकर्रर है वह मुकाम इस ग्रह का घर होगा। ख़्वाह ग्रह ख़ुद किसी दूसरे ग्रह के घर जा बैठा हो। इसी तरह से राशियों का हाल है। यानी राशि की जो जगह उंगली की पोरियों पर मुकर्रर है वह राशि का घर है। और जो निशान राशि का है वह राशि का दिया हुआ असर या जिस्म या वजूद होगा।

इस तरह पर जब किसी बुर्ज का निशान किसी दूसरे ग्रह के घर में पाया जावे तो हम कहेंगे कि वह ग्रह किसी दूसरे ग्रह के घर में चला गया है। मिशाल के तौर पर अगर सूरज का सितारा चंद्र के बुर्ज पर वाके हो तो चंद्र के घर मैं सूरज आया हुआ गिना जाएगा। या अगर यही सूरज का सितारा शुक्र के बुर्ज पर हो तो सूरज को शुक्र के घर महेमान कहेंगे। अब सूरज और शुक्र का या सूरज और चंद्र का जो आपस मे ताल्लुक़ है वही असर जाहीर होगा। इसी तरह से हर राशि के निशान का असर लेंगे।

बलिहाज ताक़त

सूरज – चंद्र – शुक्र – बृहस्पत – मंगल – बुध – सनीचर

बा-तरतीब बाहमी मुक़ाबले कि ताक़त में कम हे।

फ़रमान नंबर १०९

ग्रहों के दोस्त दुश्मन मुसावी ग्रह

नंबर	ग्रह	बराबर की ताक़त के	दोस्त	दुश्मन
१	बृहस्पत	सनीचर, राहु, केतु	सूरज, चंदर, मंगल	शुक्र, बुध
२	सूरज	बुध नदारद, केतु मद्धम करे	बृहस्पत, चंदर, मंगल	शुक्र, सनीचर, राहु से सूरज ग्रहण
३	चंदर	सनीचर, शुक्र, मंगल, बृहस्पत	सूरज, बुध, राहु मद्धम करे	केतु से चंदर ग्रहण
४	शुक्र	मंगल, बृहस्पत	सनीचर, बुध, केतु	सूरज, चंदर, राहु
५	मंगल	सनीचर, शुक्र, राहु नदारद	सूरज, चंदर, बृहस्पत	बुध, केतु
६	बुध	सनीचर, केतु, मंगल, बृहस्पत	सूरज, शुक्र, राहु	चंदर
७	सनीचर	केतु, बृहस्पत	बुध, शुक्र, राहु	चंदर, सूरज, मंगल
८	राहु	बृहस्पत, चंदर मद्धम हो जावे	बुध, सनीचर, केतु	शुक्र, सूरज, मंगल
९	केतु	बृहस्पत, सनीचर, बुध, सूरज मद्धम हो जावे	शुक्र, राहु चंदर, मंगल	
कैफ़ियत	चंदर और शुक्र मुसावी मगर चंदर दुश्मनी करता है शुक्र से बृहस्पत शुक्र मुसावी मगर शुक्र दुश्मनी करता है बृहस्पत से मंगल सनीचर मुसावी मगर मंगल दुश्मनी करता है शुक्र से चंदर बुध दोस्त मगर चंदर दुश्मनी करता है बुध से			

चंद्र दुश्मनी करता है से मुराद ये है कि ख़ुद अपना ही फल जो कुण्डली के बारह खानों कि तफ़सील में फ़रमान नम्बर ११८ में दिए है। ख़ुद ही दुश्मनी करने वाला ग्रह ख़राब कर देगा।

हर एक ग्रह के क़ायम होने के वक़्त
इसके दूसरे हमसाया ग्रहों की ताक़त

बृहस्पत के वक़्त में – ये ग्रह किसी से दुश्मनी नहीं करता है। चंद्र ½ , शुक्र 3 ¾ , गुना सनीचर ¾ , केतु 5/6 होगा। बृहस्पत ख़ुद सूरज राहु के वक़्त चुप होगा मगर बुरे ग्रहों के साथ अपना निस्फ़ अर्सा यानी आठ साल हमेशा नेक होगा। दुश्मनी का असर 8 साल के बाद हो सकेगा।

सूरज के वक़्त में

ये ग्रह ख़ुद कभी नीच नहीं होगा। शुक्र साथ हो तो शुक्र नीच होगा मगर दोनों के मिलाप से बुध पैदा होगा। यानी फूल होंगे मगर फल न होगा।

केतु ½ , बुध ½ , सनीचर ख़ुद अपने लिए बरुए दौलत 2/3 और वालिद के लिए ½ **जायदाद के लिए १/३**।

चंद्र से कोई दुश्मनी नहीं करता

ये ग्रह ख़ुद अपने नेक असर किसी के साथ होने पर घटा लेता है। राहु ½ होता है।

शुक्र

ये किसी को नीच नहीं करता दूसरे ख़ुद इसको करते हैं। चंद्र ½ , सनीचर 1/3

सनीचर के वक्त

चंद्र 1/3 केतु ½ होगा।

बुध के वक्त –

सनीचर 1- ¼, केतु – ¼ , चंद्र ½ होगा।

मंगल नेक के वक्त –

शुक्र , सनीचर , मंगल बद तीनों ही 1/3 हर एक केतु और बुध दोनों ½ हर एक राहु सिफ़र

राहु के वक़्त – सूरज सिफर , चंद्र ½ होगा।

केतु के वक्त – चंद्र सिफ़र , सूरज ½ होगा।

फ़रमान नंबर ११०

ग्रहों का मुश्तरका फ़ल

नंबर	ग्रह	निशान होवे बृहस्पत का	सूरज का	चंदर का	शुक्र का
१	बृहस्पत का	ब मुजब तादाद व लकीर उत्तम फ़ल होगा	दोनों का जुदा जुदा और उत्तम	दोनों मुश्तरका उत्तम	बृहस्पत का मद्धम शुक्र से इश्क़ मुहब्बत में कामियाब
२	सूरज का	दोनों का अपना अपना उत्तम फ़ल	सब से उत्तम होगा	सिर्फ़ सूरज का और उत्तम	शुक्र का ख़राब मगर सूरज का अपने लीए उम्दा व उत्तम
३	चंदर का	दोनों का मुश्तरका उत्तम	बाहम उत्तम	अपना पूरा उत्तम फ़ल	दुनियावी दोनों का ख़राब बातनी चंदर का प्रबल और उत्तम
४	शुक्र का	शुक्र का अच्छा बृहस्पत का हल्का दुश्मनाना	सूरज का औरत को ख़राब मगर अपने लिए इकबालमंद होगा	दुनियुयावी दोनों का ख़राब बातनी चंदर प्रबल उत्तम	अपना उत्तम फ़ल होगा
५	मंगल नेक	दोनों का मुश्तरका उत्तम	दोनों का और उत्तम सूरज का उत्तम प्रबल होगा	दोनों का और उत्तम	दोनों का और उत्तम
	मंगल बद	ख़राब	ख़राब	ख़राब	ख़राब
६	बुध का	दोनों का और दुश्मनी का	दोनों का और उत्तम सूरज का प्रबल	दुनियावी दोनों का ख़राब रूहानी चंदर का उत्तम प्रबल	दोनों का उत्तम
७	सनीचर	दोनों का अपना अपना मगर सनीचर का ख़राब	दोनों का अपना अपना सनीचर का ख़राब	दोनों का और ख़राब	दोनों का बाहम उत्तम
८	राहु	दुश्मनाना और ख़राब	सूरज ग्रहण	चंदर मद्धम होवे	दुश्मनाना और ख़राब
९	केतु	दुश्मनी का और ख़राब होगा	सूरज मद्धम होवे	चंदर ग्रहण	दोनों का उत्तम होगा

ग्रहों का मुश्तरका फ़ल

नंबर	ग्रह	निशान होवे नेक मंगल का	मंगल बद का	बुध का	सनीचर का	राहु का	केतु का
१	बृहस्पत का	दोनों का मुश्तरका उत्तम	ख़राब	दुश्मनाना बुध का ख़राब	दोनों का जुदा जुदा सनीचर का ख़राब	दुश्मनाना ख़राब	**नेक**
२	सूरज का	दोनों का और उत्तम सूरज का उत्तम प्रबल	ख़राब	दोनों का और उत्तम सूरज का उत्तम प्रबल	दोनों का और ख़राब	सूरज ग्रहण	सूरज मद्धम होवे
३	चंदर का	दोनों का उत्तम	ख़राब फल	दुनियावी दोनों का ख़राब रूहानी चंदर का उत्तम प्रबल	दोनों का और ख़राब	चंदर मद्धम होवे	चंदर ग्रहण
४	शुक्र का	दोनों का और उत्तम	ख़राब फल	दोनों का और उत्तम	दोनों का बहुत उत्तम	दुश्मनाना ख़राब	दोनों का उत्तम
५	मंगल नेक का	अपना उत्तम फ़ल होगा	ख़राब १/३	मंगल का अच्छा बुध का ख़राब	दोनों का और उत्तम	राहु नदारद मंगल का उत्तम	दुश्मनाना ख़राब
	मंगल बद का	उम्दा हो	ख़राब फ़ल	ख़राब	उत्तम फ़ल	ख़राब	ख़राब
६	बुध का	मंगल का अच्छा बुध का ख़राब होगा	ख़राब	अपना उत्तम फ़ल	दोनों का उत्तम	दोनों का उत्तम	दोनों का अपना अपना उत्तम
७	सनीचर	दोनों का और उत्तम	अपने लिए उत्तम फ़ल	दोनों का और उत्तम	अपना उत्तम फ़ल देगा	दोनों का उत्तम	दोनों का यकसां उत्तम
८	राहु	राहु नदारद मंगल का उत्तम फल	दोनों का उत्तम	दोनों का उत्तम	दोनों का यकसांउत्तम	उत्तम	खराब
९	केतु	दुश्मनाना ख़राब।	खराब	अपना दोनों का उत्तम	दोनों का उत्तम	खराब	उत्तम

मुश्तरका ग्रहों की मियाद जुदी जुदी होती है

फ़रमान नंबर १११

राशियाँ

१ – तादाद में १२ हैं जिन का जुदा-जुदा मुकाम हर एक उंगली की जुदी – जुदी

पोरी पर हमेशा के लिए पक्के तौर पर मुकर्रर है। गिनती चाल और जगह मुक़र्रर करने के वक्त मध्यमा उंगली को बाद में या सब उंगलियों के आखिर पर लेते है। क्योकि मध्यमा उंगुली सन्यास या दुनिया से अलेहदगी की उंगुली गिनी गई है। जिस का ताल्लुक गृहस्त के बाद होगा।

२ – पहली उंगली तर्जनी की तीनों राशियों का इकट्ठा लिया हुआ असर ज़िंदगी का पहला हिस्सा या जमाने की हवा की वाक़फ़ियत या बृहस्पत का अहद है जो २५ साला उम्र तक गिना है

दूसरी उंगली अनामिका की राशियों से सूरज का जमाना गृहस्त का ताल्लुक २५–५० ख़ुद कमाई वगैरह होगा। तीसरी कनिष्का की तीन राशियों का असर साधूपन या गृहस्तों को उपदेश का अर्सा ५०–७५ होगा। चौथी उंगली मध्यमा की तीनों राशियों का असर ७५–१०० तक बनप्रस्थि होगा। ये जरूरी नहीं है की हर एक राशि का निशान उंगली की उसी पोरी पर वाक्या हो जहां की उस राशि का मक़ाम मुक़र्रर है लेकिन अगर निशान अपनी मुक़र्रर जगह पर ही होवे तो वह आदमी उसी राशि का होगा और अगर कोई भी निशान राशि न पाया जावे तो हैरानी की बात नहीं। ग्रहों या बुरजों

से पता चल जाएगा। अगर कोई निशान अपनी मुक़र्रर जगह की बजाए किसी दूसरी जगह उंगली या हथेली पर पाया जावे तो वही राशि कुण्डली में खाना नंबर एक पर गिनी जावेगी। कुण्डली के खानों की तादाद – तरतीब चाल और मुकाम हमेशा के लिए मुस्तक़िल तौर पर मुक़र्रर कर दिए गए है। बारह राशियों के किए बारह ही खाने मुक़र्रर हैं। इन १२ खानों में ९ ग्रह आएंगे बाकी **४ (ख़ाना७ में दो इकट्ठे)** में बृहस्पत हवा का असर गिना जाएगा क्योकि हर खाली जगह में हवा जरूरी होगी।

मिसाल के तौर पर किसी हाथ में मिथुन राशि का निशान II जोड़ा पाया जावे। जो राशियों की गिनती में नंबर ३ पर है मगर कुण्डली के खानों में अब मिथुन राशि **का निशान जिस खाने मे वाके हो उस खाने को** खाना नंबर एक लिखकर राशियों की गिनती की तरतीब से कुण्डली के १२ के १२ खानें पूरे कर लिए जाएंगे।

३ – इसी तरह से बुरजों के घर और निशान और तरतीब हमेशा के लिए मुक़र्रर हैं। जिस बुर्ज का निशान जहां कहीं पाया जावे उसी हिसाब से ग्रहों को कुण्डली में भर लिया जाएगा। ग्रहों और राशियो की कुंडलियों के खाने भी जहां तक हो सके बाहम मिलते जुलते मुक़र्रर किए गए है सिर्फ मामूली फर्क है जो गौर से देखने से मालूम हो जाएगा?

४ - देखने से मालूम होगा की राशि नंबर २ बृख के घर का मालिक शुक्र (मिट्टी या औरत) है जिसे लक्ष्मी का अवतार माना है यही घर बृहस्पत को कुण्डली में दौलत व इज्जत का मिला है **" बैल पर साधू की सवारी शिवजी बैल पर सवार लेंगे"** इस घर को सब ग्रहों ने इज्जत से देखा है न इस राशि का नीच ग्रह है। न ही शुक्र या लक्ष्मी ने किसी राशि को नीच किया है यानी नीच करने वाले ग्रहों के नामों में शुक्र का नाम कहीं नहीं मिलता। लक्ष्मी की इस सिफ़्त से इसे बीज माना गया है और उस घर में सिर्फ गुरु को ही बिठाया है। लक्ष्मी या शुक्र औरत मिट्टी के साथ खाना नंबर ७ में भी बुध को ही जो (न नर होवे न मादा) मुखन्नस है जो जमीन को गोल करता और शुक्र औरत लक्ष्मी मिट्टी की दोस्ती का दम भरता है और इसकी रिहाइश के लिए अपने घर में ही इसे जगह दे दी है। मगर ख़ुद इसकी हिफाज़त के लिए खाना नंबर ७

में ही बैठा है। राशियों के घरों में भी इसने छठी राशि कन्या लड़की और **मिथुन राशि नंबर ३** बृहस्पत के बुर्ज के ऐन साथ मिली हुई तर्जनी की जड़ पसंद की है अगर **मिथुन** राशि नंबर ३ पर बैठाया तो भी उसने लक्ष्मी को बृहस्पत के **खाना नंबर २ की** नज़र में रखा है जो शुक्र का अपना घर खाना नंबर २ है। मतलब ये कि लक्ष्मी वहाँ ही उत्तम है जहां इस कि इज्जत ऐसी हो।

राशि नंबर ५ सूरज का घर है। जिसे किसी ग्रह ने उंच नीच न किया। सूरज इसी उसूल पर कभी न घटता है न बढ़ता है या कभी गरुब नहीं होता।

राशि नंबर ८ - मंगल का घर या लाल जंगी झंडे वाले का मुकाम है जिसे किसी ने उंच नहीं किया। इसकी अपनी माँ या चंद्र (माता) ने ही नीच कर दिया है। और खाना नंबर ८ लड़ाकों किया सबके लिए ही मौत का घर हो गई है। इसी वजह से जिस्म ने दिल (चंद्र) को अपना सारा सहारा बनाया है की मौत से बचाता रहे। मगर चंद्र भी पानी – पानी होकर समंदर ही में चला जाता है। (चंद्र को समंदर भी माना है या मौत के डर से माता का अपना दिल भी बड़े समंदर में छुप जाता है और मौत का खाना बुलंद नहीं होता। आखिर सबको आँख पथराने पर (सनीचर के आखिरी वक्त में) रूपये के आठ आने ही मिलते है यानी अपनी कमाई के रूपये का निस्फ़ या (नेकी व बदी की दो चीज़ों से एक अठन्नी ही साथ ले जाता है)।

राशि नंबर ११ - सब ग्रहों ने कोशिश की मगर इसे नीच कोई न कर सका। आखिर पर सनीचर ख़ुद बदनामी उतारने के लिए सबके लिए कुम्भ पानी का भरा हुआ घड़ा शगुन के तौर पर ले आया की अगर चंदर (पानी) से ही मौत का घर उंचा हो सकता है तो मेरे भी काम आएगा। मगर खाना नंबर ११ सब की अपनी अपनी आमदन है। इसे कौन नीचा करें। सब की क़िस्मत का मुकाम है। इसलिए कहा जाता है की मेरी क़िस्मत को कौन धोएगा या मेरी क़िसमत को तो कोई नहीं धो सकता। सबको अपना अपना हिस्सा मिल जाता है। और फिर जब ये खाना एक से ग्यारह हो गया है। क़िस्सा मुख़्तसरन इसी पानी के घड़े के क़तरे

क़तरे पर सबने लड़ना और मरना है। जिसे क़िस्मत देगी वह लेगा। सनीचर ख़्वाह अपने घर मेन ही इस घड़े को रखने और सब से होशियार आँख से ही , निगरानी क्यों न करे मगर बरतने वाला तो बृहस्पत ही सब का गुरु है। इसी उसूल के हौसले पर इंसान १२ राशियों के बारह साल को गुजरता है। कि आखिर कभी न कभी १२ साल के बाद ही मालिक (बृहस्पत) सुन ही लेगा और ये सच है कि १२ साल के बाद ही सब कि अमूमन सुनी जाती है और फिर वही बृहस्पत का जमाना बदलने को खाना नंबर १ सूरज निकाल आता है।

नंबर ५ हर राशि के सातवें नंबर पर वही ग्रह उंच होगा जो पहले नीच था यानी ७ ग्रह और १२ राशि या बारह सत्ते (बारह गुना सात) ८४ चौरासी की जुनी का जंजाल या रात दिन में चौरासी लाख साँस का मसला अजीब पैदा हो चुका है। हर सातवें के बाद फिर वही ग्रह असर करते है। हर आठवें साल वही हालत हो जाती है इसी उसूल पर *

नंबर ६ अल्प* आयु वालों का उम्र के हर आठवें साल ८-१६-३२-४०-४८-५६-६४ तंग हाल और आम लोगों का उम्र के हर सातवें साल के बाद हालत कि तबदीली मानते है (ये उम्र रेखा में मुफ़सिल है)

नंबर ७ पांचों उंगलियों और सातों ग्रह कि चाल या सात पंजे ३५ साल के बाद सब ग्रह अपना चक्र पूरा कर जाते है। जो ग्रह पहले चक्र में बुरा असर करते है वह अपने दूसरे चक्र में यानी ३५ साल के बाद दूसरी चाल में उत्तम फल देंगे। ऐसे चक्र सारे १२० साल उम्र में तीन दफा ज्यादा से ज्यादा आते है। हर ग्रह का अर्सा मियाद भी उतने ही साल है जितने साल कि उम्र पर असर गिना है। यानी बृहस्पत १६ कि उम्र में अमूमन होगा और १६ साल ही असर देता रहेगा। इसी तरह बाकी सब ग्रह अपना – अपना असर देते है।

जिस्म का नाक व ज़माने का बृहस्पत

जिस तरह ग्रहों में ग्रह बृहस्पत सबसे पहले गिना गया है उसी तरह ही इंसानी जिस्म में नाक भी सबसे पहले उत्तम हुआ है। नाक को भी बृहस्पत ही माना है जिस का असर भी खास क़ाबिल गौर है।

नाक

लंबी नीचे को झुकी हुई	दियानतदार साहिबे इज़्ज़त व दौलत।
तोते की चोंच मानिंद बुलंदी व पशती में एक जैसी	परहेज़गार।
छोटी नाक वाला	धर्मात्मा।
लंबी व चौड़ी	महेनती मगर छुपाकर काम करने वाला
लंबी व पतली	बहादुर
मिक़दार से ज़्यादा लंबी	अय्याश, बेशर्म, मुफ़लिस
गोल, बड़ी व मोटी	नेक ख़सलत।
अंदाज़ से बहुत छोटी	बददियानत, जालसाझ, फ़रेबी
छोटा व चपटा	शाहाना तबीयत।
मुंह की तरफ़ झुकी हुई	शहवत परस्त

मोटी- छोटी-पश्त	कम अक़्ल - परेशानी रोज़गार होवे।
बारीक नाक	तबीयत नेक मगर अक़्ल कम
दरमियानी मगर अंदर को झुकी हुई	कम अक़्ल, मुफलिस
दरमियानी से चौड़ी सिरे से तंग	मनहूस, बदनसीब
दरमियान से पस्त सिरे से तंग	मनहूस, बददियानती
दरमियान से ऊंची सिरे से तंग	दौलतमंद

नाक का अगला हिस्सा (सिरा) (बुध)

मोटा व गांठदार	ख़ुद पसंद, ख़ुद गर्ज़
बड़ा व गांठदार	सुलह पसंद
नाक चौड़ी नथुने चौड़े	कुंद जहन
नथुने चौड़े	वहसी, शहवत परस्त
नथुने तंग	अक़्लमंद, शर्मशार, फ़य्याज़ मगर मूतकब्बिर
नाक बदन से ज़्यादा सुर्ख़ हो	लालची, बदफ़ैल, नेकी का दुश्मन

गरदन

लंबी (मर्द)	बेवक़ूफ़
लंबी (औरत)	नेक निहाद
मोटी गरदन	दौलतमंद
टेढ़ी गरदन	मुफलिस
पतली गरदन	अक़्लमंद
ऊंची गरदन	फ़रेबी, चोर, बदमाश
छोटी गरदन	हाज़िर जवाब
चौड़ी गरदन	बेवक़ूफ, लालची

फ़रमान नंबर ११२

तमाम उम्र पर असर **(आम वर्ष फल)**

अज़ साल	ता	असर ग्रह	अज़ साल	ता	असर ग्रह
१	६	सनीचर	७१	७६	सनीचर
७	१२	राहु	७७	८२	राहु
१३	१५	केतु	८३	८५	केतु
१६	२१	बृहस्पत	८६	९१	बृहस्पत
२२	२३	सूरज	९२	९३	सूरज
२	४	चंदर	९	४	चंदर
२५	२७	शुक्र	९५	९७	शुक्र
२८	३३	मंगल	९८	१०३	मंगल
३४	३५	बुध	१०४	१०५	बुध
३६	४१	सनीचर	१०६	१११	सनीचर
४२	४७	राहु	११२	११७	राहु
४८	५०	केतु	११८	१२०	केतु
५१	५६	बृहस्पत			
५७	५८	सूरज			
५	९	चंदर			
६०	६२	शुक्र			
६३	६८	मंगल			
६९	७०	बुध			

बारह साल तक बच्चे की क़िस्मत का कोई ऐतबार नहीं। ७० साल के बाद मर्द की अपनी क़िस्मत का कोई ऐतबार नहीं। बच्चों की क़िस्मत होगी। वह ख़ुद सत्तरया बहत्तरया हो गया। ३५ साल में तमाम ग्रह चक्र पूरा करते है।

फ़रमान नंबर ११३

	ग्रह	घर की राशि	उंच फल की राशि	नीच फल की राशि	मियाद असर
१	बृहस्पत	धन खाना नंबर ९ मीन खानानंबर १२	कर्क खाना नंबर ४	मकर खाना नंबर १०	३२ दिन
२	सूरज	सिंह खाना नंबर ५	मेख खाना नंबर १	तुला खाना नंबर ७ सूरज केतु से मद्धम	२२ दिन राहु से सूरज ग्रहण
३	चंदर	कर्क खाना नंबर ४	बृख खाना नंबर २	बृछक खाना नंबर ८ चंदर राहु से मद्धम होवे	२४ दिन केतु से चाँद ग्रहण
४	शुक्र	बृख खाना नंबर २ तुला खाना नंबर ७	मीन खाना नंबर १२	कन्या खाना नंबर ६	५० दिन
५	मंगल नेक मंगल बद	मेख़ खाना नंबर १ बृछक खाना नंबर ८	मकर खाना नंबर १० मकर खाना नंबर १०	कर्क खाना नंबर ४ कर्क खाना नंबर ४	५६ दिन
६	बुध	मिथुन खाना नंबर ३ कन्या खाना नंबर ६	कन्या खाना नंबर ६	मीन खाना नंबर १२	६८ दिन
७	सनीचर	मकर खाना नंबर १० कुंभ खाना नंबर ११	तुला खाना नंबर ७	मेख़ खाना नंबर १	७२ दिन
८	राहु	मीन खाना नंबर १२	कन्या खाना नंबर ६ मिथुन खाना नंबर ३	धन खाना नंबर ९ मीन खाना नंबर १२	औसतन ४० दिन
९	केतु	कन्या खाना नंबर ६	धन खाना नंबर ९ मीन खाना नंबर १२	कन्या खाना नंबर ६ मिथुन खाना नंबर ३	३६० से ३६६ दिन

ग्रह कि निशानी खानें में होगी

ग्रह कि निशानी खानें में होगी

बृहस्पत - ज़र्द रंग अश्या, पीपल का दरक्त, बारीस, तालीम शुरू या ख़त्म, अफ़वाह, नक्कारा-ए-खल्क, सांस, पेशानी, नाक, सोना वगैरह, गुरु मंदिर, शेर हवा, दाल- चना, मुंर्ग, केसिर

सूरज - दिन का वक़्त लाल गाय, भैंस-लाल, भूरा रीछ, दायीं आँख व जिस्म का दायां हिस्सा, गंदुम, सुर्ख तांबा, (स्याह मुँह बंदर को सूरज नहीं गिनते है।) बंदर, गंदुमी-रंग, रथ गाड़ी, दिन के वक्त की औलाद, इकलौता लड़का, गंदुमी रंग, नेवला-गंदुमी, भूरी कीड़ी।

चंदर - बायां हिस्सा जिस्म या आँख बायीं, तालाब, चाँदी, कुआं, घोडा

दूध, रात का वक्त, चकोर, खरगोश, माता, समंदर, दूध रंग मोती, चाँवल सफ़ेद, बिल्ली सफ़ेद रंग।

शुक्र - फल, औरत, शादी, सफ़ेद गाय, चिड़िया (मादा), घी, दही, रुखसार मिट्टी, रेत, मिट्टी रंग, काफुर, मोती सफ़ेद।

मंगल नेक - पेट, खाना, मीठा भोजन, बच्चा पैदा होना, सिंदूर दाल, मसूर, साधु-संत, तड़का सुबह का वक्त, हलवानी रंग-लाल होंठ, छाती, नीम का दरख्त तलवार, चीता, हिरण, शहद।

मंगल बद - काना आँख का नुक़्स, कोई मौत ताजा, चालीस चंदरा, आग से इंसान वगैरह का जल जाना, आग की जगह, बच्चा वगैरह की मौत, छींक, डेक का दरख़्त।

बुध - बुध नीच (भेड़), बुध घर का (बकरी), बुध ऊँच घर का (मैना), बकरी -भेड़, बगैर सींगों की गाय, फुलवाड़ी, सब्ज रंग, फूल, तोता, फ़कीर की आवाज, लड़की, मूंग सालिम, जमरूद, हीरा, बोलना, प्लाह का दरख्त, दांत, ज़बान।

सनिचर - मछली, मगरमच्छ बिच्छू स्याह रंग .... गाय, कीड़े, मकान बनना, आग से किसी चीज का जल जाना जो जानदार न होवे, भैंस स्याह, बेरी का दरख़्त, माश सालिम, काला साँप, कीकर का दरख़्त, खच्चर (मुश्तरका सनिचर) बिनाई, कौआ, स्याह रीछ, लोहा।

राहु - ख़्वाब, हाथी, झोला मर्ज, हिलना, ठोड़ी, कुत्ते की मौत, बिल्ली स्याह रंग, रिश्तेदार, नीला रंग, नीलम।

केतु - केला, गधा, इमली, टांग, कुत्ता दो रंगा जो सुर्ख न होवे। सुनना, कान, छिपकली, पेशाब गाह, तिल, चूहा, सूअर, चिड़ा (चिड़ी का नर) जिस्म पर फोड़े।

फ़रमान नंबर ११३ A
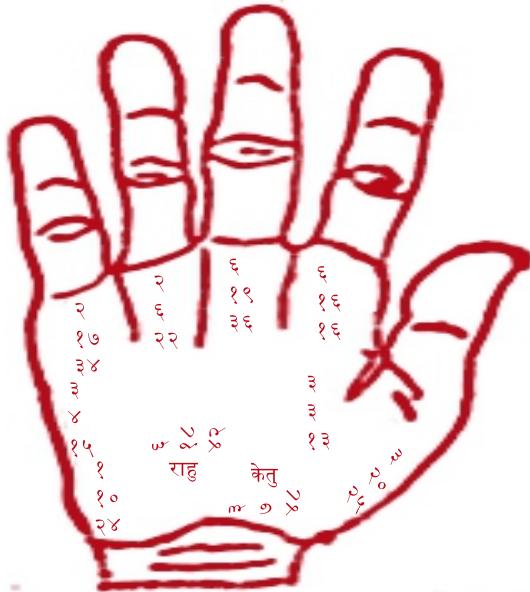
	ग्रह	आम अरसा ३५ साल	महादशा १२० साल	कुल साल २७५	असर का वक़्त	मानिंद	
१	बृहस्पत	६ साल	१६ साल	१६ साल	दरमियान में	शेर	३२
२	सूरज	२ साल	६ साल	२२ साल	शुरू में	रथ	२२
३	चंदर	१ साल	१० साल	२४ साल	आख़िर पर	घोडा	२४
४	शुक्र	३ साल	२० साल	२५ साल	दरमियान में	बैल	५०
५	कुल मंगल	६ साल	७ साल	२८ साल	शुरू में	मृग हिरण चीता	५६
६	बुध	२ साल	१७ साल	३४ साल	हमेशा यक्शा	मेंढ़ा	६८
७	सनीचर	६ साल	१९ साल	३६ साल	आख़िर पर	मछली	७२ ३२४
८	राहु	६ साल	१८ साल	४२ साल	आख़िर पर	हाथी	३६ दोनों
९	केतु	३ साल	८ साल	४८ साल	आख़िर पर	सूअर	रियायती ४० दिन
	मंगल बद	३ साल	४ साल	१५ साल	सूरज के बगैर मंगल बद		६०
	मंगल नेक	३ साल	३ साल	१३ साल	होता है।		३६०-३६६

हर ग्रह अपने निस्फ़ और चौथाई हिस्सा मियाद में भी अपना असर ज़ाहिर कर देता है।

एक दिन में ग्रहों की मियाद

सामुद्रिक में इल्मे ज्योतिष की तरह से न तो ग्रहों की चाल की तरतीब होगी (यानि एक साल के बाद दूसिरे ग्रह का असर आ जाना) न ही वह असर की मियाद होगी। इस इल्म में ३५ साल का चक्र, हर चक्र में ३५ साल की ग्रह वार मीज़ान के साल और हर एक साल में उतने ही दिन और हर महीने में उतने ही दिन और हर दिन में उतने ही २/३ घंटे या ४० मिनिट फी ग्रह की यूनिट (इकाई) यानि :-

	मियाद घंटे
बृहस्पत का वक़्त	४ - ००
सूरज	१ - २०
चंदर	० - ४०
शुक्र	२ - ००
दोनों मंगल	४ - ००
बुध	१ - २०
सनीचर	४ - ००
राहु व केतु	६ - ००
रियायती	० - ४०
	-----------
	२४ - ०० घंटे रियायती

फ़रमान नंबर ११४

गैबि ताकत में ग्रह	क़िस्म ग्रह	नं ग्रह	नाम ग्रह	रंग	उपाओ वास्ते औलाद व दीगर वजूहात	उपाओ आम की विजे
ब्रह्मा	नर ग्रह	१	बृहस्पत	ज़र्द	हरी पूजन	दाल, चना, सोना
विष्णु	नर ग्रह	२	सूरज	गंदुमी	कथा हरी बंश	गंदुम, सुर्ख तांबा
शिवजी	स्त्री	३	चंदर	दूध का	आराध्य पूजन	चावल, दूध, चाँदी
लक्ष्मी	स्त्री	४	शुक्र	दहीं का	लोगों की पालना	घी, दहीं, काफ़ूर, मोती सफ़ेद, रेत
हनुमान	नर ग्रह	५	मंगल	सुर्ख	गायत्री पाठ	दाल मसूर, लाल
दुर्गाजी	मखन्नस	६	बुध	सब्ज़	दुर्गा पाठ	मुंग सालम, ज़मरूद
भैरोंवली	मखन्नस	७	सनीचर	स्याह	राजा की उपासना	मास सालम, लोहा
सरसती	मखन्नस	८	राहु	नीला	कन्या दान	सरसाम, नीलम
गऊ माता	मखन्नस	९	केतु	चितकबरा	दान कपिला गाय	तिल

जो ग्रह नीच फल देवे उस ग्रह के बचाओ के लिए इस जगह दिया हुआ दान फ़रमान ११३ से मिलाकर करें।

बृहस्पत

शुक्र से नीच - धन दौलत खराब न होगा। मगर चाल चलन व जिस्मानी नुक़्स होंगे।

सूरज

शुक्र से नीच होवे - तो जनमूरीदी - औरत की कबूतरबाजी - बदअखलाक - रूहानी नुक़्स। राहु से नीच होवे - राजदरबार से खराबी। आमदन खराब खर्च बुरे कामों में - ख़ुद अपने दिमाग की अपने आप पैदा की हुई खराबियाँ।

केतु से मध्यम होवे - सफर में नुकसान, दूसिरे के सलाह मशवरा से नुकसान, पाँव की पैदा करदा खराबियाँ।

चन्द्र

मंगल बद खाना ८ से नीच - माता की मौत - दिल की खराबियाँ - बीमारी वगैरह। लोंगों से दुश्मनी की ख़राबी - (मिर्गी वगैरह की बीमारी)

केतु से खाना ६ **ख़राब** होवे - माता की कुआं लगने के बाद फौरन मौत, औलाद की मौत - सफर में (दरियाई व समंदरी) नुकसान - दूसरा कोई आदमी गुमराह कर देवे।

राहु से मध्यम होवे - ख़ुद अपना ही दिल खराबी करावे।

शुक्र

कन्या राशि में नीच होवे - जब वहां केतु न होवे यानि औरत बांझ होवे या लड़कियां ही पैदा करे।

मंगल

चंदर की राशि ४ व घर - कम रोब होवे। मामूली आदमी सखत दुश्मन हो बैठे।

बुध

सनीचर की राशि १० व घर - अक्कल में शरारत की वजह से दुश्मनी खड़ी होवे और आँख के इशारे में नुकसान पैदा होवे। शराब कबाब व जबान का चस्का बर्बाद करे।

<u>सनीचर</u>

मेख खाना नंबर १ सूरज का घर ऊंच व मंगल का मकान - बददियानत - झगड़ालू - धोकेबाज़- औलाद का दुःख- आमदन खराब- हर तरफ मुंह पर स्याही फिरती जाए और नज़र में नुक़्स पैदा होंवे।

<u>राहु</u>

धन राशि खाना नंबर ९ - करम धरम से दूर रहने वाला, बे धरम दिमागी खराबी धरम से नीच करावे, मज़हब का नीच हो जावे, औलाद भी नालायक होवे।

मीन राशि खाना नंबर १२ - गृहस्त का सुख - पैसे रुपए का सुख व औरत का सुख - बाकी साथियों का सुख वगैरह सब बुरे नतीजे देंवे। मगर अपनी उम्र पर कोई खराबी न होवे। **कच्चा धुआँ होगा मगर आग ना होगी।**

<u>केतु</u>

कन्या राशि का अपना घर। मामू बर्बाद, सफर हमेशा बिला मतलब, दुश्मन बिन बुलाये पैदा होंवे। मगर अपने लिए ऐसा बुरा न होवे।

मिथुन राशि ३ - मर्द औरत की आपस में जुदाई, दोस्तो से बरखिलाफ़ी बिलावजह होवे। औरत के झगड़े या किसी दूसिरे सलाहकार की गलत सलाह, खेती - बाड़ी व दौलत का सुख खराब होवे।

<u>निशानियाँ</u>

बृहस्पत की - सोने का नुकसान, झूठी अफवाहें, तालीम बंद करना वगैरह बृहस्पत खत्म हुआ।

सूरज की - लाल गाय या भैंस का मर जाना या घर से चली जाना, सूरज खत्म हुआ।

चंदर की - घर से दूध चला जावे, घोड़े की मौत, तालाब - कुआं खुश्क हो जावे, माता खत्म होवे - चंदर नीच होगा।

शुक्र - गाय बैल धन दौलत की चोरी या गुम हो जाना।

मंगल - बच्चा पैदा हो कर खत्म हो जावे, आँख कानी हो जावे - मंगल बद आया और मंगल नेक खत्म हुआ।

बुध - फ़कीर की बाद दुआ हो जावे, तोता गुम हो जावे, दोस्त से झगड़ा हो जावे, जबान थूथलावे।

सनीचर - मकान गिर जावे, आग लगे, भैंस मर जावे सनीचर बुरा हो गया।

राहु - स्याह कुत्ता घर से चला जावे या गुम हो जावे, बिल्ली रोवे, स्याह रंग रिश्तेदार की नज़र में फ़र्क हो जावे।

केतु - दो रंगा कुत्ता, कान के सुनने की ताकत, छिपकली का गिर पड़ना अपने लिए तो अच्छा मगर भाई-बंदों औलाद (लड़के) के लिए मनहूस।

सूरज के बगैर मंगल का असर मंगल बद का ही होता है। मंगल बद सब का ही दुश्मन है। मंगल बद का असर ज़हमत,बीमारी, झगड़ा और धरम के खिलाफ़ कारवाइयाँ होता है। सूरज चंदर को तो ऊँच करता है मगर सूरज को कोई ऊँच नहीं करता न ही सूरज और चंदर को कोई नीच कर सकता है। इन का फल अपने लिए उत्तम होता है।

पापी ग्रहों का बुरा असर जरूर साथ हो जाया करता है।

फ़रमान नंबर ११५

एक ग्रह के साथ मिले हुए दूसिरे ग्रह का अर्सा, असर - असर सालों में

बुर्ज़ होवे	बृहस्पत का	सूरज का	चंदर का	शुक्र का	मंगल नेक का	मंगल बद का	बुध का	सनीचर का	राहु का	केतु का
बृहस्पत	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६
सूरज	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	००	११
चंदर	१२	२४	२४	१२	२४	२४	१२	८	१२	०
शुक्र	दौलत ६०	२५/३४	२५	२५	८	२५	२५	२५	२५	२५
मंगल नेक	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
मंगल बद	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५
बुध	३४	१७	३४	३४	१७	३४	३४	३४	३४	३४
सनीचर	वालिद २७ ज़र	१८/२४	३६	१२	१२	३६	४५	३६	३६	३६
राहु	४२	४२	४२	४२	०	४२	४२	४२	४२	४५
केतु	४०	२४	४८	४८	२४	४८	४८	४८	४५	४८

ताल्लुक या निशान होवे।

फ़रमान नंबर ११६

३० दिन महिनें में १२ घंटे का दिन और इसी तरह १२ की रात	नंबर	ग्रह	बाहमी ताल्लुक	नंबर राशि	राशि	मानिंद	एक साल में मियाद दिन
१६	१	बृहस्पत	शेर नर व हवा	९	धन	नील गाय	१६
१६		बृहस्पत		१२	मीन	मछली	१६
२२	२	सूरज	रथ, सुर्ख़ तांबा या गंदुमी, आग	५	सिंह	शेर नर	२२
२४	३	चंदर	घोडा सफ़ेद, पानी	४	कर्क	केकड़ा	२४
२५	४	शुक्र	सबैल, दहीं रंग सफ़ेद, मिट्टी	२	बृख	बैल	२५
२५		शुक्र		७	तुला	तराज़ू	२५
२८	५	मंगल नेक	हिरण	१	मेख	मेंढ़ा	२८
२८	मौत	मंगल बद	मृग पंजाबी में हिरण पहाड़ में चीता	८	बृछक	बिच्छू	२८ मृग
३४	६	बुध	मेंढ़ा, सब्ज़	३	मिथुन	जोड़ा मर्द औरत	३४
३४		बुध		६	कन्या	लड़की	३४
३६	७	सनीचर	मछली स्याह	१०	मकर	मगर मच्छ	३६
३६		सनीचर		११	कुम्भ	मछली	३६
-----------							--------
३२४							३२४
दोनों ३६ ता ४० या ४२ रियायती ३६४/३६६	८	राहु	हाथी काला या नीला	१२	मीन	मछली	४० दिन या ४२ दिन दोनों से एक या यही रियायती दिन ३६४/३६६
	९	केतु	सूअर चितकबरा मगर सुर्ख न होगा	६	कन्या	लड़की	

ग्रह जिस तरतीब से ऊपर लिखे हैं इसी तरतीब से एक के बाद दूसिरा इन्सान पर अपना अपना असर करते हैं।

बृछक राशि सनीचर की उंगली बिच्छू मगर-मच्छ मौत बीमारी है।

फ़रमान नंबर ११७
बुर्ज़ (ग्रह) और राशियाँ

ग्रह	निशान ग्रह	राशि	नंबर	निशान राशि
बृहस्पत	५ इंद्रियाँ ‖‖ खड़े ख़त	धन	९	
बृहस्पत	चक्कर शंख सदफ़	मीन	१२	
सूरज	सितारा शाख़दार ख़त	सिंह	५	
चंदर	आधा टेढ़ा ख़त	कर्क	४	
शुक्र	लेटे ख़त —	बृख	२	
शुक्र	=	तुला	७	
मंगल नेक	चोकोर □	मेख	१	
मंगल बद	∧ ∠ ∧ मशलश △	बृछक	८	
बुध	○ दायरा	मिथुन	३	
बुध		कन्या	६	
सनीचर	✚ नरयुग्म त्रिशूल	मकर	१०	
		कुंभ	११	
मंदरीजे	जैल का कोई बुर्ज़ नहीं है	मुश्तरका राशियाँ देवें		
राहु	जाल साया सिर पदम	मीन	१२	
केतु	चारपाई	कन्या	६	

बंदर की लकीर / जब सिर पर छड़ी की मानिंद हो जावे या दो शाखी का साथ हो बंदर नीच या मंगल बद का निशान होगा। यानी बंदर खाना नंबर ८ का और मंगल खाना नंबर ४ का होगा।

यह जरूरी नहीं की हर ग्रह अपने हाशिये की लकीरों से बने हाथ पर रेशों से भी वही मुराद होगी। मिसाल □ चारों तरफ की लकीरों से मिलकर मंगल बना। यही शक्ल अगर ▦ बारीक - बारीक रेशों से हाथ के बाक़ी रेशों से जुदा हो जावे तो भी मंगल नेक होगा।

<u>फ़रमान नंबर ११८</u>

हर ग्रह के हाल में बुर्जों का असर और कुण्डली के १२ खानों में असर जुदा-जुदा दिया गया है। जिस का फ़र्क ये है कि उंगलियों पर निशानों कि वजह से जब हम कोई ग्रह कुण्डली में मुकर्रर घर में लिखें तो उसका असर कुण्डली के बारह खानों में दिया हुआ असर होगा और जब कोई निशान बुर्ज़ पर हो तो बुर्जों का दिया हुआ असर लेंगे।
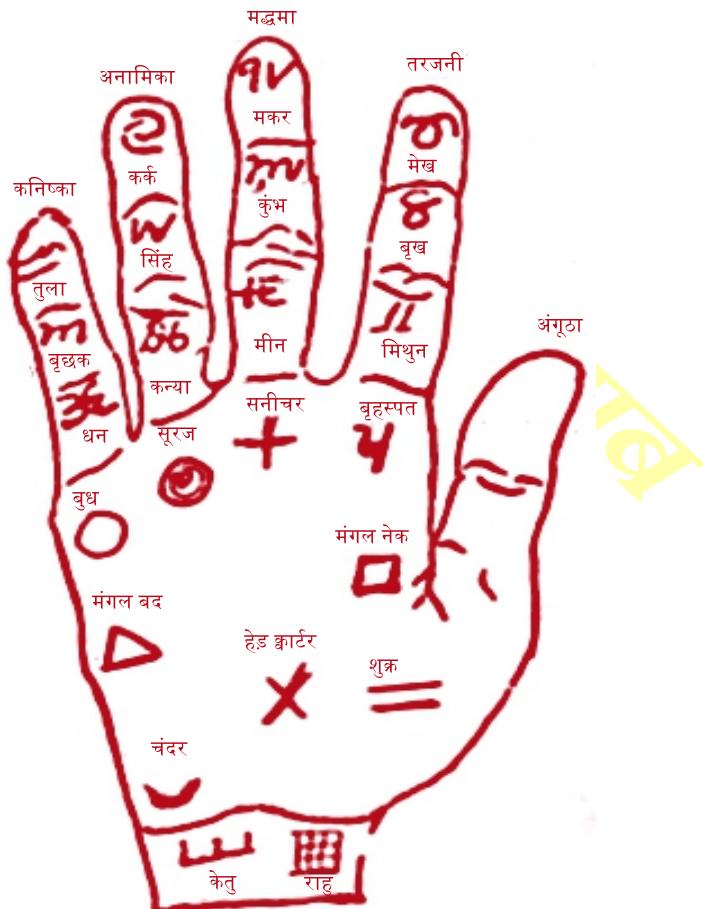
नोट :- सनीचर का हैडक्वाटर जहां उम्र रेखा और सेहत रेखा बाहम कट जावे उम्र का आख़िर या मौत का मुकाम होगा।

कुण्डली में १२ खानों कि तफ़सील

खाना नंबर १ सूरज का घर गिना गया है। जिस्म - आख़िरी उम्र तक तमाम अंग क़ायम रूहानी ताक़त, दिल कि सच्चाई धरम ईमान दुनियावी ईमानदारी (पैसे धेले में)ख़ुद जाती कमाई से दौलत जमा व जायदाद पैदा करे। रूपये का ¼ परोपकारी हो। मंदिर, कुएं धर्मार्थ काम पुरानी रसुमात को चलाने वाला हो। इल्म व अक़्ल का साथ रहे मगर तबीयत में गुस्सा। औलाद नेक होवे। औरत का सुख होवे। वालिद कि उम्र का लंबा साथ हो। चौपाये का सुख रहे। ख़ुद अपनी उम्र लंबी (१०० साल पूरा उत्तम सूरज)राजदरबार से ताल्लुक ज्यादा अर्सा और नेक होवे। अगर सूरज रेखा और किस्मत रेखा न हों या बाहम न मिलें तो सब कुछ नाश होवे। ख़ुदकुशी तक नौबत आए।

मियाद असर - सूरज के उत्तम असर के वक़्त चंदर शुककर और बुध का कभी बुरा असर न होगा। चंदर व शुक्र अपना तमाम अर्सा मगर बुध सूरज के साथ चलने के वक्त का निस्फ़ अर्सा १७ साल तक बिलकुल चुप रहेगा। बाद में अपना असर शुरू कर लेगा। बाक़ी ग्रह पूरा - पूरा वक्त सनीचर अपने अर्से का २/३ या २४ साल दौलत और आमदन पर और ½ या १८ साल वालिद कि आमदन पर असर करेगा यानि अगर २२ से शुरू हो तो ख़ुद इस पर २२ + २७ = ४९ साल व २२ + १८ = ४० साल वालिद की आमदन पर अपना अच्छा या बुरा जो भी हो असर करेगा।

सितारा सूरज व सूरज रेखा का मुफस्सल असर जूदी जगह दर्ज है।

ऐसे शख्स का बुढ़ापा निहायत उम्दा होगा मगर मौत अचानक होगी।
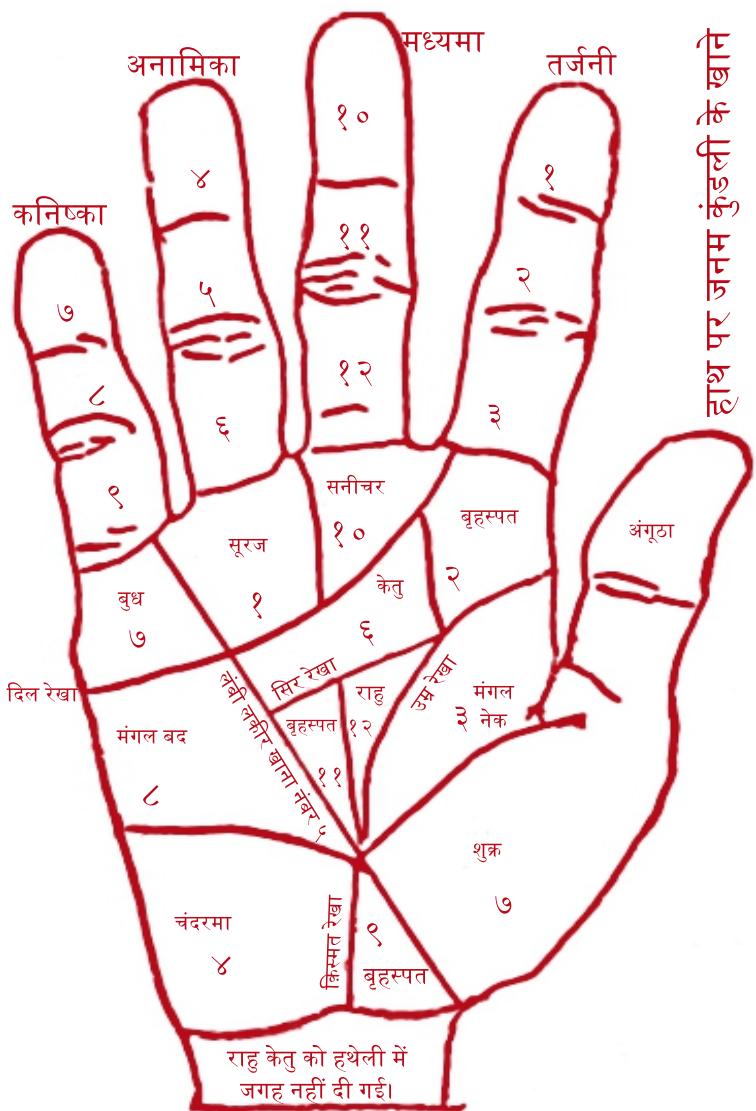
सूरज का बुर्ज़ कुण्डली का खाना नंबर १है। मगर सूरज खाना नंबर १ में तब ही होगा जबकि सूरज के बुर्ज़ पर बुध की तरफ सूरज का सितारा कायम हो वरना सूरज खाना नंबर ५ का होगा। (सूरज रेखा या सेहत रेखा खाना नंबर ११ के आख़िर तक)

खाना नंबर २ बुर्ज़ बृहस्पत का है - उम्र ७५ साल। इज़्ज़त व दौलत अज़ ससुराल व दूसिरे दुनिया के साथी बजरिये उम्र रेखा।

श्रेष्ठ रेखा - गृहस्त रेखा या धन रेखा वगैरह क़िस्मत का असली मक़सद यानि न आँख लगे न हाथ दौलत ख़ुद ब ख़ुद हवा की तरह आवे व आराम होवे। ये ग्रह अपने वक्त का निस्फ़ या हमेशा ८ साल अच्छा फल जरूर देगा। इसके असर के वक्त चंदर (१२) साल अपना निफ़्स केतु ८ साल मंगल बद ८ साल इसके वक्त का निस्फ़ - निस्फ़ अर्सा असर देंगे। बाक़ी ग्रह अपना - अपना पूरा - पूरा अर्सा। शुक्र दुश्मन है। लेकिन जब अकेला इस बुर्ज़ पर हो तो सारी उम्र आराम ६० साल दौलत की आमद होवे। सनीचर के असर में सेहत हल्की रहे।

खाना नंबर (३) का असर - बुर्ज़ मंगल का है उम्र ९० साल

(1) नेक मंगल - दोस्त-भाईबन्द ससुराल व ससुराल खानदान - औलाद को सुख मददगार मुतलका दुनिया हौसला नज़र बिनाई, आदलना तबीयत

(2) मंगल बद - दुश्मन, दूसिरे भाई, ताये चाचे मामू व मामू खानदान, जंगों जदल शरारत खूनी हौसले।

नोट :- सूरज के बगैर मंगल को मंगल बद गिनते हैं। जो बीमारी मौत का असर देगा। सिर रेखा के सही होने पर मंगल बद का असर न होगा।

मियाद असर - इसके असर के वक्त शुक्र(८ साल) सनीचर(१२ साल) मंगल बद (५ साल) तीनों १/३ अर्सा अपने -अपने वक्त का केतु (२४ साल)और बुध (१७ साल)½ अर्सा अपना और राहु बिलकुल चुप होगा। और असर नदारद। बाक़ी पूरा - पूरा अर्सा असर होगा। मंगल अगर मृग (हिरण)हो तो बुज़दिल और अगर चीता हो तो शेर से भी ज्यादा खून पीने वाला होगा।

कुण्डली में खाना नंबर ४ बुर्ज़ चंदरमा का है। उम्र ८५/९६ साल होगी। **घोडा**, माता, जायदाद जद्दी, खेती की जमीन, गैबी मदद और बाग बगीचे, बालाई आमदन, कुआं, पानी, समंदर, दूध, दिल, शांति, सफर, मकान रिहाइशी।

तय जमीन रूहानी ताकत और ख़ुदाई पहुँच, खुशी गमी की रेखा। **कपड़ा बजाजी जिस के लिए माता का साथ मददगार और माता से अलहदा किसी और जगह दूर हो कर बजाजी के काम का फल मंदा होगा।**

शुक्र और बुध इसका निस्फ़ अर्सा और ताकत भी निस्फ़ जाया कर देते हैं। मगर वह अपनी ताकत वह पूरी रखते हैं। बाक़ी ग्रह पूरा-पूरा असर करते हैं।

चंदर का सूरज के साथ मिलने पर सूरज का फल हो जाता है और दोनों का ही फल उत्तम होगा। सूरज के वक्त चन्द्र अपनी जुदी रोशनी जाहीर नहीं करता और सूरज से ही रोशनी लेगा।

कुण्डली में खाना नंबर ५ - 'बृहस्पत औलाद' बहुत बड़ा बृहस्पत शुक्र होगा।

.... इल्म औलाद का सुख हो। जो खूबसूरत और नेक होगी मामू का सुख ,जंगल पहाड़ का ताल्लुक, आग का खौफ, जौ का निशान अंगूठे पर क्योंकि सूरज का घर है इसलिए शुक्र और बुध का कभी बुरा असर न होगा। क्योंकि सूरज के सामने शुक्र और बुध दोनों चुप होंगे।

खाना नंबर ६ - केतु का है उम्र ८० साल दुश्मन, मामू खानदान को सुख, देश परदेश की ज़िंदगी, अपनों से मुहब्बत, नर औलाद, दौलत की आमद पर आमद अपने लिए अच्छा होगा मगर दूसिरों पर अपना बुरा असर देगा। जब उत्तम हो और बृहस्पत का साथ हो ये बुध की राशि और केतु का निवास है।

खाना नंबर ७ - में बुध फूल और शुक्र फल या बीज है शुक्र के बगैर खराब अक्ल वाला होगा।

खाना नंबर ७ - बुर्ज़ शुक्र का है। उम्र ८५/९६ साल। औरत का ताल्लुक-तादाद और सुख, अज़ीज़ों से मुहब्बत और सारी उम्र आराम (जब अकेला बृहस्पत पर हो ६० साल दौलत आवे)- खेती के मुतलका सामान गाय बैल का सुख और उत्तम फल। सवारी का सुख - चौपाए का लाभ - राग से मुहब्बत - शायर हर दो मुहब्बत हक़ीक़ी और गैर हक़ीक़ी इसके असर को सूरज - चंदर - राहु

खराब करते हैं। बहुत बड़ा बृहस्पत शुक्र होगा और बहुत बड़ा शुक्र औलाद से महरूम रखेगा। नरम हाथ का बृहस्पत मामूली शुक्र होगा। स्त्री धन का सुख इस बुर्ज़ का दुनियावी कारोबार से कोई ताल्लुक नहीं। ज़्यादातर पराई मिट्टी का शौक और पराई मिट्टी की पूजना आम ढंग होता है जिस में ख़ुद जाती कमाई और जायदाद जद्दी बर्बाद होगी। सबब सिर्फ अपनी दिमागी नक्ल व हरकत होगी। गुस्सा (सूरज की गर्मी) बुनियाद होगा।

बुध खाना नंबर ७ - पेशा दस्तकारी, दोस्ती की ताकत, ...उम्र ८० साल, तहरीर व तक़रीर बोलने की ताकत, दुनियावी तजुर्बा, हाज़िर माल का व्यापार, पेशा दस्तकारी हुनरमंदी।
माता की उम्र - दौलत का राखा (बुध के निस्फ़ अर्सा १७ साल) मियाद असर केतु १२ साल ¼ अर्सा मगर सनीचर १-१/४ या ४५ साल और सनीचर की खराबी की ताकत भी १-१/४ या सवाई होगी।बाक़ी अपना पूरा-पूरा अर्सा सूरज के साथ बुध अपना निस्फ़ या १७ साल चुप रहता है।

कुण्डली में खाना नंबर ८ - असर सनीचर का मौत का है। जिस्मानी सेहत, दुःख बीमारी और मौत, दूसिरों के लिए ज़िंदगी और कमाई ताए चाचे और ख़ुद अपनी उम्र के साल मंगल बद और सनीचर बुरा असर देंगे।

खाना नंबर ९ असर बृहस्पत का - धरम परोपकार तीर्थ यात्रा वालिद का सुख, घर के अपने आदमियों की नंबरदारी, हकीमी, परहेजगारी चाल चलन। मंगल बद शुक्र और बुध खराब करते हैं। सिर रेखा सही होने पर मंगल बद का असर न होगा। उत्तम सूरज में बृहस्पत का धरम कभी भी नीच न होगा। इस खाना के असर के लिए फ़रमान नंबर १२२ के जुज़ १२ से २३ बल्कि २५ जरूर मुलाहिजा हो।

कुण्डली में खाना नंबर १० - बुर्ज़ सनीचर का है। उम्र ९० साल। करम मक्कारी, आँख की होशियारी से धन दौलत का भण्डारी मंगल नेक की तबीयत के बिलकुल बरअक्स वाला। जादू मंत्र की ताकत वाला। आँखों से ही कान का कम लेने वाला (काला साँप) उत्तम हालत में सब पर प्रबल होने वाला। ईंट पत्थर व सामान मकान का ताल्लुक, जहरीले जानवरों और दरिंद और परिंद पर हावी (छा जाने वाला)। वालिद की उम्र ज्यादा, रफ़ाए आम के काम मियाद असर सूरज (७ साल), चंदर (८ साल), मंगल (९ साल) अपने अपने अर्से में सनीचर को १/३ जाया करेंगे। केतु का (२४ साल) का उसके अपने अर्से का ½ होगा। बाक़ी अपना अपना पूरा अर्सा सूरज-चंदर -मंगल दुश्मनाई का असर देंगे।

सनीचर की मौत सबसे बुरी मौत हुआ करती है। और सूरज की सबसे उत्तम।

खाना नंबर ११ असर बृहस्पत - आमदन का है। हर तरह की कमाई जिस में तमाम ग्रहों का असर शामिल है।

श्रेष्ठ रेखा, ऊर्ध रेखा, धन रेखा, क़िस्मत रेखा हाथ की हथेली वगैरह सब के सब इसमें शामिल हैं। केतु का सबसे ज्यादा असर होगा जो उत्तम हालत में खूब दौलत पर दौलत देगा। मगर केतु की हाजिरी में चंद्रमा दूर होगा। यानि जायदाद जद्दी तो इतनी न होगी जितनी वह ख़ुद कमाई करेगा। इस खाने के लिए तमाम के तमाम इल्म की वाकफी सब से ज्यादा जरूरी होगी। ये आमदन का खाना है बचत का नहीं। यानि बचत क्या होगी इस बात का जवाब खाने से नहीं मिलता।

खाना नंबर १२ - असर बृहस्पत - राहु का है। खर्च -दौलत का सुख व खर्च। स्त्री का औलाद का बज़रिया धन सुख सनीचर का बेहद कबीला सट्टे का

व्यापार, पराई दौलत की हिफाज़त व सुख दुख।

असर - ये बृहस्पत का घर है जिस में राहु का निवास है। इस घर में मंगल होने पर राहु चुप चाप होगा। खर्चा कबिलेदारी के कामों में होगा। मगर बहुत ज्यादा होगा। व्यापार सट्टे के लिए भी बुध के असर से ये नीच होगा। यानि बुध की हाजरी मे व्यापार उत्तम न होगा। यानि खर्च होगा मगर व्यापार उत्तम न होगा। क्योंकि राहु - बुध दोस्त हैं।

मुश्तरका नोट

हर एक ग्रह अपने वक्त के निस्फ़ व एक चौथाई में भी अपना असर पूरा-पूरा करता है।

फ़रमान नंबर ११९ A
ग्रहों से खानापुरी

घर का बृहस्पत उंच

बृहस्पत	कुंडली का खाना नंबर
क़िस्मत रेखा की जड़ पर चार शाखी ख़त ⽊ हो।	७
सूरज के बुर्ज़ पर बतरफ़ बुध एक चक्कर हो, बृहस्पत का खास अपना निशान १ या दोनों हाथों को इकट्ठा गिनकर उंगलियों पर तादाद में सिर्फ़ एक शंख या एक चक्कर या एक सीधा ख़त बृहस्पत के अपने बुर्ज़ पर पाया जावेगा तो बृहस्पत होगा।	
कुंडली का खाना नंबर	१
२ सदफ़ या बृहस्पत के बुर्ज़ पर २ सीधे ख़त	२
३ सदफ़ ७ चक्कर या ७ सीधे ख़त या गृहस्त रेखा बृहस्पत के बुर्ज पर	३
४ सदफ़ या ४ शंख या ४ ख़त या २ चक्कर, चंदर पर शंख होवे सिर्फ़ एक, चंदर रेखा बृहस्पत के बुर्ज पर ख़तम होवे।	४
५ सदफ़ ५ चक्कर या ५ ख़त तमाम उंगलियों पर हों या सेहत रेखा नीचे जा कर क़िस्मत के शुरू हिस्से में मिल जावे यानी कलाई से क़िस्मत रेखा निकल कर सेहत रेखा से मिल जावे।	५
६ चक्कर या क़िस्मत रेखा की जड़ में केतु का निशान हो या बृहस्पत से शाख़ खाना नंबर ६ हाथ की मुस्ततील पर में ख़तम होवे। ३चक्कर ३ शंख या ३ सदफ़ ३ खत	६
६ ख़त ४ चक्कर ५ शंख या शुक्र का बृहस्पत होवे यानी या तो बृहस्पत का बुर्ज़ बहुत बड़ा होवे या नरम हाथ का बृहस्पत होवे, औलाद रेखा शादी रेखा को काटे, क़िस्मत रेखा की जड़ पर बुध का दायरा हो। शुक्र के बुर्ज पर भाइयों की	७

बृहस्पत नीच

	कुंडली का खाना नंबर
रेखा लंबी लंबी और टेढ़ी होवे सिर रेखा उम्र रेखा से जुदी होकर बृहस्पत के बुर्ज का रुख करे।	७
२ शंख, ८ सीधे ख़त, गृहस्त रेखा मानिंद अलिफ हो। ८ चक्कर या ११ चक्कर जब ६ उंगलिया हो। क़िस्मत रेखा सूरज रेखा से न मिले। बृहस्पत का बुर्ज बिलकुल न होवे। हाथ पर हो। क़िस्मत रेखा या दिल रेखा या उम्र रेखा दो शाखी ∠ हों। क़िस्मत रेखा की जड़ पर △ हो।	८
क़िस्मत रेखा सीधे डंडे की तरह शुरू होकर खड़ी होवे। सूरज के बुर्ज़ पर बतरफ़ बुध एक सदफ़ हो। १० चक्कर हों।	९
उर्ध रेखा या उम्र रेखा चंदर पर ख़तम यानी पितृ रेखा बनीहो। बृहस्पत और सनीचर के बुर्ज दो शाखी से मिले हों	१०
९ चक्कर या सिर की श्रेष्ठ रेखा पाई जावे।	११
३ ख़त ६ शंख १२ चक्कर (जब उंगलिया ६ हों)। क़िस्मत रेखा की जड़ पर राहु का निशान हो, या मच्छ रेखा शुक्र के बुर्ज पर या शुक्र व चंदर दोनों बुरजों के दरमियान मुंह ऊपर को किए हुवे और उर्ध रेखा या उम्र रेखा इस के मुंह में हो।	१२

नोट : उंगलियों की पोरियों से लिया गया बृहस्पत सिर्फ़ राशि नंबर का होगा। बुर्ज़ नंबर का न होगा। हाथ की हथेली से लिया हुआ बृहस्पत बुरजों के खाना नंबर का होगा। **(सफा ९७) बशर्ते की बृहस्पत के निशान चक्कर, शंख, सदफ़ से न लीया हुआ होवे क्यूँ की ऐसे निशानों से लिया हुआ बृहस्पत भी राशि नंबर का होता है। सिर्फ बृहस्पत की रखा या बृहस्पत का खास निशान ये ५ इंद्रिया से लिया हुआ बृहस्पत बुर्ज नंबर का होगा।**

फ़रमान नंबर ११९ B

सफा १९३ जुज ३ अलफ

सूरज का ग्रह

		कुंडली का ख़ाना नंबर
उंच	**शुक्र बुध दोनों सूरज की सेहत रेखा से मिल जावे और सूरज रेखा बजाते ख़ुद दुरस्त हालत में बुर्ज नंबर १ में पायी जावे।** सूरज का सितारा सूरज के अपने बुर्ज़ पर बतरफ़ बुध हो	१
	क़िस्मत रेखा या सूरज रेखा जब बृहस्पत का रुख़ करे मगर सनीचर के बुर्ज़ पर न हो।	२
	सूरज रेखा से शाख मंगल नेक को।	३
	सूरज के बुर्ज़ से शाख चंदर के बुर्ज़ को मगर मंगल बद का ताल्लुक न हो।चंदर और सूरज के बुर्जों के दरमियान रेखा दोनों बुर्जों को मिलाती मालूम होवे। मगर दरअसल मिलावे न। शराफ़त रेखा जब दरमियान से ऊपर को झुकी हो ।	४
घर का	**"सूरज रेखा दिल रेखा पर खतम होवे।"** सूरज रखा बिलकुल सीधी सूरज के बुर्ज़ पर ही हो। और सूरज के अपने घर में ही मालूम होवे। और सूरज का बुर्ज़ क़ायम हो। सेहत रेखा बुध से चलकर हथेली में खाना नंबर ११ तक ख़तम होवे।	५
	सूरज रेखा हाथ की बड़ी मुस्ततील में ख़तम होवे।	६
सूरज नीच	शुक्र के बुर्ज़ से शाख़ सूरज के बुर्ज़ को। शुक्र का पतंग हथेली पर क़ायम हो। (खाना नंबर ७ से जो बुध का भी घर है, बुध जुदा असर नहीं करता।) सूरज के बुर्ज़ से शाख़ मंगल बद को। क़िस्मत रेखा न होवे।	७
	सूरज रेखा न हो। या क़िस्मत रेखा और सूरज रेखा दोनों बाहम न मिले।	८
	क़िस्मत रेखा की जड़ पर चार शाखी ख़त हो।	९
	सूरज रेखा सनीचर के बुर्ज़ पर हो।	१०
	सूरज रेखा हथेली में खाना नंबर ११ बचत में ख़तम हो।	११
	सूरज रेखा हथेली में खाना नंबर १२ ख़र्च में ख़तम होवे।	१२

फ़रमान नंबर ११९ C

	चंदर का ग्रह	कुंडली का खाना नंबर
	चंदर से सूरज को रेखा।	१
उंच	मुहब्बत रेखा क़िसमत रेखा चंदर से शुरू हो कर बृहस्पत पर ख़तम होवे।	२
	मंगल नेक से शाख़ चंदर को हो। या चंदर रेखा मंगल नेक के बुर्ज़ पर ख़तम हो।	३
घर का	धन रेखा जब चंदर से शुरू हो या सिर रेखा के नीचे Δ हो।	४
	दिल रेखा सूरज के बुर्ज़ की जड़ तक ही ख़तम होवे। चंदर के बुर्ज़ से शाख़ सेहत रेखा में जा मिले।	५
	चंदर रेखा जब सिर रेखा को अबूर कर के हाथ की बड़ी मुस्तैल में ख़तम होवे।	६
	दिल रेखा जब कनिष्का की जड़ या बुध के बुर्ज़ पर ही ख़तम हो जावे। ।........ चंदर रेखा सिर रेखा से मिल कर ख़तम हो जावे **तो उम्र खतम मालूम हुई ऐसी हालत में** फ़क़ीरी रेखा, नशाबाज़ी की रेखा, शराफ़त रेखा, सिर और रेखा दिल रेखा मिल जावें। सेहत रेखा दिल रेखा को काटे।	७
नीच	सिर रेखा के ऊपर Δ हो। मंगल बद से चंदर को रेखा। पितृ रेखा या क़िस्मत रेखा चंदर के बुर्ज़ पर Δसी बना दें। उम्र रेखा या **क़िस्मत रेखा दो शाखी ʌ∠ हो जावे कलाई की तरफ खाना नंबर ९ के करीब बाहम मिल कर।**	८
	क़िस्मत रेखा चंदर के बुर्ज़ से कलाई पर शुरू हो।	९
	दिल रेखा मद्धमा की जड़ सनीचर के बुर्ज़ तक हो। उम्र रेखा दिल रेखा से मिल जावे। सिर, उम्र और दिल रेखा तीनों मिल जावें।	१०
	चंदर **या दिल** रेखा बृहस्पत को जा निकले। मगर बृहस्पत तक न हो। या हथेली पर खाना नंबर ११ बचत में ही ख़तम होवे।	११
	चंदर रेखा हथेली पर खाना नंबर १२ ख़र्च में ख़तम हो जावे।	१२

फ़रमान नंबर ११९ D

शुक्र का ग्रह

		कुंडली का खाना नंबर
	शुक्र के बुर्ज़ पर अंगूठे की जड़ में सूरज का सितारा हो। शुक्र के शाख़ सूरज के बुर्ज़ को हो। शुक्र का पतंग पूरा हो।	१
घर का	अकेली शुक्र रेखा बृहस्पत के बुर्ज़ पर वाक़े हो। सेहत रेखा, औलाद रेखा शादी रेखा को काटे। भाइयों की रेखा लम्बी लम्बी और टेढ़ी बृहस्पत को हो।	२
	गृहस्त रेखा मंगल नेक से शुक्र के बुर्ज़ में अंगूठे की जड़ में ३ झुक जावे। धन रेखा शुक्र के बुर्ज़ से शुरू हो कर मंगल नेक पर ख़तम हो।	
	फ़क़ीरी रेखा, नशा रेखा, शराफ़त रेखा सीधी लकीर लेटी हुई चंदर शुक्र को मिलावे।	४
	सेहत रेखा या सूरज की तरक़्क़ी रेखा शुक्र से चल कर बुध पर ख़तम होवे।	५
नीच	सेहत रेखा या सूरज की तरक़्क़ी रेखा जब शुक्र से चल कर हथेली की बड़ी मुस्ततील खाना नंबर ६ में ख़तम होवे। शुक्र पर राहु का निशान हो।	६
घर का	सेहत रेखा बुध से चलकर शुक्र के बुर्ज़ में ख़तम होवे। या शुक्र के बुर्ज़ पर बुध का दायरा ○ हो।	७
	शुक्र से मंगल बद को शाख़।	८
	धन राशि से आकर कोई ख़त शादी रेखा को काट देवे।	९
	शुक्र का पतंग या शुक्र रेखा सनीचर के बुर्ज़ पर मधमा की जड़ में वाक़े हो।	१०
	शुक्र से शाख़ हथेली पर खाना नंबर ११ बचत में ख़तम हो।	११
उंच	शुक्र से शाख़ हथेली पर खाना नंबर १२ ख़र्च में ख़तम हो। या हाथ में मच्छ रेखा हो।	१२

फ़रमान नंबर ११९ E

	मंगल नेक का ग्रह	कुंडली का खाना नंबर
घर का	सूरज के बुर्ज़ पर □ हो। मंगल नेक से शाख़ सूरज में चली जावे।	१
	गृहस्त रेखा बृहस्पत के बुर्ज़ में जा निकले।	२
	मंगल नेक पर चोकोर या गृहस्त रेखा मंगल नेक के अंदर अंदर ख़तम हो।	३
नीच	श्रेष्ठ रेखा, धन रेखा या पितृ रेखा चंदर से शुरू हो कर मंगल नेक पर ख़तम होवे। गृहस्त के साथियों के लिए कुछ न करेगा। दूसिरों को सब कुछ देगा।	४
	मंगल नेक से शाख़ जब सेहत रेखा को काटे।	५
	मंगल नेक से शाख़ जब मुस्तैल खाना नंबर ६ में ख़तम हो।	६
	मंगल नेक से गृहस्त रेखा जब शुक्र में ख़तम हो। मंगल नेक से शाख़ बुध में जा निकले।	७
	मंगल नेक से मंगल बद को शाख़।	८
	क़िस्मत रेखा की जड़ में □ हो।	९
उंच	गृहस्त रेखा सनीचर पर ख़तम होवे।	१०
	मंगल से शाख़ खाना नंबर ११ बचत में हो।	११
	मंगल से शाख़ खाना नंबर १२ ख़र्च में हो।	१२

फ़रमान नंबर ११९ F

	मंगल बद का ग्रह	कुंडली का खाना नंबर
	मंगल बद से शाख़ सूरज के बुर्ज़ को।	१
	मंगल बद से शाख़ बृहस्पत के बुर्ज़ को।	२
	मंगल बद से शाख़ मंगल नेक को।	३
	मंगल बद से शाख़ चंदर को।	४
नीच	मंगल बद से शाख़ सेहत रेखा को काटे या कलाई रेखा हथेली के अंदर घुस आवे।	५
	मंगल बद से शाख़ खाना नंबर ६ मुस्तैल में हो।	६
	शुक्र से शाख़ मंगल बद में या सिर रेखा मंगल बद में या ७ सिर रेखा आख़िर पर दो शाखी।	
घर का	सिर रेखा के ऊपर △ हो।	८
	क़िस्मत रेखा की जड़ में △ हो या **Λ ∠**।	९
उंच	उम्र रेखा दो शाखी **Λ ∠**। मंगल बद से सनीचर के बुर्ज को रेखा चले।	१०
	मंगल बद से शाख़ खाना नंबर ११ बचत में हो।	११
	मंगल बद से शाख़ खाना नंबर १२ ख़र्च में हो।	१२

काग रेखा मंगल बद की पूरी निशानी होगी।

फ़रमान नंबर ११९ G

बुध का ग्रह

		कुंडली का खाना नंबर
	सूरज के बुर्ज से बुध के बुर्ज को रेखा।	१
	सिर रेखा जब उम्र रेखा से जूदी हो कर बृहस्पत के बुर्ज़ का रुख़ करे।	२
घर का	सिर रेखा मंगल नेक में ख़तम होवे।	३
	दिल और सिर रेखा मिल जावें। सेहत रेखा दिल रेखा को काटे। सिर रेखा झुक कर चंदर के बुर्ज़ में जाकर ख़तम होवे।	४
	सेहत या तरक़्क़ी रेखा क़ायम हो। ज़रूरी नहीं की शुक्र के बुर्ज़ की जड़ तक होवे। सही हालत ये होगी की हथेली में खाना नंबर ११ की जड़ तक ही हो।	५
उंच	बुध से शुक्र तक सेहत रेखा क़ायम हो। सिर की शेष्ठ रेखा मौजूद हो।	६ घर का
	सिर रेखा की लंबाई सेहत रेखा की हद तक होवे। शादी रेखा बुध पर तादाद में दो = हों।	७
	सिर रेखा मंगल बद में ख़तम होवे। या आख़िर पर दो शाखी होवे।	८
	धन राशि से शाख़ बुध पर या क़िस्मत रेखा की जड़ में ○ दायरा हो।	९
	बुध का दायरा सनीचर के बुर्ज़ पर हो।	१०
	बुध से शाख़ खाना नंबर ११ बचत में हो।	११
नीच	बुध से शाख़ खाना नंबर १२ खर्च में हो।	१२

फ़रमान नंबर ११९ H

सनीचर का ग्रह

		कुंडली का खाना नंबर
नीच	सूरज का सितारा सनीचर के बुर्ज़ पर या सूरज के बुर्ज़ पर बतरफ़ सनीचर हो। या सनीचर से शाख़ सूरज के बुर्ज़ को चली जावे।	१
	उम्र रेखा बृहस्पत के बुर्ज़ से शुरू होवे।	२
	सनीचर से शाख़ उम्र रेखा को काट कर मंगल नेक में, गृहस्त रेखा सनीचर के बुर्ज़ पर।	३
	उम्र रेखा और दिल रेखा मिल जावे।	४
	सनीचर से शाख़ सेहत रेखा को काटे।	५
	सनीचर से शाख़ मुस्तैल में जावे।	६
उंच	उम्र रेखा और सिर रेखा मिली हों। या सनीचर से शाख़ सिर रेखा पर या शुक्र के बुर्ज़ में होवे।	७
	मंगल बद से शाख़ सनीचर में।	८
	क़िस्मत रेखा की जड़ पर त्रिशूल + हो।	
धुर का	सनीचर के बुर्ज़ पर अपनी रेखा।	१०
	उर्ध रेखा के बुर्ज़ पर अपनी रेखा।	अच्छा ११
	मच्छ रेखा जब उम्र रेखा या उर्ध रेखा मछली के मुंह में हो।	बुरा १२

फ़रमान नंबर ११९ !
राहु - केतु

इन ग्रहों की कोई रेखा मुक़र्रर नहीं है। सिर्फ़ निशान मुक़र्रर हैं। जहां निशान मिले वहीं घर कुंडली का होगा। और अगर निशान भी न हों तो दोनों ग्रह अपने अपने घर के होंगे। यानी राहु खाना नंबर १२ में होगा। और केतु खाना नंबर ६ में होगा।

मुश्तरका नोट

फरमान २७ से मुतलका

जब कोई रेखा एक बुर्ज़ से दूसिरे में चली जावे तो जिस बुर्ज़ से चली थी उस तरफ के बुर्ज़ का घर कुंडली में वह होगा जहां जाकर वह रेखा ख़तम हुई। यानी अगर चंदर से सनीचर को रेखा होवे तो कुंडली में सनीचर को खाना नंबर ४ मिलेगा। और चंदर को खाना नंबर १० मिलेगा। बाकी जब ग्रह का निशान और जिस बुर्ज़ पर पाया जावे वह ग्रह उस नंबर पर कुंडली में होगा। यानी अगर चोकोर □ सनीचर के बुर्ज़ पर हो तो मंगल खाना नंबर १० में होगा। वगैरह.... वगैरह....

अगर बृहस्पत ज़र्द रंग ज़माने के शेर ने इंसानी गुरु के चरणों में सोना (धात) बख़्शा तो केसिर ने ख़ुशी से दुनिया की मौत. (केसर की ख़ुराक से ख़ुशी की हद में मदहोशी होती है)

फ़रमान नंबर १२०
बुर्जों का बयान
बृहस्पत

१। असर के लिए ये बुर्ज़ और ग्रह हवा के नाम से याद किया गया है। जिसका रंग बसंती है। इंसान हवा का पुतला है। और इसी हवा से ही इस का आख़िर गिना जाता है। जब ये हवा आना जाना बंद कर लेती है तो इंसान ज़माने की हवा से अलाहदा गिना जाता है। यहीं हवा ग्रहों में गुरु और फ़ी ज़माने एक गेस गिनी गई है। जो बेशक़ ज़हरीली ही क्यूं न हो फ़ायदेमंद है। यानी बृहस्पत में बेशक़ शुक्र का बीज होने से इस का असर ज़हरीला हो जावे **(बृहस्पत नंबर २)** फ़िर भी ईस में शुक्र जिसे औरत माना है छिपी हुई है। जो सब के बीज की परवरिश करती है। इसी उसूल पर बीज मिट्टी से बाहर हवा को ढूँढने आता है। और सब क़ायनात पैदा होती है। जिसे बृहस्पत की सल्तनत कह सकते हैं। इस ग्रह के असर के वक़्त **(नंबर २ व ४)** इंसानी वजूद को धन दौलत, मान, इज्ज़त, औलाद, जायदाद और उम्र की तरक़्क़ी के लिए न तो हाथ से कमाई पड़ती है। न ही आंख की होंशियारी और दुनिया की चालाकी और मक्कारी का सहारा लेना पड़ता है। ख़ुद-ब-ख़ुद ही सब काम बनते चले जाते हैं। अव्वल तो बाप जायदाद बना देगा। वरना ससुराल से मिल जावेगी। लॉटरी दबा दबाया हुआ माल या किसी लावल्द की जायदादें ही हाथ लग जायेगी। हर हालत में सब काम बाआसानी और उम्दा नतीजे पैदा करने वाली हो जावेगी। अगर बृहस्पत नीच **(नंबर १०)** भी हो जावे बृहस्पत का ज़र्द रंग सोना अगर शुक्र से मिट्टी भी हो जावे **(बृहस्पत शुक्र नंबर २)** तो आम मिट्टी से क़ीमती होगा। शुक्र का बैल ईसी वजह से रात दिन अपनी मिट्टी के काम में मशरूफ़ रहेता है की किसी तरह से फ़ीर बृहस्पत का सोना पैदा हो जावे।

२। बहुत बड़ा बृहस्पत तर्जनी की जड़ : बृहस्पत के बुर्ज़ की चरबी मंगल नेक को भी आ दबाये तो बहुत बड़ा बृहस्पत होगा या नरम हाथ का बृहस्पत जो शुक्र नंबर २ ही का काम देता है और इश्क़ व मुहब्बत में दर्ज़ा क़माल कामयाब पाया जाता है।

३। शुक्र और बृहस्पत बराबर हैं। बृहस्पत तो किसी से दुश्मनी नहीं करता मगर शुक्र कानी औरत (शुक्र की एक आँख कानी गिनी है और स्त्री ग्रह है। बृहस्पत नर ग्रह है।) बृहस्पत के ज़र्द रंग सोने या शेर नर से अदावत करती है और इंसान के रास्ते में इश्क़ की लहर से रुकावट पैदा कर देती है। इसी वजह से बहुत बड़ा शुक्र औलाद से महरूम रखता है और अगर औलाद पैदा भी हो जावे तो बृहस्पत और शुक्र की बाहमी दुश्मनी से मर जाती है।

४। बुध के बुर्ज़ पर शादी रेखा के ऊपर जो सीधे ख़त खड़े होते हैं वह औलाद है। जब ये ख़त शादी रेखा को काटने लग जावे या ऊपर धन राशि में घुसने लगे तो बुध बृहस्पत का दुश्मनाना असर जिसके घर पर औरत या शादी रेखा लेटी रहेती है और बच्चे देती है ज़ाहिर होने लग जावेगा। क्योंकि धन राशि बृहस्पत का घर है। शुक्र की रेखा ने बृहस्पत

(बृहस्पत खाना नंबर ७ में बरबाद)
(बुध नंबर ९ में सब ग्रह बरबाद)

की बजाए बुध की मुक़ाम को शादी और औलाद लिये पसंद किया है। इस लिये बुध शुक्र का दोस्त बना बैठा है। मगर बृहस्पत के बीज शुक्र और दुनियावी बीज औलाद को अपने ही घर बिठाये रखता है। इस लिये बृहस्पत से ये दोनों बुध व शुक्र ग्रह दुश्मनी पर गिने गये हैं।

५। धन राशि से अगर कोई ख़त जो दरअसल औलाद रेखा न हो ..... बुध में चला जावे तो भी गृहस्त के तकलीफ़ और शादी में रुकावट होगी। धन राशि में राहु और केतु ही असर कर सकते है। यानी केतु उंच करता है। और राहु नीच करता है। इस लिये ऐसी रुकावट के वक़्त राहु

(बृहस्पत नंबर ७, बुध नंबर ९ बाहम बदले हुवे)

के असर से दिमाग़ी नक़ल व हरकत और अपनी सोच विचार काम न देगी। बल्कि **बृहस्पत या पिता पर** नीच असर पैदा करती है। और केतु या बाकी धड़ की चाल या लोगों का सलाह मशवराह सुनना उंच फल देगा। जिस से शादी की उलझन और औलाद के मरने का दुख दूर होगा।

(बृहस्पत नंबर ७ शुक्र नंबर २)

६। शुक्र के बुर्ज़ पर बृहस्पत की लम्बी और टेढ़ी लकीरें शुक्र और बृहस्पत की दुश्मनी का दूसिरा सबूत हैं। ऐसी हालत में भाइयों से कोई फ़ायदा न होगा उन के दुख से तंग हो कर इंसान देश-परदेश की ज़िंदगी बसर करेगा।

७ (अलिफ़)

आराम या हराम या मुफ़्त की रोज़ी ख़्वाह घर से निर्धन हो

राशिफल का बृहस्पत

(बृहस्पत हो शुक्र की राशि में)
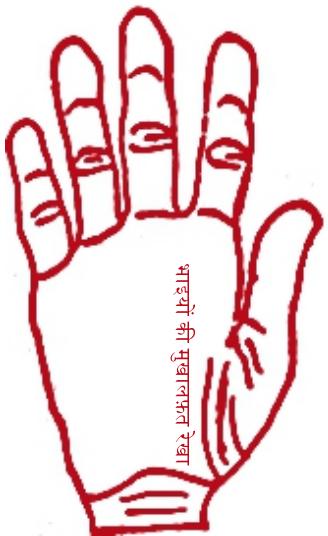
७। (अलिफ़) उंगलियों पर बृहस्पत के सीधे |||| ख़त आराम या हराम की रोज़ी मिलने की दलील है। यानी अव्वल तो ऐसे शख़्स को किसी महेनत मुशक़्क़त के काम से वास्ता ही न पड़ेगा। और अगर किसी वजह से कहीं फंस भी गया तो न हाथ की महेनत करेगा न आंख से काम लेगा। मुफ़्त में अपने पेट की रोज़ी खा जाएगा या उसे अपने पेट भरने के लिये काफ़ि अनाज मिल ही जायेगा।

(बे) अगर ये ख़त बिलकुल न हों या लेटे हुए ≡ उंगलियों पर वाक़ें हों तो जब तक ऐसा आदमी अपने पेट में जाने वाले अनाज की क़ीमत के बराबर वह महेनत मुशक़्क़त न करे रोटी नसीब न होगी। ख़्वाह घर से वह लाखोपति हो यानी वह लाखोपति होता हुआ भी महेनत और

मुशक़्क़त का आदि होगा।

(शुक्र हो बृहस्पत की राशि में)

८। (अलिफ़) बृहस्पत के अपने बुर्ज़ में दिल रेखा का आख़िर मुहब्बत रेखा के नाम से गिना गया है। या यूं कहो की जब दिल रेखा बृहस्पत पर चली जावे तो शुक्र अपनी आशिक़ाना कारवाइयाँ करने लग जावेगा। और दर्ज़ा कमाल पर होगा। किस्सा कोताह बृहस्पत शुक्र की औरत का दूसिरे के साथ मिली हुई और लेटी हुई हालत में देख कर अपना उत्तम फ़ल न देगा।

(चंदर शुक्र दोनों नंबर २)

(बे) लेकिन अगर अकेला शुक्र या कानी औरत का ख़त बिलकुल जुदा ही बृहस्पत के घर आ जावे तो बृहस्पत या कुल ज़माने की हवा इसे उत्तम गिनेंगी और असर भी नेक ही होगा। सारी उम्र (६० साल) आमदन दौलत होगी। क्योंकि गर कुंडली का खाना नंबर २ दरअसल बृख राशि नंबर २ के घर का मालिक शुक्र है।

(शुक्र नंबर २)

९। अंगूठे की जड़ में सीधे खड़े ख़त ||||| बृहस्पत का असर या औलाद ज़ाहिर करते हैं। दायें अंगूठे में मर्द की तरफ़ से औलाद और बायें अंगूठे की जड़ में औरत की औलाद ज़ाहिर होगी। ये ज़रूरी नहीं है की ऐसी औलाद मर्द की अपनी औरत से हो। या औरत की अपने मर्द के ताल्लुक से हो।

(बृहस्पत केतु मर्द की औलाद बृहस्पत राहु औरत की औलाद)

१०। क़िस्मत रेखा की जड़ में चार शाखी ख़त निहायत मुबारक हैं। शाख़दार रेखा सूरज का निशान है। क़िस्मत रेखा बृहस्पत की लकीर है। गोया सूरज बृहस्पत की जड़ में बैठा है। यानी उम्र लम्बी होगी और पूरी होगी। जो तख़मीना १०० साल गिनी गई है।

(सूरज नंबर ९)

११। क़िस्मत रेखा भी अगर किसी दूसिरे बुर्ज में से न गुज़रे और सीधी बृहस्पत के बुर्ज़ पर चली जावे तो सब से उत्तम होगी। क्योंकि अकेला बृहस्पत हंमेशा मदद देगा। जिस का कोई साथी न हो बृहस्पत की मदद होगी।

(बृहस्पत नंबर २ द्रुष्टी खाली)

१२। ये ग्रह अपने वक़्त के दरमियान में असर करता है। यानी जवानी में या उठती जवानी में या पौधे के पैदा होने के बाद और ज़माना की हवा लगने से पहेले (इसी उसूल

पर कनक जौ के पौधे और दरख्तों के पत्ते भी निकलते ही ज़र्द रंग होते है।) बंद बरतन में पैदा शुदा पौधे इस बात को साफ करते हैं। ज्यूँ ज्यूँ हवा लगेगी बूधी या अक़ल आयेगी और ज़र्द से सब्ज़ रंग होता जायेगा। जो बुध का रंग और ज़माना है। यानी ज़माने की हवा अक़ल तो देगी ज़र्द से सब्ज़ करेगी मगर बृहस्पत की मदद कम होती जावेगी। इस बुध के सब्ज़ रंग से मिली हुई अक़ल से ही इंसान धन दौलत कमाने की धुन और लगन में रात दिन मरते फिरना सीखेगा। क्योंकि बुध बृहस्पत से दुशमनी पर है। माँ कहेती है की बच्चा बड़ा हुआ मगर बृहस्पत की उम्र घटती जायेगी। पैदाइश के वक़्त बृहस्पत पूरी उम्र का था। हर तरह से साफ था। ज़माने की हवा से कई रंग बनने लगे। ज़र्द से सब्ज़ रंग हुआ तो राहु साथ मिला। गोया दिमाग़ में नक़ल व हरकत पैदा हो गई। नेकी के साथ बदी करने का बीज पैदा हो गया। तो आख़िर कहाँ तक ये सब ज़माना उलझन हो गया। फ़िक्र व ग़म खड़े हुए। मगर शुक्र का मुक़ाम है की राहु और बृहस्पत बराबर है। और बाहम कभी दुशमन नहीं होते। दोनों के मिलाप से सब्ज़ पैदा हुआ तो बुध आ निकला। और ज़र्द बिलकुल ही जाता रहा। अक़ल पूरी हुई तो ज़माना की हवा का ऐतबार ही उठ गया। "हिले रिज़क बहाने मौत" का मसला खड़ा हो गया। और फ़रिश्ता का नाविश्त या क़ुदरत का लिखा भूल ही गया। यहां तक ही नहीं जब इस बुध, बुधी का अक़ल का गोल दायरा बृहस्पत के बुर्ज़ पर आया तो बृहस्पत की हवा का वो चक्कर बंधा की इसे निकालने को सिर्फ़ वहीं आकाश खाली जगह बाकी रह गई। क़िस्मत की हवा के बाओ बगुले बनने लगे और आसमान की तरफ़ उठने लगे। मुख़तसरन अब क़िस्मत का ऐतबार न रहा।

१ ३। उम्र रेखा **(सनीचर नंबर २ बृहस्पत नंबर ४)** भी वही नेक है जो बृहस्पत की जड़ से शुरू हो। ऐसा आदमी गो ढीला ढाला और भद्दा सा मालूम होगा। मगर तेज़ फ़हम और हर बात को फ़ौरन समझ लेने वाला होगा। बात को मुंह से निकलती ही हवा से ताड़ लेगा। अगर ऐसी उम्र रेखा ख़तम भी चंदर पर होवे तो पितृ रेखा कहलायेगी **(सनीचर नंबर ४ चंदर नंबर २)** और इस से पिता का सुख ज़रूर होगा। इस उम्र रेखा पर शुक्र के

(सनीचर चंदर नंबर ७)

बुर्ज़ में अगर विसिर्ग : का निशान हो तो आंखें ख़राब और स्त्री झगड़ों से तबाह होने की दलील है।

१४। चंदर की रेखा भी अगर बृहस्पत पर ख़तम हो तो निहायत उत्तम असर होगा। यानी पिता पर घोडा बृहस्पत पर चंदर या बाप की ही .... हालत का बेटा होगा।

14

बृहस्पत
चंदर

(चंदर नंबर २ बृहस्पत नंबर ४)

१५। गृहस्त रेखा बृहस्पत की शरण या कदमबोशी से ससुराल से जायदाद दिलायेगी। ससुराल लावल्द नहीं होंगे। बल्कि अमीर होंगे और जायदाद आयेगी।

(मंगल नंबर २)

१६। सिर रेखा जो बुध की रेखा गिनी है। जब बृहस्पत का रुख़ करेगी कोई नेक असर बृहस्पत के फ़ल के लिये न देगी। (मुफ़सिल ज़िक्र बुध के बुर्ज़ में हुआ है) **ख़ुद इकबाल मंद होगा सफा २८२ जुज १४ सफा १६३ जुज नंबर २०**

(बुध नंबर २ बृहस्पत नंबर ६-७)

१७। बृहस्पत सांस या हवा से निस्बत रखता है। और हर सांस के आने और जाने में इंसान की क़िस्मत का तालुक़ होता है। इसलिए कोई बुद्धिमान या बुध का मालिक या अक़्लमंद ये नहीं दावे बांध सकता की एक के बाद दूसरा सांस आयेगा या नहीं। मगर हर दम यही ख़्वाहिश करता है की अगर एक सांस बाहर को गया हुआ है तो दूसरा मेरे अंदर ही आये।

यानी अगर दायें ने क़िस्मत की हार दी है तो बायां ही मदद करे। यही दायां बायां करता रात दिन २४ घंटे हैं। १२ राशि X ९ ग्रह = ८४ लाख सांस पूरे कर लेता है। और इस दुनिया की नरक चोरासी या बारह राशियों में सातों ग्रहों या बुर्जों की ज़रब या चोट को संहारता चला जा रहा है। अगर ये सांस, हवा या बृहस्पत न हो तो सब चोरासी ख़तम है।

फ़रमान नंबर १२१

बृहस्पत के बुर्ज़ पर रेखा और बृहस्पत की अपनी रेखा

मुहब्बत रेखा

(चंदर बृहस्पत शुक्र नंबर २ या शुक्र अकेला नंबर २)

१। (दिल रेखा की शाख) **(सफा २१० शक्ल नंबर १ व सफा १५२ शक्ल नंबर ५)** रेखा के नाम से ही ज़ाहिर है की मुहब्बत दिल से होगी या दुनियावी लगन और स्त्री शौक़ होगा। दिल के लिये चंदरमा या दिल रेखा और स्त्री के लिये शुक्र या गृहस्त **"मंगल"** रेखा याद आयेंगे। जब दिल रेखा बृहस्पत (गुरु) के घर पर चली जावे और उस के चरण पकड़े यानी सीधी बृहस्पत में ही **(चंदर नंबर २)** जा कर ख़तम हो जावे तो कोई बुरा असर बलिहाज़ क़िस्मत न होगा। क्यूंकी बृहस्पत हैसियत गुरु या उस्ताद किसी से भी दुश्मनी नहीं करता। बल्कि चंदर बृहस्पत के मुसावी है। और बाहम ये दोस्त हैं। गोया दो दोस्त और ताक़त में मुसावी और तुर्रा ये की दोनों ही गैबी ताक़त के मालिक पानी और हवा बाहम इकट्ठे होंगे। तो दिल दरिया और समंदर की लहेरें हवा मददगार से दोबाला होंगी। जो दिल चाहे करे। **(अगर शुक्र का भी साथ हों जाये)**

बृहस्पत बहुत बड़ा होगा और बहुत बड़ा बृहस्पत शुक्र का फ़ल देता है। इस हालत में चंदर शुक्र से दुश्मनी करेगा यानी अब वह मुहब्बत जो मुहब्बत पाकीज़ा थी अब मुहब्बत आलूदा या स्त्री भाग में तबदील हो जायेगी। गंदी मुहब्बत होगी या ऐसा शख़्स औरत कई कबूतरबाज़ी पर फ़रेफ़्ता होगा। और अपनी ज़ाती स्त्री के अलावा पराई नार (या आग फ़ारसी में) मदहोश होगा। और अपना बहुत रूपिया पैसा इस ताल्लुक में बरबाद पायेगा। मगर वह अपने इश्क़ में नाक़ाम न होगा। जनमुरीद जीनाकारी आम रवैया होगा। और अगर ऐसे शख़्स का सूरज का बुर्ज़ भी क़ायम न हो तो वह इस लगन में सिर्फ़ एक परवाना ही होगा। जिसे अपनी जान की भी परवाह न होगी। ऐसे आदमी से किसी को भी फ़ायदा न होगा। जब होगा नुकसान होगा।

२। जब दिल रेखा ख़त्म पर बृहस्पत पर झुके तो ऐसा शख़्स गंदी मुहब्बत से मुतन फिर होगा और दुनिया वी ताल्लुक में दिल का बहुत छोटा होगा।

(चंदर बृहस्पत शुक्र नंबर २ मंगल नष्ट)

(चंदर नंबर ३)

३। तर्जनी उंगली की जड़ से बृहस्पत के ख़त || भी यही असर देंगे। क्यूंकी मिथुन राशि जो तर्जनी की जड़ है। बुध का घर है। और बुध बृहस्पत से दुश्मनी करता है।

(बृहस्पत नंबर ३ या बुध बृहस्पत नंबर २)

४। सनीचर और बृहस्पत के दरमियान से बृहस्पत पर आकर मिलने वाली सीधी शाख़ों वाला इश्क़ में दर्जे मुतदिल होगा। (तर्जनी की जड़ से शाख़ वाला दर्जा अव्वल था इश्क़ में) ज़ाहिरदारी तो कम करेगा। मगर अंदरूनी तौर पर मुहब्बत का पक्का होगा। ऐसे आदमी की दोस्ती से लाखों का भला और हर एक का फ़ायदा होगा। लोहे को पारस का काम देगा। ख़ुद ख़्वाह वह एक कौड़ी की हैसियत का भी न हो **जब सनीचर नंबर ३ में** होवे क्यूंकी सनीचर और राहु बृहस्पत के दोस्त तो नहीं बल्कि मुसावी हैं। और दुशमन हरगिज़ नहीं। ये इश्क़ इश्क़ हक़ीक़ी की तरफ़ को ज़्यादा होगा।

५। बृहस्पत के घर पर जब शुक्र होवे **(शक्ल नंबर ५ सफा १५२)** तो बहुत उंच फ़ल देता है। दूर बैठा शुक्र बृहस्पत से दुश्मनी करता था। किस्सा कोताह शुक्र (स्त्री) जब गुरु के घर आ बैठी तो गुरु ने तो दुश्मनी करनी ही नहीं। शुक्र और स्त्री भी उंच फ़ल देता है और गृहस्त में हक़ीक़ी फ़ल देगा। **(शुक्र नंबर २) सफा १४७ जुज ८ बे, सफा २४३ जुज २**

4
सनीचर बृहस्पत

(सनीचर बृहस्पत नंबर ११ या हस्टी से नंबर ११ में मिलते हों)

६। गृहस्त रेखा जब मंगल नेक से उछल कर बृहस्पत या गुरु के चरणों में आ जावे तो क़बीले की परवरिश के लिये उसे ज़रूरी दौलत

का हिस्सा मिल जाता है। मगर ऐसी दौलत ससुराल से आयेगी। या इस के ससुराल दौलतमंद होंगे। **(बृहस्पत नंबर १-२ या ४ या दोस्त ग्रहों की मदद)** **सफा २५१ जुज १५ व सफा २५५**

७। बृहस्पत रेखा, सीधे खतों, चक्कर, शंख, सदफ़। दीगर निशानों का मुफ़सील ज़िक्र आगे आएगा।

८। सिर रेखा या बुध रेखा का ज़िक्र बुध के बुर्ज में मुफ़सील लिखा गया है।

९। उम्र रेखा ये भी बृहस्पत या गुरु चरणों की दासी है जिस का मुफ़सील ज़िक्र सनीचर के बुर्ज में है।

बृहस्पत

जनम को हरकत में करने वाली चिजे का नाम दिल है। जो चंदर कहलाया। दिमाग़ का मालिक बुध हुआ। जिस में खयालात के उतार चढ़ाव की लहर पैदा करने की ताक़त का नाम रखा गया। मगर राहु सिर का मालिक और चंदर दिल का मालिक बाहम दुश्मन हैं। और जिसम व सिर के इकट्ठे मिल कर काम न करने की हालत में इंसान न दिल का मालिक होगा। न सिर की ताक़त का भण्डारी यानी दीवाना होगा। मगर दोनों के दरमियान एक हवा चलती है। जो किसी से दुश्मनी नहीं करती। और दोनों को ही इकट्ठे कर के काम करवाती है। इस का नाम बृहस्पत है। यानी जब चंदर और राहु दोनों में बृहस्पत का साथ हो। कोई नुक़सान न होगा। अगर दुनियादारों को दोस्ती पर मिलाने के लिए बुध हुवा तो लोक (मौजूदा दुनिया) और परलोक को मिलाने वाला बृहस्पत हुआ। मगर बुध व बृहस्पत भी बाहम दुश्मन है। ईन दोनों को मिलाने वाली रोशनी का नाम सूरज है। मगर सूरज कभी गुम नहीं होता। इस लिए दुनिया भी पाएदार हुई। और चंदर,राहु व बुध बजरिये बृहस्पत की दोस्ती भी अटल हुई
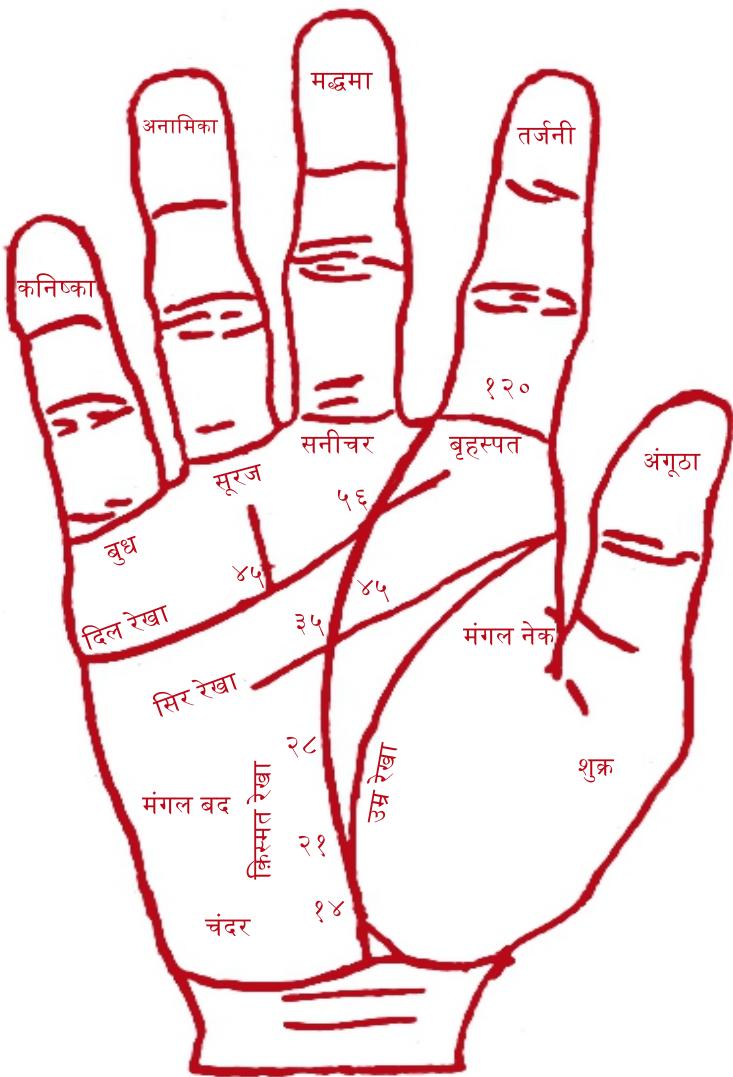
क़िस्मत रेखा की हदबंदी सालों में
क़िस्मत रेखा कलाई से ऊपर को चलती है।

फ़रमान नंबर १२२

बृहस्पत की क़िस्मत रेखा

फरमान नंबर १० से मुतलका

१। उम्र रेखा तो बचपन में गुरु के चरणों में रहती है। मगर क़िस्मत रेखा बुढ़ापे में आख़िरी वक़्त तक गुरु या बृहस्पत के पांवो की मूसतलाशी रहती है। यानी और उम्र रेखा और क़िस्मत रेखा बिलकुल उलट पहलू में हुआ करती हैं। या यूं कहों की जिस क़दर उम्र रेखा बृहस्पत से दूर होती जाती है। उसी क़दर ही ज़्यादा क़िस्मत रेखा बृहस्पत या गुरु की गद्दी के नज़दीक आ ज़ाती है। जिस्म हवा या बृहस्पत के बगैर ज़िंदा नहीं रहता और क़िस्मत रेखा के बगैर इंसानी ज़िंदगी कच्ची कहानी और बेमानी और सिर्फ़ खानापुरी का नाम है। जिस तरह जिस्म को रूह मिली और रूह को सांस मिला। इसी तरह ही इंसान को क़िस्मत मिली। और इस के साथ सूरज का ताल्लुक हुआ। अगर सूरज का बुर्ज़ क़ायम नहीं और सूरज रेखा हाथ में नमुदार नहीं। या सूरज या तरक़्क़ी रेखा, क़िस्मत रेखा से नहीं मिली तो भी क़िस्मत की लाख लानत नसीब हुई **जब सूरज बृहस्पत किसी तरह भी न मिले।**
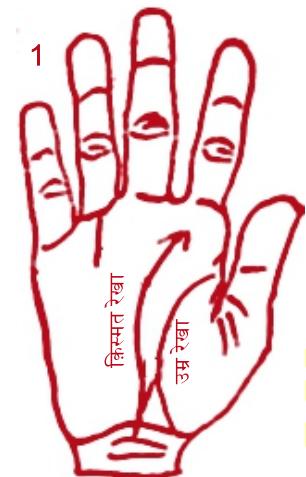
२। जबरदस्त क़िस्मत रेखा वह है जो कलाई से चल कर बृहस्पत पर जाकर ख़तम होवे। और शाख़दार होवे। रास्ते में किसी भी पहाड़ या बुर्ज़ की मिट्टी का असर इस में न पड़े। इस तमाम की तमाम में सोना ही
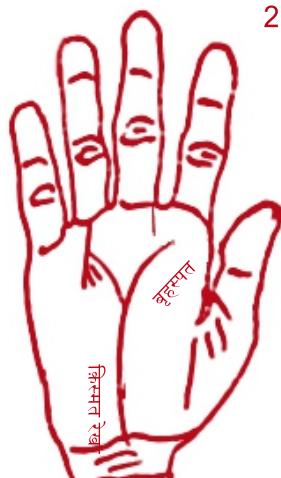
बृहस्पत नंबर १-२ या ४ या दोस्त ग्रहों की मदद

सोना (बृहस्पत की धातु) नज़र आता हो और ही तरह लोक पर लोक के मालिक राजा इन्द्र या बृहस्पत की हवा मौजन है। हाथ की हथेली के मैदान की जिस क़दर ज़्यादा गहेराई होगी दरिया की रवानी तेज़ होगी। क़िस्मत रेखा या बृहस्पत की लहर क्या है। सिर्फ़ रूहानी व नूरानी हवा का एक वसीह कुर्राह है। जिस में बसंती रंग रमा हुआ है। आम तौर पर उम्र रेखा जिस पहाड़ से निकलती है क़िस्मत रेखा उसी कोहसार **(बृहस्पत नंबर २)** में ख़तम होती है। जिस समंदर **(बृहस्पत नंबर ९)** में उम्र रेखा गिरती है उसी समंदर से क़िस्मत की हवाई लहर निकलती है। मुख्तसरा क़िस्मत एक ऐसी चीज है। जो दुनियावी कारोबार में न हाथ की मदद ढूँढे और न ही इस में आंख को काम करना पड़े। हर काम का नतीजा ख़ुद ब ख़ुद नेक हो जावे।

"धन्ने भगत **(बृहस्पत नंबर २)** की गाउँ राम चरावे" उम्र रेखा और क़िस्मत रेखा एक ऐसे मक़ाम पर मिलती हैं। जो सनीचर का हैड्क्वार्टर गिना गया है। जिस का ज़िक्र बुर्जों में है। इस मुक़ाम पर उम्र रेखा तो बंद हुई मगर क़िस्मत रेखा चलती रही। ये बड़ी खंदक सनीचर की खंदक या उर्ध रेखा कहलाती है। अब क़िस्मत रेखा को इस से हो कर गुज़रना है। हैड्क्वार्टर का मालिक सनिचर इस फ़िक़र में रहता है की इस बड़ी नहर में ही सब दरिया आ मिलें। और वह किसी दरिया के पानी को आगे न जाने देवे। और अगर क़िस्मत की हवा इस भंवर में न पड़े तो इस में शक़ नहीं की वह सनीचर से तो बच निकलेगी। मगर " सुदामा भगत **(बृहस्पत नंबर ९)** की क़िस्मत अपने गुरु के लिए"

साथ क्या तोहफ़ा (अपने लिये ख़ुराक तोशा **(सनीचर बृहस्पत नंबर ९)** और दूसरों को देने के लिये उम्दा चीज़ तोहफ़ा **(सनीचर बृहस्पत नंबर २)** होती है।) ले जायेगी। जब अकेली ही चलेगी तो अपना तोशा इकट्ठा करने के लिये अकेली को ही तमाम दरियाओं से पानी चुराने के लिये सख़्त कोशिश करनी पड़ेगी। इस बुनियाद पर माना गया है की जब क़िस्मत रेखा अकेली डंडे की तरह उम्र रेखा से बिलकुल जुदा ही शुरू हो तो ऐसे आदमी को अपनी क़िस्मत बनाने के लिए तमाम दुनिया के खिलाफ़ सख़्त जद्दो जहद करनी पड़ेगी। और वह ख़ुद ज़ाती महेनत से कामयाब होगा। उम्र का कोई साथी मददगार न होगा।

यानी भिक्षु ने भिक्षा मांगी, हमने की हमदर्दी, (बृहस्पत नंबर १०)

दिल का मरहम कोई न मिलया, जो मिलया अलगरज़ी। (चंदर नंबर ४)

ऐसे आदमी से फ़क़ीर या किसी सवाली ने सवाल किया तो इस ने ख़ुदाई तरस पर उसे रोटी खाने को दी। फ़क़ीर ने रोटी खा कर एवज़ में हाये हाये करनी शुरू कर दी की ज़हर दे दी, ज़हर दे दी। उल्टा उसे और रुपे पैसे दे कर मिन्नत समाजत कर के नाहक पोलीस के डंडे से बचाव करवाया।

३। क़िस्मत रेखा अगर कलाई से शुरू हो कर सिर रेखा पर ही ख़तम हो जावे तो ऐसा आदमी ख़ुद अपनी बेवकूफ़ी या सिर की ताक़त से अपना ज़माना ख़राब करेगा। और ख़राबी का वक़्त जवानी के दिन होंगे। बुध दुश्मन होगा। यानी ३४ साल उम्र से बरबाद होगा। अपनी ही नांव का ख़ुद बेड़ी डोबने वाला मल्लाह होगा।

(बृहस्पत देखें बुध को)

४। अगर क़िस्मत रेखा कलाई की बजाये शुरू ही सिर रेखा से होवे तो जवानी में यानी बुध के वक़्त या ३४ साल उम्र से ही आराम होगा। मगर ख़ुद ज़ाती महेनत से यानी अपनी अक़्ल से ही फ़ज़्ले

इलाही होगा।

५। अब अगर सिर रेखा से शुरू होकर दिल रेखा पर ही ख़तम हो जावे। यानी बुध और चंदरमां मिल जावे तो नतीजा ख़राब ही होगा। (चंदर बुध से दुश्मनी करता है।) दिल या चंदर की ज़हर या गलबा-ए-इश्क़ से तबाह हो जावेगा।

(बुध देखें बृहस्पत को)

(बृहस्पत नंबर ९ को बुध नंबर ३ व चंदर नंबर ५ से देखें)

(चंदर बुध मुश्तरका या बाहम द्रुष्टी में)

६। जब कलाई से शुरू हो **(देखे सफा १६०/१० व ६)** और दिल रेखा को अबूर कर के ऊपर जा निकले तो जिस बुर्ज़ की तरफ झुके उसी बुर्ज़ का असर पाया जावेगा। और

(बृहस्पत को दुसरे ग्रह देखें)

७। अगर कलाई से शुरू हो कर दिल रेखा में मिल कर ख़तम ही हो जावे तो निहायत नेक असर होगा। क्यूंकी बृहस्पत और चंदर (दिल रेखा) एक दुसरे के मुसावी और बाहम दोस्त हैं। यानी पानी की नांव हवाई जहाज़ का काम देगी।

(बृहस्पत चंदर नंबर ४ या ९)

८। अगर कलाई से शुरू हो कर ऊपर मधमा पर जा चढ़े तो राज छोड़ फ़क़ीर हो जावे। माया पर पेशाब की धार मारने वाला होगा। **त्यागी-गरीबी से मारा हुआ फकीर न होगा।**

(बृहस्पत नंबर १२ सनीचर नंबर ९)

९। अगर कलाई से शुरू हो कर हाथ को दो हिस्सों में तक़सीम करती हुई सनीचर पर जा निकले। मगर मधमा पर न चढ़े तो उर्ध रेखा के नाम से मौसूम होगी। ऐसा शख़्स दुष्ट भागवान होगा। कुत्ते को रोटी का टुकड़ा और चूँटी को आट्टे का ज़र्रा नसीब न होने देगा। **(जब के कोई इस की मर्जी के बरखिलाफ़ चले)** जिस का ज़िक्र बुर्ज़ सनीचर में होगा।
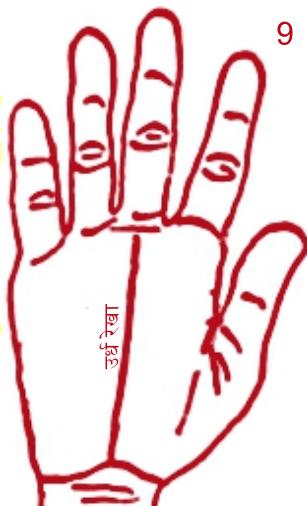
(बृहस्पत नंबर १० सनीचर नंबर ९)

१०। **शकल नंबर ६ सफा १५९ से मुश्तरका** जब क़िस्मत रेखा शुरू में उम्र रेखा से मिल कर शुरू होती मालूम हो तो इस की उम्र में क़िस्मत का असर होने का वक़्त इस रेखा के झुकाव के लिहाज़ से होगा। यानी अगर झुकाव क़िस्मत रेखा का कनिष्का की तरफ़ हो तो बुध के असर के सालों में यानी ३४ साल के क़रीब अनामिका और कनिष्का के दरमियान तरफ़ २२ साल अनामिका की तरफ़ २५ साल अनामिका और मधमा के दरमियान की तरफ़ ४५ साल मधमा की तरफ़ ६० साल बृहस्पत की तरफ़ १६ साल में ख़ुद कमाई करने लग जावेगा।

(बृहस्पत सनीचर मुश्तरका को देखने वाले घर के ग्रह जगायेंगे)

(सफा १५९/६)

(खाना नंबर ९) क़िस्मत रेखा का आगाज़ (द्रुष्टी खाली)

११। क़िस्मत रेखा की बुनियाद पर हर बुर्ज़ के निशान का जुदा जुदा असर होता है। बुनियाद के मायनी वह जगह है जो दरअसल शुक्र और चंदरमां की एन दरमियानी हद है। इस हद पर मंदरजे जैल निशानात अज़ १२ ता २३ अपना अपना असर देंगे।

(बृहस्पत नंबर ९)

१२। बृहस्पत के सीधे ख़त ||||| निहायत मुबारक़ हैं। बशर्ते की एन दरमियानी हद पर हों। अगर शुक्र की तरफ़ हों तो स्त्री भाग की तकलीफ़ और अगर चंदर की तरफ़ हों तो मातृ हिस्से की मदद की अलामत है। और अगर ऐसे ख़त दोनों तरफ़ ही फैले रहैं। यानी शुक्र और चंदर दोनों तरफ़ तो क़िस्मत अजीब रंग दिखलाएगी। कभी अमीरी का दरिया ठांठे मारेगा। कभी गरीबी की रेत की चमक भी न होगी। **(बृहस्पत नंबर ९ और चंदर नंबर ३-५ और शुक्र नंबर ५-३ या तीनों नंबर ९)**

(बृहस्पत नंबर ९)

(सूरज नंबर ९)
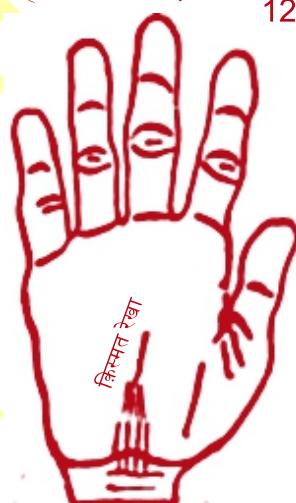
१३। सूरज की शाख़दार रेखा ⯭ मुबारक़ निशान है। जो वाल्दैन का ज़रिये मुआस सरकारी दरबार ज़ाहिर करता है। शुक्र की तरफ़ का निशान स्त्री भाग में मधम असर मगर चंदर की तरफ़ नेक असर। ऐसा आदमी (चार ख़त ⯭) लम्बी उम्र वाला होगा **और बाप की उम्र लंबी या बाबे की उम्र लंबी होगी**।
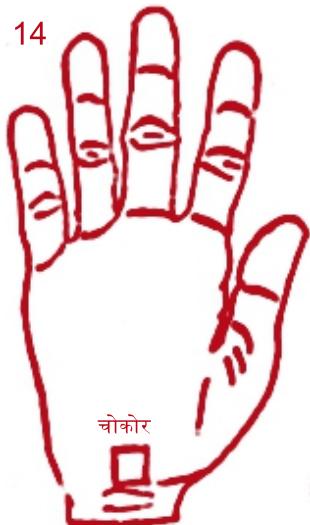
(मंगल नेक नंबर ९)

१४। मंगल नेक ◘ जंगी ख़ून और शाही। जंगी धन से शहाना परवरिश और ख़ुद उसी ज़रिये मुआश से शहाना हालत वाला होगा। जिस से मुतलका दुनिया में हुकूमत करने का मौका और धन जमा करने का वक़्त बहुत मिलेगा। इस निशान के वक़्त शुक्र की तरफ़ या चंदर की तरफ़ होने का कोई भी बुरा असर न होगा। हर हालत में जंगल में मंगल होगा।

१५। शुक्र व मंगल बद ▲ ऐसे शख़्स की पैदाइश में कुछ राज़ होगा। जिस का ज़ाहिर करना मुश्किल होगा। (ये निशान दरअसल शुक्र मंगल-∧का मुश्तरका है।

15
जड़ पर मंगल बद
और शुक्र

(मंगल बद या शुक्र नंबर ९)

१६। मंगल बद∧दो शाखी पैदाइश के वक़्त वालदैन की माली हालत कमज़ोर होवे। जितने साल की हदबंदी पर दोनों शाखें मिलें। इस साल में सुरते हालत बहेतरी की तरफ़ हो।
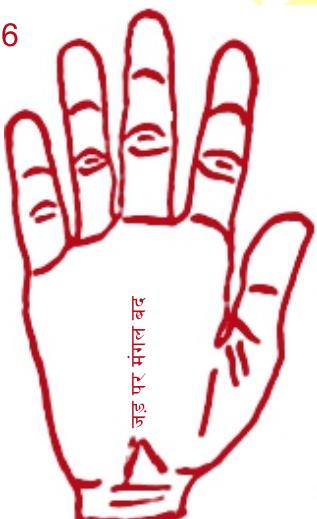
(मसनुई मंगल बद नंबर ९)

नोट:- चंदर का ज़िक्र छोड़ा गया है क्यू की चंदर खाना नंबर ९ में शाज-ओ-नाज़र। अगर कभी होवे चंदर नंबर ९ में तो ऐसा शख़्स मुस्तस्ना होगा। (चंदर की नेक ताकत में)

(बुध नंबर ९)

(सनीचर नंबर ९)

(राहु नंबर ९)

(केतु नंबर ९)

१७। बुध○ वही असर जो ▲ मशलश का था। **जो शक्ल नंबर १५ सफा १६२ पर है**

१८। सनीचर + सिर्फ़ दरमियान में और शुक्र की तरफ़ मुबारक चंदर की तरफ़ ख़राब।

१९। राहु ▦ सिर्फ़ दरमियानी हद पर मुबारक है। ख़र्च हंमेशा क़बीले की बहेतरी में होगा। ऐसे शख़्सों को अपने ज़ाती ख़ून से इत्तेफ़ाक़ रखने में (हक़ीक़ी भाई बहन) बरकत होगी। दिमाग़ी नक़ल व हरकत आम होगी।
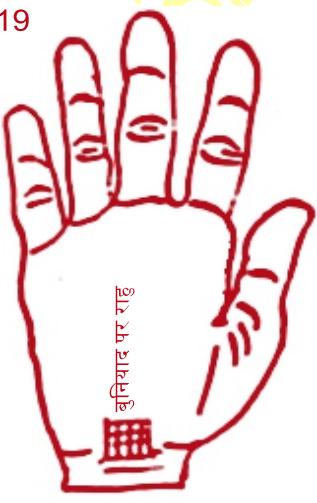
२०। केतु ▟▀ ▙▙▟ ▛▛▜ दरमियान और शुक्र की तरफ़ मुबारक दौलत पर दौलत आवेगी। चंदर की तरफ़ **(शक्ल का मुंह ▙▙▟)** माता भाग में निहायत मनहूस मामू **(दुश्मन ग्रहों व केतु के दौरा में)** की तरफ़ भी असर बद होगा। आम सफ़र दरपेश होगा। भाइयों से दूर **सफा १६४ जुज २५**
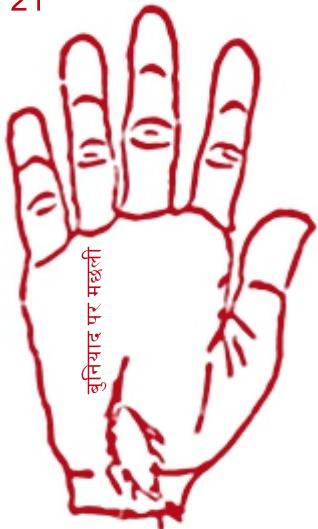
परदेश में ज़्यादा रहें। अपने लिये मुबारक।

पहली सतर सफा ३४३ जुज ९

२१। मच्छ रेखा निहायत मुबारक। मुफ़स्सिल हाल सनीचर के बुर्ज में हुआ है। भारी क़बीला।

(सनीचर बृहस्पत नंबर ९)

२२। काग रेखा -वही असर जो मंगल बद का ∧ है।

(सनीचर बुध नंबर ९)

२३। चार शाखी ख़त उम्र लम्बी होवे।

२४। क़िस्मत रेखा के आख़िर पर निशानात मजकुरा बाला का वही असर होगा। जो पहले ज़िक्र किया गया है। मगर उम्र के आख़री हिस्से में असर देंगी।

(खाना नंबर २ में)

२५। △ दोनों अब्रूओं के दरमियान **(सिर्फ खाना नंबर १२)** पेशानी पर जहां तिलक लगाते हैं (मंगल बद) या केतु हो तो हुक्मरान आसुदा हाल होगा। **सफा १६३ जुज २०,सफा ४३ जुज १०**
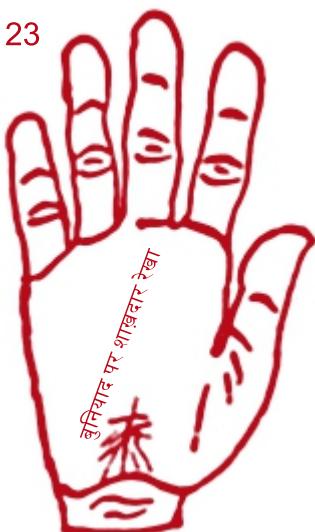
शक्ल नंबर २३ से मुश्तरका (सूरज नंबर ९ बजरिए सूरज रेखा)

(बृहस्पत की) क़िस्मत रेखा की शाख़ें

(बृहस्पत की बज़रिआ दृष्टी)

२६। बृहस्पत से या बृहस्पत को निहायत मुबारक होंगी। इस शाख़ का नाम इज्जत रेखा भी रखा गया है। जो दुनियावी इज़्ज़त और मान का नेक सरोवर होगी। और बृहस्पत का पूरा असर देगी। **(नेज शक्ल सफा १६८)**

(बृहस्पत नंबर ६ या केतु का ताल्लुक)

२७। सनीचर को शाख़ जब बुनियाद पर मच्छ रेखा हो निहायत उत्तम फल होगा। जायदाद वाला या साहिब मिलक उल मालक या बहुत भारी जायदाद वाला होगा।

(सनीचर नंबर ९ या सनीचर बृहस्पत नंबर ९)

२८। बुध को जब बुनियाद पर मच्छ रेखा हो तो जानी अय्याश होगा। दीगर हालत में ज़बान का चस्का वगैरह आम होगा। **(नेज सफा १६६ शक्ल ३०)**

(बृहस्पत सनीचर बुध या तीनों नंबर ७ या बृहस्पत सनिचर से बुध का ताल्लुक)

२९। सूरज से या सूरज को राजदरबार से नेक ताल्लुक तरक़्क़ी और बहेतरी मगर क़िस्मत इख्तियार किसी दुसरे के हाथ में होगा।
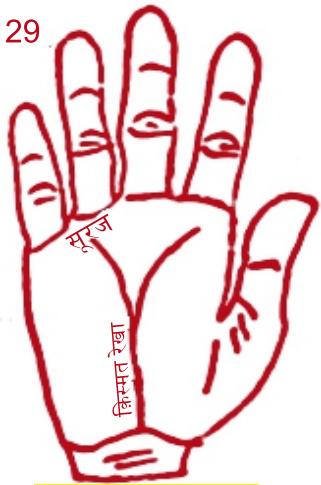
(बृहस्पत का सूरज या सूरज के घर से ताल्लुक)

३०। बुध को या बुध से अचानक शाह अचानक गदा। **सफा १६५ शक्ल २८ से मुतलका**

(बृहस्पत और बुध का बाहम ताल्लुक)

३१। मंगल नेक को या बुध से। "मददे मर्दा, मददे ख़ुदा"

(बृहस्पत और मंगल नेक का बाहम ताल्लुक)

३२। मंगल बद से या मंगल बद को मुखालीफ़ मर्दा। रंज व तकलीफ़ रिश्तेदारों की मौतें व मातम।

(बृहस्पत और मंगल बद का बाहम ताल्लुक)

(बृहस्पत का शुक्र से ताल्लुक)

३३। शुक्र से औरतों की मदद और ताल्लुकात।

३४। चंदर से सफ़र दरपेश रहे।

३५। एक शाख़ चंदर से दूसरी शुक्र से - क़िस्मत का अजीब रंग होगा। कभी शाह कभी मलंग, कभी ख़ुशहाल - कभी तंग होगा। क़िस्मत रेखा के साथ दौड़ने वाली शाख़ें **(दोस्त ग्रह)** दुनियावी मददगार गिने गए हैं।

३६। अल्प आयु वाला मवेशियों के सुख से महरूम होगा। **(सफा ४३ जुज ६, सफा ३१८ अल्प आयु)**

(बृहस्पत का चंदर व शुक्र से ताल्लुक)

३७। चंदर से / ख़त वाल्दैन की जायदाद - काश्त की ज़मीन, गैबि मदद और बालाई आमदन से मुराद होगी।

३८। सीधे ख़त, चक्कर, शंख, सदफ़ वगैरह सब का मुफ़सिल हाल आगे दर्ज़ हुआ है।

(बृहस्पत का चंदर से ताल्लुक)

३९। इज्ज़त रेखा दुनियावी मान इज्ज़त देगी।
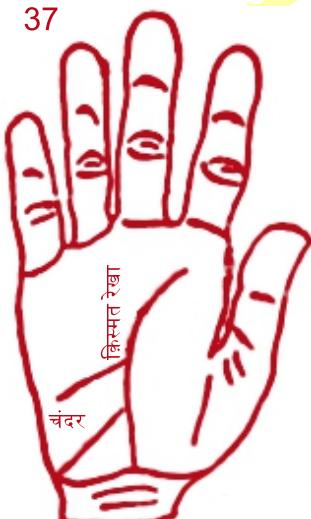
(बृहस्पत खाना नंबर ६) शकल सफा १६८ पर

४०। हथेली के दरमियान खाना नंबर ११ के क़रीब सेहत रेखा के साथ ही दूसरा ख़त जो क़िस्मत रेखा के साथ ही चल रहा हो ना भाई ज़ाहिर करता है। जिस का राजदरबार में साथ मिलेगा। और क़िस्मत जगा देगा। **(बृहस्पत खाना नंबर ६ दोस्त ग्रह खाना नंबर ३)**

मद्धमा
अनामिका
तर्जनी
कनिष्का
सनीचर
बृहस्पत
सूरज
अंगूठा
बुध
इज्ज़त रेखा
औलाद
शादी रेखा
मंगल
नेक
मंगल
बद
औलाद
शुक्र
चंदर
औलाद
A
B
C
D
कलाई रेखा = A-B, C-D
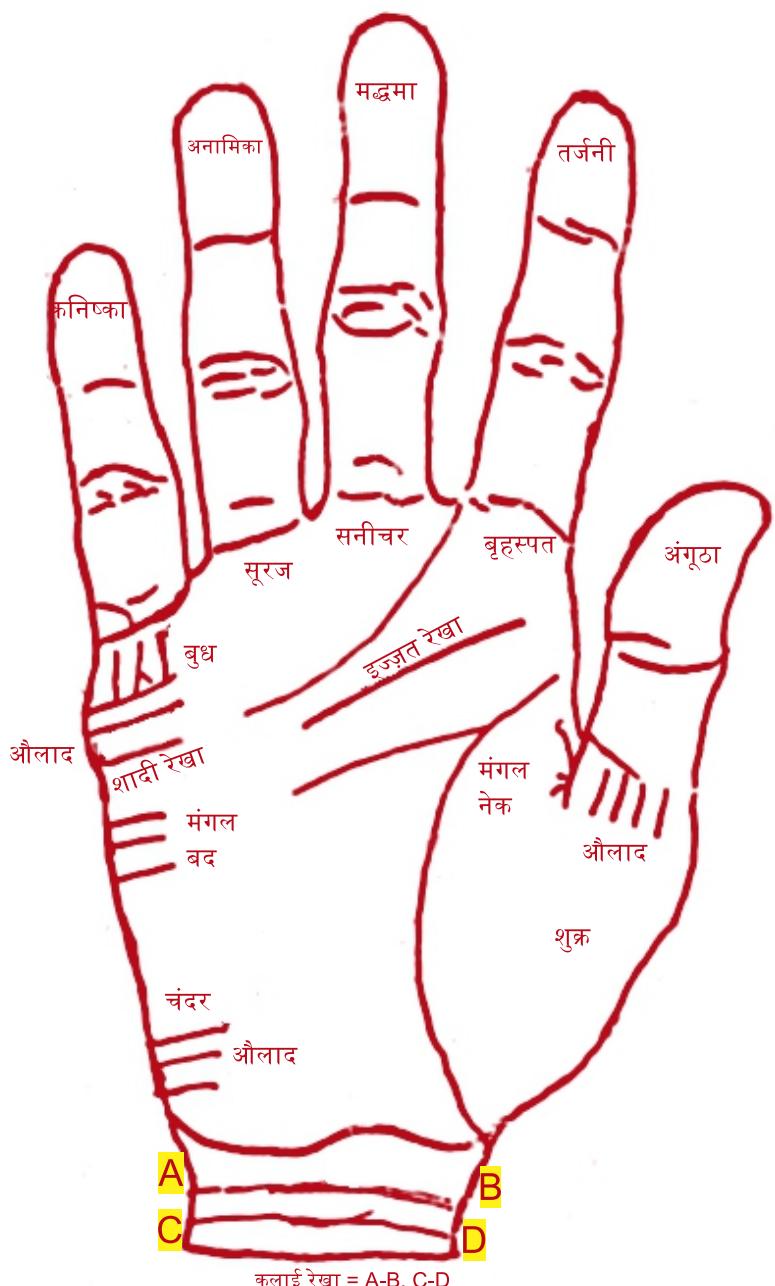
फ़रमान नंबर १२३

बृहस्पत के ख़त - औलाद रेखा

सफा १४८ जुज ९ से मुतलका

१। बृहस्पत के सीधे खड़े ख़त बुध के बुर्ज़ पर शादी रेखा के ऊपर औलाद कुल तादाद ज़ाहीर करते हैं। यहीं ख़त दायें हाथ के अंगूठे की जड़ में मर्द के ताल्लुक से औलाद और बायें अंगूठे की जड़ में औरत की औलाद। मंगल बद के बुर्ज़ के किनारे मददगार औलाद और चंदर के बुर्ज़ के किनारे उम्र वाली औलाद ज़ाहीर करते हैं।

2

औलाद

२। शादी रेखा के ऊपर निहायत बारीक बारीक सीधे ख़त लड़के और दो शाखी लकीरें लड़कियां। यहीं उसूल नर मादा औलाद देखने के लिये हर बुर्ज़ पर होगा। साफ व दुरस्त और सही ख़त क़ायम औलाद और मद्धम और कटे हुए ख़त मर जाने वाली औलाद ज़ाहिर करते हैं।
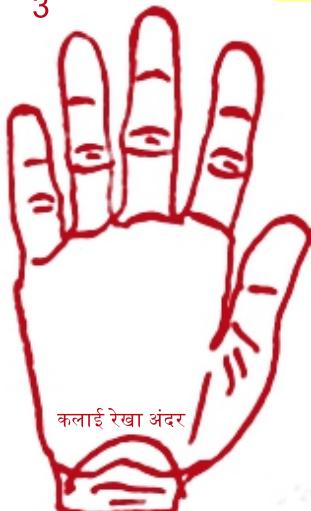
३। कलाई की रेखा अगर हथेली के अंदर घुस आवे और अंदरूनी शराफ़त रेखा की मानिंद शकल होवे या औरत की पिंडियाँ मोटी हों तो औलाद कम होने या न होने या देर बाद होने या दीगर रुकावट औलाद या औलाद के मर जाने का अहतिमाल या अंदेशा और शक

होगा। इस के साथ ही (यानी कलाई की रेखा का हथेली में घुंस आना) अगर शुक्र का बुर्ज़ भी बहुत बड़ा होवे तो लावल्दी (औलाद न होने या न रहने) की पूरी निशानी है। **ऊपर के और सामने के दांत टूटे हुए हो तो औलाद ३४ के बाद होगी**

४। साहिब औलाद : पांव की उंगलिया अगर बातरतीब एक से दूसरी बड़ी होती जावे तो साहिब औलाद या ज़्यादा औलाद वाला होगा।

५। औरत के पांव में (दोनों पांव इकट्ठे) जिस क़दर चक्कर या पद्म साफ गहेरे पब या पांव की हथेली पर हो उसी क़दर लड़के होंगे।

६। जिस क़दर चक्कर या पद्म नरम व बारीक लकीर के हों उसी क़दर लड़कियां ही होंगी।

७। औरत की पुश्त-पाये (पांव की पीठ) अगर बहुत ही कलां हो तो लावल्द या बांझ होगी।

८। औलाद का वक़्त मुतलका ग्रहों व उंच फल देने वाले ग्रहों के असर का वक़्त औलाद होने का वक़्त होगा। नीच ग्रहों व औलाद के खिलाफ़ रेखा का असर ज़रूर देखना पड़ेगा।

९। औलाद का सुख - मुआवन उम्र (जिस का ज़िकर उम्र रेखा के साथ सनीचर के बुर्ज़ में है।) अगर सही और दुरस्त हो तो औलाद का सुख यकीनी हो।

१०। औरत के शिकम (पेट) और सीना (छाती) पर बाल हों तो वह अपने लड़के का सुख (पहली औलाद लड़का) ज़रूर भोगेगी। और अगर इन बालों में भंवरी (चक्कर, गोल दायरा सा) हो तो पहली औलाद लड़का ही होगी।

११। मर्द के दायें पांव का अंगूठा अगर छोटा और उसी पांव की तर्जनी उंगली बड़ी हो तो वह शख़्स अपने पहले लड़के का सुख न भोगेगा। ये मतलब नहीं की पहला लड़का मर ही जावेगा। सिर्फ़ बाहमी सुख दुख देने का मतलब है। और अंगूठा व तर्जनी या कनिष्का व अनामिका बराबर हों तो भी औलाद का सुख शक्की होगा।

१२। गृहस्त रेखा अगर गहेरी सालिम ख़मदार और शुक्र के बुर्ज़ में अंगूठे

की तरफ झुकी हो तो वह शख़्स बड़ा ही अयालदार, **जायदाद हल्की मगर** दौलत मंद, साहिबे इज्ज़त और आसुदा हाल होगा। दुनिया, स्त्री और औलाद का सुख भोगेगा और अगर गृहस्त रेखा ऊपर की तरफ़ दिल रेखा को काटकर मद्धमा तक चली जावे तो अपनी औलाद के अलावा औलाद की औलाद की औलाद या पोते पड्पोते वाला होगा। और बड़ा ही क़बीले वाला (अपने तुख़्म दर तुख़्म से पैदा शुदा) और सुखी होगा। **जायदादी हालत में कदरे हल्का ही होगा**

१३। बहुत बड़ा बृहस्पत और नरम हाथ का बृहस्पत शुक्र का काम देता है। मगर बहुत बड़ा शुक्र औलाद से महरूम रखता है।

फ़रमान नंबर १२४

उंच बृहस्पत खाना नंबर ४ का होता है। जिस में बृहस्पत का बहुत उत्तम फल होग। बुर्ज बृहस्पत का असर खाना नंबर २।

१। बृहस्पत को गुरु माना है। इस का असर दुनियावी रिशतेदारों से नेक ताल्लुक, धन - दौलत की आमद व ज़ख़ीरे। औलाद जो खुबसूरत और औलाद का सुख। वालिद का सुख खासकर वाल्दा को उम्र में लाभ या आमदन। दुनियावी इज्ज़त, धरम में साफ़, दानी व साबित क़दमी। आम बरताव में ख़ुश खुर्रमी और खंदा पेशानी, औरत को सुख और औरत का सुख। वालिद का आराम। गर्जे की ज़माने की हवा का पूरा नेक असर और राजा इन्द्र की तरह लोक परलोक का मालिक और सुख लेने वाला हो। न आंख की होंशियारी से धन कमाना पड़े न ख़ुद हाथ से कमाई करनी पड़े। ख़ुद ब ख़ुद लक्ष्मी पाँव पकड़ती फ़िरे। **(हुकूमत की ताकत - जहनी और दिमाग़ी लियाकत - दफ़ीना लॉटरी सफा १४४)**

२। दिल रेखा के दुरस्त होते हुवे शुक्र का बुरा असर न होगा।

३। नीच बृहस्पत **(खाना नंबर १०)** शुक्र के ताल्लुक से (यानी पराई औरत, माशूक़ा फ़ाहिसा वगैरह) औलाद का दुख, माता को पिता का दुख। **(मुतास्सिब - ज़ाहिल - हासिद)** (माता पर इस का ख़ुद कोई असर

न होगा।) भाइयों से रंजीदगी। मुतलका दुनिया मलाल और दुश्मनी। धरम से मुखालफ़त व आमदन में सोने से मिट्टी मिलेगी। और हवा की तरह आई हुई लक्ष्मी हवा हो जावेगी। पांव की मिट्टी (शुक्र) सिर पर चढ़ जायेगी। या सिर में खाक या सिर पर खाक पड़ जायेगी। ऐसा आदमी कोई फ़क़ीर साहिबे कमाल न होगा। बल्कि फ़क़ीर दर्जे सोयम होगा। (तीजी पीछे मूड मूड वेखदी) यानी

(i) इक्क फ़क़ीरी लेख दी। (क़िस्मत की)

(ii) दुजी होवे भेस दी।

(iii) तीजी पीछा मूड मूड वेखदि।

हर सांस में (बृहस्पत हवा में) यही होगा की आता है याद मुझको गुज़रा हुआ ज़माना। मगर अब तीसरी फ़क़ीरी क्या करे। नंबर ३ मिथुन राशि बन गया। जिस के घर का मालिक बुध है। शुक्र की ज़मीन अब बुध के सहारे गोल (बुध का निशान○) हो गई। जो पीछे थे वह आगे हुए। एक दुश्मन शुक्र से छूटा तो दूसरा बुध आ खड़ा हुआ है।

४। बुध के ताल्लुक से गोयाई कम हुई। बोलने में भी शरम आने लगी। माता पिता का सुख न देख सकी। ख़ुद यतीम हुआ और अपनी क़िस्मत की बजाए सब की क़िस्मत देखने लगा। एक का तो सिफ़र हुआ.......................और खाना नंबर १० सनीचर का उम्मीदवार हुआ। (उंच सनीचर बृहस्पत का फल देता है, दोबारा भागवान दुष्ट भगवान ही होगा।)

जीनको बख्शीस करता था सनीचर के वक़्त उनसे छिनना पड़ेगा। जिनको दान देता था और सूरज के कलंक को भी धोता था। (सूरज ग्रहण के दीन दान) उन से अब धान (रोटी का गुज़ारा, चावल की भी छाल) लेना पड़ेगा। अपने बाप को जो खुशी से बाप न कहेता था। अब हर एक को "तू ही मेरा माई बाप है" कहेता फिरेगा। गोया बृहस्पत की हवा बदली तो ज़माने की हवा मददगार न रही। बृहस्पत टुकड़े हुआ तो न बस (अपना आप) काबू रहा और न पत (इज्ज़त) पाई गई।

फ़रमान नंबर १२५

बृहस्पत के सीधे खत |||| उंगलियों की पोरियों पर आराम या मुफ़्त और हराम की रोज़ी से मुराद होगी। यानी अव्वल तो सख़्त काम का वास्ता ही न होवे। अगर हो भी जावे तो करे कराए कुछ भी न। मुफ़्त में अपने पेट का पालन कर लेवे। मगर हथेली पर ये खत वाके हों तो सिर्फ़ एक ही बुर्ज़ पर।

कुंडली का खाना नंबर	असर सीधे ख़त |||| **(राहु का साथ)**	तादाद ख़त
१	फय्याज़ व सखी होगा।	१
२	नेकी के काम बहुत करे। गरीबों का मददगार	२
१२	अक़्लमंद हुनर और पेशे से ऐसा नफ़ा न हो।	३
४	उत्तम चांद के असर का पूरा फ़ायदा हो।	४
५	हाकिम या सरदार हो।	५
७	जवानी में खूब आराम होवे।	६
३	आंख की होंशियारी ज़्यादा हो, बहादुर हो।	७
८	ज़िंदगी खाना पूरी का नाम हो।	८ या ज़्यादा
	(बृहस्पत के उंगलियों पर के तमाम निशानों के लिए दोनों हाथो को इकट्ठा गिन कर तादाद लेंगे)	

फ़रमान नंबर १२६

बृहस्पत के निशान

चक्कर का असर

उंगली की पोरी (नाखून वाला हिस्सा) पर पूरा असर देगा। हथेली पर (दायें हाथ की) मद्धम फल और बायें हाथ पर (हथेली पर) ख़राब फ़ल होगा।

चक्कर

खाना नंबर कुंडली का	असर चक्कर **(बुध का साथ)**	तादाद चक्कर
१	राजा या हाकिम होवे।	१
४	हुनरमंद होवे।	२
७ बुध	ब्रह्म ज्ञानी होवे।	३
७	मुफ़लिस और निर्धन होवे।	४
५	ख़ुशहाल होवे।	५
६	अय्याश होवे।	६
३	दिलावर - बहादुर हो।	७
८	हंमेशा बीमार रहे।	८
११	दौलत मंद होवे।	९
१०	ख़ुश गुज़रान होवे।	१०
८	मनहूस और कम उम्र होवे।	११
१२	नेक ताबे - लंबी उम्र - ख़ुश गुज़रान	१२

पांच से ज़्यादा उंगली वाले के हाथ पर दस से ज़्यादा हो सकते हैं। दस तो हथेली पर भी हो सकते हैं।

फ़रमान नंबर १२७

शंख। हथेली और उंगलियों पर वही असर होगा। जो चक्कर के हाल में ज़िक्र है।

खाना नंबर कुंडली का	असर शंख (केतु का साथ)	तादाद शंख
१	हंमेशा आराम पावे।	१
८	दल्लिदरी, मुफ़लिस हो।	२
७ बुध	ब्रह्मज्ञानी हो।	३
४	तालीम वाला हो।	४
७	तपस्वी मगर मुफ़लिस हो।	५
१२	बड़ा ही अमीर हो।	६ से ज़्यादा हो।

शंख

फ़रमान नंबर १२८

सदफ़

हथेली और उंगलियों पर वही दर्जा असर होगा। जो शंख में पहले ज़िक्र है।

खाना नंबर कुंडली का	असर सदफ़ (सनीचर का साथ)	तादाद सदफ़
१	मुफ़लिस हो।	१
२	आलिम हो।	२
३	दौलतमंद हो।	३
४	मशहूर ज़माना होवे।	४
५	बड़ी इज्ज़त व आबरू पावे।	५
	एज़न।	६ से ज़्यादा हो।

फ़रमान नंबर १२९
सदफ़ का हथेली पर असर

अगर सूरज के बुर्ज पर बुध की तरफ वाक़ें हो और अनामिका की जड़ से पेबस्ता होवे तो सूरज के नेक असर में ख़राबी होगी। यानी अदालत में जाने वाले मुक़दमात दीवानी और हाक़ीम वक़्त से अदावत होगी। मगर फैसला हक़ में ही होगा। जिस क़दर यह निशान या दीगर निशान या दीगर निशान चक्र, शंख – बुध की तरफ़ होते हुए दिल रेखा के नज़दीक होते जावें नेक असर बढ़ेगा। अनामिका की जड़ कन्या राशि बुध का घर हे जो बृहस्पत का दुश्मन हे। दिल रेखा चंद्र की रेखा हे। जो बृहस्पत का दोस्त हे। और ये निशान बृहस्पत के हें मुकाम सूरज का है। जो बृहस्पत का दोस्त हे। इसलिए दूरी व नज़दीकि मुकामात ज़रूर नेक बद असर का दर्जा असर में फ़र्क देगी। अगर सदफ़ की बजाए शंख वाक़ें होवे तो करम धरम बाइसे तनाज़ए होगा। अगर चक्र हो तो दीगर सरकारी ताल्लुकात बनाये। झगड़े होंगे। अगर सूरज का सितारा ही ख़ुद वाक़ें होवे तो सब से ज़बरदस्त होगा। मगर वह भी तनाज़ा पैदा करेगा। मगर अपने से बहुत ही बड़ो के साथ। फ़ैसले के लिए सदफ़-शंख चक्र-सितारा दर्जा ब दर्जा ऊपर को

ज़बरदस्त होंगे। यानी सदफ़ वाला सितारा वाले का मुक़ाबला न कर सकेगा। या सितारा वाला गालिब होगा। कान की तरह दायरा में दायरा सदफ़ होगा।(सदफ़) गोल दायरा में गोल जुदा दायरा चक्र होगा (चक्कर)। चक्र एक ही लकीर से दायरा में दायरा शंख होगा (चक्र होगा।) चित्र शंख निहायत बारीक गोल दायरा में दायरा सितारा की मानिन्द निशान सितारा सूरज होगा।

चक्र-शंख-सदफ़ और सितारा सूरज अगर सूरज के बुर्ज पर बुध की तरफ़ की बजाए सनीचर की तरफ़ वाक़ें हों तो अब सनीचर का साथ होगा जो चंद्र (दिल रेखा)और सूरज के बुर्ज दोनों का ही दुश्मन हे। इसलिए अब फ़ैसला हक में होने की तसल्ली न होगी। बाक़ी असर वही होगा जो पहले ज़िक्र किया हे।

फ़रमान नंबर १३०

बृहस्पत का असल निशान ५ इंद्रियाँ हैं। जो सबसे उत्तम हे और अकेले बृहस्पत के असर का हे।

बृहस्पत राशि धन ९ उम्र ७५ साल १२ मीन उम्र ९० यह राहु का भी घर है मगर ऊंच, बृहस्पत राशि नंबर ४ कर्क राशि चंद्र का घर है। **दूसरा पैरा सफा १६४ जुज २१ से मुतलका**

फ़रमान नंबर १३१ व १३२

बृहस्पत के निशान का असर

खाना नंबर

१ सूरज के बुर्ज पर – दोनों ग्रहों का दोस्तना अपना-अपना और जुदा-जुदा और उत्तम फल होगा। **सूरज का बुर्ज। सफा १२४/१२८ जुज नंबर २/४ नेज खाना नंबर ३,५ ,९,१२ का असर सूरज बृहसपत चंद्र मंगल की चीजें। (राग रंग का खूब शानदार तुम्बा बजे)**

१ कुंडली में बृहस्पत का असर –

मेख़ राशि या सूरज के बुर्ज पर बृहस्पत के निशान

मेख़ राशि मेढा घर का मालिक मंगल हिरण है जो बृहस्पत का दोस्त है। सूरज (रथ) ऊंच करता है जो बृहस्पत का दोस्त है। सनीचर मगरमच्छ नीच करता है। जो ख़ुद बृहस्पत का दोस्त है। इसलिए चारों ग्रहों का (मंगल-हिरण, सूरज-रथ, सनीचर-मगरमच्छ और बृहस्पत-शेर) और मेख या मेढ़ा का असर दोस्ताना उत्तम और ऊंच होगा। दुश्मन गो ज़्यादा होंगे मगर ज़ेर होंगे। राजदरबार - धन दौलत-लड़ाई झगड़ा-मुक़द्दमा जायदाद मकान वगैरह में सब तरफ़ उत्तम होगा। औलाद ८ वर्ष होती रहे। उम्र ७५ साल होगी। सूरज का रथ हिरण शेर चीता चलायेगा और सनीचर की आँख निगरानी करेगी। दोस्ताना ढंग पर या काला सांप भी सिर पर साया करने वाला शेष नाग होगा। इल्म वाला-तबीयत में गुस्सा होगा मगर साफ़ दिल चालाकी को फ़ोरन समझने वाला और रोकने वाला होगा। नज़र बीनाई हमेशा उम्दा जिस्म तंदरुस्त होगा। पिता का साथ औलाद का सुख होगा। अज़ीज़ों से मुहब्बत करने वाला और सुख पाने वाला होगा। हर हालत में लाल जमा पीला = पक्का पीला होगा। यानी बृहस्पत का नेक असर ऐसा पक्का होगा जो उतरेगा नहीं। बाकी ग्रहों का अर्सा मियाद - बाहमी ताल्लुक - असर जुदा - जुदा या मुश्तरका दोस्ती दुश्मनी वगैरह जुदी - जुदी जगह दर्ज है। राग रंग का खूब शानदार तुंबा बजे।

२ बृहस्पत के अपने बुर्ज पर – मुफ़सिल जुदा दुर्ज है।

बुख राशि बैल – घर का मालिक शुक्कर है। सफ़ेद झण्डा लिये जो बृहस्पत का दुश्मन है। मगर ज़माने की हवा या बृहस्पत दुश्मनी इससे नहीं करता।

बृध राशि या बृहस्पत के बुर्ज पर बृहस्पत के निशान

बहुत बड़ा बृहस्पत हो तो शुक्कर का ही फल देता है। यह बृहस्पत का असल मुक़ाम है। चंद्र ऊँच करता है जो बृहस्पत का दोस्त है। इस राशि को नीच करने वाला कोई ग्रह नहीं। (बृहस्पत को इसीलिए गुरु या सबका उस्ताद माना है। और सामुद्रिक में सब ग्रहों से दर्जा अब्वल या असर करने की चाल में नंबर (1) पर माना है) बृहस्पत के तमाम निशानों का पूरा-पूरा उत्तम फल होगा। और हर काम मे होशियार और नेक असर होगा। २७ वर्ष राजदरबार से नेक ताल्लुक होगा। और हर तरफ बसंत का (शेर, ज़र्द रंग या सफ़ेद दही रंग मटियाला) शेराना (शीराना-मीठा व दूध का - शेराना = शेर जैसा बहादुराना) फल होगा। ज़माना की कुल हवा मदद देगी।

३ मंगल बद नेक के बुर्ज पर – दोनों ग्रहों का दोस्ताना मुश्तरका और उत्तम होगा। जंगो जदल में बहादुर मगर दूसरों का माल छीनने वाला हो।

३ मिथुन राशि या बृहस्पत का असर (i) मंगल नेक के बुर्ज व (ii) मंगल बद के बुर्ज पर

मिथुन राशि मर्द व औरत का जोड़ा। घर का मालिक बुध मेंढा जो बृहस्पत शेर या जमाने की हवा का दुश्मन है। राहु हाथी ऊँच करता है जो बृहस्पत (शेर) की बराबरी का है। केतु सूअर नीच करता है जो बृहस्पत का मुसावी है। असर के लिये यह घर मंगल का है जिसकी हाज़री में राहु चुप रेहता है। जबकि बुर्ज मंगल नेक□ का होवे जो (मंगल नेक बृहस्पत का दोस्त है) और भाई - बन्द हक़ीक़ी - ससुराल नज़र और औलाद को सुख और औलाद की उम्र से मुतलका होगा। लिहाज़ा बुध की दुश्मनी जो मंगल और केतु का दोस्त है। सिर्फ़ औलाद मामू से मुतलका होगी। मगर ख़ुद वह शख़्स साहिबे इल्म या अक़्ल वाला होगा। २० साल अज़ीज़ों से मुहब्बत होगी और आराम पायेगा। राज दरबार से गुज़रान करेगा और नेक असर होगा। बृहस्पत और बुध में फर्क़ या दुश्मनी नीला रंग (हरे और जर्द है) है जो राहु है और ऊँच करता है। मंगल बद का बुर्ज ऐसा नेक असर न देगा। गो जंगो जलद में बहादुर होगा। मगर दूसरों का माल छीनने वाला होगा। कम नसीब - झगड़ालू -हरदम गला झगड़े

में या झगड़ा गले लगा रहेगा। शरीर मगर बुज़दिल होगा। ३१ साल बीमारी का ताल्लुक़ हो।

४ चंद्र के बुर्ज पर – बाहम दोस्ताना मुश्तरका और उत्तम फल होगा। राजदरबर से फ़ायदा। ज़रों माल की तरक़्क़ी - हर तरह की शांति होवे। "शेर सीधा तैरता है वक़्ते रफ़्तन आब" में शेर पानी के दरिया में सीधा ही तैरेगा।

४ कर्क राशि या चंदर के बुर्ज पर बृहस्पत का असर

बृहस्पत का असर- कर्क राशि केकड़ा। घर का मालिक चंद्र सफ़ेद घोड़ा है जो बृहस्पत का दोस्त है। मंगल हिरण नीच करता है और वह भी बृहस्पत का दोस्त है। बृहस्पत ख़ुद इसे ऊँच करता है। इसलिये बृहस्पत का नेक असर होगा। जो चंद्र के फल का पूरा उत्तम भंडार होगा। राजदरबार से फ़ायदा – ज़रों माल की तरक़्क़ी - मकान आलीशान २४ साल तालीम व इल्म की बरकत गर्ज़ की हर तरह की शांति होगी।

५ सिंह राशि औलाद

सिंह राशि शेर नर – घर का मालिक सूरज रथ है। इस राशि को कोई ग्रह ऊँच या नीच नहीं कर सकता। अब बृहस्पत का शेर अपने शेर के घर में है। बृहस्पत के औलाद से मुतलका निशान अपना पूरा असर नेक देंगे। औलाद की तरफ़ से साहिबे ज़रों जायदाद होगा। वरना मामू को ७ साल तकलीफ़ होगी।

६ कन्याराशी या केतु

कन्या राशि लड़की – घर का मालिक बुध मेंढा है। और जिस में केतु सूअर का निवास है। केतु बृहस्पत के मुसावी मगर बुध जो केतु के बराबर का है बृहस्पत का दुश्मन है। मगर बृहस्पत बुध का दुश्मन नहीं और बुध के बराबर का है। राहु (हाथी) और बुध ऊँच करते है। दोनों बृहस्पत के मुसावी है। केतु और शुक्कर नीच करते है। जिसमें शुक्कर तो बृहस्पत का दुश्मन है मगर केतु बराबर का। इस तरह से बुध और

कन्या राशि या केतु

दोनों ही बृहस्पत के दुश्मन हुवे। बुध घर का मालिक और उसी राशि को ऊंच करता है। इसलिए वह अपने घर की हिफाज़त के लिए उस घर की बरबादी न करेगा। यानी मामू की तरफ सब खुशहाल होंगे। मगर खुद अपने लिये ४० बरस दुश्मन होंगे। बृहस्पत किसी से दुश्मनी नहीं करता। सांस या बृहस्पत की हवा बेशक़ (केतु तूफानी हवा और शुककर मिट्टी मिली हुई) कैसी भी होवे हर इंसान को मदद देगी। इसलिये वह शख्श सखी सरबर होगा। और अपने पास दौलत जमा न रखेगा।

७

शुककर के बुर्ज पर – दोनों ग्रह बराबर ताक़त के हैं। बृहस्पत तो कुछ नहीं करता मगर शुककर बृहस्पत से दुश्मनी करता है। इसलिए शुककर का फल अपना तो अच्छा होगा मगर बृहस्पत का शुककर के ज़हर से हल्का और दुश्मनाना होगा। दुनियावी व गैबी मदद तो ज़रूर होगी। सफ़र से ज़िन्दगी उम्दा होगी। मगर वालिद औलाद का सुख हल्का। भाईयों से बे आरामी होगी।

७

तुला राशि या शुक्र के बुर्ज - बुध के बुर्ज पर बृहस्पत का असर

तुला राशि तराज़ू के दो पलड़ों में शुककर बैल और बुध मेंढा यकसां तुल रहे हैं। जो दोनों बृहस्पत के दुश्मन हैं मगर बृहस्पत दोनों में से किसी का भी दुश्मन नहीं है। सनीचर मगरमच्छ या मछली ऊंच करता है जो बृहस्पत के बराबर का है। लेकिन सूरज नीच करता है जो बृहस्पत का दोस्त है। इस तरह से सूरज की हाज़री में शुककर और बृहस्पत का दूसरा दुश्मन बुध दोनों ही चुप रहेंगे। औलाद खूबसूरत और सुख लेने वाली होगी मगर सुख देने वाली न होगी। गर्ज़ कि औलाद भाईबन्द वालिद वगैरह और औरत के सुख से महरूम होगा। वह सब तो सुख लेंगे मगर सुख देंगे नहीं।

बुध के बुर्ज पर- अगर बृहस्पत रेखा ।।।। शादी रेखा को काटे तो औलाद बरबाद। और अगर बुध पर सूरज के बुर्ज कि तरफ बृहस्पत का निशान ।।। हो तो इल्मे ज्योतिष और दुनियावी तजुर्बेकार होगा। शुककर अय्याशी कि तरफ तो ले जाएगा। ४ साल ख़ूब ऐश करेगा मगर परहेज़गार होगा।

७	बुध के बुर्ज पर- दोनों का अपना - अपना और दुश्मनाना होगा। सीधे ख़त बुध पर हों तो औलाद का नाश करें।
८ वृछक राशि मौत	बृच्छक बिच्छू घर का मालिक□मंगल है। जो बृहस्पत का दोस्त है। असर के लिए सनीचर का मुक़ाम है जो बृहस्पत के मुसावी है। चंद्र नीच करता है और बृहस्पत का दोस्त है। इस राशि को कोई ऊँच नहीं कर सकता। मौत से बचेगा। दौलत होगी मगर कम दौलत - बीमारी का साथ ज़रूर होगा जब मंगल बद का ताल्लुक़ हो।
९ धन राशि धरम करम	धन राशि नील गाय - सिर आदमी का और टांगें चौपाया की। घर का मालिक ख़ुद बृहस्पत केतु ऊँच करता है। जो बृहस्पत के बराबर का है। राहु नीच करता है। जो बृहस्पत का मुसावी है। बृहस्पत केतु पर भी प्रबल होगा। अकेला राहु खिलाफ होगा। जो ख़र्चा ज़्यादा रखेगा। मगर दौलत व धन ख़ूब आवेगा। ख़यालात कदरे धरम के खिलाफ होंगे। वालिद को बारह साल (राहु का ¼) तकलीफ़ होगी।
१०	सनीचर के बुर्ज पर-दोनों ग्रह मुसावी हैं। इसलिए दोनों का अपना अपना मगर सनीचर का ख़राब फल। जर व जायदाद वाला होगा। मगर शहवत परस्ती से तंग हल हो जावे।
मकर राशि सनीचर के बुर्ज पर असर	मकर राशि मगरमच्छ – ख़ुद सनीचर मालिक है जो बृहस्पत के मुसावी है। मंगल जो बृहस्पत का दोस्त है इसको ऊँच करता है। इस घर को बृहस्पत ख़ुद नीच करता है मगर सनीचर भी बलवान है। इसलिये बारह साल तो दौलत का साथ होगा। वह भी सनीचर की आंख से। बादअज़ा तंग दस्त होगा। बृहस्पत की दौलत साथ न देगी। असर बुरा ही होगा।

शहवत परस्ती से। **(नीच बृहस्पत)**

११ कुम्भ राशि – पानी से भरा हुआ घड़ा – घर का मालिक सनीचर है। जो बृहस्पतका मुसावी है। इस राशि को ऊँच-नीच कोई नहीं कर सकता। असर के लिये भी बृहस्पत का घर है। इसलिये सिर्फ़ सनीचर और बृहस्पत का ताल्लुक़ रह गया। यानी १२ साल तो दौलत की आमदन बाद अजां बीमारी हमेशा। निकम्मा या ख़राब फल ही होगा। शहवत परस्ती से। **(पूरा निरपक्ष)**

कुंभ राशि आमदन

१२ मीन राशि मछली – घर का मालिक बृहस्पत ख़ुद जिस में राहु का निवास है। और वह बृहस्पत के बराबर का है। शुक्र और केतु ऊँच करते हैं। यानी शुक्र अब दोस्ती का फल देगा बुध राहु नीच करते हैं। बुध शुक्र दोस्त हैं। बुध राहु भी दोस्त हैं इसलिये अब दुशमनी भाव कम होगा। बृहस्पत अब वज़ीर बातदबीर होगा। शुक्र का अर्सा २५ साल दौलत का आराम देगा मगर राहु हमेशा ख़र्चा खड़ा रखेगा जो कबीलदारी के नेक कामों में सर्फ़ होगा। मगर बचत न होगी। **(पूरात्यागी)**

मीन राशि खर्च, स्त्री सुख, लक्ष्मी सुख

फ़रमान नंबर १३२ A

बृहस्पत का असर

बृहस्पत की किसी से दुश्मनी नहीं मगर बुध व शुक्कर (शादी रेखा बुध पर और भाई रेखा शुक्कर पर) ख़ुद दुश्मनी करते हैं। अपनी ही ज़ात का असर ख़राब करते हैं। यानी बृहस्पत जब किसी भी दूसरे बुर्ज पर चला जावे यानी बृहस्पत के अपने बुर्ज के अलावा किसी दूसरे बुर्ज पर बृहस्पत के निशान पाए जाए तो बृहस्पत अपना नेक असर उस बुर्ज को जिसमें की चला गया है दे देगा मगर जब दुश्मन ग्रह बृहस्पत के बुर्ज पर हो तो दुश्मनाना फल पैदा होगा।

मगर बृहस्पत अपने कुल अर्से का निस्फ़ ८ साल पहला ज़रूर नेक फल देगा। अकेला शुक्र बृहस्पत पर बुरा असर न देगा। बल्कि गुरु की सारी उम्र सेवा करेगा। आख़िर औरत है शुक्र। मगर बुध का दायरा या सिर रेखा या बुध से शादी रेखा को काटती हुई ऊपर धन राशि को ख़त हमेशा बुरा ही असर देंगे।

कुण्डली के बाक़ी खानों में दूसरे ग्रहों की नज़र का भी हिसाब असर रखता है। **सफा नंबर २६६ नोट :- बृहसपत का जिकर**

फ़रमान नंबर १३३

सूरज

१- जब आकाश या खाली जगह में बृहस्पत (हवा) का असर हुवा या ज़माने की हवा में इन्सान फिरने लगा इस में हरकत की ताक़त पैदा हो गयी। अब हरकतसे गर्मी आग या दुनिया में सूरज निकल आया। जो निकलते ही सुर्ख़ रंग देखा गया। (सुर्ख़ रंग मंगल का है।) यह नज़ारा दिन के नाम से मौसूम हुवा। सूरज जिस क़दर ऊंचा हुआ। गर्मी बढ़ी लाली घटी और हवा ने सूरज का रुख़ किया। गोया जिधर सूरज होगा ज़माना की सब हवा उसी तरफ़ का रुख़ करेगी। या जिसका सूरज बुलन्द होगा ज़माना की मदद उसके पांव ही पकड़ेगी। और मंगल की लाली उसे ही सुर्ख़-रू कर देगी। सूरज के सामने चंद्र (दिल) भी भिकारी हो जाएगा या सूरज से रोशनी लेगा। बृहस्पत ग्रहों का गुरु या पिता था। मगर सूरज दुनिया का पिता और रूहानी मालिक है। बुध की अक़्ल का गोल दायरा भी सूरज का अपना ही आकार है। यानी सूरज निकला तो बृहस्पत मंगल चंद्र और बुध सबके सब एक हो गए और शुक्कर-राहु और सूरज का लड़का सनीचर-केतु को साथ लिए बाएं तरफ हो बैठे। जो हर एक के मुड़ने का हाथ है। मगर मुड़ेगा कौन। सूरज जो अपनी गोलाई के चक्र के सबब हमेशा आगे को ही चलता जा रहा मालूम होता चला आया है। किसी ने उसे मुड़ते नहीं देखा न उसने अपना रास्ता बदला न पीछे हटा। मंगल दोस्त की लाली ज्यों-ज्यों

सूरज ऊंच हुवा सफ़ेदी में बदलती गयी। और दुनिया को रोशन करने लगी। गोया मंगल सूरज और दुनिया की ज़मीन शुक्कर के दरमियान ख़ूब ज़ोर से तन गया। दुनिया का दिल या इंसान का दिल चंद्रमा ने अपनी अलाहदा ख़िचड़ी पकानी छोड़ दी और अपना घोड़ा (चंद्र को घोड़ा भी माना है और सफ़ेद रंग) सूरज के रथ में जोड़ दिया। (सूरज का रथ माना गया है) और ख़ुद सूरज के दिल के अंदर बैठ गया। या इंसान का दिल दुनिया और दुनिया का दिल चंद्रमा सूरज के जिस्म में जा बैठा। बृहस्पत की हवा या राजा इन्द्र ने परलोक से इस लोक (दुनिया) का रुख किया। और निकलते ही सूरज (आग गर्मी) के हुक़्म को पूरा करने के लिए ज़र्द हवाई शेर को सिंह राशि के मालिक सूरज के प्रणाम करने को भेजा। जो मेख नंबर १ के मंगल को ऊंच कर रहा है। और मंगल की किरणें बना-बना कर शुक्कर की ज़मीन को ख़ूनी झण्डे के मालिक से मैदाने जंग बना रहा है सिंह का सूरज ख़ुद शेर है। मुंह लाल करने वाला मंगल इसे और भी ऊंच दर ऊंच हालत में देख रहा है। शेर के मुंह को मैदाने जंग के ख़ून की लाली का रंग नहीं चड्ता। वह लाल होने की बजाए और भी चमकता चला जा रहा है। मंगल भी नर ग्रह है। मैदाने जंग के उसूलों का चलाने वाला है। मुक़ाबला पर शुक्कर की ज़मीन सबको एक ही आंख से देखने वाली कानी औरत है हमला नहीं करता। किरणों को वापिस ले जाता है। और सूरज और बृहस्पत के शेरों को कानी अबला निहायत गरीब की हैसियत बयान करता है। मंगल आदिल है या अदल का मालिक है। बृहस्पत हवाई शेर रहीम या रहमका मुजस्सम देवता है। किसी से दुश्मनी नहीं करता। सूरज मुनसिफ़ है। जिस मैं रहम और अदल दोनों शामिल हैं। क्योंकि इसके ज़ाहिरा गुस्से के अंदरूनी वजूद में चंद्रमा का शान्ति वाला दिल बैठा हुआ नज़ारा देख रहा है। फैसला होता है की पाव पड़ी नीचे लेटी एक ही आंख की मालिक कानी औरत पर मर्दो का हाथ उठाना। (मंगल का काम) और हमला करना शेरों और बहादुरों का काम नहीं। चुप चाप बैठा हुआ बुध अपनी अक़्ल का दायरा वसीह करता है। मिथुन राशि नंबर ३ पैदा हो जाती है। या मेख नंबर एक

के मंगल व सूरज मिल कर ३ होने पर मिथुन मैथुन मिलावट या मर्द औरत का जोड़ा या मर्द औरत की मिलावट की बाहमी अक़्ल या कामदेव (विषय) की ताक़त साथ मिल बैठती है। बुध शुक्कर को अपने घर में ही पालना करने लग जाता है। दूसरी तरफ़ सनीचर जिसने ज़मीन या औरत को देखने के लिए अपनी आंख उधारी दी थी औरत को समझता है की मेरे होते हुए ये सब आंख की नज़र का सिर्फ़ एक मामूली करिश्मा है। सनीचर ने बाप सूरज के ख़िलाफ भी औरत को सलाह दी औरत भोली भाली होती है। इसके फ़रेब में आ गई। आंख सनीचर की मगर मिट्टी शुक्कर की ज़ाहिरा भोली भली बैल गऊ नज़र आ रही है मगर इसकी शैतान आंख के एक ही करिश्मे ने सूरज और बृहस्पत के शेरों को नीचा कर दिया। सब नीच फल पैदा हो गया। दुनिया में जनाकारी जारी हुई। ▭ मंगल के पेट में छुरियां फिरने लगीं। ▦ गोया वह राहु बन गया। दिमाग में नक़्लों हरकत हो रही है। पेश नहीं जाती। सूरज और बृहस्पत दोनों सबके पिता तक को आंख से मार देने वाली अबला से तंग होने लगा। और ख़ुद अपने हाथ से मार देने पर तैयार हुआ। मगर अकेला होवे तो ऐसी कायराना कारवाई कर जावे। चुप है। मंगल के होते हुवे राहु भी चुप है। मर्द औरत का जोड़ा कामदेव को अन्दर छुपाए फिर रहा है। मगर मंगल दुश्मनी नहीं छोडता। जब काबू आया औरत को मार ही देने का उसूल बरतने लगा मंगलीक से औरत या मंगलीक औरत से मर्द ज़िंदा नहीं रहने पाया। कामदेव की महरबानी से किरणें वापिस हुई मगर मंगल की सलाह से फिर ज़मीन पर वापिस आईं। मगर मार देने की बजाए या नीच करने की बजाए चमकाने को। अब ज़मीन क्या चमके। सब ग्रहों को सनीचर की शैतानी मालूम हो गई। बृहस्पत की हवा हुकुम बजा ला रही है। मंगल का मैदाने जंग अंदरूनी तौर पर गर्मी नहीं छोडता। वह सूरज के हुक़्म या मंगल की किरणों को कभी इधर कभी उधर करता है। कशमकश पैदा हो गई। मिट्टी की किरणों कुछ बिगाड़ नहीं सकतीं। बृहस्पत की हवा भी ज़ोर पकड़ रही है। ज़र्रे साथ उड़ने लगे।

और शुक्र के झगड़े सब की आंखों में पड़ने लगे। मगर उसकी अपनी आंख बदस्तूर देख रही है क्योंकि सनीचर की बनी हुई है। यही ज़र्रे दुनिया के झगड़े हैं। वही बचा जिसने सनीचर की आंख से आंख न मिलाई। ज़र्रों से गर्मी बढ़ी। मैदान गर्म हुए। ऊंचे पहाड़ ठंडे रहे। और कायनात के सर्द और गर्म दो पहलू हुए। औरत के तबस्सुम (मुस्कुराहट) की आंख के शरारों से सैंकड़ों बखेड़े और जंगो जदल होने लगे। दुनिया रजमगाह (लड़ाई का मैदान) बन गयी। और सुख दु:ख की नदियां (या रेखाएं) हाथ के बर्रेआज़म में बहने लगीं। मंगल ने नज़ारा दिखाया। चंद्र ने तमाशा देखा। मगर रेखाओं के समन्दर (चंद्र का दूसरा नाम) ने शांति न छोड़ी पानी आहिस्ता-आहिस्ता गर्म हुआ। मगर ख़ुश्की का तमाम ब्रह्माण्ड (या शुक्कर की कुल ज़मीन या हाथ का बर्रेआज़म) में सूरज और शुक्कर की बाहमी दुश्मनी के सबब से इतना तंग हुआ कि सूरज को दबाने के लिए सारे का सारा ही उठ कर दौड़ता हुवा मालूम होने लगा। बृहस्पत कि हवा में शुक्कर कि मिट्टी के ज़र्रे तूफ़ानी ज़ोर से फैल गए। तमाम मुतलकिन तंग हुए। सूरज की तपिश को मद्धम किया। मगर उसके रथ को न रोक सके। सब ने अपना आप ही ख़राब किया। मगर उसके रथ को न रोक सके। सब ने अपना आप ही ख़राब किया। सूरज का कुछ न बिगाड़ सके। इसीलिए सूरज के अर्से में शुक्कर का असर नीच होता हैं। मगर सूरज अपने लिए इक़बाल मन्द होता है आहिस्ता-आहिस्ता सूरज का रथ छिपने लगा। और काली रात सनीचर की आंख का पहरा होने लगा। किरणें ख़त्म हुईं तो मंगल चला गया। अब मंगल की गैर हाजरी में राहु भी आ निकला। रात हो गयी। सूरज कि पहली चमक बृहस्पत कि ठंडी हवा के साथ चंद्र की ताक़त से फिर ज़ाहिर होने लगी। गर्मी घटी सर्दी बढ़ी ज़मीन को कुछ शांति हुई। और समन्दर ने भी गर्मी को अपने घर के अन्दर से दरबदर करना शुरू किया। राहु ने रात ख़तम की तो फिर ठंडी हवा चलने लगी। रात के बाद दिन के फ़र्क़ ही हदबंदी या केतु निकल आया। (दिन ख़तम हुआ और रात शुरू के बाद राहु था) और फिर नए सूरज कि उमीद हुई। राहु हफ़्ते का आख़िर और केतु हफ़्ते का आगाज़ या दोनों एक

(बगैर)* ये लफ्ज किताब को दुरस्त करने के हिसाब से डाला गया है।

दूसरे से सातवें होंगे। केतु के बाद ग्रहों का फिर दूसरा दौरा शुरू हो जाता है।

२ – जिस तरह हवा के (बगैर)*आग की गर्मी से दम घुटता मालूम होता है। इसी तरह ही बृहस्पत के साथ के बगैर सूरज का असर जला देने वाला होता है।

३ – बृहस्पत को शेर या सिंह माना गया है। और सिंह राशि सूरज का अपना घर है। सूरज का रथ मगर सिंह राशि को भी शेर गिना गया है। यानी सूरज सिंह या शेर के घर का मालिक हैं इस तरह जब सूरज बृहस्पत के साथ मिलता है तो रथ को चलाने वाला शेर जुता हुआ मालूम होता है। सबकी क़िस्मत लक्ष्मी के नाम से मशहूर है। जो बृहस्पत का दूसरा नाम है। दोनों का मेल हू बहू शेर पर लक्ष्मी सवार होगी। जिससे लोक परलोक का सुख होगा। **(सूरज खाना नः १२)**

४ – सूरज छुपता और गुरुब होता है। मगर आज तक किसी ने न कहा कि किस घर में छुप कर रात गुज़ारता है। सूरज न होने के वक़्त का नाम रात सनीचर राहु केतु वगैरह पापी ग्रहों के दौरा का अर्सा है। या यूं कहो कि सूरज जिस जगह नहीं वहां ही अन्धेरा है। जहां आग नहीं है वहां ही ठण्डक है। केतु सनीचर राहु व शुक्कर सूरज के असर में ख़राबी करते हैं। यानी ख़ुद अपने खयालात कि परागन्दगी राहु से, बददियानती वगैरह सनीचर, से इश्क़ व मुहब्बत या मिट्टी की पूजना वगैरह शुक्कर से, कानों का कच्चा होना या पांवों की नक़्ल व हरकत करना केतु से ख़राबी के बाइस हुआ करते हैं। जो सब के सब सूरज के असर वाले को बर्बाद करते हैं।

५ – सूरज के बगैर अन्धेरे की ज़िन्दगी है। अगर बुर्ज क़ायम न हुवा या सूरज बृहस्पत से न मिला। यानी सूरज रेखा व क़िस्मत रेखा बाहम न मिलें तो बाइसे ख़ुदकुशी होगा। बाज़ारी कीमत पूरी वसूल न होगी।

६ – शुक्र से सीधी शाख़ सूरज में तपेदिक पैदा करेगी और दोनों ग्रहों कि बाहमी दुश्मनी का सबूत होगा।

७ – सूरज के के बगैर मंगल को मंगल बद कहा है इसलिए अगर चंद्र से कोई

शाख़ बद मंगल के रास्ते सूरज को जावे तो भी निहायत बुरी जिन्दगी होगी। मंगल बद सब का दुश्मन है। यानी रात और दिन हर वक़्त मुसीबत होगी।

८ – सूरज अपने दोस्त बुध को जब अपनी नहर की रेखा भेजे तो स्त्री को बुध की मदद से सूरज की उत्तम ताक़त मिलेगी।

९ - सूरज की रेखा अगर दिल रेखा तक पूरी होवे तो पूरी उत्तम होगी। दोनों दोस्त हैं।

१० - सूरज रेखा कभी उंगलियों पर नहीं होती। सिर्फ़ हथेली पर ही होती है।

सूरज कभी राशि फ़ल का नहीं होता, बल्कि हमेशा ग्रह फ़ल का होगा।

११ – सूरज का सितारा चमकता हुआ सूरज है और सूरज रेखा बादल तले छुपा सूरज है। **(सूरज घर का)**

१२ – सनीचर सूरज का दुश्मन है। सूरज इतवार और सनीचर हफ़्ता का आख़री दिन। दोनों की दरमियानी हद हाथ का निस्फ़ होगी जो फिर भी ऊर्ध रेखा बन जाएगी।

	हफ़्ते में सात ग्रह		सात दिन
१।	चंदर - सूरज		सोम मंगल
२।	मंगल - सनीचर		बुध
३।	बुध - शुक्र	बीर बृहस्पत	शुक्र
४।	बृहस्पत - गुरु बैठा है		सनीचर इतवार

राहु केतु बाहर हैं

अगर दो कतारों या लाइनों में कर देवें और पढ़ाने के लिए गुरू बृहस्पत सामने बैठ जावे तो शुक्कर और सनीचर हमेशा सूरज को धक्का मारने वाले होंगे। मगर वह बृहस्पत के पास बैठा है। इसलिए उस का कुछ बिगाड़ नहीं सकते। सनीचर के एक तरफ चंद्र और मंगल दूसरी तरफ सूरज और पीठ पीछे शुक्कर है जो एक आंख से काना है। हर दम सनीचर को छडता है। कभी कहता है मुझे नज़र नहीं आता। मुझे देखकर बता दो मुझे कहता है की में दूर बैठा हूं। मुझे पूछ कर बता दो। गोया औरत सनीचर को हरदम

साथ रखती है और आंख से शरारत करती है। सनीचर की आंख कभी देखती है कि गुरू न देख लेवें। कभी देखती है कि कहीं दूसरे साथी न देख लें। वह दिखलावे का इतना ज़ाहिरवार है शुक्र कि बदसूरत ज़ाहिर भी नहीं करनी चाहता। मगर शुक्र सनीचर के हरदम साथ होने के सबब फिर सनीचर को धक्का मारता है और सनीचर बीच बचाव करता और आंख से किसी को पता नहीं लगने देता। गर्ज़ कि सनीचर कि आंख कभी आगे कभी पीछे कभी ज़ाहिरा तौर पर फौरन भलीमानस कभी फिर वही जादू कि आंख औरत से प्यार करती है। कभी गर्म कभी सर्द। कभी ख़ूब खुली कभी चुराई नज़र से देखने वाली होती है। कभी दाएं कभी बाएं हर तरह से और हर रंग में रंग बदलने वाली हो जाती है। यही आंख उसने तंग आकर शुक्र को ही दे दी है कि ख़ुद औरत उससे ही देखती रहे। यही हाल उन औरतों का है जिन पर सनीचर का ज़ोर होता है। शुक्र की भोली मिट्टी दुनिया में शरारत न करती अगर सनीचर से ये आंख न लेती और न ही शुक्र और सूरज की दुश्मनी होती। और सूरज का लड़का सनीचर भी सूरज के खिलाफ न होता अगर कानी औरत तुला राशि के खाना नंबर ७ में न जाती क्योंकि इस राशि को अगर सनीचर ने ऊंच करना है तो सूरज इसको नीच कर करेगा। बाप बेटों में बाहमी दुश्मनी से न ज़र रहेगा न जोरू (औरत) और ज़मीन और दुनियां में यही तीनों ही चीज़ें बाइसे जंग होंगी।

सूरज - रंग गंदुमी बुध के पहिये,चंदरमा
की गोलाई के समुंदरी घोड़ों वाला
सूरज का रथ न खड़ा हुआ
न ही पीछे हटा। किरणों से
अंधेरे का नाश और कुल
ब्रहमाण्ड
की आश का
मालिक हुआ।
सूरज की हर
रोज़ आने जाने
की तपस्या की हद मालूम न हुई।

फ़रमान नंबर १३४

सूरज के बुर्ज पर रेखा और सूरज रेखा

१ – सूरज रेखा – यह रेखा अपने बुर्ज पर ही होती है और सूरज के नाम से ही याद कि जाती है। अगर यह अपने पांव कि दासी चंद्र या दिल रेखा तक न पहुंचे तो मामूली असर की होगी और अगर दिल रेखा से जा मिले तो दिल की शांति होगी और बुढ़ापा बहुत उम्दा गुज़रेगा।

(सूरज का चंदर से ताल्लुक)

२ – जब ये रेखा नीचे को सिर रेखा तक चली जावे तो जवानी से किस्मत जागेगी। क्योंकि यह रेखा ऊपर से नीचे कलाई को जाती है। सिर रेखा बुध की उम्र ३४ साल होगी। सूरज और बुध का मेल मुबारक है।

(सूरज का बुध से ताल्लुक)
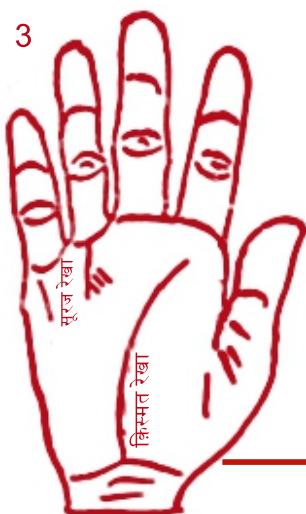
३– अगर ये रेखा (सूरज) क़िस्मत रेखा से न मिले या अगर यह रेखा हाथ में न हीं हो। या इस रेखा का बुर्ज या सूरज का बुर्ज ऊँचा न हो या अगर सूरज रेखा तो हो मगर क़िस्मत रेखा न ही हो तो तमाम हालतों में मंदा नतीजा ही होगा।

(सूरज का बृहस्पत से ताल्लुक)

वगैर सूरज अन्धेरे की ज़िन्दगी होगी।

३ (अलिफ)– अगर सूरज रेखा अपने सूरज के बुर्ज से चलकर सूरज के बुर्ज पर ही ख़त्म हो तो सूरज का असर खाना नंबर ५ (सूरज का अपना घर) का होगा। और अगर दिल रेखा पर ख़त्म होवे तो खाना नंबर ४ (चंद्र के ताल्लुक़) का होगा। अगर मुस्तैल में ख़त्म होवे तो खाना नंबर ६ केतु के ताल्लुक़ का होगा। सिर रेखा पर ख़त्म हो सूरज खाना नंबर ७ बुध का ताल्लुक़ होगा। अगर और आगे बचत के खाना नंबर ११ में ख़त्म हो तो बृहस्पत का ताल्लुक़ होगा। अगर और आगे चल कर चंद्र पर ख़त्म हो तो खाना नंबर ४ फिर वही चंद्र का ताल्लुक़ होगा। हर हालत में अगर सनीचर की ऊर्ध रेखा का ताल्लुक़ होवे तो आग के वाक़यत होंगे। अगर किसी वजह से ऐसी ज़बरदस्त रेखा किसी मामूली हाथ में वाक़य होवे तो भी सूरज व सनीचर का मुश्तरका बुरा असर होगा। लेकिन अगर सोने चांदी या आग के कारोबार वाला होवे तो मुबारक होगा। बहर हाल ज़बरदस्त सूरज आग पैदा कर देगा। जिसमें सनीचर का सामान तो स्याही का असर देगा मगर सूरज चंद्र और बृहस्पत उत्तम फ़ल देंगे। बग़ैर सूरज रेखा बाज़ारी कीमत इंसानी जिन्दगी की न होगी। और ज़नमुरीद होगा। और अगर साथ ही सूरज का बुर्ज भी क़ायम न हो तो इश्क़ मुहब्बत के सिवा उसे दुनिया में कुछ और नज़र ही न आएगा।
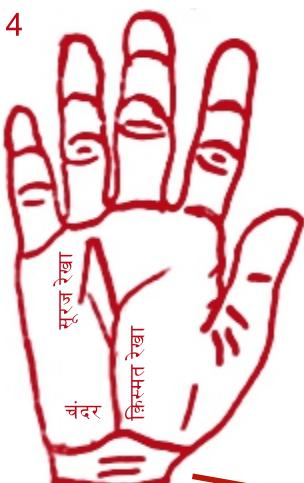
४ – जब यह रेखा (सूरज) क़िस्मत रेखा से मिल जावे तो कामयाबी ज़रूर होगी मगर ख़ुद कोशिश से। अगर क़िस्मत रेखा से न मिले तो क़िस्मत की चमक न होगी। और अगर क़िस्मत रेखा न ही हो तो हर काम में तकलीफ होगी। गर्ज़े यह कि बगैर सूरज

(सूरज का बृहस्पत से ताल्लुक)

(सूरज व चंदर का मंगल बद या केतु के ज़रिये ताल्लुक)

रेखा हर तरह से नाक़ामी होगी। और ज़िन्दगी का लुत्फ़ न होगा। बल्कि ज़िन्दगी सिर्फ़ खानापुरी का नाम होगी।

५ – और अगर चांद के बुर्ज में जा निकले तो कामयाबी कि कोई तसल्ली नहीं निहायत ही बुरी ज़िन्दगी होगी। **(क्यू की रास्ते में मंगल बद आ चुका है) नेज सफा ३२४/२ से**

६ – सूरज रेखा का ताल्लुक़ (सूरज के बुर्ज पर) तालीम से है। लंबी लकीर से मुकम्मिल इल्म मुराद है।

७ – कनिष्का और अनामिका के दरमियान सूरज की लम्बी रेखा- दुनियावी तजुर्बे या दस्तीहुनर में कामयाबी बताती है। ख़्वाह वह लिखा पढ़ा होवे। ख़्वाह न होवे।

(सूरज का बुध से ताल्लुक)

८ – अनामिका की जड़ पर यही रेखा आम स्कूलों का इल्म ज़ाहिर करती है। अनामिका और मध्यमा के दरमियान स्कूलों के इल्म के अलावा दूसरा महकमा ना इल्म ख़ासकर सनीचर के ताल्लुक़ का इल्म यानी मकानात वगैरह का ज़ाहिर करती है। **(अनामिका व तर्जनी के दरमियान लंबी लकीर = जादूगरी- इल्म तिलस्मात होगा)**

(बृहस्पत का सूरज से खाना नंबर १ में ताल्लुक)

(सूरज देखे सनीचर को)

(सूरज देखें बुध को)

९ - इसी तरह ही कनिष्का और अनामिका के दरमियान इल्मे ज्योतिष(छोटी सी रेखा) अनामिका और मध्यमा के दरमियान इल्में रियाज़ी (छोटी सी लकीर) होगा। **(तर्जनी और मध्यमा के दरमियान छोटी सी लकीर से योग अभ्यास मुराद होगी)**

१० – यह सूरज रेखा जिस क़दर शाख़दार होगी सूरज की किरणों की ताक़त और असर की मज़बूती ज़्यादा होगी।

(सूरज के दोस्त (बृहस्पत, चंदर, मंगल) खाना नंबर १)

११ – सूरज रेखा और चंद्र या दिल रेखा को मिलाने वाली मशलश मंगल बद का असर देगी। जिसका असर कुब्वत दिल पर होगा। ख़्वाह बुरी तरफ हो। ख़्वाह भली तरफ। दिल की ताक़त ज़्यादा होगी।

१२ – सूरज रेखा से शाख़ें सूरज के बुर्ज से बुध की तरफ को शादी रेखा तक गई हुई शाख़ से ज़ाहिर होता है कि औरत अमीर खानदान से होगी और सूरज की मानिन्द अपनी सिफ़ात में मुक़म्मिल होगी। बाक़ी

(सूरज व चंदर से बुध का ताल्लुक)

(सूरज देखे बुध शुक्र मुश्तरका को)

(सूरज नंबर ५)

मुखतलिफ़ बुर्जो से शाख़ें और इनका असर पहले बुर्जो की मुश्तरका शाख़ों में हो चुका है।

१३ – सूरज रूह ज़िस्म और सेहत का मालिक है इसलिए इसकी दूसरी रेखा का नाम सेहत रेखा या तरक़्क़ी रेखा रखा गया है। सेहत या तरक़्क़ी रेखा हथेली में सनीचर के हैडक्वार्टर से ऊपर सूरज कि तरफ बुध के बुर्ज को जाती है या सूरज का असर बुध (दिमाग) में पहुचाने जाती है। इस रेखा का हाथ में न होना कोई बुरा असर नहीं देता बल्कि उम्दा सेहत ज़ाहिर करता है। हाथ में इस रेखा का होना उम्दा सेहत के अलावा उम्र सिर और दिल रेखा वगैरह की टूट फूट के बुरे असरों से बचाता हैं सेहत रेखा **(बुध)** चंद्र ओर मंगल बद को हथेली से जुदा करती है। सनीचर के बुर्ज का ज़्यादा ऊंचा न होना या हाथ में सनीचर रेखा का न होना भी उम्दा सेहत बताता है। मोटा जिस्म और सेहत दो जुदा बातें हैं। मगर यह तमाम सिर्फ़ सेहत से मुतलकाहैं। हाथ के नाखून जिन का मुफ़सिल हाल इल्में क़ियाफ़ा में ज़िक्र है। सेहत की दुरुस्ती व ख़राबी व दीगर तबदीलियों के पेशे खेमा का नौ महीने पहले ही ज़ाहिर कर देते हैं। जिस जगह यह रेखा उम्र रेखा से जाकर मिलती है। वह मुक़ाम सेहत का आख़िरी या उम्र रेखा का आख़िरी वक़्त या खात्मा या मुक़ामे मौत हैं।

१४
दिल रेखा
सर रेखा
सेहत रेखा
उम्र रेखा

१४ – हथेली के वस्त में सेहत उम्र और सिर रेखा एक **(सफ़ा १२ जुज ४ से मुतलका)** मसलस बनती है।

अगर इस मसलस के ज़ाविये क़ायम हों तो सेहत रेखा और उम्र के मिलने के मुक़ाम का ज़ाविया **(सूरज सनीचर मुश्तरका)** मज़बूत ताबे। (सिर रेखा और सेहत के मिलने के मुकाम का ज़ाविया) **(सूरज बुध)** उम्दा सेहत उम्र और सिर रेखा **(सनीचर बुध)** दूसरों से हमदर्दी या माता पिता (वालदैन) की

बाहम मुआफ़क़त या वाल्दैन का साये आतफ़त या सुख सागर ज़ाहिर करता है। सेहत रेखा बुध से चलकर शुक्र की जड़ में ख़तम हो **(शुक्र बुध नंबर ७)** तो धन दौलत ख़ूब आवे। ब्योपार से फ़ायदा हो। सूरज ग्रहण के वक़्त भी सूरज का उम्दा असर क़ायम रहेगा।

१५। दिल रेखा (चंदर) उम्र रेखा (सनीचर) का आख़िर पर दो शाखी होना या उन दोनों के साथ < (मंगल) मिलना बुढ़ापे में सेहत के हल्के होने की शक है। यानी बुढ़ापे में नज़र और आंखों की कुछ कमी या कमज़ोरी होगी। क्यूंकी उम्र रेखा का तो मालिक ही सनीचर है। और दिल रेखा का आखिर भी सनीचर के चरणों में सनीचर के घर या सनीचर के बुर्ज़ पर होता है। और सनीचर आंख का मालिक है। मंगल नज़र के असर का मालिक है। मंगल शुरू में फल दे चुका है। और सनीचर ने आखिर पर असर देना है। वैसे भी सनीचर और मंगल बराबर या मुसावी हैं। बाहम ताक़त हैं। और मंगल दुशमनी का असर करता है। चंदर और मंगल भी मुसावी हैं। चंदर तो दोस्ती करता है। मगर चंदर से मंगल कोई दोस्ती नहीं करता। इस लिए इन दोनों रेखाओं के आख़िर पर दो शाखी मजकूर से नज़र या बिनाई क़दरे ख़राब या कमज़ोर ही हालत में होगी। उम्र रेखा के आख़िर पर की दो शाखी से तो नज़र कई ख़राबी यक़ीनी है। **(दिल रेखा के आख़िर पर दो शाखी बुरी नहीं होती।)**

१६। दिल, सिर या उम्र रेखा पर सनीचर का आंखों का निशान : विसर्ग •• **(चंदर सनीचर मुश्तरका)** आंखों की बीमारियाँ या अंधापन ज़ाहीर करता है। विसर्ग जब उम्र रेखा पर शुक्र के बुर्ज़ पर हो तो स्त्री झगड़ों से ज़िंदगी तबाह होगी। **सफा ३१५ जुज हे से मुतलका**

१७। **खाना नंबर ३ या ७ सनीचर का ताल्लुक**

उम्र रेखा में जज़ीरा .... बीमारी (मंगल बद)

सुर्ख़ रंग निशान ....जिस्मानी कमज़ोरी (सूरज)

ज़र्द रंग निशान .... क़ुदरती कमज़ोरी (बृहस्पत)

नीला रंग निशान ....हसद व कीना (राहु)

सफ़ेद रंग निशान .... सिर और आंखों की बीमारियाँ (चंदर)

१८। उम्र रेखा अगर बहुत चौड़ी और सुर्ख़ रंग की हो तो जिस्मानी ताक़त उम्दा होवे। **(सूरज सनीचर मुश्तरका या मंगल सनीचर मुश्तरका)**

१९। उम्र रेखा अगर चौड़ी और ज़रद रंगत हो तो बीमारियाँ व ख़्वाहिशाते बद की निशानी है। **(मंगल सनीचर/ सूरज सनीचर मुश्तरका से बृहस्पत का साथ)**

२० अलिफ़

(सनीचर के दुश्मन ग्रह नंबर ७)

२०। शुक्र के बुर्ज़ पर उम्र रेखा को काटने वाले ख़त बीमारी का ख़तरा ज़ाहीर करते हैं। सेहत रेखा जिस जगह ख़राब टूटी फूटी हो **(सूरज के साथ दुश्मन ग्रह)** बीमारी का अरसा होगा।

बे) सेहत रेखा अगर दिल रेखा से मिल जावे **(शुक्र बुध चंदर मुश्तरका)** तो दिमाग़ी सदमात होंगे। मजबूत जिस्म मंगल से मुतलका गृहस्त रेखा और उंगलिया हाथ (इल्म क़्याफ़ा में ज़िकर है।)

२० बे

काटे
दिल रेखा
सेहत रेखा
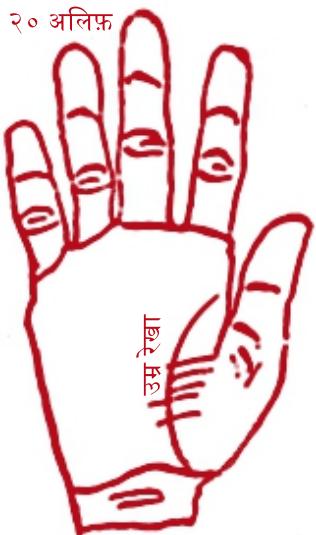
२१। सूरज के बुर्ज़ पर सीधे ख़त, चक्कर, शंख, सदफ़, मुशलश, चोकोर वगैरह तमाम दीगर ग्रहों के निशानों का ज़िक्र पहले हो चुका है। और अपने अपने हिस्से में पाया जावेगा।

२२। चंदर के बुर्ज़ पर सूरज रेखा सफ़र ज़रूरी ज़ाहीर करता है। जिस

(शुक्र बुध दोनों चंदर को देखें)

का ज़िक्र चंदर के बुर्ज में हुआ है।

२३। शुक्र के बुर्ज पर सफ़र से वापसी मुराद होगी।

फ़रमान नंबर १३५

बुर्ज सूरज का असर खाना नंबर १

१। दुनिया का लाभ (दौलत की आमदन) राजदरबार से नेक ताल्लुक व गुज़रान उम्दा। दुनियावी शान हर जगह क़दर व मंजलत। जिस्म और सेहत उम्दा। आख़री वक़्त तक तमाम अज़ाए जिस्मानी क़ायम। साहिबे अमलाक (जायदाद वाला) सफ़र का ताल्लुक और सफ़र से दौलत। रूहानी ताक़त का नेक असर। दुनिया का ईमानदार (पैसे धेले का ताल्लुक)। ख़ुद सच्चा और सच्चाई पसंद। (पहचान रंग : न स्याह होगा और न सफ़ेद होगा।) और पहली औलाद लड़का होगा। जिस की पैदाइश दिन की होगी या आधी रात के बाद सुबह की तरफ़ की होगी। नेकी के काम में सब से आगे होगा। गरीब का मददगार। इश्क़ व मुहब्बत फ़ाहिसा से मुतनफ़िर होगा। वालिद का साया आतफ़त ज़्यादा और ज़्यादा देर तक होगा। औलाद की तादाद थोड़ी या गिनती की ही होगी। तबीयत में सांप का गुस्सा होगा। यानी सुनने के बजाये देखने पर भरोषा करेगा। (सांप के कान नहीं होते, आंखों से ही कान का काम लेता है।) दिल रेखा के सही हालत में होने से शुक्र का बुरा असर न होगा। **(दुनियावी कामयाबी या बरकत व ख़ुद पैदा करदा दौलत सूरज की सिफ़त है)**

नीच हालत

२। सूरज ख़ुद नीच नहीं हो सकता। मगर नीच ग्रह से निचों का हमसाया ज़रूर गिना गया है। शुक्र के ताल्लुक से ज़नमुरीद बदकिरदार होगा। सनीचर के ताल्लुक से झूठ का पुतला बनेगा और नेकी फ़रामोश होगा निर्धन कंगाल होगा। राहु के असर में दिमाग़ की ख़राबी माली खोलिया वगैरह होगा। क़िस्मत रेखा या सूरज रेखा की अदम मौजूदगी में ख़ुदकुशी करेगा मगर फ़क़ीर नंबर ३ न होगा। सांप को दूध ही पिलाएगा। सनीचर (काला सांप) का बाप ही कहलाता चला आया है और आएगा। (सनीचर सूरज का लड़का है।) **(बेहद तबाहकून गुस्सा, बदमिजाजी। खुदगरजी, ख़ुशामद पसंद - अंधेरे की ज़िंदगी होगी)**

३। सूरज की तमाम कमाई ख़ुद पैदा करदा दौलत व जायदाद होगी न बृहस्पत की आश रखेगा। न सनीचर की मदद ढूंढेगा। यानी न बृहस्पत वालिद और सनीचर बेटा का भरोषा रखेगा। ख़ुद अपना आप घिसाएगा और धन दौलत पायेगा। सुर्ख तांबे की तरह (ये सूरज का रंग है) जितनी चोटे खायेगा उतना ही बढ़ता चला जावेगा। सूरज क़ायम वाले को जितना कोई दबाएगा वह उतना ही और बुलंद होता जावेगा। यानी इस को तबाह करने की गर्ज़ से मारने वाला ख़ुद ही तबाह जायेगा। और सूरज वाला बगैर किसी के मारने के ही अपने आप को मारेगा। क्यूंकी ज़नमुरीदी सूरज पर शुक्र का असर गिना गया है।

फ़रमान नंबर १३६

सूरज का सितारा

कुंडली में खाना नंबर (१) सूरज के बुर्ज़ पर बुध की तरफ़ को दौलतमंद - राजदरबार से नेक ताल्लुक। उत्तम सूरज का पूरा फ़ायदा। चूंकि ये शक़्ल चक्कर से ताल्लुक रखती है। और हथेली पर वाक़े है। इस लिए झगड़ा रगड़ा तो ज़रूर पैदा करेगी और जिस बुर्ज़ पर होगी वहाँ असर देगी। चक्कर और सितारा के असर में फ़र्क ये है की चक्कर का असर दर्जे इस सितारा से कम होगा। सितारा हंमेशा अपने लिए मुबारक होगा। झगड़ा सूरज के बुर्ज़ पर होने की वजह से राजदरबार से होगा। और हंमेशा अपने से बड़े से होगा। मगर फैसला हक़ में।

अगर सितारा सूरज के बुर्ज़ पर मगर सनीचर की तरफ़ वाक़े हो तो फैसले की अपने हक़ में होने की पूरी तसल्ली न होगी। क्यूंकी सनीचर (दुश्मन) है। अगर सितारा पूरा न होवे तो उम्र के जिस साल की आमदन मालूम करनी होवे उतने साल की उम्र से २१ तफ़रीक़ करे। क्यूंकी २२ साल से सूरज का असर होना माना गया है। बाकी को दस से ज़रब दे। जवाब माहवारी आमदन होगी।

ये असर २२ साल तक क़ायम रहेगा। पूरे सूरज का असर कम अज़ कम २२ X २२ रुपये माहवार होगा।

ये सितारा जिस क़दर ऊपर अनामिका की जड़ पर या कन्या राशि जो केतु का घर है की तरफ़ होता जावे असर कम होता जायेगा। क्यूंकी केतु सूरज को मद्धम करता है। सितारा के क़ायम होने से सूरज मेख राशि का होगा। जिस की उम्र ९० साल होगी। गो सूरज सिंह राशि का घर का मालिक है। और इसे कोई नीच या उंच नहीं करता। (उम्र १०० साल) मगर उंच सूरज मेख का है। इस लिए उम्र कम अज़ कम ९० ज़रूर होगी। मगर मौत अचानक होगी।

जिस्म व ग्रह का ताल्लुक

दुश्मन पार्टी	सनीचर सूरज शुक्र बृहस्पत बुध चंदर केतु मंगल बद	राहु
दोस्त पार्टी	सूरज चंदर बृहस्पत मंगल नेक राहु बुध सनीचर शुक्र	केतु

ग्रहों में मंदरजा बाला दुश्मन पार्टी के ग्रह बातरतीब एक दुसरे के दुशमन हैं। जिसका रहनुमा राहु है।

ग्रहों में मंदरजा बाला दोस्त पार्टी के ग्रह बातरतीब एक दुसरे के दोस्त हैं। जिसका रहनुमा केतु है।

यानी राहु तो सिर की रहनुमाई और केतु पांव चक्कर का मालिक है।

इंसानी जिस्म में

जिगर (मंगल), दिल (चंदर), धड़ केतु के सलाह कार हैं।

दिमाग़ व ज़बान (बुध), देखना भालना (सनीचर), सिर(राहु) के सलाह कार हैं।

सिर (राहु) धड़ (केतु) दोनों को मिलाने वाली गरदन के सांस का मालिक बृहस्पत है। लिहाज़ा बृहस्पत (बहालत एक अकेला इंसानी जिस्म, बहालत कुल इंसान तमाम दुनिया) यानी लोक और (गैबी दुनिया तमाम ग्रहों की मुश्तरका ताक़त) परलोक का मालिक है। सिर्फ़ इसी सिफ़त पर ये ग्रह किसी से दुश्मनी नहीं करता।

फ़रमान नंबर १३७

खाना नंबर १

सूरज के निशानों का असर सितारा सूरज का

सूरज के बुर्ज़ पर :- जुदा मुफ़सिल दर्ज़ है।

कुंडली में सूरज का असर (सूरज रेखा)

मेख राशि सूरज के बुर्ज़ पर सूरज का असर

मेख राशि :- घर का मालिक मंगल जो सूरज का दोस्त है। ख़ुद सूरज इसको उंच करता है। सनीचर नीच करता है। जो सूरज का दुश्मन है। मंगल नेक के असर में दौलतमंद व जायदाद वाला होगा। और हर तरह से उत्तम। मगर सनीचर की दुश्मनी के अरसे में १५ साल जिस्मानी तकलीफ़ होगी।

२

अगर तर्जनी की जड़ में हों तो इश्क़ मिज़ाज मतलब परस्त

बृहस्पत के बुर्ज़ पर :- दौलतमंद, मंदिर, कुएं और धरम अर्थ मकानात बनवाए। पुरानी रसुमात का पसंदीदा, सरदारे फ़ौज, नेक शोहरत। अगर सितारा तर्जनी उंगली की जड़ में हो तो आशिक़ फ़ाशिख (पक्का आशिक़) हो। यानी बहुत बड़ा बृहस्पत शुक्र का काम देता है। फ़िर सितारा सूरज ने और भी बुलद किया तो शुक्र की ताक़त इश्क़ पक्का इश्क़ हुआ। बृहस्पत और सूरज बाहम दोस्त हैं। और उत्तम फ़ल वाले है। इस लिए गंदा इश्क़ न होगा।

२

बृख राशि या बृहस्पत के बुर्ज़ पर सूरज का असर

बृख राशि बैल :- घर का मालिक शुक्र बैल जो सूरज का दुशमन है। असर में बृहस्पत का बुर्ज़ सूरज का दोस्त है। चंदर उंच करता है जो सूरज का दोस्त बल्कि सूरज से ही रोशनी लेता है। बृहस्पत के घर को सूरज उंच करे तो दोनों के मुक़ाबले में इस राशि को नीच कोई नहीं कर सकता। सूरज का रथ शुक्र के बैल को हंमेशा अपने आराम में लगाये रखेगा। या बैल हंमेशा नीचे गरदन किये रहेगा। इस लिये चौपाये का सुख होगा। जब कभी सूरज मद्धम हुआ या सूरज रेखा बृहस्पत पर गई हुई मालूम हुई या सूरज का सितारा तरजनी उंगली की जड़ में मिथुन राशि जिसे राहु उंच कर

रहा वाक़े हो तो आशिक़ फ़ासिख शुक्र का और राहु का पूरा बुरा असर होगा और १७ साल नुकसान होगा।

३

मंगल के बूर्जों पर :- दोनों ग्रह दोनों दोस्त हैं। सूरज के बगैर मंगल को मंगल बद कहा है। दोनों अपना अपना और मंगल नेक पर उत्तम मंगल बद पर बद होगा। मगर सूरज का उत्तम प्रबल होगा सूरज के सितारा का असर

५ मिथुन राशी मंगल के बुर्ज

मंगल नेक पर :- बहुत उत्तम होगा।

मंगल बद पर :- जंगों, बेरहम, बदचलन, अगर सितारा हथेली की अंदर की तरफ हो तो जंग व जदल में ही मारा जावे।

मिथुन राशि :- मर्द औरत का जोड़ा, घर का मालिक बुध है। जो सूरज के वक़्त बिलकुल चुपचाप होगा। राहु जो सूरज का दुश्मन है ख़ुद इस **उंच** करता है। केतु जो सूरज को मद्धम करता है। मगर राहु का दोस्त है। इसे नीच करता है। जिस का ताल्लुक मामू पर होगा। इस लिए ख़ुद रियाज़ी व इल्म जोतिष (राहु दिमाग़ी हरकत बुध का साथ) जानने वाला हो। सूरज के बगैर मंगल को मंगल बद गिनते है। जो बुरा फ़ल देगा।

४

चंदर के बुर्ज़ पर :- दोनों ग्रह बाहम दोस्त हैं। सूरज उत्तम प्रबल होगा। चंदर का भी उत्तम होगा। ज़्यादा ज़ाहीर सूरज का होगा। राजदरबार से मरतबा। अगर चंदर के बुर्ज़ के ऊपर के हिस्से में हो तो जादू का मोजब होवे और फ़ायदा बियार हो ज़्यादा हो।

४

कर्क राशि केकड़ा :- घर का मालिक चंदर जो सूरज का दोस्त बल्कि भिखारी है। मंगल नीच करता है जो सूरज का दोस्त है। बृहस्पत उंच करता है जो सूरज का दोस्त है। यानी सब के सब दोस्त। इस लिए चंदर से सूरज का रुख रखने वाली तमाम रेखा समंदर की सीप में मोती पैदा करेंगी। लेकिन अगर मंगल बद में निकलेगी तो १५ साल

कर्क या चंद्रमा के बुर्ज पर

	ही तंग दस्त होगा।
५ सिंह राशि - औलाद	सिंह राशि शेर नर :- सूरज का अपना घर और बृहस्पत के असर का खाना जिसे कोई उंच नीच नहीं कर सकता। इस लिए दो बलवान सब से उत्तम फ़ल देंगे। जो बाहम दोस्त है। परोपकारी, राजदरबार से नेक ताल्लुक होगा। अगर सूरज रेखा सनीचर की तरफ़ वाक़े हो तो ९ साल खौफ़ व खदसा पैदा होता रहेगा। (सनीचर दुश्मन) पहली हालत में बुढ़ापा उम्दा औलाद का सुख पूरा होगा।
६ कन्या राशि केतु	सूरज का असर कन्या राशि लड़की :- घर का मालिक बुध है जो सूरज के वक़्त चुप होता है। और जिस में केतु का निवास है। जो सूरज को मद्धम करता है। राहु (सूरज को सूरज ग्रहण) और बुध (सूरज के वक़्त चुप) उंच करते है। शुक्र और केतु सूरज के दुश्मन नीच करते है। दुश्मन ग्रह राहु ख़ुद इस घर की मदद पर है। इस लिए सूरज का फ़ल ख़राब होगा। राहु केतु का भी दोस्त है। इस लिए राजदरबार से फ़ायदा न होगा। मगर ऐसा बुरा नहीं। शुक्र ख़ुद सूरज से नीच हो जाता है। इस लिए सिर्फ़ ३ साल खूब इश्क़ करेगा। मजमुआ तमाम कोई ऐसा बुरा असर न होगा। मगर मामुं की तरफ़ ख़राब। स्त्री को सुख हल्का होगा। **(औलाद वगैरह केतु का असर हर तरह से मंदा होगा)**
७	शुक्र के बुर्ज़ पर :- सूरज शुक्र को नीच करता है। मगर ख़ुद उसे (सूरज को) शुक्र नीच नहीं करता। शुक्र के बुर्ज़ पर उम्र रेखा के किनारे जो बृहस्पत या बृहस्पत की जड़ से निकली हो बहुत नेक है। मुशिर बातदबीर हो। और अगर अंगूठे की जड़ मीमें हो तो औरत का सुख हल्का होवे और पराई ममता या मुसीबत गले लगी रही।

७	लाजवंती का पौधा (Touch-Me-Not)। हाथ की उंगली तर्जनी की पहली पोरी (मेख़ सूरज उत्तम) के लगते ही मुरझा जायेगा। यानी लाजवंती की तरह अपनी इज्ज़त ख़ुद बचाने वाली औरत सुख लेगी। दूसरी को सुख न होगा।
७ तुला शुक्र के बुर्ज पर सूरज का असर	तुला राशि :- तराज़ू के दो पलड़ों में शुक्र व बुध। जिन से बुध तो चुप और शुक्र सूरज से ख़ुद नीच हो जाता है। सनीचर उंच करता है। जो सूरज का दुश्मन है। सूरज ख़ुद इसे नीच करता है। इस लिए औरत को २५ साल ही या औरत का २५ साल ही सुख हल्का होगा। मगर अपने लिये इकबालमंद होवे।
७ बुध के बुर्ज पर सूरज का असर	सूरज के सितारा का असर बुध के बुर्ज़ पर :- दोनों मुसावी ग्रह हैं। मगर बुध अपनी ताक़त सूरज को ही दे देता है। और अपने वक़्त के निस्फ़ तक बिलकुल चुप रहेता है। दोनों का अपना अपना और उत्तम फ़ल होगा। दौलत ज़्यादा होगी। मगर अक़्ल चुप रहेगी। और कम मालूम होगी। अगर सितारा कनिष्का की जड़ में हो तो लोगों में बेऐतबारी और हक़ीरताई पैदा करवा देगा। क्यूंकी सितारा की रोशनी से कनिष्का की जड़ पर की धन राशि जो बृहस्पत का घर है। और बुध की दुश्मन है। चमक देने लग जायेगी। बुध का बुर्ज़ :- सूरज के ज़ोर से बुध या अक़्ल बिलकुल चुप होगी। यानी दौलत तो ज़रूर होगी मगर अक़्ल कम। यानी स्त्री धन ज़्यादा होगा। औरत अमीर खानदान (सूरज से बुध को रेखा) से होगी। अगर सितारा का निशान कनिष्का की जड़ में होगा तो धन राशि बृहस्पत और बुध दुश्मन होंगे। लोगों में बे-ऐतबारी। अगर रेखा होवे तो औलाद बरबाद।
८	सूरज का असर बृछक राशि - बिच्छू :- राशि के घर का मालिक मंगल है।

बृश्चक राशी मौत

जो सूरज का दोस्त है। और सूरज के बगैर मंगल बद है। चंदर नीच करता है। जो सूरज का दोस्त है। ये राशि असर के लिए दरअसल सनीचर का मुक़ाम है। जो सूरज का दुश्मन है। इस लिए झगड़े की जड़ होगा। वैसे भी ये खाना सनीचर मंगल बद का मुश्तरका है। इस लिए मुक़दमा जहेमत ज़्यादा झगड़े से मौत होवे। मगर सूरज (ख़ुद अपना जिस्म) मारग स्थान का न होगा। अब सूरज से ये खाना मंगल बद न होगा। मंगल नेक का असर देगा। **सफा २३ से मुतलका**

९ धन राशि करम धरम १०

धन राशि - नील गाय है :- घर का मालिक बृहस्पत जो सूरज का दोस्त है। केतु उंच करता है जिस ने सूरज को मद्धम करना था। राहु नीच करता है जो सूरज ग्रहण करता है। यानी ख़र्चा कबिलेदारी में बहुत होगा। और सरकार से ताल्लुक न होगा। मगर हकीम होगा। और परोपकारी। गो राहु के वक़्त धरम ईमान का कच्चा होगा।

सनीचर के बुर्ज़ पर :- दोनों ग्रह बाहम दुश्मन है। दोनों का अपना अपना मगर सनीचर का बुरा फ़ल होगा। दौलतमंद तो ज़्यादा होगा मगर बदनामी में मशहूर होगा। अपने काम ख़ुद ही बिगाडता फिरेगा। और अगर दो सितारे हो तो नाहक तोहमत से सनीचर नीच (दो सितारे के मुक़ाबले पर) की वजह से मारा जावेगा।

१० सनीचर के बुर्ज़ पर सूरज का असर

कुंडली में सूरज का असर :- मकर राशि मगर मच्छ। सनीचर मालिक और सनीचर का ही बुर्ज़ जो सूरज का दुश्मन है। मंगल इस को उंच करता है जो सूरज का दोस्त है। बृहस्पत इसे नीच करता है वह भी सूरज का दोस्त है। बृहस्पत जो नीच करने वाला है सनीचर का भी दोस्त है इस लिए सूरज और सनीचर का ज़बरदस्त झगड़ा हुआ। मंगल सनीचर का दुश्मन है। मगर सनीचर मंगल से दुश्मनी नहीं करता बल्कि दोस्त है। इस लिए उंच कौन करेगा। इस लिए कम दौलत और १९ साल वालिद का सुख हल्का और वालिद से जुदाई होगी।

११ कुम्भ राशि आमदन

कुम्भ राशि :- पानी का घड़ा। घर का मालिक सनीचर है। जो सूरज का दुशमन है। असर के लिए बृहस्पत का मुक़ाम है। जो सूरज का दोस्त है। अब सनीचर सूरज और बृहस्पत तीनों इकट्ठे होंगे। धन दौलत तो खूब आवे मगर सनीचर के असर से झूठ का पुतला होवे।

१२ मीन राशि खर्च बृहस्पत राहु

मीन राशि मछली :- घर का मालिक बृहस्पत है। जो सूरज का दोस्त है। इसमें राहु का भी निवास है। जो सूरज ग्रहण पैदा करेगा। बुध (सूरज के वक़्त सूरज का साथ देने वाला) और राहु (सूरज ग्रहण) इस को नीच करते है। शुक्र और केतु (दोनों ही सूरज के दुश्मन) उंच करते हैं। इस लिए सूरज ग्रहण होगा। शुक्र के बुर्ज़ के हिस्से से शुरू हुइ हुई सूरज की तरक़्क़ी रेखा अगर सूरज और बुध के दरमियान चली जावे तो धन दौलत खूब आवे और तिजारत में फ़ायदा हो। मगर दस्ती कमाई में सूरज ग्रहण होगा।

चंदर का सफेद रंग (दूध) समंदरी व हवाई घोडा अपनी
ताक़त की ज्यादती के सबब सिर्फ़ मैदानी जंग, मालिक
खाना नंबर ३
खाना नंबर ८
की मौत और खुराक में कंकर आने पर
खाना नंबर ७
दुनिया में सिर्फ़ तीन दफ़े जागा।
इसी लिए नौ ग्रह व बारह राशि
की नौ निधि व बारह सिद्धि का
मालिक हुआ।
(इंसान की पैदाइश ९ (नौ) महीने घोड़े की पैदाइश बारह (१२) महिने)

फ़रमान नंबर १३८

चंदरमा

१। सूरज आसमान पर नज़र से ग़ायब हुआ। तो रात आई आग बुझने और सर्दी उभरने लगी। घबराहट ख़तम और शांति आने लगी। चंदर चमक रहा है। दिन के थके हारे सोने लगे। रात के शुरू में राहु और आख़िर केतु है। रात चंदर का राज है। राहु इसे मद्धम और केतु चांद ग्रहण करता है। राहु का असर दिमाग़ पर और केतु का पांव पर बुरा असर होता है। कई तरह की खराबियाँ होने लगी। और चकवा - चकवी चंदर के भगत सारी रात ही केतु के बूरे असर से इक दुसरे को ढूंढते - ढूंढते रात ख़तम कर बैठे और बाहम मिल न सके और सनीचर का सांप जिस से चंदर दुश्मनी करता है। केतु के असर और चांद की दुश्मनी से अपने कान ही गुम करवा चुका है। और बंसरी और बिना की आवाज़ पर मस्त हो कर अपनी मौत ढूँढता है। मगर चांद ने इस की आंखों को ही सुनने की ताक़त अता करवा दी है। इसी तरह ही सांप के ख़ुद मरने और सांप के मारे हुए की उम्र चार दिन तक शक्की है। चंदर ने चकवे चकवी का बीज नाश न होने दिया। और आज तक चकवी अपने नर के मिले बगैर ही चांद के दिनों में अंडे देती चली आती है। यानी चंदर उंच वालों की ख़ानदानी नस्ल कभी बंद नहीं होती। जिस तरह ये सूरज से रोशनी लेता है। इसी तरह ही ये चंदर रेखा वालों को जायदाद जद्दी बख़्श देता है।

२। चंदर का सिर्फ केतु दुश्मन है। अगर दुश्मनी करता है तो चंदर ख़ुद ही करता है। सिर की श्रेष्ठ रेखा चंदर के बूरे असर से बचाती है।

फ़रमान नंबर १३९

चंदरमा के बुर्ज़ पर रेखा और चंदरमा की अपनी रेखा

दिल रेखा

१। दिल का मालिक चंदरमा है। जो सूरज से रोशनी लेता और दुनिया में इस का नायाब उल सलतनत है। सूरज ख़्वाह कितना ही गरम हो कर हुकुम देवे मगर चंदरमा इसे ठंडे दिल और शांति से बजा लता और हंमेशा सूरज के पांव में रहना चाहता है। चंदरमा का घर हथेली पर बेशक दूर अज़ सूरज है। मगर दिल का शांति सरोवर या दिल रेखा सूरज के पांव में ही बहेता रहेता है। स्त्री (शुक्र), माई (चंदरमा), साले बहनोये (मंगल नेक) और अपने भाई (मंगल बद), गुरु और पिता (बृहस्पत) सब के सब इस दिल के दरिया या चंदर रेखा की यात्रा को आते हैं। जो सूरज की चमक से दबी हुई आंखों (सनीचर) और दिमाग़ (बुध) को शांति और ठंडक (चंदर का असर) देता है। या दुसरे लफ़्ज़ों में यूं कहों की इस दरिया या दिल रेखा के एक किनारे दुनिया के सब रिश्तेदार और दूसरी तरफ़ ईन्सान का अपना जिस्म व रूह (सूरज) और चश्म व सिर (सनीचर व बुध) बैठे हैं। और दिल रेखा इन दोनों के दरमियान चलती हुई दोनों तरफ़ें की अपनी शांति से उम्र बढ़ा रही है। या जिस्म इंसानी को बृहस्पत की हवा के सांस से हरकत में रखने वाली चीज़ यहीं दिल रेखा है। इस लिए बाज़ों ने दिल रेखा को उम्र रेखा भी माना है। और इस के मालिक चंदर की चाल से उम्र के सालों की हदबंदियाँ
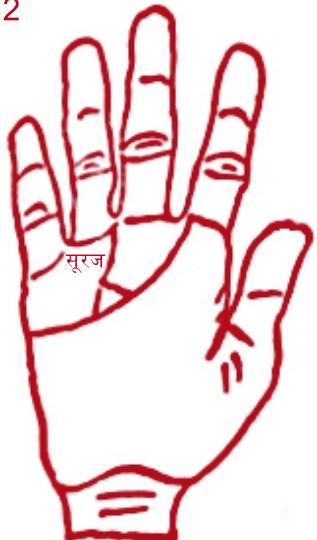
(सूरज मंगल बुध नंबर १ और चंदर नंबर ७)

(चंदर सनीचर मंगल नंबर ११)

(चंदर सनीचर शुक्र नंबर ११)

मुक़र्रर की है।

२। दिल रेखा पर सूरज के बुर्ज़ सूरज रेखा की जड़ पर मुशलश △ या डेल्टे का असर दिल की रखना अंदाज़ी और दिल की ताक़त ज़्यादा होने से मुराद है। ख़्वाह ऐसा आदमी नेक तरफ़ अड़ जावे ख़्वाह बुरी तरफ़ इस में हौसले या गैरत की ताक़त बहुत होगी। या शरारत वालों के हमलों का वह बा-आसानी माक़ूल जवाब दे सकेगा।
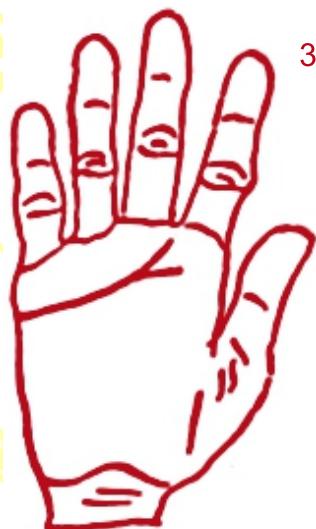
३। इसी तरह पर जब दिल रेखा खात्मा पर दो शाखी से ∠ ख़तम होवे। तो ऐसा आदमी गुस्से वाला (मंगल का दिल) बारौब। या अहल सरकार के ताल्लुक से फ़ायदा उठाने वाला होगा।

४। दिल रेखा के खात्मा पर अगर △ मुशलश हो तो सरकारी मुलाज़मत। आदमी का बारौब या गुस्से वाला होना ज़रूरी अमर होगा। सनीचर व मंगल बद और

५। अगर मुशलश की बजाए ☐ चोकोर दिल रेखा के खात्मा पर हो तो सरकारी घर से रूपये की पूरी प्राप्ति या आमद से मुराद है।

६। दिल रेखा जब बृहस्पत में ही जाकर ख़तम होवे या दिल रेखा का सिर्फ़ इतना हिस्सा जो बृहस्पत के बुर्ज़ में चला जावे। मुहब्बत रेखा के नाम से मौसूम होगा। जिस का मुफ़सिल ज़िक्र बृहस्पत के बुर्ज़ में हुआ है।
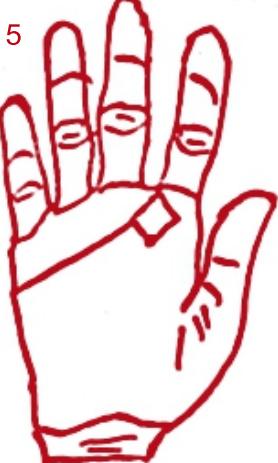
७। दिल रेखा से ऊपर की तरफ़ को निकलने वाली शाख़ें तरक़्क़ी का सबब और देने वाली और नीचे को निकल भागने वाली लकीरें कमज़ोरी और मंदा असर देने वाली होंगी।

5

(चंदर मंगल नंबर ११)

6

(चंदर बृहस्पत शुक्र नंबर २)

शाख़ें दिल रेखा (की)

८। बृहस्पत से चूंकि ये रेखा बृहस्पत की तरफ़ ही चलती है। इस लिए बृहस्पत की शाख़ हो नहीं सकती। बरअक्स इस के जब दिल रेखा बृहस्पत पर ख़तम होवे तो मुहब्बत रेखा

7

(चंदर नंबर ११ के दोस्त नंबर ३ में (ऊपर को शाख़))
(चंदर नंबर ११ के दुश्मन नंबर ३ में (नीचे को शाख़))

8

(ऊपर की शक्ल नंबर ५ से फर्क)
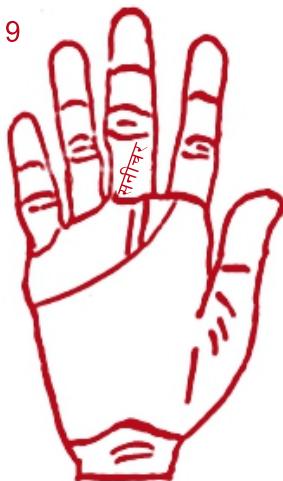
के नाम से याद होती है। जिस का ज़िक्र पहले हो चुका है।

(सनीचर नंबर ४)

९। सनीचर से पराई औरतों की सेवा (बेगवान बतौर दुनियावी फ़र्ज़) या औरतों की कबूतरबाज़ी बतौर दुनियावी मुहब्बत में रुपया पैसा सर्फ़ या बरबाद करेगा। जब चंदर सनीचर से दुश्मनी करे साँप को दूध पिलाना मुबारक होगा। चंदर का असर प्रबल हो जाएगा। सनीचर मद्धम होगा और कुएं में दूध डालने से चंदर का असर ख़ुद उत्तम होगा।
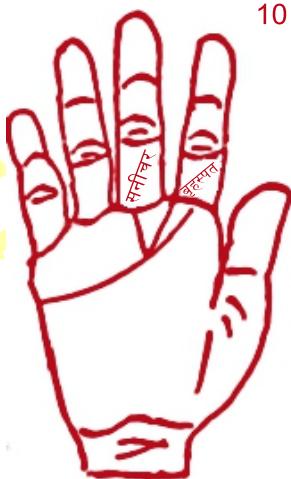
(सनीचर बृहस्पत नंबर ११)

१०। एक शाख़ बृहस्पत पर दूसरी सनीचर पर हो ऐसे शख़्स की दोस्ती से दूसरों को फ़ायदा ही फ़ायदा होगा।

११। सूरज से दिल की ताक़त में सूरज का नेक असर होगा।

11
सू रज
(सूरज नंबर ५)

१२। बुध से सेहत रेखा कहलाती है। अगर ये दिल रेखा से मिल जावे तो दिमाग़ी सदमात होंगी।

(चंदर बुध नंबर ७)

13
१३। सिर रेखा से - ऐसा आदमी खूनी होगा।
(चंदर बुध दुश्मन)
दिल रेखा
सर रेखा
चंदर
(चंदर बुध नंबर ६)
१४। चंदर से - चंदरमा का उत्तम व नेक फ़ल होगा।
14
सूरज
सनीचर
दिल रेखा
बुध
चंदर
(चंदर नंबर ११)
15
१५। शुक्र से - औरतों की मुखालफ़त। (शुक्र का चंदर दुश्मन)
सूरज सनीचर
बुध
शुक्र
(शुक्र चंदर मुश्तरका)
16
१६। मंगल नेक से - मुतलका दुनिया से मदद मिलेगी।
मंगल
नेक
(चंदर नंबर३ और मंगल खाना नंबर १०)

१७। मंगल बद से - रंज व तकलीफ़ व लड़ाई झगड़े। **सफा ३१६ सदमे से मौत**

(चंदर नंबर ८ या मंगल नंबर ४)

१८। (अलिफ़) जब दिल रेखा और सिर रेखा जब बाहम मिल जावे।

(चंदर बुध नंबर ७)

१८। (बे) **यही हालत (या दोनों एक ही मालूम होती हों या एक ही लकीर हो जावे नेक तरफ तबीयत वाला होगा।)**

(चंदर बुध नंबर ६)

कनिष्का या

१८। (जिम) जब दिल रेखा और गृहस्त रेखा

(चंदर मंगल नंबर ७)

१८। (दाल) मध्यमा के पास मिल जावें तो मौत सदमे से होगी। **सफ़ा ३१६**

सदमे से मौत

(चंदर मंगल नंबर ११)

१९। (अलिफ़) दिल रेखा सही व दुरस्त होते हुए शुक्र का कभी बुरा असर न होगा। और

(बुध नंबर ६)

(बे) सिर रेखा के दुरस्त होते हुए मंगल बद का असर न होगा।

२०। चंदर के बुर्ज़ पर हथेली के किनारे हथेली के बाहर जाने वाले सीधे ख़त —— माता के भाई बंद और दो शाखी माता की बहने वगैरह औरत ज़ात होंगी। जो कारोबार में ख़राबी का सबब हो सकते हैं। सीधा ख़त सिरे पर बुध के निशान वाला मुबारक मर्द होगा। जो शुक्र व बुध का मुश्तरका नेक असर देगा। **(शुक्र अकेला या शुक्र बुध नंबर ४)**

अनामिका
मद्धमा
तर्जनी
कनिष्का
सनीचर
बृहस्पत
अंगूठा
सूरज
बुध
मुबालफ़त
दिल रेखा
शादी रेखा
मंगल नेक
सिर रेखा
मुहब्बत रेखा
मंगल बद
शुक्र
सफ़र से वापिस की ज़िंदगी
सफ़र मामूली
नशाबाज़ी
चंदर
अंदरूनी शराफ़त
जायदाद जद्दी
कलाई रेखा
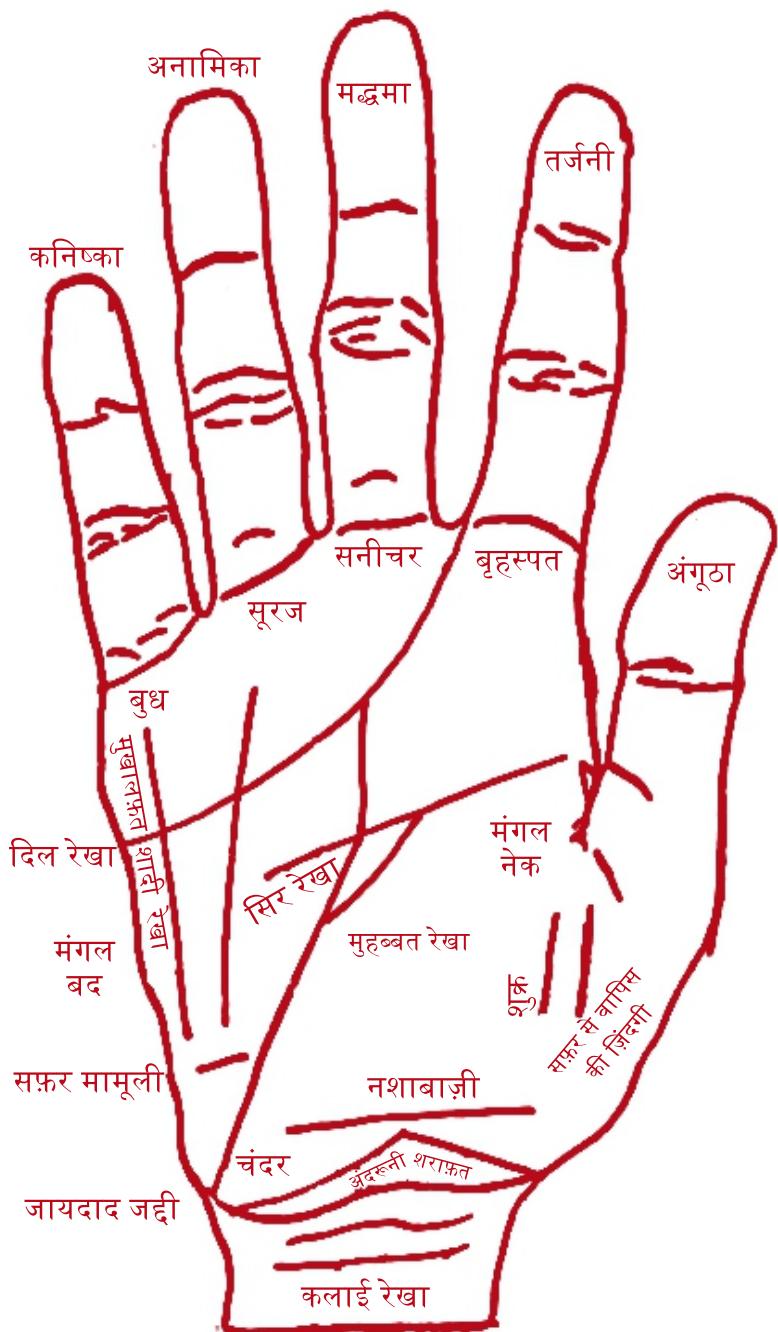
फ़रमान नंबर १४०

चंदर की सफ़र रेखा

१। मामूली सफ़र - चंदरमा को सफेद रंग घोडा तकव्वुर किया है। जो दरअसल दरियाई या समंदरी कहलाता है। जो समंदर पर चांद की चांदनी की तरह दम के दम में फ़िर आता है **(चंदर नंबर ४)**। मगर ख़ुश्की या शुक्र के घर से दुश्मनी करता है और ठोकरें मारता है **(चंदर नंबर ७)**।
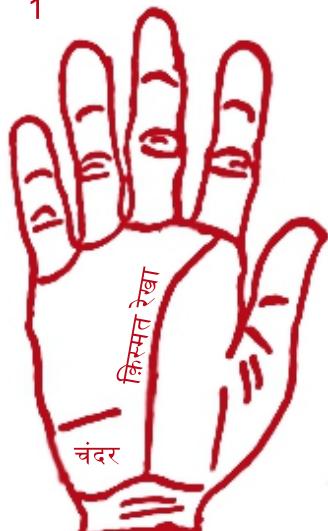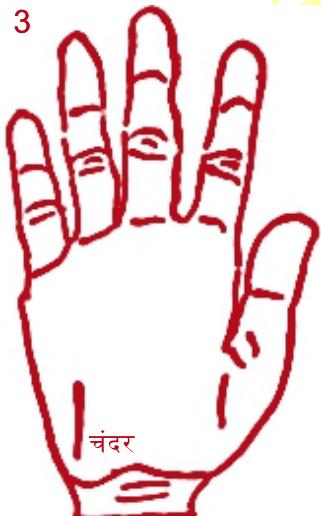
(शुक्र नंबर ४)

२। जब चंदर के बुर्ज़ पर शुक्र रेखा — वाक़े हो तो ख़ुश्की या शुक्र के ताल्लुक के सफ़र अमूमन होंगे। या चंदर के पांव को ख़ुश्की का चक्कर लगा रहेगा। चंदर ख़ुद हंमेशा सफ़र में रहेता है। और शुक्र तो दुश्मनी नहीं करता मगर चंदर ही दुश्मनी करता है। इस लिए चंदर का सफ़र ख़ुद अपने लिए कभी नुकसान देह न होगा। मगर सफ़र ज़रूर दरपेश रहेगा। और अमूमन ख़ुश्की का होगा।

सूरज बृहस्पत नंबर ४

३। ज़रूरी सफ़र - जब चंदर के बुर्ज़ पर सूरज रेखा या सीधा ख़त बृहस्पत का | वाक़े होवे तो और इस का रुख़ सूरज की तरफ़ होवे तो ऐसा सफ़र समंदर पार या निहायत

ज़रूरी सफ़र होगा। जिस में राज दरबार के निहायत ज़रूरी काम मुतलका होंगे। अगर इस ख़त का रुख़ बुध की तरफ़ होवे तो तिजारती कारोबार में बैशबहा मुनाफ़े होंगे। (बुध से मिले हुए का ज़िक्र जुदा है) ऐसे ख़त से सफ़र का नेक असर इसी हालत में गिना है जब ये ख़त सिर्फ़ चंदर के बुर्ज़ के हद के अंदर ही अंदर होवे और ऊपर सूरज या बुध में न मिले वरना शादी और औलाद का असर उल्टा होगा। चूंकि ये ख़त सिर्फ़ बुध और सूरज का ही रुख़ करता नेक गिना है। इस लिए इस से दुसरे कामों के सफ़र के नतीजे का ताल्लुक नहीं लेते। बाकी तरफ़ के रुख़ से बाकी बुर्जों के ताल्लुक का असर होगा। **केतु के खाना नंबर ६ का ताल्लुक असर मंदा कर देता है (बृहस्पत या सूरज का।)**

फ़रमान नंबर १४१

बालाई आमदन - गैबी मदद - माता का सुख व साथ - खेती की ज़मीन दीगर जद्दी जायदाद रेखा
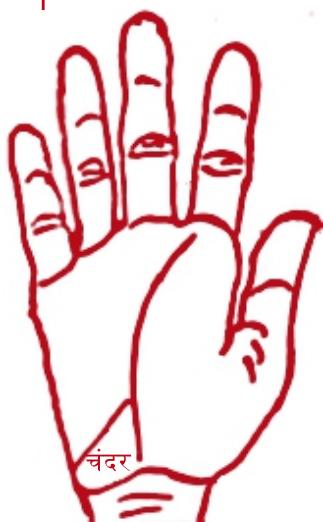
(चंदर बृहस्पत २/४)

१। जब चंदर के बुर्ज़ पर चंदर रेखा / पर या टेढ़ा ख़त वाक़े हो तो मंदरजाबाला तमाम असर ज़ाहीर होंगे। बशर्ते की ऐसी रेखा क़िस्मत रेखा में मिल गई हो। और क़िस्मत रेखा में मिलकर ही ख़तम हो जावे।

२। अगर बढ़कर सिर रेखा में जा मिले तो चंदर रेखा (बुध से) दुश्मनी करेगा। ऐसा आदमी लाखोंपति होता हुआ भी मुसीबत पर मुसीबत देखता चला जावेगा और अक़्ल की कोई पेश न जायेगी। **(बाकी ६ बचने वाला मकान सफा ८१ जुज़ ११)**

(चंदर बुध ६/७)

(चंदर नंबर ४ दृष्टी खाली)

३। अगर और आगे बढ़ कर दिल रेखा में मिल जावे तो दिल की पूरी शांति और दिली उम्मीदें पूरी होंगी। पराई अमानत लेने वाले वापिस ही न आएंगे। और अमानत ऐसे शख़्स के पास ही रह जाएगी।

४। चंदर से निकली हुई रेखा ऊपर दिल रेखा की तरफ़ चलती हुई जिस मुक़ाम पर सनीचर के बुर्ज़ के साये में जायेगी। सनीचर का बुरा असर होगा। यानी चंदर के असर से जो ज़मीन खेती वगैरह होगी। इस में चंदर के ख़ज़ाने कुएं वगैरह ख़ुश्क होने शुरू हो जायेंगे। कुएं बिलकुल ख़ुश्क न होंगे क्यूंकी चंदर ख़ुद ही दुशमनी करता है सनीचर दुशमन नहीं। दूध जो चंदर की माया है। सांप के सिर्फ़ साये या अक़्स से ही ज़हरीला हो जाता है और इंसानी दिल सनीचर की औरत की शरारती आंख की लहर या इशारा या गेशू या ज़ुल्फ़ के सांप से ही मौत ढूँढता फ़िरता है।

(चंदर को सनीचर देखें)

(चंदर को सूरज देखें)

५। जब ये रेखा सूरज या बृहस्पत के बुर्ज़ के साये या ताल्लुक में हो जावे निहायत नेक ताल्लुक होगा। सूरज का असर (साये बुर्ज़ मगर बुर्ज़ का साथ न हो जावे) ख़ुश्क कुएं ख़ुद-ब-ख़ुद पानी देने लग जावेंगे।
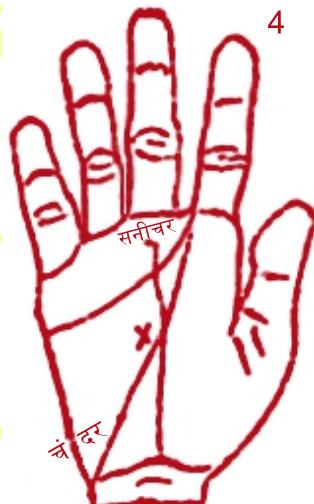
फ़रमान नंबर १४२

चंदर से बुध को ख़त जो कनिष्का के नीचे तक बुध के बुर्ज़ में चला गया होवे

१। चंदरमा के बुर्ज़ से बुध की तरफ़ को कई ख़त गये। एक जो सिर्फ़ चंदर के बुर्ज़ के अंदर ही अंदर रहा, वह सफ़र ज़रूरी ही कहलाया। दूसरा सेहत रेखा के नाम से मौसूम हुआ। तीसरा सूरज के बुर्ज़ और बुध के बुर्ज़ के दरमियान ऊपर को गया। वह भी सफ़र रेखा ज़रूरी गिना गया। चौथा चंदर से चलकर बुध को मंगल के किनारे मगर हथेली के अंदर की तरफ़ से गया। जो अंदरूनी अक़्ल (या वह ख़त जो माता को अंधी और पेशा बरबाद) शुमार करने वाला हुआ।

(चंदर बुध नंबर ७)
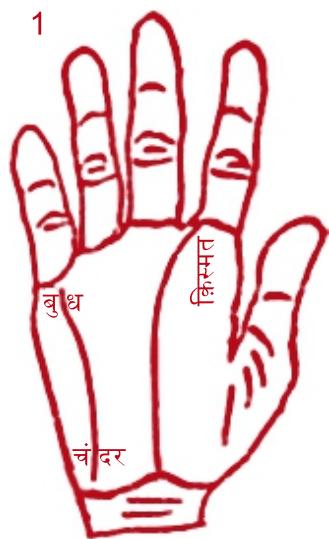
२। पांचवा चंदर से सीधा ऊपर को बुध के मुक़ाम पर शादी रेखा काटता हुआ चला गया। ये ख़त शादी में रुकावट देने वाला हुआ। इस ख़त की मौजूदगी में बुध और चंदर का दुश्मनाना असर होगा। चंदर बुध से भी दुश्मनी करता है और शुक्र से भी दुश्मनी करता है। अब बुध का मुक़ाम है और शादी रेखा शुक्र के ख़त में। अब चंदर न बुध पर ऐतबार करेगा न शुक्र पर भरोषा करेगा। ये ख़त मंगल बद के रास्ते ही ऊपर बुध को जा सकता है। अब सब ख़राब ही असर देंगे।

(चंदर शुक्र बुध को मंगल बद देखें)

अव्वल तो शादी बुध के पूरे वक़्त यानी ३४ साल या नीस्फ़ अरसा१७ साल से पहेले न होगी। यानी अगर १७ बरस में हो भी जावेगी तो वह शादी न होगी। फ़िर १७ के बाद ३४ से पहले यानी ३३ तक शादी का कोई मतलब न होगा। और भाईबंद भी बरबाद ही होंगे। औरत पर चंदर शुक्र से और शुक्र बुध से और बुध मंगल से सब एक दुसरे से बरखिलाफ़ हैं। औरत के अव्वल तो औलाद ही न होगी। और अगर होगी तो भी ज़िंदा न रहेगी। और अगर ज़िंदा रहे गई तो औलाद नरीना या लड़के ज़िंदा न होंगे। औरत की नज़र बरबाद होगी। शुक्र काना और मंगल अंधापन करेंगा। बुध पेशा बरबाद और खेती की ज़मीन भी ख़राब असर यानी अव्वल तो माता ही दुखी होगी या दुखी करेगी। और अगर ज़मीन खेती आ जावे तो माता ख़तम हो जावेगी। और ज़मीन के झगड़े बरबाद कर देंगे। ऐसे शख़्स की औरत अगर ज़िंदा होवे तो इस औरत की उम्र जिस क़दर बुध के असर के करीब यानी ३४ साल के लगभग होती जावेगी। इस्तात हमल या दीगर औरत की बीमारिया हमलावर होती जाएंगी। गर्जेकी औरत ३४ के क़रीब और मर्द २८ से पहेले औलाद नरीना का सुख न भोग सकेगा। ऐसे आदमी को सरकारी काम या ब्योपार से भी कोई मजीद फ़ायदा न होगा। बल्कि नुकसान का इमकान है। चंदर और मंगल दोनों नुकसान के बानी है। इस लिए दोनों की सेवा ज़रूरी है। चंदर के लिए आरध्य पूजन और मंगल के लिए गायत्री पाठ है। राहु का असर कन्या दान और केतु का कपिला गाय के दान से नेक होगा यानी जब वह लड़की की शादी करेगा आराम पायेगा। या अगर ख़ुद बुध कारोबार के लिए दुर्गा पाठ करेगा तो सुखी और दौलत के जमा होने का ज़माना देखेगा या सब्ज़ रंग तोते की पालना करे। और स्याह रंग मछलियों को सूरज निकलने से पहेले सफेद आटा अपनी ख़ुराक का १/१० हिस्सा खिलाया करे। ४० महिने और महिने में सिर्फ़ एक दिन ऐसा किया करे। दिन कौन सा होवे शुक्र की रात और सनीचर की सुबह का दरमियानी वक़्त। ऐसे शख़्स की उम्र ८५ साल से ज़्यादा न होगी।

चंदरमा की मुखतलिफ़ रेखाएँ
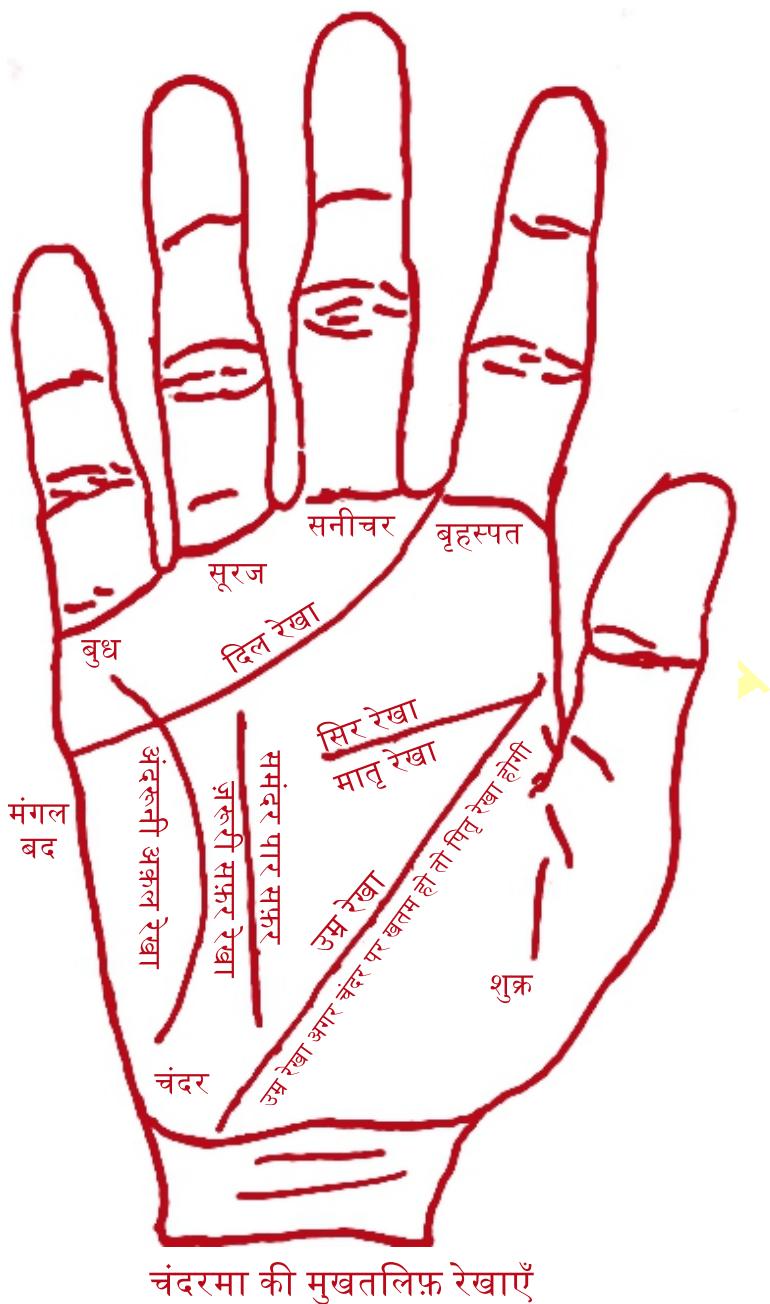
फ़रमान नंबर १४३

चंदर से शुक्र को ख़त

१। अंदरूनी शराफ़त कामदेव से दूर। तमाम नशेबाज़ों का पीर या सरदार या फ़क़ीर साहबे क़माल होगा।

शराफ़त

२। चंदर से सूरज को ख़त ऐसा ख़त जो बराये रास्ता सूरज में चला जाये निहायत बुरी और ख़राब ज़िंदगी का वास्ता करायेगा। **(क्यूंकी रास्ता मे मंगल बद आ गया है)**

1

फ़क़ीर

(चंदर शुक्र नंबर ७)

(चंदर शुक्र को सूरज देखें)

सफा १९४ जुज ५ से मुतलका

३। सिर रेखा चंदर पर - अगर सिर रेखा चंदर के बुर्ज पर चली जावे तो ऐसा आदमी दूसरों की मुसीबत खुद अपने ऊपर ले कर ख़ुद ही तबाह होता रहेगा और फ़र्ज़ी वहम में ऐसा बढ़ेगा की ख़ुद ही ख़ुद किसी का मोजब होगा।

2

(चंदर सूरज मुश्तरका को मंगल बद या केतु देखे)

3

(चंदर बुध नंबर ४)

(सनीचर नंबर ४ चंदर नंबर २)

(सनीचर चंदर नंबर ४ और सूरज नंबर ७)

(सनीचर चंदर नंबर ४ मय राहु या केतु)

४। अलिफ़ - पितृ रेखा। जब उम्र रेखा चंदर पर होवे तो पितृ रेखा कहलाती है।

अब अगर

बे - पितृ रेखा पर शुक्र के मुक़ाम पर सूरज का सितारा होवे तो दिन होते हुए इस शख़्स की मौत दरिया या नदी से होगी।

और अगर

जीम - चंदर के बुर्ज़ पर सनीचर + ज़ाहीर होवे तो रात के वक़्त पानी से मौत होगी।

५। धन रेखा और श्रेष्ठ रेखा, पितृ रेखा का मुफ़सिल ज़िक्र सनीचर के बुर्ज़ में हुआ है।

फ़रमान नंबर १४४

चंदरमा के बुर्ज़ का असर

कुंडली में खाना नंबर ४

१। दुनिया का शहज़ादा, दिल, पानी, गैबी मदद, माता (वालदा), औलाद का सुख, ज़मीन, ज़ेरे काश्त, जायदाद जद्दी, आम समंदर पार सफ़र या गैर ज़रूरी सफ़र। राज दरबार और अवाम में इज्ज़त, करम - धरम व दिल की परहेज़गारी। घोड़े वगैरह की सवारी का सुख, शांति और रात का आराम। उंच चंदरमा बृहस्पत का खाना नंबर २ बन जाया करता है।

नीच हालत

२। करम धरम से लापरवाह। बदबख़्त, मुसीबत पर मुसीबत। मंदरजाबाला सब ख़राब। लड़कियां ज़्यादा। जंगल पहाड़ की गर्दिश। कम रौब होवे। बृहस्पत ने तो गुरु की तरह सब से बतौर पूजना लक्ष्मी की सेवा करवाई, सूरज ने ख़ुद हाथ से कमाया और बाप का साथ लिया। चंदरमा ने माता की शरण ली और जायदाद जद्दी बख़्शी। **(मायूसी- सुस्ती - बुज़दिली का साथ होगा।)**

बृहस्पत ने हवा, सांस, सोना दिया। सूरज ने गरमी, गुस्सा और तेज बख़्शा। लेकिन चंदरमा ने पानी, चाँदी और शांति दी।

३। चंदरमा कर्क का मालिक मगर बृख का उंच है। इस लिए उम्र ८५ कर्क - ९६ बृख होगी।

४। चंदर के सितारे से चंदर का खाना नंबर २ होगा। जो अपना उंच और बृहस्पत का खाना नंबर २ उत्तम होगा।

फ़रमान नंबर १४५ १४६

चंदर के सितारा का असर

खाना नंबर	
१ पैर चंदर रेखा सूरज के बुर्ज	सूरज के बुर्ज़ पर :- दोनों ग्रह बाहम दोस्त है। उत्तम फ़ल होगा। सूरज का प्रबल ज़ाहीर होगा। राज दरबार से इज्ज़त, कामियाबी होगी।
१	कुंडली में चंदर का असर :- मेख राशि - घर का मालिक मंगल है। जो चंदर के मुसावी है। और चंदर का दोस्त है। सूरज उंच करता है। जो चंदर का दोस्त है। सनीचर नीच करता है। जो चंदर के मुसावी है। आम सुख २८ साल और औलाद का सुख खासकर होगा। उम्र ९० साल होगी।
२ चंदर रेखा बृहस्पत की	बृहस्पत के बुर्ज़ पर :- दोनों ग्रह बराबर के हैं और उत्तम फल के। दोनों का एक जैसा और उत्तम फ़ल होगा। ज़र-माता-औलाद और वालिद का सुख हो ज़माना की नेक हवा मदद देवे।
२	बृख राशि :- घर का मालिक शुक्र जो चंदर के मुसावी है। मगर चंदर इस से दुश्मनी करता है। इसे नीच कोई ग्रह नहीं कर सकता। असर के घर का मालिक भी बृहस्पत है। जो चंदर के मुसावी है। और चंदर का दोस्त है। ज़र का फ़ायदा २७ साल। दुनिया का आराम पूरा होगा। उम्र ९६ साल होवे।
३	मंगल के बुर्ज़ पर :- दोनों ग्रह बराबर के है। मंगल नेक से नेक और बद से बुरा फ़ल होवे। नेक पर जंग व जदल में फ़तह पावे। मगर मंगल बद से वालदा से अदावत होवे। ख़ुद अपने लिए मुबारक हो।
३	मिथुन राशि :- घर का मालिक बुध है जो चंदर का दोस्त है।

मंगल की चंदर रेखा

राहु उंच करता है। जो चंदर को मद्धम करता है। केतु जो चंदर को चांद ग्रहण करता है। इसे उंच करता है। चंदर के वक़्त सिर्फ़ ३ साल ऐश होवे। क्यूंकी मंगल नेक चंदर का दोस्त है और मंगल बद दुश्मन। उम्र ८० साल हो।

४

चंदर के अपने बुर्ज़ पर :- अपने घर का जो उत्तम फ़ल हो सकता है। इस सितारा से होवे।

४ — कर्क राशि चंदर का अपना बुर्ज

कर्क राशि :- घर का मालिक ख़ुद चंदरमा। बृहस्पत उंच करता है। जो चंदर के मुसावी है।□ मंगल नीच करता है जो चंदर के बराबर का है। (मंगल बद ज़रूर दुश्मन है) ज़मीन से लाभ हो और शुक्र नीच से भी लाभ हो। यानी २१ साल औलाद होती रहे। उम्र ८५ से ९६ साल की होवे। **(क्यूंकी दिल रेखा (चंदर) के दुरस्त होते हुए शुक्र का बुरा फल न होगा और शुक्र के साथ चंदर निस्फ़ अरसा व ताकत का होता है)**

५ — सिंह सूरज का बुर्ज

सिंह राशि :- घर का मालिक सूरज है। जो चंदर का दोस्त है। इस राशि को कोई उंच नीच नहीं कर सकता। सूरज के घर में चंदर का प्रकाश ज़ाहीर नहीं होता। इस लिए कम रौब। जंगल पहाड़ का सैलानी मगर दोस्त की बरकत और ९ साल सफर दरपेश रहे। उम्र १०० साल।

६ — कन्या केतु

कन्या राशि :- घर का मालिक बुध चंदर का दोस्त और केतु (चांद ग्रहण) है। बुध और राहु (चंदर का दुशमन) उंच करते हैं। केतु (चांद ग्रहण) इसे नीच करता है। अक़्ल क़ायम साहिबे तदबीर। मगर लड़कियां ज़्यादा हों। ६ साल तकलीफ़। उम्र ८० साल।

७

चंदर के सितारा का असर :- शुक्र के बुर्ज़ पर - दोनों ग्रह मुसावी है। मगर चंदर शुक्र से दुश्मनी करता है। इस लिए दुनियावी फ़ल ख़राब और

रूहानी उत्तम होगा। यानी शुक्र कामदेव की ताक़त ज़ाया होगी। मगर दुनिया का पूरा सुख व नेक औरत का आराम होगा।

बुध के बुर्ज़ पर:- चंदर बुध दोस्त हैं। मगर चंदर दुश्मनी करता है। बुध का फ़ल ख़राब कर देगा। मगर चंदर अपना उत्तम फ़ल रखेगा। राज दरबार में इज़्ज़त, माता, औलाद का सुख हो। शायरी और इल्मे जोतिष का माहिर होगा।

७ तुला बुध शुक्र का बुर्ज

कुंडली में चंदर का असर :- तुला राशि :- घर का मालिक शुक्र है। जो चंदर के मुसावी है। मगर चंदर ख़ुद इस से दुश्मनी करता है। सनीचर उंच करता है। जो चंदर के मुसावी है। सूरज नीच करता है। जो चंदर का दोस्त है। इस लिए चौपाये (घोड़ा वगैरह सवारी) का सुख हो। वरना पंद्रह बरस करीब उल्मर्ग रहे। (सनीचर का असर) उम्र ८५ साल होवे। **(बहू-बेटी और माँ धी बहन की मुहब्बत से अलाहदा और इश्क़ फ़ाहिसा से दूर और दूध की तरह सफा दिल होगा।)**

८ बृछक

बृछक राशि :- घर का मालिक मंगल है। जो चंदर का दोस्त है। इस राशि को चंदर ही नीच करता है। उंच कोई नहीं कर सकता। फ़ल बुरा होगा। राज दरबार में दुशमनी ज़्यादा। ६ साल तकलीफ़। दरअसल ये घर मंगल बद और सनीचर का है। जो बुरा ही फ़ल पैदा करते है। उम्र ९० साल। **(इस घर के चंदर से उम्र लंबी होगी ख़ास कर माता की ज़िंदगी में)**

९ धन - धरम करम १०

धन राशि :- घर का मालिक बृहस्पत जो चंदर का दोस्त है। केतु (चाँद ग्रहण) उंच करता है। राहु (चाँद मद्धम) नीच करता है। धरम -हीन अय्याश। वरना २० साल करम धरम तीर्थ यात्रा होवे। उम्र ७५ साल।

सनीचर के बुर्ज़ पर :- चंदर सनीचर मुसावी है। चंदर सनीचर से दुश्मनी करता है। इस लिए दोनों का ख़राब फ़ल होगा। कम दौलत। हंमेशा

बीमारी तकलीफ़। वालदा से अदावत। आँख की नक़ल व हरकत से बदनामी वगैरह।

१० मकर सनीचर का बुर्ज

चंदर का असर मकर राशि :- घर का मालिक सनीचर है। जो चंदर के मुसावी है। मंगल उंच करता है। जो चंदर का मुसावी और चंदर इस का दोस्त है। बृहस्पत नीच करता है। जो चंदर का दोस्त है। ४२ साल दौलत आवे। मगर उर्ध रेखा वगैरह के ढ़ंग की। उम्र ९० साल।

११ कुंभ बृहस्पत आमदन

कुम्भ राशि :- घर का मालिक सनीचर जो चंदर के मुसावी है। इस राशि को कोई उंच नीच नहीं कर सकता। असर के लिए बृहस्पत का घर है। जो चंदर का दोस्त है। दुश्मन मगलुब। राज दरबार से नेक असर। १२ साल राज दरबार से दौलत आवे। उम्र ९० साल।

१२ मीन ख़र्च, ख़ुशी सुख

मीन राशि मछली :- घर का मालिक बृहस्पत (चंदर का दोस्त)और राहु (चंदर मद्धम) शुक्र और केतु उंच करें। दोनों चंदर के दुश्मन। राहु दुशमन बुध दोस्त नीच करें। इस लिए शास्त्री (अक़्लमंद) ४५ साल नीस्फ़ उम्र पानी से खौफ़। उम्र ९० साल। जायदाद व दौलत का फ़ल मद्धम **(मुतलका राहु ससुराल ख़ुद और बजात ख़ुद अपनी जाती पैदा करदा)**।

शुक्र
लक्ष्मी,
नीच न
हर
ने
सफ़ेद रंग(दहीं) दुनिया की मिट्टी। ज़माने की
गऊ माता। मर्द की औरत ने किसी को
किया। इस लिए
एक
पसंद किया
और ख़ुद
नीच किया।
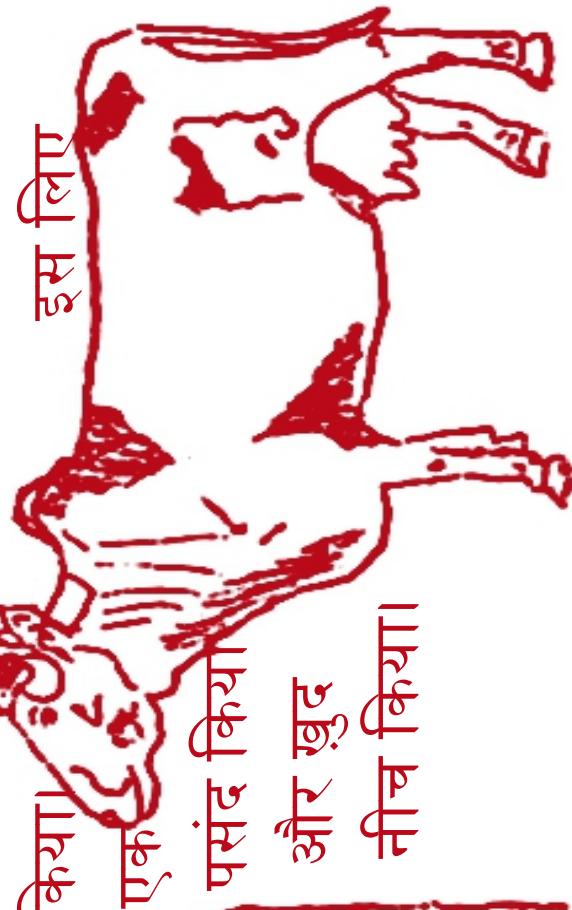
फ़रमान नंबर १४७

शुक्र

१। हवा से आग हुई आग से पानी पानी से मिट्टी बनी या बच्चा ज़माने की हवा से गरमी, सर्दी और आराम महसूस करने लगा। शुक्र का वक़्त ऐशों-इशरत और गृहस्त का ज़माना है। इसे बैल, स्त्री, मिट्टी माना है। जिस के पूरे हालात और हर तरह के रंग मुमकिन है। ये बृहस्पत का दुश्मन है। और चंदर और सूरज इस पर दुश्मनी रखते हैं। नीच शुक्र से बृहस्पत सांस, सूरज जिस्म और चंदर दिल बुरा असर देंगे। मिट्टी से इंसान बना और आग से देवता। इस लिए सूरज से दोस्ती न हो सकी। चंदर और बृहस्पत ने बुरा असर किया। शुक्र जब तक सनीचर के कामों से दूर रहे नेक है। दुनियावी इश्क़ के अलावा इश्क़ हक़ीक़ी भी इस का असर होता है। इस को दहीं मिसाल दी है। जिस से घी भी बन जाता है। शुक्र से कुनबे की पैदाइश और परवरिश भी मुराद है।

२। शुक्र का असल ऊंचपन आजिज़ी है। गुस्सा नीच हालत की निशानी है **(शुक्र नंबर ६)**

फ़रमान नंबर १४८ **(खाना नंबर ७)**

शुक्र के बुर्ज़ पर रेखा और

शुक्र की अपनी रेखा

१। दिल रेखा के दूरस्त होते हुए **(चंदर क़ायम)** शुक्र का असर कभी बुरा न होगा।

२। शुक्र का पतंग - कामदेव रेखा :- ये रेखा घर की रहनुमाई भाई बंदों पर अंगुस्ठनुमाई और हमसरों **की/पर** नंबरदारी ज़ाहीर करती है।

ऐसा आदमी धरम हिन होने के अलावा औरत ज़ात की हमदोशना तारीफ़ के पुल बनाने और ज़बानी याद में वक़्त सर्फ़ करना आम दस्तूर बनाये रखता है। और दूर बैठी ज़बान की तरह इश्क़ को याद करता है। सेहत उम्दा और ज़बान और आंखों की ताक़त साफ़ होती है। औरत ज़ात या अपनी औरत के कुटुंब क़बीले का नेक ताल्लुक हुआ करता है। मगर सूरज की किरणें इस शुक्र के दरिया में मिट्टी के रंग का असर और मैला सा रंग ज़ाहीर किया करती हैं। यानी वह सरकार के घर से रुपये पैसे कमाने वाला बराह रास्त नहीं हुआ करता। मगर अहले सरकार या राज दरबार

वालों की कमाई से अपना कारोबार लगाये बगैर नहीं रह सकता। इतना ज़रूरी है की वह अपने हमराहियों को कई दफें ज़लील-ओ-खार होने (यानी शुक्र नीच का फ़ल होगा) की तरफ़ कर बैठता है। और गृहस्त के काम काज में मनहूस असर होगा। क्यूंकी शुक्र और सूरज बाहम दोस्त नहीं हैं। इस रेखा का ख़ुद इस की अपनी ज़ात पर कोई बुरा असर नहीं होता। टूट फुट से दिमाग़ी कमज़ोरी, दीवानगी और बुध के बुर्ज़ से सनीचर तक की पूरी लंबाई की हालत में खयालात में वहशत और परेशानगी हुआ करती है। और अगर ये रेखा

३। सनीचर पर मद्धमा की जड़ पर ही हो तो सनीचर के बूरे असर से बचाओ या सेहत उम्दा होगी।

(शुक्र नंबर १०)

४। सूरज पर अनामिका की जड़ पर ही हो तो औरत ज़ात के असर (औलाद व आराम) को हल्का सा ख़राब करे। मगर ख़ुद अपने लिए इक़बाल मंद होवे।

५। बुध पर कनिष्का की जड़ पर ही हो तो औरत ज़ात के लिए नेक असर और गृहस्त में अच्छा फ़ल होवे।

६। अगर कनिष्का की जड़ में इस रेखा का ऊपर की तरफ़ को झुकाव ◡ हो जावे तो शादी और औलाद में गड़बड़ और दुश्मन की तरह का असर पैदा हो जावेगा।

७। शुक्र की रेखा वाले को गुस्सा **(सूरज)** तबाह करता और तराज़ू की तरह निरपक्ष तबीयत आबाद करती है।

८। मुआवन उम्र रेखा सनीचर के बुर्ज़ में ज़िक्र है।

शुक्र की रेखा
सनीचर
सूरज
बृहस्पत
शुक्र का पतंग
मातृ रेखा
बुध
तलाक़
दिल रेखा
जुदाई
मंगल नेक
शादी रेखा
सिर रेखा
ख़ाने वाले
मंगल बद
क़िस्मत रेखा
उम्र रेखा
सफ़र से वापसी
शुक्र
भाइयों की रेखा
चंदर
शुक्र का ज़्यादा ताल्लुक इश्क़ मुहब्बत से है
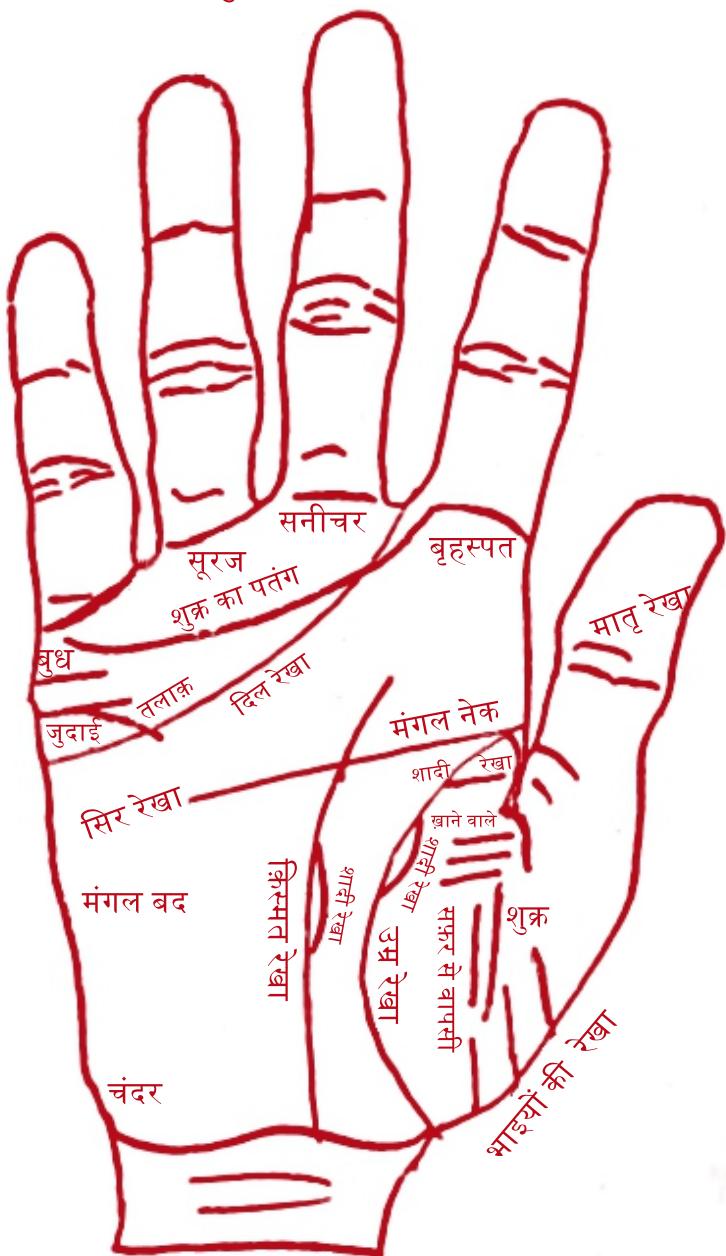
<u>फ़रमान नंबर १४९</u>

<u>शादी रेखा</u>

१। बुध के बुर्ज पर कनिष्का के नीचे इस शुक्र की रेखा से शादी या ख़ुशी गृहस्त या फ़ारसी लफ़्ज़ शादी या बंदर किला बनाना ज़ाहीर होता है।

२। दो साफ़ और सही बड़ी लक़ीर ऊपर और छोटी लक़ीर नीचे की हालत में शादी की औरत एक ज़रूर और जल्दी होवे। औरत गृहस्त में नेक फ़ल देने वाली और उत्तम हो। अरसा शादी शुक्र के असर का वक़्त यानी २५ साल का १/२ = १२.५ साल या २५ साल का ३/४ = १८-१९ साल होगा। और शादी ख़ुद-ब-ख़ुद धक्के लगा कर हो जायेगी। किसी दुसरे के अहेसान या महारबानी की ज़रूरत न होगी। दो लकीरों से ज़्यादा तादाद की हालत में औरतों की तादाद या शादी की तादाद लकीरों की कुल तादाद से एक कम यानी ३ लकीरों से २ दफ़ें शादी और ४ के लिए ३ दफ़ें शादी होने से मुराद होगी।

३। अगर बड़ी लक़ीर नीचे और छोटी लक़ीर ऊपर हो जावे ⸦⸧ तो शादी का फ़ल मनहूस में ही गिना है। यानी अव्वल तो शादी न ही हो और अगर हो तो देर बाद (१८-१९ साल के बाद) हो और औलाद न ही होवे और अगर औलाद होनी शुरू ही हो जावे तो लड़के या औलाद नारीना न होवे। और अगर औलाद नारीना हो भी जावे तो ज़िंदा न रहेगी। और अगर ज़िंदा भी रहे तो

लायक न होवे। और अगर लायक ही होवे तो सुख देने वाली न होवे। अगर सुख देने वाली की नियतवाली ही हो तो सुख देने के क़ाबिल न होवे व निर्धन या दुसरे किसी सबब से हानी करने वाली हो। किस्सा मुख़तसरन ऐसी हालत में औरत ज़ात अपना पूरा और नेक फ़ल न देवे।

४। अगर सिर्फ़ एक ही लक़ीर होवे तो शादी देर बाद यानी १८ साल के बाद २५ साल तक होवे। और शादी में कई एक मुश्कलात पेश हों। जो सरमाये की क़मी या संजोग के दुसरे कई एक बिघन (रुकावट) वगैरह होंगी। ऐसी हालत की शादी

का नेक असर उम्दा नतीजे २८ साल की उम्र के बाद ही गिना है। औरत रेखा के साथ दौड़ती हुई या क़िस्मत रेखा के साथ चलती हुई लक़ीर जो बाद में उम्र या क़िस्मत रेखा में ही मिल जावे। शादी का ताल्लुकदार या शादी पर औरत बन जाने वाली हस्ती से मुराद होती है। ऐसी शादी के हो जाने के वक़्त से ही क़िस्मत जाग उठा करती है। या ऐसी औरत लक्ष्मी या भाग उदय होने का चरण या ज़माना साथ ही लाया करती है।

५। दो शाखी रेखा - वगैरह वगैरह। दो शाखी होने पर मर्द औरत की बाहमी रंजिश, तलाक, अलेहदगी, जुदाई और ना मवाफकत वगैरह ज़हीर करती है। दायें हाथ पर के निशानों की हालत में ख़ुद करदा वजूहात और बायें हाथ के निशानों से अनभोल या सहवन कारवाई के सबब होंगे। दो शाखी का मुंह> <जिस क़दर हथेली के बाहर होता जावे बुरा असर कम होता जावे। और जिस क़दर हथेली के अंदर घुसता चला आवे या मुंह बड़ा होता जावे या

दो शाखी के सिरे नीचे की तरफ़ (दिल रेखा की तरफ़ बढ़ते जाएं, चंदर या दिल रेखा बुध की दुश्मन है) या ऊपर कनिष्का की तरफ़ कनिष्का की सब से निचली पोरी (धन राशि, बृहस्पत दुशमन बुध का) में चले जाएं तो शादी में या मर्द औरत के गृहसती ताल्लुक में नतीजे ख़राब बढ़ता जावे। ऐसी हालत में चंदर और बृहस्पत की पूजना नेक असर की तरफ़ लाएगी। दो शाखी रेखा की हालत में अव्वल तो मर्द औरत जुदा जुदा ही हो जाएंगे। और अगर किसी वजह से इकट्ठे ही रह जाएं तो औरत मर्द के लिए औरत का काम न देगी। इसकी खूबसूरती बाइसे बद चलनी या नेक चलनी की हालत में औलाद वगैरह या बीमारी या बीमारी की वजह से खर्चा फ़ालतू या दीगर और कोई सबब होगा। बहर हाल ऐसी हालत में औरत १२ साल औलाद न देगी। या औलाद नरैना का नेक असर न होगा।

दो शाखी रेखा वाले मर्द से ब्याही हुई औरत अगर किसी दुसरे के घर भी जागज़ीन हो जावे तो भी मनहूस असर जल्द रफ़ा न होगा। उस औरत से यानी वह औरत भी जल्द औलाद नरैना का फ़ल न पाएगी। और ऐसा मर्द दूसरी शादी से भी जल्द नफ़ा या आराम न पायेगा। नाक़िस ग्रहों का असर अपने वक़्त में ही दोनों तरफ़ से ज़ाया होगा।

६। दोनों लकीरों = से ऊपर की लकीर को मर्द से और नीचे की लकीर को औरत से मिलाया गया है। ऊपर की लकीर से मर्द की उम्र और नीचे की रेखा से औरत की आयु (उम्र)लेते हैं। लकीरों की लंबाई में जिस क़दर फ़र्क हो उतना ही अरसा उम्र में फ़र्क होगा। और क़ुदरत अलाहदा कर देगी।

७। शादी की उम्दा और नेक रेखा वह है जो बराबर = हो। इन दोनों लकीरों की दरमियानी चौड़ाई और फ़ासला भी मर्द औरत की दूरी (ज़्यादा चौड़ाई या दरमियानी फ़ासला ज़्यादा) व नज़दीकि ज़ाहीर करता है। अगर दोनों लकीरों की लंबाई भी बराबर होगी तो दोनों की औसत उम्र भी बराबर ही होगी। यानी दोनों की खात्मे के हिसाब से या यूं कहों की दोनों कब जुदा जुदा होंगे। इस बात का कोई

हिसाब नहीं की दोनों कब इकट्ठे हुए थे और इस वक़्त दोनों की उम्र कितनी कितनी थी। इन लकीरों की लंबाई दोनों के जोड़े क़ायम रहने की मियाद का अरसा होता है। अगर ऊपर की लक़ीर लंबी हो तो औरत पहले और अगर नीचे की लक़ीर लंबी हो तो मर्द पहले इस दुनिया से चल बसेगा।
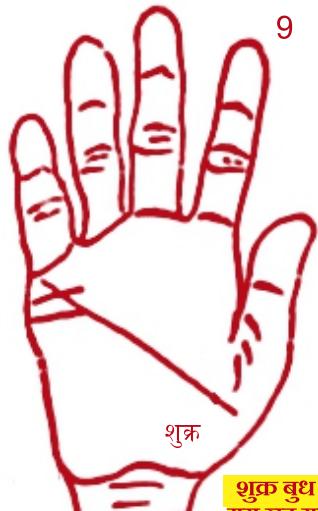
<u>शादी रेखा से दुसरी शाख़ों का ताल्लुक</u>
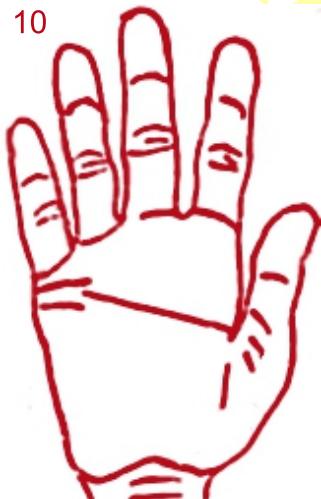
(शुक्र बुध नंबर ९ या
बृहस्पत शुक्र बुध नंबर ७)

११ व १२। बुध पर कनिष्का की जड़ या धन राशि बृहस्पत से आइ हुई शाख़ :- सब की सब शादी में रुकावट मुखालफ़त या दीगर फ़तूर बाइसे तकलीफ़ पैदा होंगे।

शुक्र या चांद से रेखा के वक़्त औरतें मुखालफ़त का सबब और मंगल (हर दो) से शाख़ मर्दों से मुखालफ़त ज़ाहीर करती है। ऊपर बुध से आइ हुई शाख़ के वक़्त फ़ालतू ख़र्च या दीगर सबब होंगे।

१३। सूरज से शाख़:- औरत अमीर ख़ानदान से या जो हर तरह से सूरज के बराबर हो।

(सूरज बुध नंबर ७)

शादी रेखा का औलाद रेखा (बृहस्पत) से पूरा पूरा ताल्लुक है। जिस का ज़िक्र अलाहदा हुआ है।

१४। बहुत बड़ा या नरम हाथ का:- बृहस्पत शुक्र का काम देता है। और बहुत बड़ा शुक्र औलाद से महरूम रखता है।

शादी से मर्द औरत की बाहमी गुज़रान

१५। अगर मर्द की नाक छोटी **(नीच बृहस्पत नंबर १०)** हो या ज़बान **(बुध)** व तालु **(सनीचर)** स्याह हो और आंख भूरी **(सूरज चंदर)** का साथ हो :- तो दो से ज़्यादा शादी होवें। मगर फ़िर भी गृहस्त का सुख नसीब न होवे।

और अगर आंख स्याह **(सनीचर चंदर)** का साथ हो तो औरत को सुख हल्का होवे।

१६। शुक्र पर अंगूठे जड़ में सूरज का सितारा होवे तो औरत

(सूरज नंबर ७)

सुख हल्का पराई ममता हो मगर अपने लिए इक़बालमंद होवे। (सूरज नंबर ७)

१७। उम्र रेखा (पितृ रेखा) पर राहु ▦ का निशान हो:- औरत का सुख हल्का। ख़ास कर मीन राशि वाले को ज़रूर हल्का होवे (सनीचर राहु नंबर १२)।

बे :- दायें पांवों की अनामिका उंगली मद्धमा से छोटी (बहुत ही) हो या (लड़के का सूरज नीच होगा) तर्जनी मद्धमा से बहोत छोटी हो तो औरत का ख़ानदान गरीब हैसियत का होवे। और इन का सुख भी हल्का हो। ख़्वाह अमीर ही हों।

(राहु नंबर ७)

१८। पांव की तर्जनी मद्धमा से बड़ी हो:- औरत ख़ानदान गरीब हो। (बृहस्पत केतु देखे सनीचर को)

१९। पांव की तर्जनी मद्धमा से थोड़ी (सनीचर देखे बृहस्पत केतु को) छोटी हो :- औरत का सुख पूरा होवे।

२०। हाथ की कनिष्का उंगली के नाखून वाले हिस्से का आख़िर या सिरा अगर अनामिका उंगली के नाखून वाले हिस्से की जड़ (कर्क राशि वाली पोरी की जड़) से नीचा रहे (जब की हाथ को ख़ूब अकड़ा कर इन दोनों उंगलियों को बाहम मिला कर देखा जावे) तो जिस क़दर कनिष्का इस अनामिका की ऊपर ज़िक्र शुदा पोरी की जड़ से छोटी होवे या जिस कदर नीची रह जावे उसी क़दर औरत सफेद या सफा रंग नेक सरीत (सुभाओ) और उम्दा व ख़ुश ख़लक़ होगी। जिस क़दर कनिष्का का ये हिस्सा उस हिस्से से ऊपर को बढ़े उसी क़दर औरत का रंग ख़ूबसूरती - सुभाओ - खूबीमंद या मंदा या ख़राब होवे। अगर उम्र (पितृ रेखा) टेढ़ी होकर सिर रेखा (मातृ रेखा) को काट कर चांद के बुर्ज़ पर हथेली के किनारे ∠ तिकोन सी

(चंदर बुध बृहस्पत सनीचर नंबर २)

२१। बनादे तो ऐसा शख़्स पराई या गैर औरत का मिलापी और खोटे काम करने वाला होगा। या बद फ़ैल, बद किरदार हो। क्यूंकी चंदर खुद बुध और सनीचर से दुश्मनी करता है।

२२। अगर औरत की पेशानी बुलंद **(बृहस्पत नंबर ४)** और ऊंची हो वह जल्द ब्याह हो जावे। ख़ाविंद इस का अमीर-कबीर और मरतबे वाला होवे। और अगर पेशानी लंबी और कुशादा होवे तो वह औरत अपेनी ख़ाविंद की लिए तो मुबारक हो मगर ससुर (सोहरा या ख़ाविंद का बाप) जल्द मर जावे। **(बृहस्पत सूरज मंगल नंबर ४)**

खुश गुज़रान वो होगी जिस की पेशानी फ़राख होवे। **(अकेला बृहस्पत नंबर ४)**

२३। औरत के पांवों की अनामिका उंगली अगर उस की कनिष्का उंगली से छोटी हो **(सूरज केतु देखें बुध को)** और उसका नाखून वाला हिस्सा (अनामिका का) ज़मीन पर न लगे। तो वह औरत "ख़ाविंद खानी" हो। यानी इस का पहला ख़ाविंद मरे तो दूसरा करे और अगर सारी कनिष्का ज़मीन पर न लगे तो दूसरा मरे तीसरा करे ख़्वाह चौथा करे सब के सब ही मरते जावें मगर वह औरत खुद न मरे और न ही आराम पावे।

फ़रमान नंबर १५०

शुक्र के बुर्ज़ पर दीगर रेखा

१। चंदर के बुर्ज़ को . . . . . नशेबाज़ी। फ़क़ीर साहिबे क़माल।

२। बृहस्पत पर दिल रेखा से बिलकुल ही अलाहदा शुक्र रेखा - बहुत नेक और उम्दा असर देते है। गृहस्त उम्दा होगा। और साठ (६०) साल आमदन रहेगी। **सफा १५२ शकल व जुज ५**

३। उम्र रेखा जब खात्मे पर शुक्र के बुर्ज़ की जड़ की गोलाई पर दो शाखी हो जावे और शुक्र की तरफ़ की शाख़ लंबी हो तो मौत मातृ भूमि में होगी। अगर चांद की तरफ़ की बड़ी तो परदेश में मरेगा।

(शुक्र नंबर २)

४। शुक्र के बुर्ज़ पर लंबी लंबी और टेढ़ी रेखा भाइयों से ना मुवाफकत बताएगी। (ये भाइयों की रेखा है) मंगल बद के बुर्ज़ पर शुक्र रेखा औलाद बाक़ी रहने वाली बेवगान जंग व जदल में मददगार ज़ाहीर करती है।

५। चंदर पर शुक्र रेखा मामूली सफ़र बताती है।

६। कलाई पर और उंगलियों की जड़ों पर चंदर का असर देगी।

७। मंगल नेक और शुक्र पर :- खा जाने वाले भाईबंद गिने है।
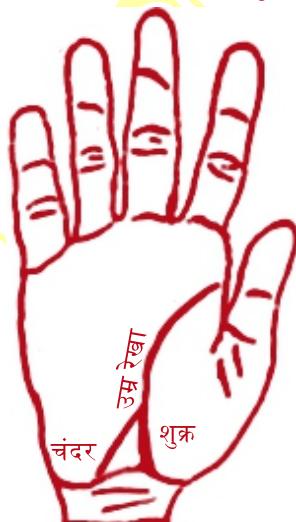
८। शुक्र पर रेखा :- सफ़र से वापसी की ज़िंदगी बताती है।

फ़रमान नंबर १५१

शुक्र के बुर्ज़ का असर खाना नंबर ७

१। शुक्र के बुर्ज़ का दुनिया से कोई ताल्लुक नहीं। बहुत बड़ा बृहस्पत शुक्र का काम देगा। मगर बहोत बड़ा शुक्र (अंगूठे की जड़ जो शुक्र के नाम से पेवस्ता है अगर मंगल नेक की तरफ़ से भी बहुत मोटी हो जावे। यानी मंगल नेक का मुक़ाम जुदा मालूम न होता जावे। या मंगल नेक का हिस्सा बहुत ही छोटा सा रह गया होवे। तो शुक्र बहुत बड़ा गिना जायेगा।) औलाद से महरूम रखेगा। नरम हाथ का बृहस्पत भी शुक्र होता है। दिल रेखा के दुरस्त होते हुए शुक्र का बुरा असर न होगा। शुक्र का बुर्ज़ नीच हो तो अक़्ल ख़राब होगी। शुक्र नीच तुख़्म कहलाता है।

२। शुक्र उंच हालत **(शुक्र नंबर १२)** में - खानदान की परवरिश करने वाला, औरत का सुख और औरत मतीह। औरतों के ज़रिये काम का नेक नतीजा। गरीबों से फ़ायदा और आराम। राग - रंग - शायरी बृहस्पत का फल मगर औलाद से महरूम। नेकी कम में आगे हो। गाय-बैल का सुख हो। **(अंगूठे के हाल में मुफ़सिल लिखा है सफ़ा नंबर २९ नीचे से सतर ६-९)**

३। नीच हालत **(शुक्र नंबर ६)** :- गरीबों को मदद देवे और उन को रूपये पैसे खिलावे। अक़्ल के खिलाफ़ बहुत से काम करे। अपने घर मकान का फ़ायदा न पावे। स्त्री, पराई स्त्री या स्त्री सुख से महरूम। आख़री उम्र में आराम हो। लड़कियां ज़्यादा हों। और अगर सिर्फ एक ही लड़की होवे तो १२ साल तक औलाद का सुख ख़राब करे।

४। दिल रेखा दुरस्त हो तो शुक्र का नीच फल न होगा।

५। उंच शुक्र खाना नंबर १२ का होता है। बृख २ व तुला ७ के घर का मालिक है। इस लिए उम्र ८५ साल तुला, ९६ साल बृख होगी।

फ़रमान नंबर १५२-१५३

शुक्र के निशान का असर

खाना नंबर	
१	सूरज के बुर्ज़ पर :- ये दोनों ग्रह एक दुसरे के दुश्मन हैं। सूरज प्रबल है। और शुक्र को नीच करता है या मातहत रखता है। शुक्र का फ़ल ख़राब और सूरज का ख़ुद अपना उत्तम। शुक्र आशिक़ाना और सूरज सूफ़ीयाना फ़ल का मालिक है। इश्क़ को धरम का परहेज़ नहीं है। इस के असर में इंसान धरम हिन तो ज़रूर होगा। मगर औरत भाईबंद सब इस से फ़ायदा उठाएंगे। वह ख़ुद उन से कोई ऐसा फ़ायदा न उठायेगा।
१	कुंडली में शुक्र का असर :- मेख़ राशि घर का मालिक मंगल है। जो शुक्र के बराबर का है। सूरज उंच करता है जो शुक्र का दुश्मन है। सनीचर नीच करता है जो शुक्र का दोस्त है। फ़ल के लिए सूरज है। जो ख़ुद कभी नीच नहीं होता। इस लिए औरत को तो सुख न होगा। मगर औरत का सुख हो। ७ साल यक़ीनी सुख हो। सवारी चौपाये, गाय, बैल का आराम हो।
२	बृहस्पत के बुर्ज़ पर - दोनों बाहम दुश्मन। बृहस्पत की बेरुनी हालत सूफ़ीयाना, अंदरूनी आशिक़ाना। यानी बाहर की हवा साफ़ और अंदरूनी बंद हवा गंदी हुआ करती है। सांस की तरह बाहर की हवा अंदर और अंदर की बाहर आ जाया करती है। बृहस्पत दुश्मनी नहीं करता। तमाम आराम। औरत का सुख, ख़ुशी की ज़िंदगी। ६० साल दौलत। मगर

	औरत ज़ात, माशूक़ा, बेवा तबाह करें।
२	बृख राशि :- घर का मालिक शुक्र ख़ुद चंदर उंच करता है। जो शुक्र के बराबर का है। और शुक्र से दुश्मनी करता है। नीच कोई नहीं करता। असर के लिए बृहस्पत का बुर्ज़ है। जो बृहस्पत के बराबर का है। और शुक्र इस का दुश्मन है। इस लिए अगर अकेला शुक्र हो तो ६० साल ज़र व माल का सुख। दुश्मन मग्लूब और अगर चंदर वगैरह से (दिल रेखा) मुश्तरका हो तो शुक्र का ख़राब फ़ल। इश्क़ व मुहब्बत का गलबा।
३	शुक्र के निशान का असर मंगल के बुर्जों पर :- मंगल और शुक्र बाहम मुसावी हैं। दोनों का अपना अपना फल होगा। मंगल नेक से नेक फल और बद से बद होगा। मंगल बद भी धरम के खिलाफ़ है। और इश्क़ या शुक्र को भी धरम की परवाह नहीं। मंगल नर है। शुक्र स्त्री ग्रह। इस लिए बुरा पुरुष और मंदी ज़नानी खूब मुबारक और बाहम ख़ुश होंगे। हिरण का चारा बैल खा जाये। झगड़े और बुरे कामों में फ़ायदा उठावे। अपने मकान का फ़ायदा न हो। बूरे मर्दों और बुरी औरत से मदद रहे। मगर तंगदस्त रहे।
३	कुंडली में शुक्र का असर मिथुन राशि :- घर का मालिक बुध है। जो शुक्र का दोस्त है। उंच राहु करता है। जो शुक्र का तो दुश्मन है। मगर बुध का जो घर का मालिक है दोस्त है। असर के लिए मंगल है जो शुक्र के बराबर का है। केतु नीच करता है जो शुक्र का दोस्त है। शुक्र का नेक फ़ल हुनरमंद (बुध से) और २० साल तीर्थ यात्रा (शुक्र केतु)। **(औरत सिर पर पगड़ी बांधकर मर्द के बराबर की होगी बहादुर होगी या मर्द को आदमी का काम देगी)**
४	चंदर के बुर्ज़ पर :- चंदर शुक्र बाहम मुसावी। मगर चंदर दुशमनी करेगा। शुक्र औरत और चंदर माता। नुंह सास का झगड़ा

भी होता है। और दोनों बराबर भी। मगर सास ही दुश्मनी करेगी। ख़ानदान की परवरिश करने वाला। लड़कियां (केतु) माँ अपनी या मर्द की औरत की मददगार, दादी की दुश्मन। लड़के दोनों माँ-बाप के लिए मुबारक। गर्ज़े की शुक्र का असर औरत के लिए मुबारक। मर्द ख़ानदान के लिए गैर मुबारक होगा बलिहाज़ आमदन।

४ कर्क राशि :- घर का मालिक चंदरमा है। जो शुक्र से दुश्मनी करता है। बृहस्पत उंच करता है। जिस से शुक्र ख़ुद दुश्मनी करता है। मंगल नीच करता है। जो शुक्र के बराबर का है। इस लिए औरत दो हों। ४ बरस ख़ूब आराम। बाग-बगीचे ख़ूब लगाए। जब बृहस्पत का असर हो जो किसी से दुश्मनी नहीं करता और शुक्र भी चंदर से दुश्मनी नहीं करता।

५ सिंह राशि :- सूरज का घर है। जो शुक्र को मातहत करता है। उंच-नीच नदारद। ५ साल माल व दौलत आवे। वरना जानी अय्याश। शुक्र के पतंग का असर होवे। **(मगर औलाद पर कोई बुरा असर न होगा)**

६ कुंडली में शुक्र का असर कन्या राशि :- घर का मालिक बुध केतु दोनों ही शुक्र के दोस्त। बुध (दोस्त) राहु (शुक्र का दुश्मन) उंच करते हैं। केतु तो नीच करता है जो ख़ुद शुक्र का दोस्त है। इस लिए ख़ूब दौलतमंद हो। वरना ४० साल दुश्मन हो। स्त्री सुख हल्का। (असर राहु) **(धन दौलत की कमी न होगीबमुजब नोट सफ़ा २५०शूककर के नीच का औरत बांझ होवे या लड़कियां ही लड़कियां होवे बमुजब सफ़ा ११९)**

७ शुक्र के बुर्ज़ पर :- अपना घर। स्त्री भाग में उत्तम फल होगा। ऐसे आदमी का पैसा धेला खा जाने वाले मर्दों से मुराद होगी। बल्कि इसके कारोबार में मंदा नतीजा देंगे। रूपिया पैसा औरतों

	के काम बहुत लगे। बुध के बुर्ज़ पर :- बाहम दोस्त। शादी, स्त्री, औलाद का सुख- नेक तबीयत, दौलतमंद। शुक्र बुध इकट्ठे हो तो ज़ानी अय्याश होवे। घर का मालिक ख़ुद शुक्र है। सनीचर ख़ुद दोस्त है - उंच करता है। नीच करने वाला सूरज है। जो इसका (शुक्र का) दुश्मन है। ये बुध का भी घर है। जो शुक्र का दोस्त है। मगर सूरज के असर में बुध चुप रहेता है। इस लिए शुक्र के बुर्ज़ पर शुक्र रेखा से कमाई दुसरे खा जाने वाले हों। और कारोबार में सनीचर की हालत करें। मगर बुध के मुक़ाम पर शादी रेखा उत्तम। ३७ साल औरत का आराम। शायर - ख़ूब आराम की ज़िंदगी वाला हो। अज़ तरफ़ औरत गो औरत को इतना आराम न हो। **(औरत ज़ात व गृहस्त का फल नेक होगा)**
८	कुंडली में शुक्र का असर - बृछक :- घर का मालिक मंगल है। जो शुक्र का मुसावी है। चंदर नीच करता है। जो शुक्र का दुश्मन है। गो शुक्र इस से दुश्मनी नहीं करता। उंच करने वाला नदारद। इस लिए मंगल नेक पर तो मुबारक। मंगल बद का असर (जब शुक्र मंगल बद पर हो) बद क़िरदार, ज़नाकार। शुक्र को अगर थोड़ी सी भी बुराई की लिए मदद मिले फ़ौरन इश्क़ व मुहब्बत बुलंद होता है। **(आतशक सुजाक वगैरह की तकलीफ भी हो सकती है)**
९	धन राशि :- घर का मालिक और असर के लिए बृहस्पत जो शुक्र से दुश्मनी नहीं करता। ख़ुद शुक्र इस से दुश्मनी करता है। केतु उंच करता है। जो शुक्र का दोस्त है। राहु नीच करता है - जो शुक्र का दुश्मन है। जिस का असर स्त्री सुख, दौलत व ख़र्च पर होगा। ऐसा आदमी अक़्लमंद वज़ीर के मानिंद, मगर दौलत सिर्फ़ २ साल पावे।

१० सनीचर के बुर्ज़ पर :- दोनों दोस्त। सनीचर शराबी होता है। औरत आशिक़ है दोनों का ख़ूब मेल मिलाप। सनीचर की मदद से सेहत बीमारी का बचाव। सनीचर की जवानी में औरत इश्क़ का घर। बुढ़ापे में दोनों ग्रह परहेज़गार और दुनिया का आराम। बूढ़े होकर दोनों अक़्ल देवें और आराम दे। बूढ़ी कंजरी नसीहत करने पर हो जाती है और दाई बन जाती है।

१० कुंडली में शुक्र का असर - मकर राशि :- घर का मालिक सनीचर है। जो शुक्र का दोस्त है। मंगल उंच करता है जो शुक्र के बराबर का है। बृहस्पत नीच करता है जो शुक्र का दुश्मन तो नहीं। मगर ख़ुद शुक्र इस से दुश्मनी करता है। इस लिए १२ साल ख़ूब दौलत आवे। वरना तनहाई पसंद (सनीचर हो)।

११ कुम्भ राशि :- घर का मालिक सनीचर जो शुक्र का दोस्त है। उंच नीच नदारद। असर के लिए बृहस्पत का घर है। जिस से शुक्र ख़ुद ही दुश्मनी करता है। १२ साल ख़ूब दौलत आवे। (सनीचर का असर) वरना कामदेव की ताक़त गुम या नामर्द और बुज़दिल होवे।

१२ मीन राशि घर का मालिक बृहस्पत व राहु। दोनों दुश्मन शुक्र के। नीच करने वाला बुध(दोस्त) राहु दुश्मन। केतु (दोस्त) और शुक्र ख़ुद ही उंच करे। असर के लिए बृहस्पत का घर जो किसी का भी दुश्मन नहीं है - जो दुश्मनी करे। ख़ुद दुश्मनी करे। अब शुक्र का ही अपना असर होगा। स्त्री को सुख हल्का मर्द को स्त्री का सुख पूरा। मगर राज दरबार से मरतबा। दुश्मन मगबूल और हर एक से आराम हो। मच्छ रेखा

शुक्र के बुर्ज़ पर मुबारक निशान है।

<u>नोट :-</u> शुक्र ख़ुद अकेला कभी बुरा फ़ल न देगा। इसे दूसरा ही ख़राब करता है। सब का मतीह और सब को प्यारा है। अगर पेशाब

की धार या पानी की लहर आई तो दब गया। ख़राब हुआ। सूरज की गरमी से तबाह हुआ। बृहस्पत की हवा के साथ दर-ब-दर हुआ। और इश्क़ में दूसरों के दरवाज़े पकड़े। राहु ने जुंबिश में डाला। चंदर ने बहू (शुक्र औरत, चंदर माता) बेटी माता तबाह किए। मंगल ने भाइयों का ताल्लुक ख़राब किया, आख़िर बुध ने मदद की। शादी रेखा को संभाला और अपना गोल दायरा देकर ज़मीन को गोल किया।

शुक्र

शुक्र की मिट्टी ने चंदर के दरिया समंदर को अपने ऊपर नीचे जगह दी। मिट्टी से इंसान बना और आख़िर मिट्टी में ही जल कर या दबाया जा कर ख़तम हुआ। जिस्म में किसी भी ख़ुराक के हज़म करने की ताक़त न रही तो शुक्र के दही ने ही जान बचाई। दही में घी, औरत से औलाद, मिट्टी से खेती। सब इसने दी। मतलब ये की शुक्र जब कभी भी खाना नंबर ६ में ख़ुद नीच हुआ। इसने मंगल बद का असर न दिया। शुक्र गुम से गो अकल गुम हुई और बुध ने साथ छोड़ा स्त्री जात को कुछ तकलीफ़ हुई मगर धन दौलत गुम न हुआ। अगर शुक्र नीच से अक़्ल गुम हुई तो नसीब ने हार नहीं दी। ....

हालत ये हुई की "लल्लू करे क़व्वालियाँ, रब सिद्धियाँ पावे।" यानी रोज़ी अक़्ल के हिसाब से होती तो नादान या बेवकूफ़ से तंग रोज़ी वाला और कोई न होता। यानी की शुक्र का नीच हो जाना अपने लिए मंद नहीं होता। इस लिए इस ग्रह का दुनिया से ताल्लुक होना या न होना कोई ख़ास फ़र्क नहीं देता। दुनिया का आशिक़ न होगा तो दुनिया का त्यागी ज़रूर होगा। इस लिए नहीं की बैराग से मगर इस लिए की इस में अक़्ल नहीं।

मंगल नेक सुर्ख रंग नेक होने पर जिस्म में ख़ून (रूह) की तरह जंगल में मंगल किया और बदी से हिरण की तरह भागा। मंगल बद हुआ तो कोई बदी न छोड़ी और हर एक को तलवार के घाट उतारा मगर माफ़ न किया।
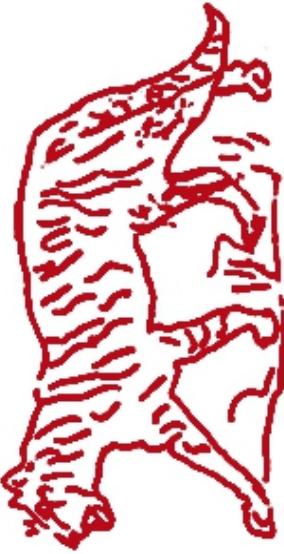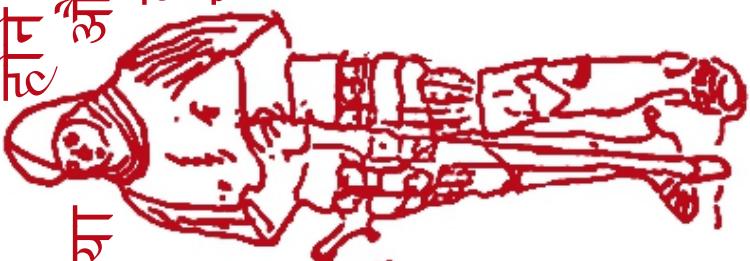
फ़रमान नंबर १५४

मंगल

१। गृहस्त में आराम ढूंढने की जमाने में जंग व जदल और लड़ाई भिड़ाई के साथियों, भाइयों, ताये, चाचे, वगैरह से नेक व बद ताल्लुक के ज़माने का असर देने वाले ग्रह को मंगल कहा गया है। साफ़ दिल, साफ़ नज़र, अंदर - बाहर से एक जैसा, ज़मीन में लाल (क़ीमती पत्थर), लावल्द के लिए औलाद, साफ़ लाल और पूरा आदिल होना इस ग्रह का काम है। हरदम खूनी झंडा एक हाथ और हिरण की तरह भाग जाना दूसरा पहलू है। सूरज की गरमी और सनीचर की तबीयत के बिलकुल बरखिलाफ़ रहेना इस का ज़रूरी हिस्सा है।

२। मंगल नेक □ चोकोर हंमेशा दुश्मनों से बचाता और मंगल बद △ दुश्मन पैदा करता रहेता है। नेक मंगल के बगैर सब गृहस्त बरबाद होगा। न भाईबंद न ससुराल ख़ुश होंगे। ये ग्रह **(मंगल नेक)** और बुर्ज़ जंगल में मंगल का असर करता है। **(मंगल बद शरीर फसादी - डरपोक घर फूँक कर तमाशा देखें बीमारी व जहमत का भण्डारी होगा।)**

फ़रमान नंबर १५५

मंगल नेक

१। मुआवन उम्र रेखा - उम्र रेखा की मददगार रेखा। जिस का पूरा हाल उम्र रेखा के साथ सनीचर के बुर्ज़ में हुआ है। गृहस्त रेखा के साथ मिलती-जुलती हुआ करती है। दोनों रेखाओं की जुदा जुदा पहचान ये है की गृहस्त रेखा तो

कमान की हालत में हुआ करती है। यानी ↄ गोलाई का एक सिरा बृहस्पत की जड़ में तो दूसरा सिरा शुक्र के बुर्ज़ पर अंगूठे की जड़ की तरफ़ हो जाया या झुक जाया करता है। मुआवन उम्र रेखा का वही रुख़ होता है जो रुख़ की उम्र रेखा का होता है।

मंगल नेक से मंगल बद को शाख़

२। ऐसी शाख़ बहुत कम हुआ करती है। एक बुर्ज़ (मंगल नेक) तो औरत ख़ानदान दूसरा बुर्ज़ (मंगल बद) माता ख़ानदान से मुतलका है। जो अमूमन जुदा जुदा ही हुआ करते है। और अगर ऐसी रेखा से मिल जावें तो बाहम दुश्मनाना असर देंगे।

३। और अगर मंगल के दोनों बुर्ज़ ही न हो तो भी नेक असर ही होगा। हौसला बा-क़माल होगा।

४। मंगल नेक से उम्र रेखा को शाख़ - शादी रेखा **(सफह २३५-२३७ जुज़ ४)** में ज़िक्र किया है।

५। शुक्र से रेखा या शुक्र को रेखा - गृहस्त रेखा का ज़िक्र ऊपर और मुआवन उम्र रेखा का दूसरी जगह ज़िक्र किया गया है।

६। धन रेखा या श्रेष्ठ रेखा का ज़िक्र जुदा जुदा अलाहदा ही हुआ है। जिन का मुक़ाम चंदर का बुर्ज़ भी माना गया है।

७। भाइयों की रेखा का ज़िक्र शुक्र के बुर्ज़ में हो चुका है।

८। सिर रेखा - दुरस्त और सही होने पर मंगल का असर ख़राब नहीं होता न ही शुक्र का बुरा असर होगा। (जब की दिल रेखा दुरस्त हो) मंगल नेक का किनारा या आख़िर इस जगह तक माना है। जो उम्र रेखा के दरिया की गुज़रगाह है।

सूरज
सनीचर
बृहस्पत
बुध
मंगल नेक
मंगल बद
गृहस्त रेखा
अंगूठे की जड़ में गई तो पोते-
पड़पोते देखे। सीधे डंडे की तरह
गई तो करजाई हुआ।अंगूठे की
तरफ़ पीठ कर के मंगल बद की
तरफ़ मुंह किया (तो गृहस्त
बरबाद हुआ
शुक्र
चंदर
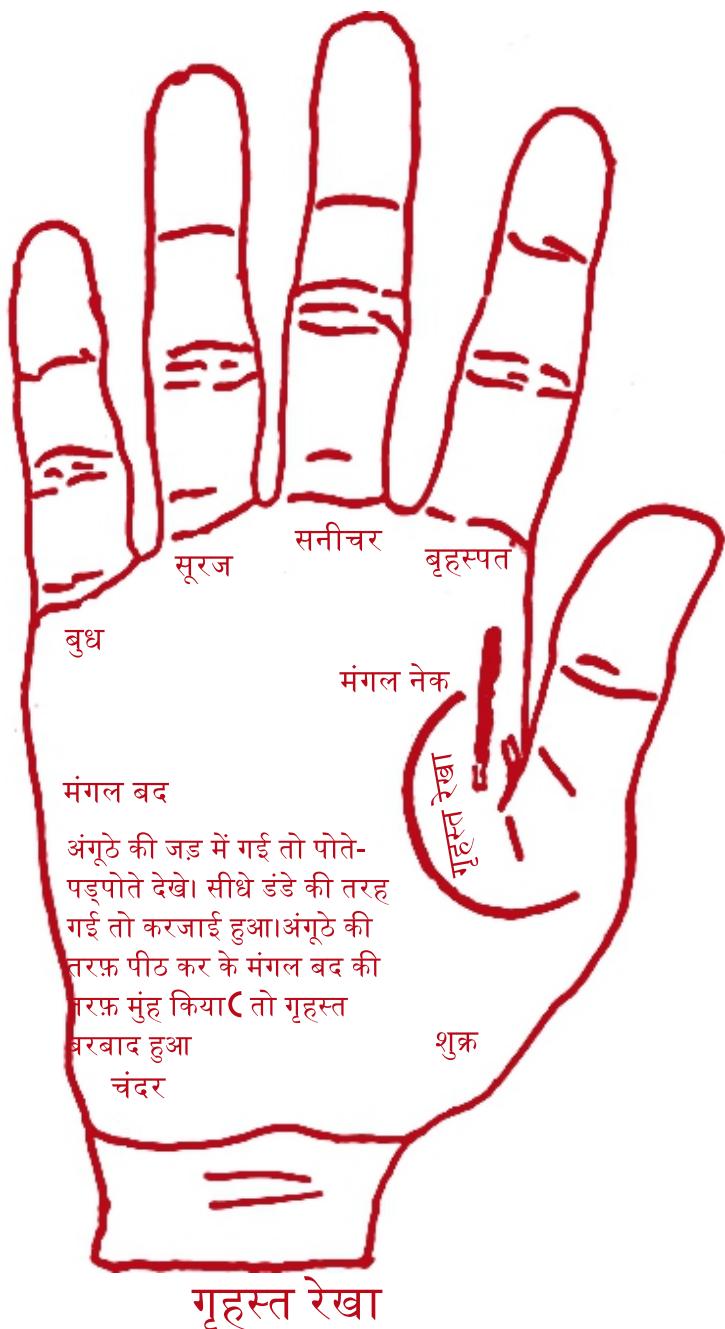
गृहस्त रेखा

फ़रमान नुम्बर १५६

मंगल नेक के बुर्ज़ पर रेखा और मंगल नेक की अपनी रेखा

१। गृहस्त रेखा :- ये रेखा औरत ज़ात के माँ, बाप, भाईबंद, और औरत के बाल बच्चे व दीगर मुतलका दुनिया का ताल्लुक बताती है। क़बीले का पूरा हाल देखने के लिए मच्छ रेखा (जिस का ज़िक्र सनीचर के बुर्ज़ में है) का ताल्लुक ज़रूरी है। (आधे दायरे की शक़्ल मंगल नेक के बुर्ज़ पर ही की लंबाई इस रेखा की दुरस्त पैमाइश है।

(मंगल खाना नंबर ७ शुक्र खाना नंबर ३)

बृहस्पत मंगल नंबर ७

२। अगर ये रेखा बिलकुल अलिफ की तरह सीधी खड़ी हो तो माक़ूल आमदन होते हुए भी वह शख़्स करजाई होगा।

३। अगर ये रेखा ख़मदार हो कर शुक्र के बुर्ज़ में अंगूठे की तरफ़ झुक जावे तो बड़ा ही अयालदार दौलतमंद। औलाद, स्त्री और दुनिया का सुख भोगने वाला होगा। इस शक़्ल के बरखिलाफ़ कारवाई इस वक़्त होगी। जब की शक़्ल नंबर १० हो जावे।

४। गृहस्त रेखा अगर रेखा सिर रेखा से मिल कर ख़तम हो जावे **(मंगल बुध मुश्तरका)** तो फ़िक्र-ओ-ग़म, तकलीफ़, दुख बहुत देखेगा। और अगर सिर रेखा को काट कर

(मंगल सनीचर नंबर ७ उम्दा) (मंगल सनीचर नंबर ३ मंदा)

(मंगल बुध नंबर ६)

आगे बढ़ जावे तो बुध (सिर रेखा) का बुरा असर (बुध मंगल का दुश्मन है) न होगा।

५। सिर रेखा जहां उम्र रेखा से मिलती है, वहां गृहस्त रेखा मिले तो भी बुध की दुश्मनी का सिर पर, खयालात पर बुरा असर होगा।

(मंगल बुध नंबर ३)

६। और अगर सिर रेखा से जहां तक सिर रेखा अकेली है मिली हुई होवे तो भी बुध का बुरा असर होगा। और जब सिर रेखा को अबूर कर के ख़तम होवे।

6

सिर रेखा

७। बृहस्पत पर दौलतमंद हो। ससुराल दौलतमंद हों और ससुराल से जायदाद मिले। **(मंगल खाना नंबर २)**

८। सनीचर पर मालदार अयालदार पोते -पड़पोते वाला हो। **(मंगल खाना नंबर १०)**
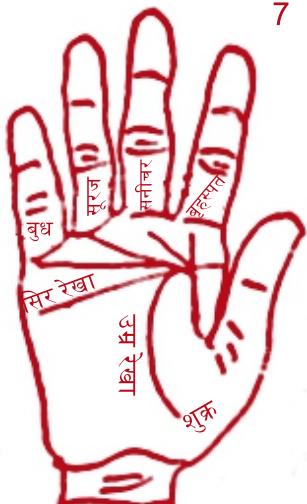
९। सूरज पर **(मंगल खाना नंबर १)** मजबूत जिस्म हो। औरत

ज़ात और औरत ख़ानदान को अपना माल व दौलत खिलाता रहे और उनको तारता रहे।

१०। शुक्र पर :- ◡ मंगल नेक और अंगूठे की तरफ़ को गई हुई शाख़ औरत ख़ानदान और औरत के भाईबंद मुखाल्फ़त पर होंगे। ज़हर के वाक़ियात पेश होंगे। ये शक़्ल ऊपर ज़िक्र करदा शक़्ल नंबर ३ के बरखिलाफ़ होती है। यानी गृहस्त तबाह होवे। **(मंगल सनीचर खाना नंबर ३ में)**

१० A। मंगल नेक से शाख़ सिर रेखा के नीचे नीचे आख़िर सिर रेखा तक ही रह जावे या सिर रेखा में मिल जावे तो औरत ख़ानदान के आदमी कारोबार में साथी होंगे। जिन का कोई फ़ायदा न होगा। सिर्फ़ खा पीकर चले जाएँगे। **(शुक्र बुध खाना नंबर ३)**

मंगल नेक पर शाख़ें

१०B। बुध के बुर्ज़ पर :- सिर रेखा को अबूर कर के जो बुध की ही रेखा है बुध के बुर्ज़ में मंगल नेक से रेखा चली जावे तो कोई नेक असर की उम्मीद नहीं। क्यूं की वुध और मंगल मुसावी ताक़त के हैं। और बुध मंगल से दुश्मनी पर रहेता है। ऐसी हालत में मुतलका दुनिया से झगड़े फ़साद, ज़बान की महरबानी और सिर की पैदा करदा या ख़ुद अपने बद खयालात का नतीजा होंगे। **(मंगल बुध नंबर ७ में)**

११। यही हाल मंगल रेखा का इस वक़्त होता है। जब वह सिर रेखा को अबूर कर के बृहस्पत, सनीचर, सूरज या बुध की तरफ़ का रुख कर के दिल रेखा या चंदर की रेखा पर ही ख़त्म हो जावे। क्यूं की रास्ते में बुध अपना बुरा असर कर गया था। **(मंगल बुध मुश्तरका से दूसरों का साथ)**

१२। बृहस्पत की तरफ़ को जब मंगल ररेखा बढ़ी हुई हो तो उम्र रेखा रास्ते में आई। जब की उम्र रेखा के साथ बुध रेखा या सिर रेखा मंगल नेक के बुर्ज़ पर पहले ही मिल चुकी थी। ऐसी हालत में उम्र रेखा या सनीचर रेखा

(मंगल बुध नंबर ३ उम्दा)

भी मंगल से दुश्मनी पर है। और बुध या सिर रेखा भी दुश्मनी पर। अब अगर उम्र और सिर दोनों मिली हुई हों (मंगल सनीचर बुध) तो भी दुश्मनी ही होगी। मगर मंगल नेक की गृहस्त रेखा जब उम्र और सिर रेखा के मिलने के मुक़ाम पर ही इन दोनों से मिलकर ही खतम हो जावे तो कोई नेक असर न होगा।

१३। हां जब ये उम्र रेखा व सिर रेखा के मिलने की जगह का मुक़ाम हथेली की अंदर की तरफ़ ही रह जावे और अगर गृहस्त रेखा को ऊपर बृहस्पत में जाने की लिये रास्ता साफ़ मिल जावे तो बृहस्पत का पहले ज़िक्र किया हुआ फ़ल यानी दौलतमंदी और ससुराल अमीर या ससुराल से जायदाद वगैरह ज़रूर नसीब होगी। क्यूं की सनीचर ख़ुद तो मंगल से दुश्मनी नहीं करता। मंगल ही सनीचर से बैर विरोध करता है।

(मंगल सनीचर नंबर २)

१४। इस तरह जब गृहस्त रेखा इस ज़िक्र शुदा मिलने की जगह (जहां उम्र या सनीचर रेखा और बुध या सिर रेखा मिली हुई होती है।) को अबूर कर के सनीचर में चली जावे तो सनीचर तो दुश्मनी नहीं करेगा। अगर दुश्मनी करे तो मंगल ख़ुद ही करेगा। अब इस जगह मंगल का नाम मंगल नेक ही है। इस लिए सनीचर का बुरा असर

(मंगल सनीचर नंबर १०)

न होगा और सनीचर नेक फ़ल ही देगा। यानी सनीचर की पैदा करदा बीमारीयां, मौतें या दीगर उदासी और तबाही ख़ानदान में न आवेगी। हाँ मंगल नेक ख़ुद ही बुरा असर करे तो बेशक़ करे। यानी क़बीले वाले बाहम रगड़ा-झगड़ा करने कराने में लगे हो तो मुमकिन है। मगर क़ुदरत की तरफ से कोई मौत हादसा वगैरह दरपेश न होगा। **(मंगल नंबर १० से और ग्रहों की द्रुष्टी का वक़्त)**

१५। गृहस्त रेखा जब सूरज के बुर्ज़ पर पहुंची तो बुध या सिर रेखा और दिल या चंदर रेखा तो सूरज का नाम सुन कर खामोश हो गई। मगर सनीचर या उम्र रेखा का बुरा असर होता ही रहा। सनीचर सूरज का लड़का और सूरज के खिलाफ़ हंमेशा दुश्मनी पर रहेता है। सूरज का जिस्म भी मजबूत है। मगर सूरज की किरणों के मुक़ाबले में सनीचर की बदफैल कौवे की आंख बहुत होंशियार है और चारों तरफ + (सनीचर का निशान) दरमियान में बैठी देखती रहती है और सूरज से दुश्मनी करती है। अमूमन सुना होगा की सूरज की तपिश या गरमी हद से ज़्यादा हो गई हो और सूरज ख़ूब चमक रहा हो तो कौवे की आंख अपना काम धूप और चमक में करती रहेती है। और कहा जाता है की धूप इतनी थी की कौवे की आंख निकल रही थी। या गरमी के मारे कौवे की आंख भी आंखों से निकल कर भाग जाना चाहती थी। अब सूरज की कमाई जिस क़दर बढ़ती जावे सनीचर की आंख औरत ज़ात के क़बीले को सब कमाया हुआ धन दौलत पहुंचा देती है। बृहस्पत पर जब गृहस्त रेखा गई तो ससुराल से दौलत मिली। अब गृहस्त रेखा जब सूरज पर गई तो ससुराल ख़ानदान को दौलत मिली। सूरज की सब कमाई औरत ख़ानदान या औरत की आंख ने खा ली। यानी साले बहनोये या औरत की आंख ने जो देखा वही इन का सूरज

(मंगल सनीचर नंबर १)

के घर से उन को चला गया। औरत की आंख कौवे की तरह निहायत होंशियारी से सूरज की तमाम दौलत उड़ाती चली गई। और सूरज की कोई पेश न गई। मुतलका दुनिया भी ऐसा बरताओ करती रही। किस्सा कोताह औरत की पूजना और आंख की पूजना या आंख है तो है जहान की पूजना दरपेश रही। औरत सिर्फ़ अपनी ही से मुराद नहीं वह औरत जिन की आंख स्याह रंग होवे भूरी आंख वाली औरत मर्द के ख़ानदान की परवरीश में सूरज की कमाई लगायेगी मगर स्याह रंग आंख वाली औरत ख़ुद अपने माँ-बाप के कुटुंब क़बीले की ही पालना में लगी रहेगी। ऐसा मर्द औरत की कबूतर बाज़ी और उन की रंग बिरंगी आंखों के तमाशे देख कर ख़ुश होगा। और अपना सब रूपिया पैसा उन पर क़ुरबान कर देगा। सनीचर को मीन राशि का मालिक मछली स्याह रंग। मीन राशि खाना नंबर १२ मद्धमा उंगली जो सनीचर की उंगली पर है मुक़र्रर हुई है। जो राहु की भी राशि है। जिसे बुध ख़राब या नीच करता है। यानी स्याह रंग आंख की मछली या औरत का सुख बरबाद कर देता है। और शुक्र और केतु उस राशि को उंच करते हैं। यानी वह औरत जिस की आंख सनीचर की या स्याह रंग न होवे या वह शख़्स जिस का कारोबार सफ़र से ज़्यादा ताल्लुक रखता होवे बच जाता है। सनीचर का अपना वजूद भी मगर मच्छ माना है। मछली और मगरमच्छ की आंखें पानी में भी देखती हैं। यानी चंदरमा की दिल रेखा का, चंदरमा के पानी का दरिया सनीचर या मछली और मगरमच्छ की आंख को मदद देगा। मुख़तसरन सूरज पर गृहस्त रेखा से औरत ख़ानदान सूरज की कमाई से मालामाल हो जाता है।

फ़रमान नंबर १५७

मंगल के बुर्ज़ का असर खाना नंबर ३

(१) इस बुर्ज़ के दो हिस्से है। एक नेक दूसरा बद - असर साफ़ साफ़ है। □ नेक △ बुरा मंगल होगा। मंगल □ मेख नंबर १ घर का

मालिक और उंच मकर नंबर १० का उंच होगा। इस लिए उम्र ९० साल होगी। मंगल बद ८ बृछक का मालिक और कर्क नंबर ४ का नीच होगा। इस लिए उम्र ८५/९६ साल होगी। ९० से ज़्यादा होगी।

मंगल के बुर्ज़ का असर खाना नंबर ३

(२) नज़र बिनाईका असर - पेशा जंगी व जंगी ताक़त। हरदम सुर्ख़ झण्डा, जल्लाद, बेरहम, सरदार बा-रौब, दौलतमंद मगर औलाद कम। औरत का सुख हल्का, (मंगलिक औरत मरे, औलाद का सुख न हो) मुतलका दुनिया दुश्मनों का ताल्लुक बलिहाज़ जंग व जदल। जंगी तदबीर का मुतसदी। दौलतमंद मगर माल हराम का एक ज़र्रा भी न साथ मिलावे। बिलकुल सनीचर के खिलाफ़। दुश्मन बेशक़ ज़्यादा मगर जैर हों। ससुराल व ताये-चचे का ताल्लुक भी इसी बुर्ज़ से ज़ाहीर होता है।

मंगल बद खाना नंबर ८

इस बुर्ज़ की हदबंदी :- दिल रेखा शुमाल में। सूरज की तरक़्क़ी या सेहत रेखा मशरिक़ में और तह पर चंदर का बुर्ज़। इस बुर्ज़ से ताये-चचे का ख़ानदान अपने क़बीले के दूसरे भाईबंदों का ताल्लुक होगा। जब शुक्र के ख़त इस बुर्ज़ पर हों तो ताये-चचे और दुसरे मर्द मुराद होंगे। और हर तरह से मददगार होंगे। अगर ये शुक्र रेखा सिरे पर दो शाखी हो तो औरतों से मुराद होगी। अब औरत ज़ात नुक़सान का सबब हो सकती है। अगर शक़्ल होवे तो बद मंगल का पूरा असर बरबादी का होगा। औरत जात ताई-चची ख़ुद बरबाद होगी और बरबादी का सबब ऐसे हाथ वाले के लिए भी होगी। इस बुर्ज़ पर औलाद का भी ताल्लुक है। फ़र्क ये होगा की हथेली के किनारे पर हथेली से बाहर की तरफ़ के ख़त यानी वह ख़त जो हाथ को फैला कर (हथेली ऊपर आसमान की तरफ़) ज़मीन पर रखने के वक़्त हथेली से बिलकुल बाहर ही मालूम हो वह औलाद का ताल्लुक बतायेंगे। और जो अंदर हथेली में मालूम हों वह ताये-चचे होंगे।

मंगल बद को मंगलिक उस वक़्त कहेंगे। जब मंगल कुंडली के खाना नंबर ४ व ८ में हो ऐसा मंगल औरत ज़िंदा न रहने देगा। मगर औरत की बजाए माता पर कोई बुरा असर न देगा। **(इस का असर औरत होने पर फ़ौरन शुरू होगा।)**

फ़रमान नंबर १५८ व १५९

मंगल नेक के निशान का असर

खाना नंबर	
१	सूरज के बुर्ज़ पर :- दोनों ग्रह बाहम दोस्त और मंगल नेक तो है ही सूरज का साथ होते हुए। वज़ीर बा तदबीर, दुश्मन गो ज़्यादा हों मगर क़ुदरती तौर पर ही दुश्मनों से पूरा बचाव हो और ज़ेर हों। लकड़ी के ब्योपार में भी नफ़ा रहे। दोनों ग्रहों का अपना अपना और उत्तम फल होगा। औसत आमदन ७.५० रुपये। अरसा मुलाज़मत २८ साल। **सफा २५९-२६० जुज १५**
१	कुंडली में मंगल का असर - मेख राशि :- मंगल का अपना घर है। सूरज उंच करता है जो मंगल का दोस्त है। सनीचर नीच करता है जो मंगल के बराबर का है। असर के लिए सूरज का घर है। जो इस का दोस्त है। राजदरबार से फ़ायदा वरना ६ साल जिस्मानी तकलीफ़ (सनीचर) या मंगल बद का ताल्लुक होगा। **(गृहस्त रेखा सूरज के बुर्ज पर सफा २५९-२६० जुज़ १५)**
२	बृहस्पत के बुर्ज़ पर :- दोनों दोस्त हैं। दौलत की पूरी प्राप्ति और दौलत जमा। ख़ानदान का सरदार होवे। दोनों का मुश्तरका फल और उत्तम होगा। **सफा १५० जुज १५ सफा १५३ जुज ६**
२ बुध बृहस्पत का बुर्ज	बृख राशि :- शुक्र का घर है। जो मंगल के मुसावी है। चंदर उंच करता है जो मंगल के मुसावी है। बृहस्पत का घर असर के लिए है। जो इस का दोस्त है। नीच करने वाला कोई ग्रह नहीं है। ख़ानदान का सरदार और दौलत की पूरी प्राप्ति या मिलना। हर तरह से आराम हो। अगर मंगल बद का ताल्लुक हो तो कम नसीब, ९ बरस बीमारी का डर रहे। और बुरा ही असर होवे। **(ससुराल का ताल्लुक सफा १५० जुज़ १५ व सफा १५३ जुज़ ६)**
३	मंगल के बुर्ज पर : मंगल नेक पर तो ससुराल ख़ानदान अमीर हों

और उन से नफ़ा हो। आम मुतलका दुनिया से मदद। मंगल बद पर हो तो जंगी तदाबीर में माहिर और अक़्लमंद होवे।

३ (मिथुन मंगल के बुर्ज)

कुंडली में मंगल का असर - मिथुन राशि :- बुध का घर है। जो मंगल के मुसावी है। अगर बद मंगल हो तो बुध दुश्मनी करता है। राहु उंच करता है। जो मंगल के वक़्त चुप रह जाता है। केतु नीच करता है। जो मंगल बद का दुशमन है। जंगी तदबीरों में होंशियार ससुराल अमीर और उन का सुख हो। अगर मंगल बद हो तो आम दुनिया की दुश्मनी, शरीर, औलाद का सुख कम हो। सफ़र गले लगा रहे। और १५ साल जिस्मानी तकलीफ़ हो।

४ (कर्क चंदरमा का बुर्ज)

चंदर के बुर्ज़ पर :- दोनों बराबर, दोनों का उत्तम, चंदर का नेक प्रबल होवे। **(अगर मंगल बद हो तो मांगलिक होगा जो अपने लिए उत्तम होगा दूसरों को मारे और जलायेगा)**

कर्क राशि :- घर का मालिक चंदर है। जो मंगल का दोस्त है। बृहस्पत उंच करता है। जो मंगल का पूरा दोस्त है। मंगल ख़ुद ही इस घर को नीच करता है। मंगल नेक से नेक असर। बद से बदबख़्त। २ साल तकलीफ़ होवे।

५ (सिंह औलाद)

कुंडली में मंगल का असर - सिंह राशि :- घर का मालिक सूरज है। जो मंगल का असली दोस्त है। इस राशि को कोई उंच नीच नहीं कर सकता। औरत व औलाद का आराम होवे। अगर मंगल बद का ताल्लुक हो तो आग का खौफ़ व ख़तरा व नज़र के असर ख़राब होने का डर है।

६

कन्या राशि :- घर के मालिक बुध और केतु जो दोनों ही मंगल बद के दुश्मन हैं। बुध (दुश्मन) राहु (चुप रहने वाला) उंच करते हैं। केतु जो दुश्मन है नीच करता है। मंगल नेक से हंमेशा ही नेक असर

कन्या केतु	(भाई इस के इस से हर हाल में कमज़ोर हों। और अगर माली हालत में अलाहदा हो तो अचानक बड़ी भारी नुक़सान का मुंह देखे) .... और हर तरह का आराम। रागी होगा। औरत व दोस्तों का सुख हो। २४ साल औलाद होती रहे। मंगल बद से ख़राब असर होवे हर बात में झगड़ा और हानी हो।
७	मंगल नेक के निशान का असर - शुक्र के बुर्ज़ पर :- दोनों बराबर के हैं। दोनों का और उत्तम फ़ल होगा। औरत का सुख पूरा। वज़ीर या मुत्सदी होवे। रोते को हंसाने वाला हो। " इको अक्ख सुलखनी झुक झुक करन सलाम" दो आँखों वाले यानी शुक्र की अगर एक आंख भी होगी तो भी दो आंखों वाले झुक झुक कर सलाम करेंगे। गृहस्त का आराम होगा। ख़्वाह औरत कानी ही होवे। इसी लिए कहा है की औरत आंख से बेशक़ कानी होवे मगर रंग से काली न होवे। बुध के बुर्ज़ पर :- मंगल और बुध बराबर है। मगर बुध दुश्मनी करता है। इस लिए मंगल की दौलत को बुध ख़ुद ही ख़राब करेगा। मगर इल्मे हिसाब जानने वाला होगा।
७ तुला राशि शुक्र व बुध का बुर्ज	कुंडली में मंगल का असर - तुला राशि :- घर का मालिक शुक्र है। जो मंगल के मुसावी है। सनीचर भी मुसावी है। जो उंच करता है। सूरज नीच करता है जो इस का दोस्त है। बुध व शुक्र का असर का घर है। इस लिए औरत से धोका, १७ साल आग का खौफ़ रहे। न अक़्ल मदद देवे न स्त्री मददगार हो। जब की मंगल बद का ताल्लुक होवे। और अगर नेक मंगल हो तो औरत का सुख पूरा। वजीर या (बुध से) रोते की हंसाने वाला। छोटा वज़ीर और धर्मात्मा हो।
८	बृच्छक राशि :- मंगल बद का अपना घर। चंदर नीच करता है। जो इस का

बृछक मौत	दोस्त है। उंच करने वाला कोई ग्रह नहीं है। इस लिए अगर मंगल बद हो तो २२ साल मौत का डर। और अगर नेक हो तो फ़तहमंद, सुखी, हर तरह से गृहस्त का आराम हो।
९ धनु करम धरम	कुंडली में मंगल का असर धन राशि :- बृहस्पत का घर है जो मंगल का दोस्त है। केतु उंच करता है जो दुश्मन है। नीच करने वाला राहु है जो चुप रहेता है। अगर मंगल नेक हो तो नेक व दौलतमंद और अगर मंगल बद हो तो बदी का पुतला होगा। बदतुख़्म कहलाएगा।
१० मकर राशि सनीचर का बुर्ज	सनीचर के बुर्ज़ पर :- दोनों बाहम दुश्मन है मगर बदी के सरदार होंगे। इस लिए दो दुश्मन का एक ही उसूल के सबब उत्तम फ़ल हो जावेगा। सब को लूट खसूट कर बड़ी भारी जायदाद की जायदादों वाला होगा। और सेहत उम्दा होगी। इस बुर्ज़ पर मंगल बद △ भी जादू मंतर जानने वाला होगा।
१०	मकर राशि : सनीचर घर का मालीक है जो मंगल के बराबर का है। मंगल ख़ुद ही उंच करता है। और बृहस्पत नीच करता है। जो इस का दोस्त है। अगर मंगल नेक हो तो दौलतमंद। अगर मंगल बद हो तो १५ साल ही तकलीफ हो।
११ कुम्भ आमदन	कुम्भ राशि :- सनीचर का घर है। जो मंगल के बराबर का है। असर के लिए बृहस्पत का मुक़ाम है। उंच-नीच नदारद। नेक मंगल हो तो २४ साल दौलत जमा। अगर मंगल बद हो तो औलाद से रंजीदा व बे-आराम होवे।
१२ मीन राशि	कुंडली में मंगल का असर - मीन राशि :- सनीचर का घर है जो मंगल के बराबर है। घर का मालिक बृहस्पत (दोस्त), राहु (चुप रहने वाला) शुक्र (बराबर का) और केतु इस का दुश्मन उंच करते हैं। बुध दुश्मन

ख़र्च स्त्री दौलत का सुख

और राहु (चुप रहने वाला) नीच करते हैं। अगर मंगल नेक हो तो फ़ल नेक। स्त्री सुख व दौलत जमा और अगर मंगल बद हो तो बेवकूफ़ी के कामों में दौलत ख़र्च हो जावे और ५ साल नुक़सान का डर होवे।

नोट

९। केतु (पापी ग्रह) बदनाम ज़रूर है। मगर तबाही न देगा यानी अगर लड़के न रहने देवे तो लड़कियों की तादाद ज़रूर ही बढ़ा देगा दो में से एक कर देगा मगर सिफ़र न होने देगा नेक होवे तो लड़के ही लड़के देगा। रास्ते का छलावा या छलेड़ा होगा मगर जान से न मारेगा। **सफा २४ फरमान नंबर ५६**

ये दोनों राहु केतु सनीचर का सुभाव रखते हैं। मगर सनीचर की ताक़त नहीं रखते। यानी ईल्लत (शरारत) होते हैं मालौल (शरारत का नतीजा) नहीं हो सकते।

(i) जब दो से ज़्यादा ग्रह इकट्ठे **(एक ही घर में बैठे)** हो जावें तो दुश्मन ग्रह अपनी दुश्मनी छोड़ देंगे मगर बाहमी दोस्ती न छोड़ेंगे।

(ii)

नर ग्रह	मर्दों पर	स्त्री ग्रह	स्त्रियाँ पर
सूरज	मर्दों पर	चंदर	मोअन्नास
बृहस्पत	मर्दों पर	शुक्र	
मंगल	मर्दों पर		

पर असर करेंगे। मुखन्नस ग्रह तमाम बाकी चीजों पर असर करेंगे। जो न नर हो न मादा बल्कि धाती मदनी व दीगर हवाई हों।

(१) बृहस्पत :- किसी ग्रह का दुश्मन नहीं। अपना पहला निस्फ़ अर्सा यानी ८ साल हंमेशा नेक फ़ल देगा। ख़्वाह अपने घर बैठा हो ख़्वाह दुसरे दुश्मन के घर गया होवे। लेकिन इस के घर आए हुए पापी या दुश्मन ग्रह बुरा फ़ल देंगे। **बृहसपत सफा १८३ फरमान नंबर १३२ A**

(२) सूरज :- ख़ुद नीच न होगा। दुसरे दुश्मन ग्रहों का फ़ल नीच कर देगा। राहु केतु भी इस के असर के सामने दीवारें खड़ी कर सकते है। दीवार हटी तो सूरज का असर फ़ौरन वही पहला पूरा हो गया। बुध और चंदरमा दोनों ही अपनी अपनी ताक़त इसे ही दे देते हैं।

(३) चंदर :- दुश्मन ग्रहों के वक़्त अपना नेक फ़ल देना ख़ुद ही बंद कर देता हैं।

मगर दुसरे का फ़ल ख़राब न करेगा। अगर दुनियावी फ़ल नेक न देगा तो आक़ीबत का नेक फ़ल ज़रूर देगा। ज़ाहीरा दुश्मन हो तो दिल से या अंदरूनी गैबी फ़ल नेक होगा। बुध की तरह सूरज के वक़्त अपनी ताक़त सूरज को ही दे देता है। सनीचर की तरह बीज नाश नहीं करता। बल्कि अगर बरखिलाफ़ी करेगा तो सिर्फ़ एक से कुल ख़ानदान से दुश्मनी न करेगा।

(४) शुक्र :- ये ग्रह किसी के फ़ल को ख़राब नहीं करता। बल्कि दुश्मन के साथ अपनी ही बुराई या कामदेवी ताक़त को बढ़ा कर ख़राबी करवा कर बदनाम हुआ है। सिर्फ़ एक ही आँख से देखने लग जाता है।

(५) मंगल :- नेक मंगल पूरा आदिल होगा। सूरज का साथ होगा। राहु इस के साथ बैठा चुप होगा।

मंगल बद :- बद मंगल सब तरह से बुरा और पूरा ज़ालिम है। सूरज का साथ हरगिज़ न होगा। पूरी स्याही अंधेरा और मौत देगा।

(६) बुध :- जिस के साथ मिला (ख़्वाह साथी भला करने वाले हो ख़्वाह पापी हो) उस की ताक़त बढ़ा दी। सूरज/मंगल नेक के साथ अपना निस्फ़ अर्सा चुप होगा। (मंगल नेक है ही वही जिस में सूरज हो) और ये सूरज के साथ चुप होगा।

(७) सनीचर (पापी ग्रह) :- पाप के वक़्त सिर्फ़ राहु केतु का पैदा करदा बहाना ढूंढता है। और फ़ौरन जड़ से बुरा कर देता है।) अगर सूरज जमा/रोशनी का मालिक है तो सनीचर तफ़रीक़/अंधेरे का धनी है। यानी सूरज के खिलाफ़ चलेगा। ये ग्रह अगर नेक हो जावे तो सूरज, बृहस्पत वगैरह सब से बढ़ कर होगा। सब के घर से माल उठा कर अपने ही घर में जमा कर लेगा। और तार देगा। ऐसी हालत में दूसरों के लिये बुरा और हद से बुरा मगर अपने लिए भागवानी का सबब होगा।

(८) राहु (पापी ग्रह) :- एक राहु की मदद के वक़्त कुल दुनिया ही के दुश्मनों की परवाह नहीं। हंमेशा केतु के उलट और मंगल नेक के वक़्त चुप चाप होगा। जब बुध का दोस्त होवे कभी बुराई न करेगा। ये ख़ुद न मारेगा मगर मरने या मारने की इल्लत या ताक़त या रास्ते पैदा कर देगा।

फ़रमान नंबर १६०

मंगल बद के बुर्ज़ पर रेखा और

मंगल बद की रेखा

१। ये बुर्ज़ माता के भाईबंद या पिता के भाईबंदों से मुतलका है। इस बुर्ज़ से जो रेखा सूरज की रेखा को जिस का नाम सूरज की तरक़्क़ी रेखा है और बुध की तरफ़ चलती है - जा काटे तो भाईबंदों, ताए, चाचे, पिता औलाद अपनी या भाई की औलाद की मौत ज़ाहीर होगी। (मंगल बुध बाहम दुश्मन) मगर स्त्री, लड़की, मामी या किसी भी मादा हस्ती मदीन की मौत न होगी। सब नर होंगे जो मौत का शिकार होंगे। शुक्र या चांद से आई हुई ऐसी शाख़ मादा या औरतों की मौत करेगी। बशर्ते की ऐसी रेखा का रुख़ बुध की तरफ़ होवे। यानी मंगल की तरफ़ से चल कर बुध या सिर रेखा को काटने की गर्ज़ से ये रेखा टेढ़ी होती जा रही हो।

(मंगल बद नंबर ५)

२। और अगर मंगल बद से सीधी ही मंगल नेक की तरफ़ भागने का रुख़ करती हुई शुक्र रेखा होवे मानिंद —— मौतें तो न होंगी मगर पेशा या कारोबार में मुखालफ़त ज़रूर होगी। बल्कि कारोबार बरबाद होंगे।

३। अगर क़िस्मत रेखा को टेढ़ी या सीधी लकीर (जिस दोनों का पहले

(मंगल बद नंबर ३)

(मंगल बद नंबर ५)

ज़िक्र किया) आ काटे **(मंगल बद खाना नंबर २)** तो मौतें या रुकावट अपने हक़ीक़ी रिशतेदारों और अपने ही कारोबार में मुखालफ़त होगी। और अगर सेहत या तरक़्क़ी रेखा को काटें तो क़रीबी रिशतेदारों पर बुरा असर होगा।

४। सिर रेखा अगर बहुत ही लंबी बढ़ कर मंगल बद में पहुंच जावे तो ख़ुद तो तेज़ फ़हम और अक़्ल का होंशियार होगा। मगर मामुं और मामुं ख़ानदान बरबाद होवे। अव्वल तो मामुं सफ़ाचट हो। और अगर ज़्यादा हो तो लावल्द और आगे मैदान औलाद तबाह वगैरह सब बुरा असर होवे।

4

दिल रेखा

सिर रेखा

बद

बुध

(बुध नंबर ८)

५। और अगर सिर रेखा मंगल बद की तरफ दो शाखी होवे तो भी बुरा ही असर है। यानी बुध के तीर को मंगल बद का मुंह लगा है। जो मामुं ख़ानदान को मौत में पहुंचाये बगैर न रहेगा। और उन की आइंदा औलाद वगैरह सब ख़तम कर देगा।

(मंगल बुध नंबर ८)

६। और अगर सिर रेखा से कोई शाख़ मंगल बद को जावे तो जिस उम्र में ऐसा शख़्स होंश संभाले और मंगल के असर का ज़माना ७-१४-२१-२८ वगैरह होगा। मामुं

घर से बाहर होगा। यानी साधू वगैरह हो जावे और अदम पता हो जावे। तो मामूली ही बात है। बहरहाल ऐसी हालत में मामुं सिर पर स्वाह या राख डाल कर ही बच सकता है। मगर वह भी अपने घर में नहीं बच सकता। और अगर घर में ज़िंदा होवे तो मुर्दे के बराबर ही होता जावे। कारोबार में सखत सदमे मुलाज़मत में मौक़ूफ़ी वगैरह जो कहो सच।

(मंगल बुध सनीचर नंबर ८)

मंगल बद शाख़ें

७। शुक्र और बुध को :- बुरा असर क्यूं की शुक्र की तरफ़ उम्र या सनीचर रेखा दुश्मन है। बुध को या सेहत रेखा को बुध दुश्मन है।

(मंगल बद नंबर ७)

८। मंगल नेक को :- नेक असर बशर्ते की रास्ते में बुध या सिर रेखा या उम्र या सनीचर रेखा का ताल्लुक या असर न हुआ होवे। यही हाल बृहस्पत और सूरज को चली जाने वाली शाख़ से होगा। चंदर को शाख़ निहायत नेक असर देगी। **(मंगल बद मय चंदर नंबर ४)** सनीचर को शाख खराब असर देगी। **(मंगल बद नंबर १०)**

(मंगल बद नंबर ३)

९। क़िस्मत रेखा या सेहत रेखा शाख़ों का ज़िक्र पहले हो चुका है। उम्र और सिर रेखा से मिलाओ मनहूस नतीजे देगा। **(मंगल बुध सनीचर मंदा)**

१०। मंगल बद के बुर्ज़ पर हथेली के किनारे हथेली के बाहर के हिस्से पर सीधे लेटे ख़त —— ताये,चचे और दो शाखी ऐसी शाख़ के मुंह पर की शाख़ें ऐसी औरत के लड़के गिने जाएंगे। बेवा ताई, चाची जाहीर करेगी जो किसी न किसी ऐसे मर्द की तबाही का सबब होगी। उस को "पैरी पोना" कहा या किसी न किसी तरह से इस की आशीर्वाद लेने से बचाव होता रहेगा।

फ़रमान नंबर १६१

मंगल सनीचर केतु

१। कुंडली में मंगल बद का असर मंगल सूरज के बगैर वही बुज़दिल हिरण होता है। हिरण के साथ कुत्ता अगर अपना मुंह छुआ भी देवे पकड़े या न पकड़े हिरण ख़ुद-ब-ख़ुद ही दिल छोड़ देगा और लेट जायेगा। मगर जब मृग पहाड़ी चित्ता होगा शेर से भी शैतान और ज़बरदस्त शरारती होगा। मंगल बद का दोस्त सनीचर मुर्दा हिरण की खाल मृगशाला पर ज़हरीला सांप हरगिज़ न चढ़ेगा। इसी लिए साधू ने मृगशाला पसंद की है।

जो मंगल बद मंगल मनफी या बरबाद करने वाला मंगल है। इस के मन या दिल में जो "गल्ल" बात आती है, बद ही होती है। ये हंमेशा मन को चलायमान ही रखता है। हंमेशा दिल को बूरे कामों में ले जाता है। इसी असूल पर हर बुर्ज़ की ताक़त ख़राब करता है। हर वक़्त वही ख़रगोश की तीन टांगे दिखलाता है। (जब ख़रगोश बैठता भी है तो भी अगली दोनों टांगों को ऐसी जोड़ कर रखता है की एक ही मालुम होती है। गोया अगर ऊपर एक है तो नीचे दो होती है। यही तीन कोने तीन काणे हर खेल दिखलाता है। कभी पग बारह (पौं बारह) या बारह जमा एक कुल तीन से १३ न दिखलाएगा। दुनिया में रहा तो दुनिया को त्रैलोकी कहलाया। और तीन टुकड़े कर दिये। दुनिया से निकला देवताओं में गया तो कुल दुनिया के देखने वाले शिवजी भोले नाथ जी की नरमी का फ़ायदा उठाया। आंखें दो की तीन कर दी। त्रैलोकी को

देखने वाला हुआ। मगर दुनिया को मार देने वाला या मौत का देवता (ब्रह्मा पैदा करने वाला, विष्णु जी पालने वाला) और शिवजी **(लालकिताब साफ १९८ जुज़ ३ चंदर को उम्र का मालिक शीवजी माना है)** मारने वाले बना दिया। यही आंख कुंडली के ग्रहों में सनीचर या सब की आंख (सनीचर को आंख माना है) पर फ़िर ज़ाहीर हुआ। अब ज़ाहीरा आंख बंद कर के दुनिया को सहारा दिया। तो क्या हुआ। पहले नंबर ३ A पर मंगल नेक जो था अब तीन के हिंदसे के तीनों निशान मिला कर ३ से ८ हुआ और खाना नंबर ८ (उर्दू का आठ और अंग्रेज़ी का आठ 8) बन गया। और बृछक राशि बिच्छू बन गया। मौत का घर हुआ। मुरदों को भी बे-आराम करने लगा। (कहते है - बिच्छू मुरदों को भी ज़िंदा कर लेता है। आख़िर पर बदनामी को धोने के लिए बड़े भाई मंगल ^ के कदमों में गिरा यानी ^ के नीचे लेट गया तो तिकोण △ ही सामुद्रिक में हो गया। गर्ज़े की इस ने अपनी बदी की ख़सलत न छोड़ी। बड़े भाई ने (मंगल नेक) तो सनीचर के साथ मिल कर यानी सनीचर के बुर्ज़ के खाना नंबर १० के हिंदसे से ३ जमा १० तेरह १३ या पग बारह का नाम पाया। यानी त्रिशूल पर मियान □ गिलाफ़ दे दिया। और सनीचर के बूरे असर से सब को बचाया। यानी चौकोर (जो तिकोण के साथ चौथी लकीर मिल गयी तो चार गोशा हुआ।) इसी असूल पर घर मकान तीन कोने सब से बुरा। और चार कोना सब से उत्तम है जहां वाक़े हो नेक असर पैदा होगा। और सूरज का असर ज़रूर साथ होगा। (सूरज के बगैर वही मंगल बद रह जाता है। यानी सूरज साथ मिले तो मंगल का असर नेक होगा। साथ मिलने का नाम ही जमा होना या ३ जमा १३ होता है।) मंगल नेक ने तंग आकर इस का साथ छोड़ा और इस से घर ही जुदा कर लिया। और हाथ पर दायें तरफ़ जा बैठा। गोया दोनों भाइयों ने तमाम बर्रेआज़म को दो हिस्सों में बांट दिया। एक तरफ़ १३ और दूसरी तरफ़ ३। दोनों का फ़र्क़ दरमियानी जगह १० का हिंदसा रह गया। जो बाकी सब की क़िस्मत है। इस लिए कहा जाता है की "न ३ में न १३ में न टोकरी के बैरों में।" सफ़र बुध का दायरा शुक्र की तमाम ज़मीन को गोल कीए हुए है। और एक का हिंदसा सनीचर

की आंख को सीधे ख़त से मिलाये हुए उर्ध रेखा कहलाती है। इस उर्ध रेखा की दायीं तरफ़ की शाख़ें मुबारक असर और हाथ के बायें तरफ़ की शाखें मनफी जवाब देगी। यानी उर्ध रेखा से दायें को शाखें हो तो मकान वगैरह बनेंगे। दुनिया बढ़ेगी। बायें को हो तो सनीचर सूरज के हिस्से के नीचे हो जाएगा और सूरज रोशनी पर स्याही फेरता जायेगा। (सनीचर सूरज बाहम दुश्मन) या क़िस्मत के लिखे को मिटाता जायेगा और मकान बनने बंद क्या बने हुए मिटा देगा या बिकवा देगा। क्यूं की मंगल बद बूरे को बुराई की तरफ़ चलने में मदद देगा। इस मंगल का पहला बृहस्पत और हाथ का कोना सब से आख़िर चंदर। (ज़माने में सब से पहले हवा और तीसरे नंबर पर पानी (हवा, आग, पानी फ़िर मिट्टी बनी) क्या ही अच्छे थे। यानी बात का शुरू और आख़िर क्या ही उम्दा थे? बात दरमियान में हाथ का दरमियानी हिस्सा दायां - बायां दोनों मंगल नेकी - बदी मिली मिलाई ताक़त राहु - केतु पैदा हुए) ऐसा खराब हुआ की सब से आख़िर नंबर पर बनने वाली चीज या हवा बाद आग बाद पानी से मिट्टी बनी या शुक्र बुर्जों की कुल तादाद का आख़िरी हिंदसा कुंडली के खाना नंबर ७ (बुध-शुक्र मुश्तरका) बध के दायरा की कुल गोल ज़मीन का बोझ संभालने वाला नर टुकड़ा जो ज़मीन की कीली और अंगूठा कहलाता है। बिलकुल ही हाथ के इलाके के बर्रेआज़म से जुदा होकर बाहर को निकल भागा। और इस शुक्र के बुर्ज़ ने भाइयों की मुहब्बत न छोड़ी। इसी वजह से शुक्र को सिर्फ़ मुहब्बत ही पसंद आई। मगर अंगूठे ने जो अपने हाथ के घर से दर-ब-दर हुआ। हौसला न छोड़ा। इसी असूल पर दुनिया बरउम्मीद या हौसला क़ायम है। या तमाम हाथ की ज़मीन अंगूठा (हौसला) की कीली पर चल रही है। और शुक्र से बुध (ज़मीन गोल) की सूरज रेखा (खाना नंबर ११) सूरज के खाना नंबर१ का असर (ख़ूब धन दौलत, स्त्री सुख, दुनियावी सुख, कारोबार या ब्योपार में लाभ) खाना नंबर ११ में ले जा रही है। यानी मंगल के पेट में छुरिया फ़िर रही है। (अब मंगल के पेट पर ◻ IIII ≡ डालें या मंगल का पेट काटें तो ▦

राहु बन गया। जो इस बृहस्पत के घर में गुम शुदा चीज की तरह ख़ुद-ब-ख़ुद पैदा हो गया) मगर मंगल का पेट ऐसा नहीं जो छुरिया फिरवा ले। और राहु पैदा करवा ले। मंगल के होते हुए राहु होता ही नहीं या राहु का असर हुआ ही नहीं करता या मंगल वही है जिस में राहु पैदा न हुआ। यानी खाली चौकोर ◘ हो। इसी मंगल के हौसले से दुनियादार फ़िर पेट संभाले दुनिया में आ निकलता है। ख़्वाह आ जाने के बाद राहु होवे या ख़ुद इंसान राहरौ घोड़ा या मुसाफ़िर (राहरौ फ़ारसी में रास्ते चलने वाला) बन जावे। ए मंगल बद अगर तूने दुनिया (पैसा धेला व आराम व सुख को बरबाद किया तो दिन या धरम - ईमान भी तो न तुझ से बच सका। तूने न बृहस्पत का ईमान छोड़ा न चंदर की माँ का करम धरम रहने दिया। हरदम सब को खोटे कर्मों में लगाया। जब सूरज को कलंक (बदनामी का धब्बा) लगा तो शुक्र बेचारे की मिट्टी (औरत की अस्मत) कहां बच सकी। इश्क़ ने तो जिस घर से सिर उठाया सिर्फ़ इस को ही मिटा के छोड़ा। मगर तूने तो मंगल नेक से बच्चे पैदा होते ही अपने लाल रंग से बच्चे को लाल पैदा हुआ कहलाया। जंगल में मंगल के लिए (मंगल नेक बृख में सूरज निकला, मंगल बद बृछक मौत) को मौत के लाल हलवान से मौत का झण्डा याद करवाया और सब ही सब बुर्जों की शक्ति या ताक़त बरबाद कर दी। अगर मर्द को खाना नंबर आठ या मौत दिया तो औरत को अठराह (एक मरज़ है) की इनायत बख़्श दी। जिस से इस बेचारी का कोई बच्चा आठ साल या अगर क़िस्मत का दस का हिंदसा साथ मिल गया। तो १८ साल के बाद ज़िंदा न रहने पाया। इस ८ और अठराह के हिंदसे मकान की ज़मीन को भी मनहूस गिनाया। (गोशे की ८-१८-१★३-३ सब बूरे) ★ ३+१० की लक़ीर मंगल बद मैं चली जाती है।

२। सिर रेखा के सही होते **(बुध कायम)** हुए मंगल बद का असर न होगा।

३। मंगल बद का असर बुर्जों पर ▲।

खाना नंबर

१	सूरज का बुर्ज़ :- मनहूस, बुज़दिल, बदबख़्त।
२	बृहस्पत का बुर्ज़ :- कम नसीब, झगड़ालू। झगड़ा हवा की तरह उड़ कर

	गले लगा रहे।
३	मंगल नेक :- मुखालफ़त आम दुनिया से।
	मंगल बद :- बुज़दिल, शरीर फसादी।
४	चंदरमा का बुर्ज़ :- दिल रेखा पर तो दिल की रखना अंदाज़ी शरारत अगर चंदर के बुर्ज़ पर तो खोटे करम करने वाला (जब बज़रिआ पितृ रेखा यानी जब उम्र रेखा चंदर के बुर्ज़ पर जा पहुंचे और किनारे पर तिकोण सी बनावे) ज़बान की बीमारियाँ मगर चोरों का दुश्मन हो।
५	औलाद :- अठराह की बीमारी।
६	केतु :- दोनों का बुरा असर होवे।
७	शुक्र का बुर्ज़ :- औरत को सुख हल्का होवे। अंगूठे की जड़ पर ▲ हो तो इश्क़ मुहब्बत में ज़्यादा रगबत रखने और इश्क़ व मुहब्बत पराई औरत में बदनाम हो। माशूक़ की मौत होवे।
	बुध के बुर्ज़ पर :- बदचलन, बदबख़्त, दूसरों के काम बिगाड़ता फिरे।
८	मौत :- उम्र रेखा पर बुरी मौत हो।
९	करम-धरम :- हंमेशा धरम के खिलाफ़ रहे।
१०	सनीचर का बुर्ज़ :- सनीचर का दोस्त अगर मद्धमा की जड़ में तो जादू मंतर में माहिर।
	मंगल बद का असर :-
११	आमदन :- क़िस्मत रेखा शुरू में शक्की हालत में है। यानी दो शाखी लेंगे। या मंगल बद हर दो हालत में वालदैन की माली हालत, सुख चैन ख़राब और हल्के होंगे **(काग रेखा का असर होगा)** । क़िसमत रेखा की जड़ में ऐसे आदमी की पैदाइश में जरूर भेद होवे जिस का जाहीर करना मुश्किल होवे।
१२	खर्च :- की मशलस का मुफ़सिल ज़िक्र जुदी जगह है। स्त्री सुख, ब्योपार वगैरह सब हल्का। शकल ∧ में सिर्फ़ मंगल बद का असर यानी सुख

दौलत और नज़र बिनाई का असर लेते हैं। मगर ▲ शुक्र का साथ या बुरा असर गिनते हैं।

अगर दो रेखा से ऐसी शक्ल हो तो दो शाखी कहलायेगी। जिस का ज़िक्र जुदा है। और अगर जुदा ही निशान होवे तो मंगल बद -

सिर रेखा सही हो तो मंगल बद का असर न होगा

मंगल के दोनों बुर्ज़ ही क़ायम न हो तो एक ही आदमी लाखों के मुक़ाबला करने की ताक़त वाला होगा।

नोट :-

मंगल नेक का हर जगह का असर नेक या जिस जगह पर हों उस जगह का असर यक़ीनी नेक हो और अगर मंगल बद हो तो हंमेशा और हर जगह का असर बरबाद करने वाला होता है। सूरज जब खाना नंबर ८ में हो जो मंगल बद का घर है। इस हालत में मंगल बद को मंगल नेक ही लेंगे। क्यूं की अब सूरज साथ है। ऐसा सूरज कभी मारग स्थान का न होगा।

बुध : सब्ज़ रंग तोता-मैना, भेड़-बकरी, सिर- ज़बान का
मालिक,हर जगह गोल व सब्ज़ हीरा
(चाटने से जहर ज़बान के रास्ते
इंसान मरे) हीरा सब को
काटे मगर इतना नरम की
ख़ुद कलई (धात) से कट जावे।
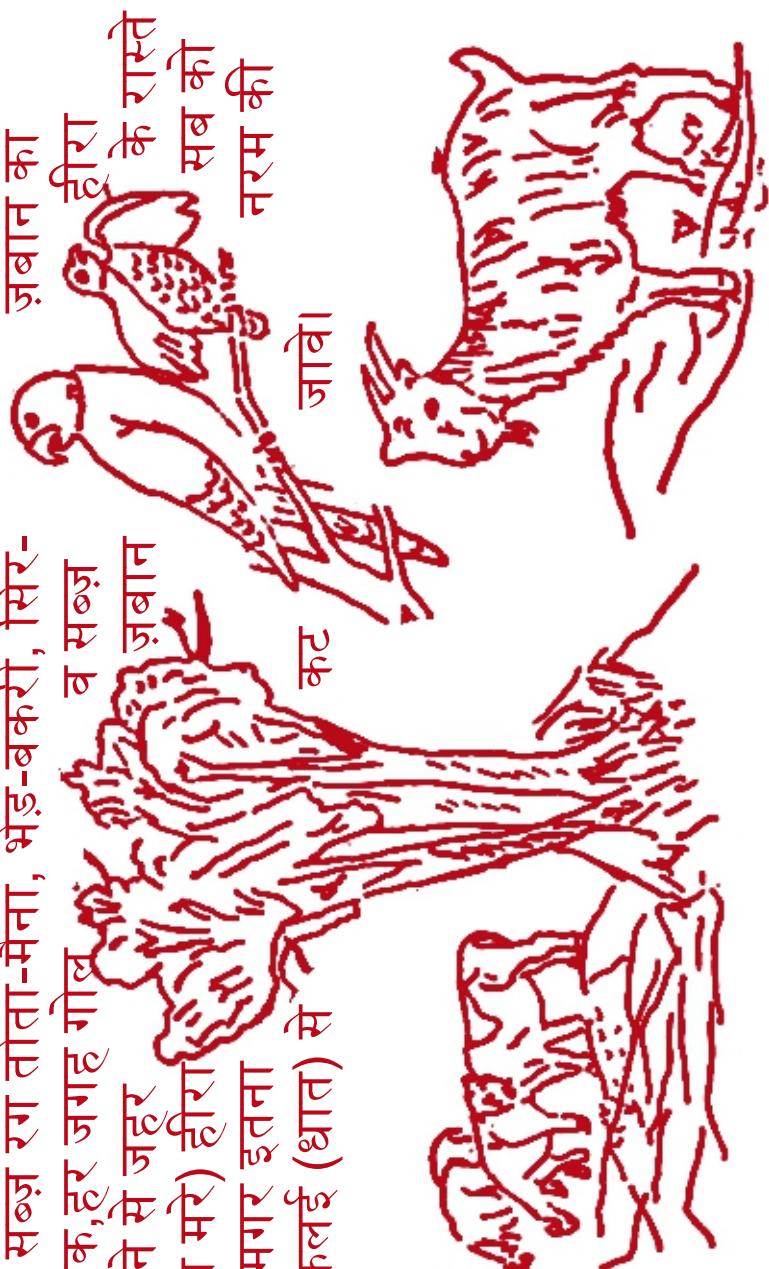
फ़रमान नंबर १६२

बुध

अक़्ल, बुद्धि, दोस्ती, सिर और ज़बान के काम इसी दायरे का काम है। दो दुश्मन ग्रहों का नेक व बद फ़ल बदलने की नाली का असल मालिक बुध ही है। या दो मुखालीफ़ों के दरमियान रहने वाला और नेक काम करने वाला बुध है। सनीचर में भी ये सिफ़त है मगर बदी के कामों की। तोता वगैरह इस की ताक़त का पूरा सबूत होंगे। सूरज के लिए बुध और मंगल बद से बचाने के लिए बुध एक ज़रूरी ग्रह है। मगर ख़ुद शुक्र के बगैर पागल होगा यानी शुक्र जो इस का असल दोस्त है। अगर नीच होवे तो ये ख़ुद ही कम ताक़त हो जावेगा।

फ़रमान नंबर १६३

बुध के बुर्ज़ पर रेखा और

बुध की अपनी रेखा

(१) सिर रेखा **(बुध खाना नंबर ३-६)** - मंगल नेक के बुर्ज़ से सेहत रेखा की हद तक इस रेखा की दुरस्त लंबाई है। आख़िर पर दो शाखी होना ख़ुद अपने लिए तो कोई मंदभाग नहीं। मगर मामुं की तरफ़ के लिए नुक़सान देने वाली होती है। जिस का मुफ़सिल ज़िक्र मंगल बद के बुर्ज़ में है।

बुध की रेखाएँ

सनीचर
बृहस्पत
सूरज
सिर की
श्रेष्ठ रेखा
बुध
चंद्रमा की दिल रेखा
सिर की श्रेष्ठ रेखा
सिर की श्रेष्ठ रेखा
ख़ूनी रेखा
सिर रेखा
मंगल
नेक
मंगल
बद
तबदीली
खयालात रेखा
ख़ुदकुशी की रेखा
सनीचर की उम्र रेखा
शुक्र
चंदर

(२) शुरू में उम्र रेखा से जुदी होने पर पिता का सुख ख़राब होने कआ ज़िक्र मुफ़सिल तौर पर इसी बुर्ज़ में दर्ज है।

(३) उम्र रेखा के साथ जब शुरू में मिली हुई होवे तो नेक असर देगी। ऐसा आदमी **उम्दा सेहत व** हमदर्द होगा बुध और सनीचर बाहम मुसावी और दोस्त हैं।

(४) सिर रेखा अगर बगैर शाख़ —— इकहरी या अकेली होवे तो ऐसा आदमी लालची और देश-परदेश में फिरने वाला होगा।

(बुध सनिचर नंबर २)

(५) (जुज़ नंबर २ और १४ से मुतलका) शुरू के वक़्त अगर उम्र रेखा से न मिले तो न सिर्फ़ ये की पिता का सुख हल्का होगा। बल्कि क़बीले का बोझ इस पर ज़्यादा होगा। इसे अपनी ज़ात पर पूरा भरोसा होगा। और भरोसा भी इतना की उसे मग़रूर गिना जा सकता है। मगर वह तबीयत का नेक और क़बीला पालने वाला होगा। अपनी क़िस्मत को आप बनाने वाला होगा। अकेला सिर सब से मुक़ाबला करने वाला होगा। **(बुध देखें बृहस्पत को)**

(६) सिर रेखा का दूसरा नाम "मातृ रेखा" भी है। गो चंदर बुध से दुश्मनी करता है। मगर जब इस रेखा में मातृ भाव हो जावे तो चंदर के बुर्ज़ का ताल्लुक नेक होगा। चंदर और

बुध रेखाओं का बाहम मिल जाना वाकई दुश्मनी का असर देगा।

(७) मातृ रेखा के ऊपर की तरफ़ अगर मुशलश △ होवे तो मंगल बद का निशान तो ऐसे शख़्स की माता पहले मर जावे। क्यूं की मंगल न सिर्फ़ बुध का दुश्मन है बल्कि चंदर से भी दुश्मनाना असर करता है।

(मंगल बद नंबर ८ व बुध नंबर ६ या चंदर नंबर ६ व मंगल नंबर ४)

(८) और अगर ये मुशलश △ इस सिर रेखा की नीचे की तरफ़ हो तो वालदा के ज़िंदा होते ही वह शख़्स पहले मर जायेगा। क्यूं की अब मंगल बद का सिर्फ़ बुध पर असर होगा।

(९) अगर दोनों हालत में दोनों ही ज़िंदा हों तो दोनों को बाहमी सुख न होगा। एक लिए दूसरा मुर्दे से भी बदतर होगा।

(१०) अगर मातृ रेखा गहरी व साफ न हो तो माता का सुख कोई यकीनी न होगा। अगर चंदर का बुर्ज़ क़ायम हो तो माता की उम्र लंबी और इस का आराम ज़्यादा होगा।

(११) सिर रेखा जिस क़दर दिल रेखा के नज़दीक होती जावे। यानी सिर रेखा और दिल रेखा का दरमियानी फासला जिस क़दर कम होता जावे। दिल रेखा या चंदरमा का बुरा असर इसी क़दर बढ़ता जावे और

(बुध नंबर ८ व मंगल बद नंबर ६ या १२ मगर चंदर या सूरज का ताल्लुक न हो)

12

(मंगल बृहस्पत नंबर २ बुध नंबर ६)

ऐसा आदमी तंग दिल होता जावे।

(१२) सिर रेखा के शुरू में बृहस्पत के बुर्ज़ के पांव में अगर ☐ चोकोर या मंगल नेक होवे तो दिमाग़ी लियाक़त से ऐसे आदमी को दौलत की पूरी प्राप्ति (लाभ और आमद) हो।

(१३) सिर रेखा पर विसर्ग या आंखों से अंधा होवे। **(चंदर सनीचर नंबर ६-७)**

(१४) (नंबर ५ से मुतलका) सिर रेखा अगर उम्र या पितृ रेखा का साथ छोड़ कर बृहस्पत के बुर्ज़ की तरफ़ रुख़ करे **(मंगल बृहस्पत नंबर ६ बुध नंबर २)** तो बुध अपना बुरा असर देगा यानी बृहस्पत या पिता का सुख न होगा या पिता बृहस्पत के असर के वक़्त १६ साल से शुरू होने के बाद (छ साल अरसा बृहस्पत और इस के बुध के अर्से के दरमियान यानी ६ का निस्फ़) ३ साल या कुल १९ साल के क़रीब फ़ौत हो जावे और अगर ज़िंदा होवे तो भी मुर्दे से बदतर होवे। बहरहाल वालिद का सुख न होगा। बृहस्पत और बुध बाहम मुसावी हैं। इस लिए सिर रेखा या बुध रेखा या मातृ रेखा या वालदा पर कोई असर न होगा वह अपनी उम्र पूरी भोगेगी और तकरीबन ८० साल के क़रीब होगी। क्यूं की बुध मिथुन और कन्या राशि का मालिक है। **सफा १५० शकल १६ सफा १६३ जुज २० सफा १६४ जुज २५**

ऐसा आदमी क़दरे मूतकब्बिर होगा। अपनी ज़ात पर उसे पूरा भरोसा होगा। मुफ्त माल न पाएगा। अपनी क़िस्मत को आप बनाने वाला होगा। **(कम औलाद या औलाद से महरूम होगा)**

फ़रमान नंबर १६४

शाख़ें

१। सिर की श्रेष्ठ या उत्तम रेखा - सिर रेखा के ऊपर और दिल रेखा के नीचे या सिर रेखा और दिल रेखा दोनों के दरमियान अगर सिर रेखा के साथ साथ दौड़ने

(बुध नंबर ६)

वाली एक और सिर रेखा हो तो सिर की श्रेष्ठ रेखा कहलायेगी। ऐसा आदमी माले हराम से नफ़रत करेगा या उसे माले हराम वफ़ा न करेगा। सिर या दिमाग़ के ज़रिये नेक कमाई करेगा जो उसे बरकत देगी। सिर की ताक़त दुगुनी होगी। तहरीर व तक़रीर में यावर होगा। या सिर (दिमाग़) और ज़बान की ताक़त पूरी होगी और आख़री वक़्त ज़बान बंद न होगी। अपने दिमाग़ से किए काम में धोका न खायेगा। दस्ती काम या हुनरमंदी और पेशावरी के काम की निस्बत तिजारत या तहरीर व तक़रीर के कामों से पूरा फ़ायदा लेगा।

२) सिर रेखा के सही होने की हालत में मंगल बद का इस की ज़ात पर कोई असर बुरा न होगा यानी झगड़े में हंमेशा कामयाब होगा।

३) सिर की श्रेष्ठ रेखा चंदर के बुरे असर से बचाएगी। "अमूमन ऐसे हाथों वालों की माता मर ही जाती है छोटी उम्र में। बाद में अगर सौतेली माँ भी हो तो भी नीच असर देगी।" यानी अगर चंदर का बुर्ज़ नीच भी हो जावे तो भी चंदर की बरबादी से बच जायेगा। चंदर नीच होने के वक़्त बेशक़ माता का सुख न होगा। मगर खेती, ज़मीन और दरिया पार से नुकसान न पायेगा। शुक्र का बुर्ज़ गुम हो तो अक़्ल ख़राब (बुध) होगी।

४। सिर की श्रेष्ठ रेखा अगर बृहस्पत से बुध पर चली जावे तो किताबों का काम, दिमाग़ी काम, किताब खाना, छापखाना वग़ैरह से तिजारत के पैमाने का फ़ायदा और बुध के हर तरह से मुकम्मल और क़ायम होने का फल होगा। ये रेखा भी "राजयोग" होती है। जिस के असर का वक़्त क़िस्मत रेखा से मालूम होता है। अगर ये श्रेष्ठ रेखा बृहस्पत से सूरज पर जावे तो राज दरबार या अहले सरकार से पूरा फ़ायदा उठावे जिस का जरिया दिमाग़ी और तहरीरी काम होगा और अगर ये रेखा सूरज की बजाये सनीचर पर ही ख़तम हो जावे तो जायदाद पैदा करे।

(बृहस्पत नंबर ६ व बुध नंबर २)

हर हालत में नेक और ईमानदारी की कमाई होगी और बरकत वाली कमाई होगी।

(५ नंबर २० से मुतलका) सिर रेखा की ऊपर की बजाये अगर नीचे की तरफ़ सनीचर के बुर्ज की तह के क़रीब कोई दूसरी लकीर हो तो सिर रेखा इस लकीर को लट्टू की सुई की तरह बतौर अपना महवर कर लेगी। यानी ऐसा आदमी हर लम्हा अपने खयालात को बदल लेगा ख़्वाह ये कमज़ोरी दिमाग़ का ख़याल हो ख़्वाह बारीक बीनी या ज़्यादा सोच विचार का सबब हो वह अपने खयालात ज़रूर बदलने वाला होगा।

छोटी शाख़ें

६। सिर रेखा से अगर कोई शाख़ ऊपर दिल रेखा में जा कर ख़तम हो जावे तो चंदरमा दिल पर बुरा असर करेगा। या दिल की ख़राबी से सिर बुरे काम करेगा। या ऐसा आदमी खूनी होगा। (चंदर बुध का दुश्मन है।)

७। अगर सिर रेखा नीचे चंदर की तरफ़ झुकती जावे **(शक्ल १२ सफा २८५)** तो भी सिर बुरे काम करेगा मगर ऐसी हालत में सिर ख़ुद अपने जिस्म को मारेगा। पराई मुसीबत को अपने उपर ले कर ख़्वामख़्वाह बरबाद होगा या फ़रज़ी वहम में अपनी सिर की कमज़ोरी दिखलायेगा और ये कमज़ोरी जब सिर रेखा चंदर के बुर्ज़ में ही चली जावे उतनी ज़्यादा होगी की **(जिस की वजह गुरबत या मुसफ़री वगैरह ही न होगी)** ख़ुदकुशी करेगा।

८। बुध को :- सिर रेखा से अगर कोई शाख़ जो (अकेली या इकहरी) बगैर शाख़ हो तो तिजारत में फ़ायदा तो होगा मगर ऐसा आदमी लालची और जूठा होने की वजह से देश परदेश में मारा मारा फिरता रहेगा।

९। सनीचर के बुर्ज़ में :- निहायत बुरी और मनहूस जिंदगी होने की वजह से ख़तरा मौत होगा। क्यूं की दरमियान में दिल रेखा

(चंदर बुध नंबर १०)

का चंदर का दरिया चल रहा है। जो बुध और सनीचर दोनों का ही दुश्मन है।

९A। मंगल बद को :- बुरा असर जिस का मंगल बद में ज़िक्र है।

१०। मंगल नेक को :- ख़ुश गुजरान होगा। माता पिता का सुख हो और क़ुदरती मदद का साथ मिले।

10

सिर रेखा
मंगल नेक

(मंगल बुध नंबर ३)

११। शुक्र को :- औरतों की मदद और गृहस्त का आराम होगा बशर्ते की सिर रेखा से उस का मिलाप सूरज के बुर्ज़ की तह से इधर मंगल नेक की तरफ़ या सनीचर के बुर्ज़ की तह की हदबंदी तक ही रहे और अगर शुक्र के बुर्ज़ से शाख़ सिर रेखा के साथ सूरज के बुर्ज़ की तह में मिले तो मुखालफ़त औरतां होवे। (सूरज शुक्र का दुश्मन है।

(शुक्र बुध नंबर ६)

१२) चंदर को :- (बुध का चंदर दुश्मन) बुरा असर होगा।

(बुध नंबर ४)

(बृहस्पत बुध नंबर ६)

१३। बृहस्पत को :- (बुध बृहस्पत का दुश्मन) - बुरा असर होगा

१४। सिर रेखा से ऊपर को दो शाखी रेखा की हर दो शाख़ें जिस जिस बुर्ज़ पर हों वह दोनों बुर्ज़ अपना नेक असर देंगे ये सिर्फ बुध, सूरज और सनीचर के बुरजों का होगा मगर बृहस्पत का बुरा असर होगा क्यूंकी बृहस्पत बुध का दोस्ताना नहीं है। यानी बुध या सिर रेखा की दो शाखी की

एक शाख तो होवे	दूसरी होवे
१४। बुध के बुर्ज़ पर तिजारत में कामयाबी **(बुध को सूरज देखे)**	सूरज पर या सूरज की तरफ़ - दिमाग़ी काबिलियत सूरज की तरह चमके।
१५। सूरज पर या सूरज की तरफ ऊपर लिखा हुआ असर होगा।	सनीचर पर या सनीचर की तरफ़ जायदाद मिले और जायदाद पैदा करे। **(बुध को सनीचर देखे)**
१६। बुध पर :- ऊपर लिखा हुआ असरहोगा।	सनीचर पर :- ऊपर लिखा हुआ असर होगा।

१७। बुध के बुर्ज़ पर शादी रेखा औलाद रेखा - सूरज से बुध को रेखा - शुक्र का पतंग - चंदर से शाख़ बुध के बुर्ज़ को (अंदरूनी अक़्ल) चंदर से बुध

को रेखा (सफ़र रेखा) वगैरह का जुदा जुदा ज़िक्र हो चुका है।

१८। धन और श्रेष्ठ रेखा का ज़िक्र सनीचर के बुर्ज़ में है।

१९। सिर रेखा या मातृ रेखा के ऊपर और दिल रेखा के नीचे या दिल और सिर रेखा के मुस्ततील में सनीचर व सूरज के बुर्जों के नीचे ✗ हुआ तो ऐसा आदमी हर एक काम खुफ़िया रखने की ताक़त वाला होगा। जब की मौत सिर कटने से होगी।

(सनीचर नंबर ६)

जब की ये त्रिशूल सिर्फ़ सिर रेखा पर होगा। कारोबार के लिए ये निशान जो सिर रेखा पर वाक़े हो और अपनी दोनों शाख़ों से सूरज और सनीचर को मिलता होवे तो ज़िंदगी में निहायत अजीब तबदीली देगा। यानी सूरज की तरह चमकता हुआ भी सनीचर के स्याह भूत की मानिंद हो जावे। दौलत का तख़्त मुसीबत के बख़्त में बदल जावे। सोने के थाल की जगह मिट्टी के तवे घर रोटी पकाने के हो जावें। लेकिन अगर इस उम्र यानी ३५ और ४२ के दरमियान कोई ऐसी औलाद लड़का घर में होवे जो मस्त मलंग या बिलकुल बुद्धू मौजूद होवे। जिस की आंखें सनीचर ख़राब हालत और जिस्म सूरज बरबाद सा होवे तो इस लड़के में सनीचर और सूरज दोनों का मुश्तरका असर होगा। जो अपनी ९ साल १८ साल और आख़री ३६ साल में वही सोने का तख़्त बना देगा। दरअसल ऐसा लड़का तमाम तकलीफ़ से बच जाया करता है। और ख़ुद मुसीबत अपने आप पर गुज़ारा करता है।

(२०) (नंबर ५ से मुतलका) सिर रेखा के नीचे एन मंदरजा बाला निशान की हदबंदी पर छोटी सी लकीर हो तो खयालात को बदल लेने वाला होगा ख़्वाह कमजोरी हो ख़्वाह चालाकी सनीचर की। (शुक्र नंबर ११)

फ़रमान नंबर १६५
बुध के बुर्ज़ का असर खाना नंबर ७

नीच हालत

१। गोल दायरा हर लम्हा तबीयत की गोलाई पर घूमने वाला भाइयों का दुश्मन। **(लोगों में बे-इतबारी की ज़िंदगी, बेवफ़ा होगा)**

उंच हालत

२। मुनशी, छोटा वजीर, अहले क़लम, इल्म व हुनर, दिमाग़ी काम, दस्त कारी पेशा, साहिबे तसानिफ, तिजारत, लालची, हकीम, ज़बान की ताक़त (पहली औलाद लड़की)। **(अक्ल अंदरूनी का साथ या अकाल की बारीकी का मालिक होगा)**

३। राशि नंबर ३ मिथुन के घर का और नंबर ६ कन्या का उंच है। इस लिए उम्र ८० साल होगी।

फ़रमान नंबर १६६
बुध के निशान का असर

खाना नंबर	
१	सूरज के बुर्ज़ पर :- खुद अपनी ताक़त सूरज को दे कर सूरज की ताक़त बढ़ा देता है दोनों बराबर का फल देने वाले हैं। बुध अपने वक़्त का निस्फ़ तक जुदा फल नहीं देता बाद में भी गो जुदा फल देगा मगर उत्तम ही देगा। राजदरबार से फ़ायदा होगा। मगर ऐसा शख़्स **(तोता चश्म)** बेमुरब्बत होगा।
१	कुंडली में बुध का असर :-
मेख राशि सूरज का बुर्ज	मेख राशि :- घर का मालिक मंगल जो बुध का दुश्मन है। नीच करने वाला सनीचर इस के बराबर का - उंच करने वाला और असर का घर सूरज है जिस के सामने बुध चुप रहेता है बल्कि अपना नेक असर सूरज को ही दे देता है। सनीचर के सबब खाने पीने वाला शराबी कबाबी होगा मगर ११ साल नेक नाम बा इज़्ज़त होगा। सूरज व बुध के मुक़ाबले में मंगल का असर तो

कम होगा मगर सनीचर का असर ज़रूर होगा।

२ बृहस्पत के बुर्ज़ पर :- दोनों दुश्मन। बृहस्पत का उत्तम मगर बुध ख़ुद खराब करेगा यानी अपना फल बुध अच्छा देगा। बृहस्पत की दौलत की परवाह न करेगा। इस के गिर्द दायरा डाल कर बृहस्पत की हवा के बाओ बगुले बनायेगा ज्ञानी उपदेशक होगा। बा-आराम जिंदगी होगी मगर **ज़्यादा** दौलतमंद न होगा और न ही निर्धन। **सफा २८२ जुज १४**

२ बृख राशि बृहस्पत का बुर्ज ३

बृख राशि :- घर का मालिक शुक्र है। जो बुध का दोस्त है। चंदर उंच करता है जो बुध का दुश्मन है नीच नदारद। असर के लिए बृहस्पत का मुक़ाम है जो बुध के बराबर का और बुध ख़ुद बृहस्पत का दुश्मन। ३६ बरस दौलत आवे। मगर ज्ञानी होवे।

मंगल के बुर्जों पर :- दोनों बराबर मगर बुध दुश्मनी करता है मंगल का अच्छा बुध जिसे ख़ुद खराब करेगा। लड़ाई झगड़े में मशहूर होगा।

३ कुंडली में बुध का असर :-

मिथुन राशि मंगल का बुर्ज

मिथुन राशि :- घर का मालिक ख़ुद बुध है। राहु उंच करता है जो बुध का दोस्त है। केतु नीच करता है बुध जिस के बराबर का है। अगर मंगल नेक हो तो १२ साल दौलत व वालिद का सुख हो। मंगल बद का ताल्लुक बुरा असर दे।

४ चंदर के बुर्ज़ पर :- चंदर दुश्मनी करता है दिल रेखा पर सनीचर के नीचे दायरा दिल की ताक़त निस्फ़ करता है। दिल हंमेशा झगड़े में ख़ुश। माता मदद न देवे। तोते के पास से ही बिल्ली गुज़र जावे तोता अपने आप मर जायेगा। बेशक़ बिल्ली तोते को छूए भी न। चंदर (सफ़ेद) के असर से तोते का दिल चलना ख़ुद ब ख़ुद ही बंद हो जायेगा और मुर्दा हो जायेगा।

४ कर्क राशि :- घर का मालिक चंदर है जो बुध का दुश्मन है। बृहस्पत उंच करता है बुध ख़ुद जिस का दुश्मन है मगर वह दुश्मन नहीं दोनों बराबर के हैं। मंगल नीच करता है बुध जिस के बराबर का और दुश्मन है। हंमेशा सफ़र दरपेश रहे और लाहासिल। बृहस्पत की महेरबानी से २२ साल दौलत आवे।

(कर्क राशि चंदरमा का बुर्ज)

५ सिंह राशि :- घर का मालिक सूरज है जो बुध का असल दोस्त है। उंच नीच नदारद। अपनी औरत और अपने लिए निहायत उत्तम। मगर पिता के लिए मंद ही गिना है। **(औलाद पर कोई बुरा असर न होगा)**

(सिंह राशि औलाद)

६ कुंडली में बुध का असर :-

कन्या राशि :- घर का मालिक ख़ुद बुध और केतु (बराबर का) है। बुध ख़ुद और राहु (दोस्त) उंच करता है। नीच करने वाला केतु बराबर का है इस लिए अहले क़लम मगर केतु से ३७ साल दुश्मन ज़्यादा हो।

(कन्या राशि - केतु)

७ शुक्र के बुर्ज़ पर :- दोनों बाहम दोस्त दोनों का अपना अपना और उत्तम। औरत के इश्क़ में गर्क़ रहेगा और उसे सुख देगा इसी लिए बुध ने औरत की शादी रेखा अपने बुर्ज़ पर बनाई हुई है और गोल सिर ने भी अमीर खानदान से ही औरत ली है। ज़मीन मिट्टी की हालत में भी गोल हो कर ज़मीन पर आशिक़ है या ज़मीन की हर गोलाई पर हाज़िर है। गोया ज़मीन गोल है। मगर ज़बान और सिर का आशिक़ होगा। इस के धड़ केतु का दोस्त नहीं। इस के बराबर का है यानी कामदेव का कीड़ा न होगा। औरत के लिए ख़र्चे में दिलेर।

७ बुध के बुर्ज़ पर :- अपना बुर्ज़ और तिजारत, ब्योपार पर मस्त और फ़ायदा उठावे।

७ तुला राशि :- शुक्र (दोस्त) घर का मालिक और इकट्ठा रहने वाला हमसाया। सनीचर उंच करता है जो बराबर का है। सूरज असल दोस्त नीच करता है इस लिए २२ साल औरत का सुख व मिलाप हो। हुन्नरमंद मगर सनीचर के असर से शराबी होगा। सनीचर हंमेशा अपना असर करता ही रहता है। शुक्र व बुध इकट्ठे होने से शहवत परस्त ज़ानी होता है। सूरज और शुक्र के मिलाप से बुध पैदा होगा। मगर बुध व शुक्र के मिलाप से सूरज का अरसा मियाद यानी २२ साल से असर शुरू हो जायेगा।

तुला राशि शुक्र बुध का बुर्ज

८ कुंडली में असर बुध का :-

बृछक राशि :- घर का मालिक मंगल है बुध जिस का दुश्मन है। चंदर नीच करता है बुध जिस का भी दुश्मन है। इस राशि का उंच है ही नहीं। तंग दस्त। १४ साल तकलीफ़ हो। **(३४ साला उम्र तक धी, बहन, बुआ, फूफी मामुं और मामुं ख़ानदान को तबाह करे मंगर भाइयों को बुलंद करें)**

बृछक राशि मौत

धन राशि :- घर का मालिक बृहस्पत बुध जिस का दुश्मन है। केतु उंच करता है जो बुध के बराबर का है। राहु नीच करता है जो बुध के वक़्त असर ही नहीं करता। खानदान की परवरिश करने वाला वरना २९ साल वालिद दुखी रहे। थथला कर बोलने वाला हो।

धर्म राशि करम धरम

१० सनीचर के बुर्ज़ पर :- बाहम बराबर बुध सनीचर से दोस्ती करता है। आंख को गोल किया और शुक्र की ज़मीन की तरह बिनाई की पुतली बना। मगर सनीचर दोस्ती नहीं करता। आंख सालिम मगर किसी वजह नज़र होती भी नहीं। रंज व तकलीफ़। पिता की मर्ज़ी हो सुख देवे मर्ज़ी से न देवे यक़ीनी नहीं।

मकर सनीचर का बुर्ज

१० मकर राशि :- घर का मालिक सनीचर जो बुध के बराबर का है। मंगल उंच करता है बुध जिस का दुश्मन है। बृहस्पत नीच करता है बुध बृहस्पत का भी दुश्मन है। इस लिए ४२ साल हथियार का खौफ़, दुशमन ज़्यादा।

११ कुम्भ राशि घर का मालिक सनीचर (मुसावी) है। उंच नीच नदारद।

कुंभ आमदन

असर के लिए बृहस्पत का मुक़ाम है। बद किरदार होगा। अगर सनीचर उंच हो तो ४५ साल दौलत की आमद।

१२ मीन दौलत व औरत का सुख

मीन राशि :- घर का मालिक बृहस्पत (बुध जिस का ख़ुद दुश्मन) और राहु (चुप रहने वाला) है। शुक्र (दोस्त) और केतु (मुसावी) उंच करते है। बुध ख़ुद और राहु (चुप रहने वाला) नीच करते हैं। इस लिए धन - दौलत ब्योपार का कोई सुख न होगा। सिर्फ पराई दौलत का रखा होगा दूसरों के लिए जोड़ेगा।

फ़रमान नंबर १६७

बुध का दायरा

बुध का बुर्ज़ तो किसी का दोस्त किसी का दुश्मन होगा। मगर बुध का दायरा या चक्कर हर एक बुर्ज़ की ताक़त को चककर में डाल देता है। दिल रेखा पर सनीचर के नीचे हो तो दिल की ताक़त निस्फ़ कर देगा। क़िस्मत रेखा की जड़ में हो तो ऐसे शख़्स की पैदाइश में कोई भेद होगा। जिस का ज़ाहीर करना मुश्किल है। ये ग्रह बुरे के साथ मिल कर बुरे की बुराई बढ़ा देता है और जोरावर के साथ मिल कर इस का ज़ोर ज़्यादा कर देता है। ये हर तरफ मिल जाता है और हर तरफ़ गोलाई पकड़ जाता है। अकेला बुध खाली ग्रह होगा और सिर्फ मखुन्नस हालत में असर देगा।

सनीचर:-स्याह सांप मौत का यम ख़ुद उड़े दूसरों को उडावे,
इच्छाधारी तो सब को तारे काला रंग सब पर
चढ़े मगर काले रंग पर कोई न
चढ़े।
नेश (डंग)
से गणेश होवे।
मछली के अंडे,
मगरमच्छ का पेट,
क़बीला बढ़े उलट तो मरे।

फ़रमान नंबर १६८

सनीचर

१। पापी ग्रह - काला यम - अंधेरी रात - सूरज का लड़का होते हुए सूरज के खिलाफ़ चलने वाला। न दिन का लिहाज़ न दुनिया की शरम। सब पर प्रबल। संगमरमर का स्याह सुरमा और स्याह पत्थर को कोहिनूर बना देने वाला। जादू की आंख पर चलाने वाला और सिर्फ़ एक ही नज़र से ख़ाक स्याह करने की ताक़त वाला बेरहम, काली चीजों पर बिजली की तरह बुरा असर करने वाला। काले साँप की आंख का मालिक। तारने के वक़्त इच्छाधारी सांप और शेषनाग की तरह मदद करने वाला। उम्र रेखा - दौलत के दुनियावी सुख और उर्ध रेखा का मालिक है। उर्ध रेखा इस की एक खाली खंदक है जिस का आख़िर मुक़ाम वह है जहां सेहत रेखा उम्र रेखा को काटने के लिए आने के वक़्त ख़ुद कट जावे ये मुक़ाम इस का हेड्क्वाटर - दौलत खाना है जिस में जो पड़ा वही मरा।

इस बुर्ज़ का ऊंचा न होना मुबारक है बीमारी से बचाता है अगर बुर्ज़ बिलकुल न हो तो फ़र्ज़ी खतरात, वहम, तंगदस्ती होवे।

इस जगह का दूसरा नाम मुक़ाम मौत है जिस का ये ख़ुद निगरान है। हर एक की कमाई से अपनी उर्ध रेखा की खाली खंदक को भरने के लिए फ़िक्र में रहेता है। राहु केतु को हाथ पर जगह नहीं मिली मगर इसी खंदक के रास्ते वह जिस बुर्ज़ पर चाहें चले जाते हैं। इस का जिस्म मगरमच्छ भूख मछली की और आंख शिवजी की है।

२। कुंभ - पानी से भरा घड़ा - दुनिया का सब कामों के लिए नेक शगुन है। जो इस ने ख़ुद अपने घर रख कर ख़राब और पलीत कर दिया है। इसी वजह से मरने के बाद खाली घड़ा मुर्दे के सिर की तरफ़ फोड़ते है। की सनीचर की क़िस्मत का घड़ा तो फुट गया अब भी अगर जान बाकी है तो दूसरों की क़िस्मत के लिए ही वापिस घर हो चलो या इस के बाप सूरज को मुंह दिखला कर ही वापसी

की सलाह है। जो सब का पिता है और सब का मुनसिफ़ है।

फ़रमान नंबर १६९

सनीचर की रेखा और सनीचर के बुर्ज़ पर रेखा

पितृ रेखा

१। उम्र रेखा का दूसरा नाम पितृ रेखा है। जब की इस का खात्मा चंदरमा के बुर्ज़ पर हो। उम्र रेखा का शुरू बृहस्पत की जड़ से ही होता है। जो पिता का मुक़ाम है। चंदर माता का मुक़ाम है। बृहस्पत को हवा का मुक़ाम गिना है और हवा की नाली होने की वजह से इस रेखा को उम्र रेखा या पितृ रेखा कहा गया है।

२ (अलिफ़)। पितृ रेखा अगर मातृ रेखा से मिली हुई हो तो माता पिता का बाहमी ताल्लुक नेक होगा। और साया व सुख देरपा होगा। ऐसा आदमी हमदर्द होगा।

(बे)। अगर मातृ रेखा पितृ रेखा से शुरू में न मिले या जुदा रहे तो पिता की ज़िंदगी

(बुध नंबर ३ सनीचर ७)

खतरा में होगी। जिस का मुफ़सिल ज़िक्र बुध के बुर्ज़ में हुआ है।

३। उर्ध रेखा - पीठ में उर्ध रेखा हो तो उम्र ८० साल। **(सनीचर केतु नंबर ६)**

४। उर्ध रेखा - जब उम्र रेखा चंदर के बुर्ज़ पर चले या जा पहुंचे तो पितृ रेखा कहलाती है। और जब पितृ रेखा (आम उम्र रेखा नहीं) और क़िस्मत रेखा से चंदर के मुक़ाम पर बाहम मिल जावें **(सनीचर बृहस्पत नंबर ४)** और और हाथ को बराबर दो हिस्सों में तक़सीम करें। यानी इन दोनों के मुक़ाम इतसाल से अगर ऊपर को अगर सनीचर की तरफ़ एक ख़त एन सीधा सनीचर के बुर्ज़ में जाता मालूम होवे तो उर्ध रेखा से मौसूम होगी। ऐसे शख़्स में सनीचर की आंख की होशियारी की पूरी ताक़त मौजूद होगी। यानी वह ठगी से आंख की होशियारी से धन दौलत, बड़ी भरी जायदाद वाला या हर तरह की जायदाद का मालिक होगा। चूंकि ऐसी कमाई में दस नाखुनों या अपने हाथों की कमाई का कोई हिस्सा न होगा।
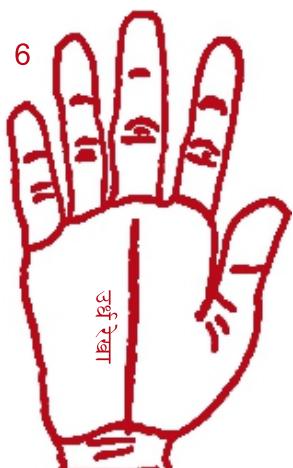
4
उर्ध रेखा
पितृ रेखा
चंदर

(बृहस्पत नंबर ४ सनीचर नंबर ९, या बृहस्पत नंबर ३ सनीचर नंबर ४, बृहस्पत नंबर ३ सनीचर नंबर ९, सनीचर बृहस्पत नंबर ९)

दुष्ट भागवान होगा। यानी लोग तो इस को दुष्ट गिनेंगे। मगर अपने लिए वह निहायत हई बड़ा भागवान और दौलतमंद होगा। आम गरीबों में जिस तरह रुपये पैसे वाला अमीर कहलाता है। इसी तरह ऐसा

(उर्ध रेखा का डंडा)

उर्ध रेखा हाथ को दो हिस्सों में तक़सीम करती है
उर्ध रेखा
सूरज
सनीचर
बृहस्पत
बुध
की श्रेष्ठ रेखा
सर
दिल रेखा
सर की
श्रेष्ठ रेखा
सर रेखा
रेखा
धन की श्रेष्ठ
पित्रु रेखा
धन रेखा
उर्ध रेखा
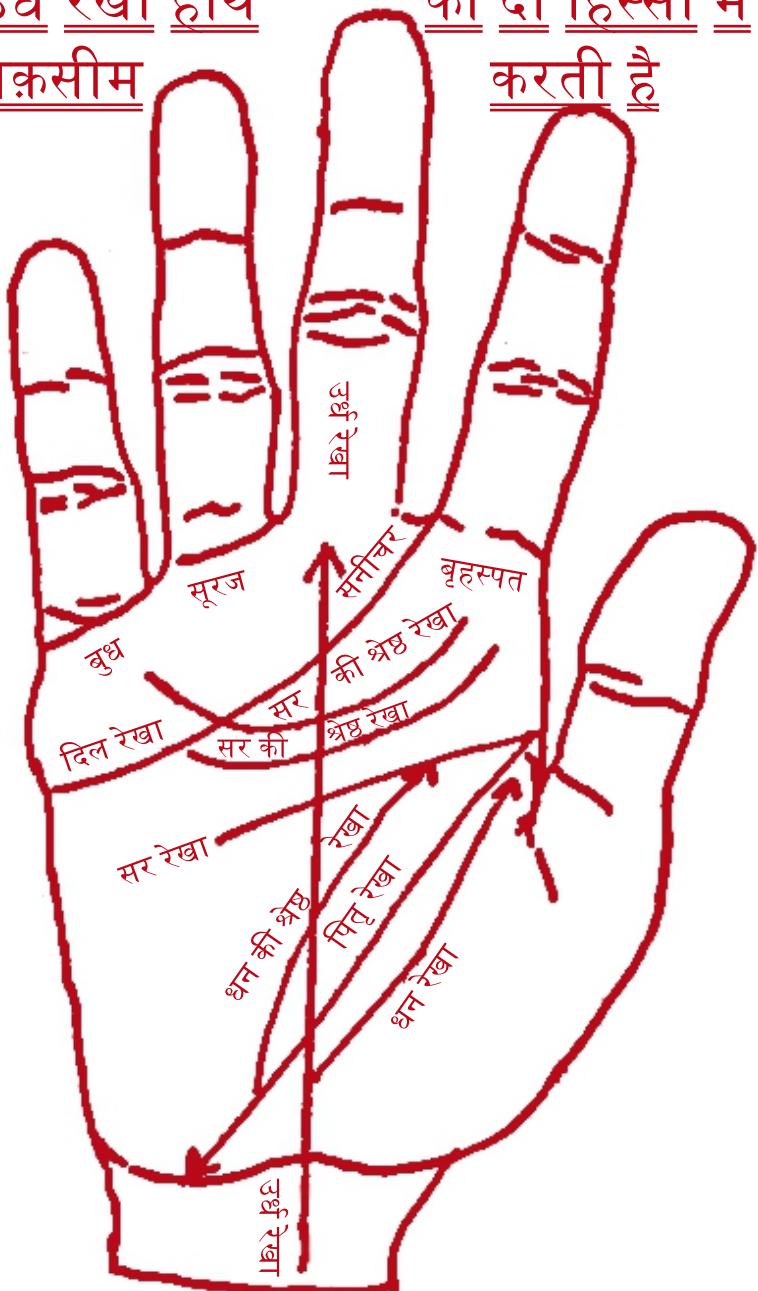
शख़्स अमीरों में अमीर होग साहब जायदाद और अमीरों में अमीर या अमीर कबीर होगा। जिसे न बाप का लिहाज़ होगा न किसी दुसरे की हमदर्दी। पूरा सनीचर की तबीयत का होगा ठगी और फ़रेब से धन ही धन इकट्ठा करेगा। इस की उम्र भी लंबी होगी और मगरमच्छ की तरह छोटी बड़ी सब मछलियों को खाने वाला होगा। किसी एक ख़याल से आम लोगों का तो दिल ही स्याह टुकड़ा होगा मगर ऐसा शख़्स तो सारे का सारा स्याह बातिन होगा जिस की आंख भी सब के मुंह पर स्याही डाल जायेगी या वह अंदर बाहर दिल और आंख दोनों तरफ़ से स्याह होगा न उसे दिन की सफ़ेदी या सूरज की रोशनी का लिहाज़ होगा न रात की स्याही का भय या डर होगा हंमेशा सुबह से शाम से सुबह यक रंग और यकसां रफ़्तार से चलने वाला होगा। अपने लिए बेशक़ नसीब वाला मगर दुष्ट भागवान ही होगा। ख़ुराक से लहू और लहू से दिल व दिमाग़ और दिमाग़ से ममयाई निकाल ले जाने वाला होगा। न दीन का दोस्त न धरम का पाबंद। हर लम्हा अपने से ज़्यादा किसी को अज़ीज़ न समझेगा और अपने ही अर्थ या मतलब को सब पर तरजीह देगा। जो इस के हेड्क्वाटर से छुआ ख़तम हुआ और मुआ यानी उर्ध रेखा से आगे न उम्र रेखा बढ़ी न सेहत या तरक़्क़ी रेखा चली। यही मुक़ाम इतसाल सब का आख़िर हुआ। न चंदर चल सका न सूरज का आकार रहा। न बृहस्पत की हवा या सांस बाकी बचा। क़िस्सा कोताह मुकाम मौत यही है जो सब का आखिर हुआ। बुध पीछे रहा। मंगल इस जगह तक पहुँच ही न सका। सिर्फ राहु केतु ही फ़रिश्ता ए नेकी बदी के लिखे अमाल नामे बाकी रहे। या राहु का अंधेरा हुआ और केतु से दूसरे जनम का आशरा हुआ। (तरजीह - prefer करना)

इस मुक़ाम से डर कर क़िस्मत रेखा तो ऊपर अपने गुरु या पिता बृहस्पत की तरफ़ भागी। सनीचर या उर्ध रेखा से निकला हुआ या पैदा शुदा धन या धन रेखा और इस धन में पलीत और श्रेष्ठपन के लिए श्रेष्ठ रेखा का सवाल खड़ा हुआ।

५। धन रेखा - ये रेखा इस मुक़ाम इतसाल से निकल कर या सनीचर का पैदा करदा धन डर के मारे ऊपर की तरफ़ उम्र रेखा के शुरू की तरफ़ चल भागा। शुक्र के बुर्ज़ पर या तमाम गृहस्तियों औरत ज़ात वगैरह से होकर दीगर

भाईबंदों के हाथ मुंह लगता हुआ मंगल नेक के बुर्ज़ पर फिर गुरु की शरण में या बृहस्पत की जड़ में फिर किसी दूसरी उम्र या उम्र वाले का साथ या उम्र के शुरू हिस्से में धन रेखा जा मिली मगर स्याह मुंह माया को उसी सनीचर रेखा को उम्र के सिवा और कोई रेखा न मिली या बदनामी से स्याह मुंह हो चुकी माया को वही काले पावों वाली उम्र रेखा से दोस्ती हुई या उसे फिर वापिस आने के लिए उम्र या सनीचर रेखा के पावों ही मिले मगर वह फिर भी चालाकी से बाज़ न आया और सनीचर के दरिया या उम्र रेखा की कश्ती रवां पर हो बैठा और वापसी का नज़ारा देखने लगा। जिस जगह इस रेखा का दरिया ज़्यादा गहरा न हुआ और कुशादा या चौड़ा हुआ इस सैलानी या धन रेखा पर चोरों ने हमला किया और धन दौलत का नुक़सान हुआ **(खाना नंबर ३ का ताल्लुक)**। क्यूं की ज़्यादा चौड़ाई में दरिया के हो जाने पर वह रवानी न रही। और हर कोई उस कश्ती पर हमला कर सका। हमलावर मुतलका दुनिया (मंगल नेक व शुक्र के बुर्ज़ से मुतलका लोग हुए यानी ऐसा धन स्त्री, स्त्री के ख़ानदान, या दूसरे यार दोस्तों के काम आया।

5 अलिफ

(चंदर सनिचर की माया)

(बे) इस तकलीफ से तंग अगर धन देवता फिर अपनी माँ के पास भागा और अब शुक्र व मंगल के बुर्ज़ की बजाए उम्र रेखा के दूसरे पहलू की तरफ़ से चंदर के बुर्ज़ से जो इस की माता था फिर अपने पिता सनीचर की तरफ़ भागा। ऐसा शख़्स बड़ा ही दौलतमंद और अमीर कबीर हुआ। अब इस ने किसी का ध्यान न किया और सीधा ही सनीचर की गोद में जा पहुंचा। उर्ध रेखा का वही असर हुआ। दुष्ट भागवान हुआ।

5 बे
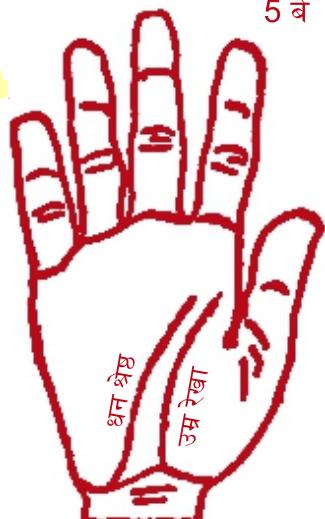
(चंदर मंगल नंबर ३)
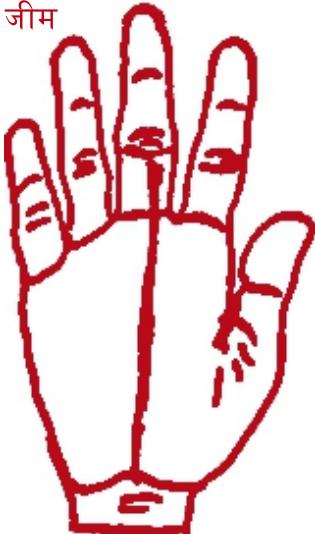
(बृहस्पत सनीचर नंबर १२ या सनीचर नंबर ९ बृहस्पत नंबर १२)

दोबारा हतक से उदास हो कर सनीचर अपने पिता के घर के रास्ते सनीचर की उंगली या मद्धमा पर जा चढ़ा। यहां क्या था। फिर उदासी और सन्यास गले पड़े। ऐसा आदमी जिस की मद्धमा पर धन या उर्ध रेखा चढ़ गई थी धन के बोझ के मारे दुनिया से भाग, राज छोड़ फकीर हो गया या धन रेखा हाथ की हथेली या दुनिया के तमाम बर्रेआज़म से उदासी में या बैराग में चली गई या ऐसा आदमी धन दौलत से मुतनफ़िर ही हो गया। गोया धन को अब कोढ़ (बीमारी जिस से जिस्म गल जाता है।) हो गया। इस दुर्दशा या लानत मलामत से वही काला मुंह लिए धन देवता फ़िर माता के पास आया। हुक़्म हुआ की राहेरास्त पकड़ो। चोरों बदमाशों से बचाव के लिए साफ़ और मज़बूत हो कर चलो। सब तरफ़ से ध्यान रख कर चलो। अब फ़िर हथेली के खाली मैदान में जिस पर किसी बुर्ज़ के मुतलका लोगों का बुरा असर न हो चल पड़ा। अब धन रेखा कभी इधर कभी उधर होती चली। जहां टूट-फुट हुयी धन दौलत का नुक़सान हुआ ये ज़रूरी नहीं की चोरों से।

अब अगर बैठी रहती है तो सनीचर का हेड्क्काटर खा जाने का भय या ड़र देता है। बंद जमाशुदा माया पर बिच्छू (बृछक राशि जिसे चंदर धन देवता की माता उंच करती है।) काले सांप सनीचर इच्छाधारी सांप आ बैठेते और आराम करते हैं धन बंध किया हुआ भी चल पड़ता है यानी सांप को मिट्टी या शुक्र भी रास्ता दे देता है या सांप को मुसीबत के वक़्त धरती, ज़मीन या शुक्र फट कर जगह दे देते है शुक्र को औरत को लक्ष्मी रूप भी माना है इसी लिए धन को मिट्टी या लक्ष्मी चलने के लिए रास्ता दे देती है। क्यूं की वह सब एक ही सरूप या एक ही चीज़ है। इस हालत में धन

देवता के सिर पर मिट्टी का भार आ सवार हुआ और अपनी माता के अंदर चंदर की ज़मीन या तह में छुप कर रहना पड़ा। गोया अब फिर दुनिया से दूर रहा। अंधेरी कोठडी या माता (चंदर की ज़मीन) की बंद हवा से फ़िर बाहर आता है। दिन ब दिन बढ़ता और उंचा होता या ऊपर को उठता या ऊपर को चलता है। अब धन रेखा ऊपर जाते वक़्त झुक जावे बतरफ़।

(दाल) बतरफ़ सूरज तो दौलतमंद, ताज़ीर, **(हाजिर माल)** अहले क़लम हो। जिस से दूसरों को भी फ़ायदा होवे।

(रे) बतरफ़ बुध तिजारत **(दलाली)** या ब्योपार में ज़्यादा अज़ीम होवे।

(सीन) बृहस्पत की तरफ़ - ससुराल से धन दौलत मिले।

दाल

सूरज

(बृहस्पत चंदर की माया या दोनों नंबर ५ या सूरज का साथ)

दौलतमंद।

(बृहस्पत चंदर नंबर ७)

साहिबे इल्म हो।

(काफ़) बतरफ शुक्र अगर शुक्र में झुक जावे तो ऊपर बढ़ना बंद हो जावेगा इस लिए मानते है की अगर शुक्र से

(चंदर को बृहस्पत देखें)

(चंदर शुक्र नंबर ७)

शाख धन रेखा में आ मिले तो फ़क़ीर साहिबे कमाल, आबिद, सखी परहेज़गार होगा। क्यूं की उम्र रेखा सनीचर, धन रेखा ख़ुद चंदर का लड़का और शुक्र इस हालत में बाहम दुश्मन हैं। यानी शुक्र से शाख़ वाला धन देवता से पूरा पूरा काम और मशक़्क़त लेगा वरना धन रेखा के असर से माया के नशे में मस्त या तमाम नशेबाज़ों का सरदार होगा।

६। चंदर - इस रेखा के निकलने की जगह गिना है।

8

(चंदर बृहस्पत नंबर ३)

७। सनीचर - का पहले ज़िक्र मुफ़स्सील हो चुका है।

८। मंगल नेक - धन रेखा का आख़िर या दोबारा जनम लेने का मुक़ाम गिना है यानी मुतलका दुनिया से नेक असर होगा। या इस रेखा या धन से तमाम मददगार हो जायेंगे।

९। मंगल बद - भाईबंद सब धन की उम्मीद रखने वाले होंगे और हर हालत में मुसावी होंगे यानी दोस्ती-दुश्मनी, मदद-बरखिलाफ़ी हर दो पहलू हो सकते हैं। बहर हाल अपने लिए नुकसान देह न होगी। जंग व जदल का सबब भी हो सकता है और मदद और सिपह सालारी भी यानी कोई भाई तो धन रेखा की असलियत या चंदर (माता) और कोई मामूं भांजे की चांदनी गिनेगा।

(चंदर बृहस्पत नंबर ८)

१०। उत्तम धन वह है जिस में श्रेष्ठपन की लहर हो।

११। **धन** श्रेष्ठ रेखा - ये रेखा कभी कलाई से शुरू होती है यानी वही धन रेखा जो मध्यमा के रास्ते दुनिया से बाहर भाग गई थी। अब फिर दूसरे

जनम में कलाई के रास्ते दुनिया में आ निकलती है। कभी धन रेखा के नीचे से निकल कर गृहस्त रेखा के साथ (हथेली के खाली मैदान से हो हुआ कर) जा मिलती है। बाज़ दफ़ा धन रेखा या गृहस्त रेखा से अलाहदा भी देखी गई है।

जब धन रेखा से मिली हुई होवे तो ऐसा शख़्स अक़्लमंद, साहिब तदबीर, इज़्ज़त, तरक़्क़ी और मरातब में आराम पावे। और साहिब इकबाल हो।

जब **धन** श्रेष्ठ रेखा कलाई की बजाए चांद के बुर्ज़ से शुरू हो कर सिर रेखा से जा मिले और इस का झुकाव हो जावे।

(चंदर मंगल से बृहस्पत का साथ)

१२। बतरफ़ बृहस्पत - सब से श्रेष्ठ या उत्तम लक्ष्मी या माया दौलत होवे।

१३। बतरफ़ सूरज - साहिब हुकूमत। राजयोग हो।

(चंदर मंगल से सूरज का साथ)

(चंदर मंगल से बुध का साथ)
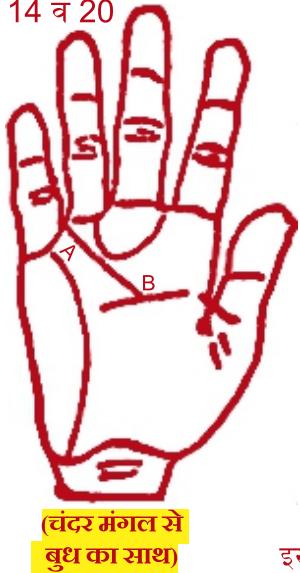
१४। बतरफ़ बुध - ब्योपारी आलम, अक़्लमंद दर्ज़ा कलाम। **(धन की शर्त न होगी)**

१५। बतरफ़ सनीचर - सनीचर का पूरा नीच फल क्यूंकी ये रेखा सनीचर से पूरी दुश्मनी पर है यानी जानवरों (जहर मिले या दरिंदे वगैरह) से दुख ख़तरा और मौत, जिदी अहमक़ और दुनियावी हर तरह से मंद भाग होगा। **(चंदर मंगल का सनीचर से ताल्लुक)**

१६। चंदर - इस हालत में इस के निकलने की जगह निकास गिना है।

१७। मंगल नेक - या सिर रेखा का शुरू या इस रेखा का आख़िर या मिलने की जगह माना है। या

१८। शुक्र और मंगल नेक पूरा नेक असर होगा।

१९। मंगल बद - जब इस तरफ़ हो जावे तो **खाली** धन रेखा के असर पैदा होंगे। **धन** श्रेष्ठ रेखा बाकी तमाम हालतों में धन रेखा का ही असर दिया करती है।

२०। C D सनीचर के बुर्ज़ के अंदर अंदर सूरज के बुर्ज़ ━━ C D को रेखा सूरज का उत्तम फल मगर सनीचर के बुर्ज़ की तह में सनीचर के बुर्ज़ से बाहर सूरज को सनीचर का बुरा फल देंगी।

AB ऐसी हालत में क़रीबी रिश्तेदारों लड़के व भतीजे वगैरह का सरकारी मुलाज़मत में जाने की दलील होगी मगर वह पैसा धेला बचा कर न देगा।

मच्छ रेखा या मगरमच्छ रेखा गरीब को धन और
अमीर को वालिये तख़्त बनावे
बड़े परिवार
लोहे लंगर सवाया
सनीचर
सूरज
बृहस्पत
बुध
बृहत या सूरज की तरक़्क़ी
उर्ध्व रेखा
मंगल नेक
उम्र रेखा
मंगल बद
शुक्र
मच्छ रेखा
चंदर
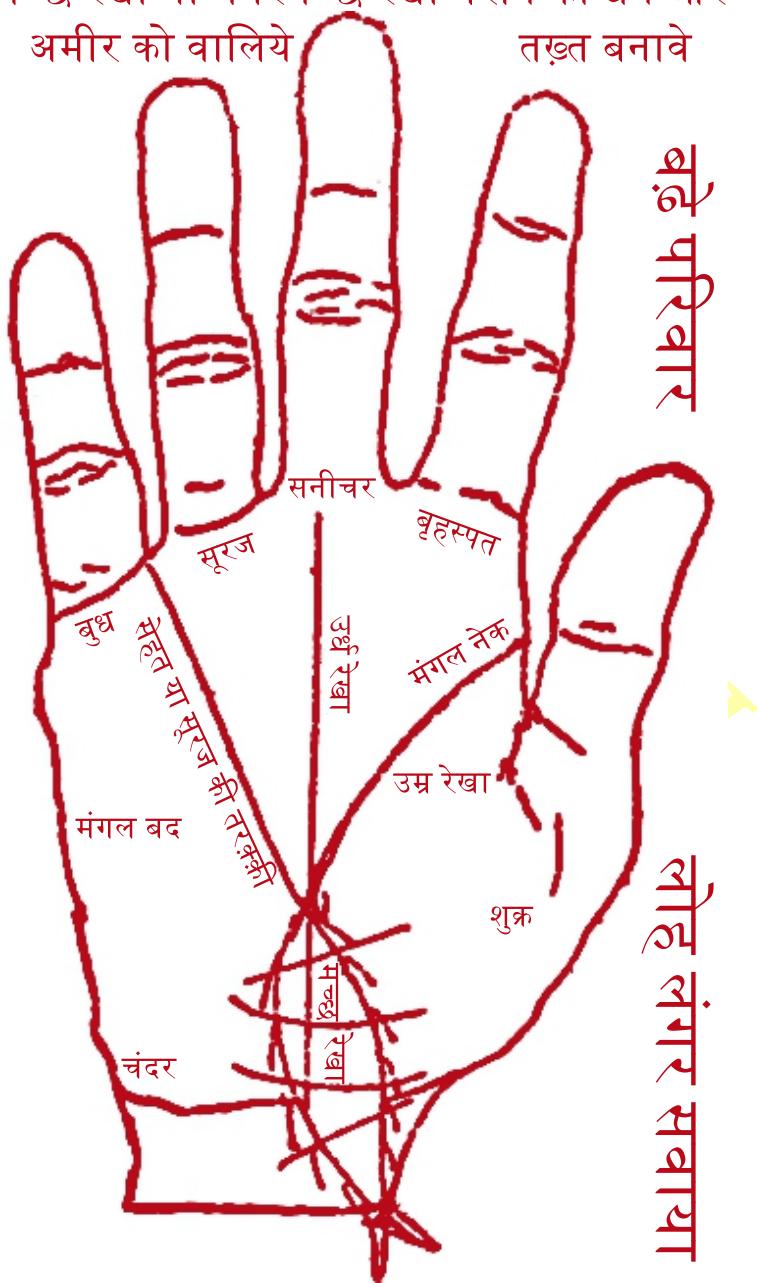
फ़रमान १७०

बृहस्पत सनीचर की मच्छ रेखा और काग रेखा

(१) मछली की तरह औलाद, मेंढक का सांस, क़िस्मत शुक्र के घर में।

जिस तरह मछली अंडे देती है इसी तरह शुक्र और बृहस्पत औलाद, भाईबंदों की पैदाइश में मदद देवें और मेंढक की तरह सब तरफ़ से बंद की हुई मिट्टी में भी सांस लेता रहे और ज़िंदा रहे और आंख पानी और ख़ुश्की में देखती रहे और समंदर और तूफ़ान की मिट्टी और हवा में बाक़ायदा देखे और हर तरह उत्तम।

क़िस्मत रेखा के कलाई से शुरू होने के वक़्त अगर जड़ में दरअसल मछली या मगरमच्छ की शक़्ल पड़ी हो तो मच्छ रेखा कहलाती है। ये शक़्ल दरमियानी पेट से उभरी हुई और सिरों पर मछली के परों की मानिंद शाख़ें रखती हुई मछली मुकम्मल रेखा होगी। क़िस्मत रेखा की जड़ पर चोकोर ☐ (मंगल नेक) का असर भी नेक होता है। लेकिन मगरमच्छ (दरियाई जानवर) रेखा जैसा नेक नहीं होता।

२। शाख़ें अगर सिर्फ़ नीचे की तरफ़ हों या कलाई की तरफ़ कौए की दुम से मिलती जुलती शक़्ल बनावें तो काग रेखा या कौए की रेखा कहलाएगी। जिस का असर बहुत हल्का और निहायत ख़राब है।

३। अगर मछली की शक़्ल शुक्र के बुर्ज़ की तरफ़ वाक़े हो तो इस मछली की वह गोलाई जो चांद के बुर्ज़ की तरफ़ को होगी इस मछली का निचला हिस्सा या पेट होगा।

४। और अगर ये मछली की शक़्ल चंदर के बुर्ज़ की तरफ़ वाक़े हो तो शुक्र के बुर्ज़ की तरफ़ की गोलाई इस मछली का पेट ही

गिनी जायेगी और निचला हिस्सा होगा।

(बे) और अगर शुक्र और चंदर दोनों बुर्जों के एन दरमियान में वाक़े हो तो भी चंदर की तरफ़ की गोलाई इस मछली का पेट और निचला हिस्सा होगा।

जिस बुर्ज़ की तरफ़ इस मछली की पीठ होगीउस बुर्ज़ का नेक असर होगा। और जिस बुर्ज़ की तरफ़ पेट या निचला हिस्सा होगा उस बुर्ज़ का असर कोई न होगा। पूरे असर के लिए यूं कहो की

(i) अगर मछली की पीठ शुक्र के बुर्ज़ की तरफ़ वाक़े होवे और पेट चंदर की तरफ़ तो शुक्र का नेक असर होगा। बशर्ते की मछली का मुंह भी ऊपर की तरफ़ हो और इस की दूम नीचे कलाई की तरफ़ हो। इस बात के साथ ही अगर उम्र या सनीचर रेखा मछली के मुंह में गिर रही हो या मछली के मुंह में दाखिल हो कर ख़तम हो गई मालूम होती हो तो शुक्र (जिस बुर्ज़ पर पीठ है) सनीचर (उम्र रेखा जो अपना तमाम असर इस में डालती हुई मालूम होती है) और मछली या मीन राशि का मालिक बृहस्पत (मच्छ रेखा ख़ुद) सब के सब नेक असर देंगे। यानी ऐसा शख़्स बड़े ही क़बीले वाला होगा। यानी अव्वल तो वो नौ भाई (नौ ग्रह) और दो बहेनें (दोनों हाथ) होंगे। इस की शादी (जो बृहस्पत और शुक्र के अर्से के दरमियान या १६ और २५ के अंदर अंदर हो) और भी क़बीले बढ़ाएगी। जल्द अज़ जल्द औलाद पैदा होगी। बाल बच्चों की बरकत इन की तादाद और ज़्यादती और हरदम बढ़े परिवार हो। अपनी ज़ाती आमदन भाइयों

की आमदन और गृहस्त में हर तरह से बरकत हो। अनाज खाने वाले और अनाज पैदा कर के लाने वाले (कमाऊ) दिन-ब-दिन बढ़ते चले जावे। आदमियों की इतनी बरकत हो की अगर अपने घर के साथी पास न हों तो रोटी खाने वाले महेमान ही हाज़िर हो जायेंगे। गर्जे की भंडारा लोह लंगर हरदम चलता और सवाया होता चला जायेगा और सनीचर का उत्तम असर पूरा होगा। अगर ऊपर कही हुई शक़्ल में मछली के मुंह में उम्र रेखा की बजाए सेहत या तरक़्क़ी रेखा गिरती होवे तो ऐसा शख़्स ज़ानी और अय्याश होगा। ज़बान का चस्का और भाई बहनों की तादाद सात जमा २ या ९ या कुछ कम ही होगी। बुध का वह असर न होगा जो सनीचर का उत्तम फल था।

मच्छ रेखा का मुंह (जब ऊपर को हो जैसा की ऊपर ज़िक्र हुआ तो जीतने साल क़िस्मत रेखा के हिसाब से गिन कर मच्छ रेखा का जिस्म ख़तम होता होवे इस साल के बाद भाई बहन की तादाद में ज़्यादती होना या और का पैदा होना बंद हो जायेगा या इस साल के बाद इस का भाई या बहन और पैदा न होंगे। बल्कि इस की शादी होगी और ख़ुद इस के बाल बच्चे शुरू हो जायेंगे और आइंदा उम्र में भी इसी तरह से बरकत होती जावेगी।

(ii) ये तमाम पीठ की तरफ़ का असर हुआ अब पेट की तरफ़ या चंदर के बुर्ज़ का असर देखें ये बिलकुल न होगा। शुक्र तो चंदर से दुश्मनी नहीं करता मगर चंदर शुक्र का दुश्मन है। अब माता चंदर के वक़्त यानी २४ साल में शुक्र या औरत आने के वक़्त चल जायेगी (ये सब मच्छ रेखा वाले लड़के के हिसाब से गिनते हैं।) और पिता बुध के असर के वक़्त (बुध मच्छ रेखा का दुश्मन है जो बृहस्पत की रेखा है।) यानी ३४ या १७ साल की उम्र (मच्छ रेखा वाले की) में साथ छोड़ कर इस दुनिया से चला जायेगा।

(iii) अगर मच्छ रेखा का मुंह ऊपर की बजाए नीचे को हो तो जीतने साल तक क़िस्मत रेखा के हिसाब से मछली की शक़्ल फ़ेल रही हो बरकत होगी। उस के बाद हर तरह से कमी होनी शुरू हो जायेगी।

(iv) मच्छ रेखा की पीठ अगर चांद की तरफ़ हो तो चांद का असर उत्तम होगा यानी माता का असर पूरा और इस के होते हुए चंदरमा का हर तरह से पूरा फल और नेक होगा। माता की औलाद या भाई बहन सब बरकत में होंगे। शुक्र कोई असर ख़ास न होगा क्यूंकी शुक्र चंदर से दुश्मनी नहीं करता मगर बृहस्पत का दुश्मन है। इस लिए शादी के वक़्त से जो शुक्र की मीयाद के बाद २५ साल होगी। औलाद में ख़ास ज़्यादती न होगी। भाई बहन तो ज़रूर बरकत में होंगे। वह भी उस हालत में जब की मछली का मुंह ऊपर को हो और उम्र या पितृ रेखा मछली के मुंह में हो। माता की उम्र लंबी होगी मगर पिता बृहस्पत के असर में (जिस के अब चंदर तो सनीचर का दुश्मन है जो शुक्र बृहस्पत का दुश्मन है यानी बृहस्पत पिता और इस की उम्र सनीचर दोनों को शुक्र और चंदर बरबाद करेंगे।) जो १६ साल है ख़तम होगा। इस शक़्ल में भी अगर मछली के मुंह में सेहत या तरक़्क़ी रेखा होवे तो ज़ानी (ज़िनाह करने का शौक़ीन औरतबाज़) और अय्याश होगा। क्यूंकी चंदर बुध का दुश्मन है। ऐसी हालत में पिता की उम्र लंबी होगी। क्यूंकी चंदर, बृहस्पत और शुक्र की दुश्मनी न होगी। सिर्फ़ चंदर और बुध का दुश्मनाना असर बाक़ी रह जायेगा जो माता पर बुरा असर करेगा।

दूसरी हालत में जब की

मच्छ रेखा अपना मुंह नीचे कर के चंदर पर वाक़े हो तो जीतने साल तक की उम्र तक ये शक़्ल जगह घेरे हुए बढ़े तरक़्क़ी होगी फिर वही बरबादी का ज़माना शुरू हो जायेगा।

मच्छ रेखा अगर शुक्र और चंदर के दरमियान वाक़े हो और इस के मुंह में उर्ध रेखा गिर रही हो तो उर्ध रेखा का पूरा नेक और उत्तम असर होगा। न शुक्र कुछ बिगाड़ सकेगा न चंदर खराबी देगा।

अगर मछली की शक़्ल की बजाए मगर मच्छ की (सनीचर) शक़्ल होवे तो

सब से बढ़ कर नेक असर होगा। मछली अगर आटे की गोलियां खावे तो मगर मच्छ वाला मुक़ाबले पर आने वाले आदमियों को खा जया करता है। ख़्वाह वह मगर मच्छ की शक़्ल शुक्र के बुर्ज़ पर हो या चंदर के बुर्ज़ पर या दोनों बुर्जों के दरमियान मच्छ रेखा को काटने वाले ख़त सीधे हो या लेटे हुए ═ ll हर दो हालत में मौतें ज़ाहिर करते हैं जो की निहायत नज़दीकि रिशतेदारों या भाइयों और बहेनों से मुतलका होंगी।

उर्ध रेखा जब मछली के मुंह में गिरती हो (मछली की शक़्ल ख़्वाह शुक्र पर हो ख़्वाह चंदर पर ख़्वाह दोनों बुर्जों के दरमियान) अपना पूरा असर उत्तम हालत में देगी।

(v) मामूली क़िस्मत वाले की हालत में मच्छ रेखा क़ायम होने से दौलतमंद होने की यकीनी अलामत और दौलतमंद के हाथ में मच्छ रेखा होने से वालिए तख़्त होने की पक्की निशानी है।

मच्छ रेखा बनावे
काग रेखा उड़ावे
(सब कुछ)
मगर उम्र रेखा से उम्र हार न देवे।
बुध
सूरज
सनीचर
बृहस्पत
दिल रेखा जिसे बाज़ों ने
उम्र रेखा भी माना है।
मंगल नेक
मंगल बद
उम्र रेखा
शुक्र
चंदर
कौआ या काग रेखा
कलाई रेखा
जब मछली की दूम परों की तरफ़ से खुली हो तो काग रेखा होगी। और असर में मंगल बद की तरह हर तरह से मनहूस होगी।

फ़रमान नंबर १७१
सनीचर के बुर्ज़ पर रेखा और
सनीचर की अपनी रेखा

सफा १४९-१५० जुज १३ से मुतलका

(अलिफ) उम्र रेखा :- ये सनीचर की रेखा ये दोनों जहानों में फ़र्क की आंख की बिनाई की ताक़त की लहर है या वह चीज़ है जिस से इंसान की हस्ती या नेस्ती में फ़र्क मालूम होता है। सनीचर मीन राशि **नंबर १२** का मालिक है जिसे मछली माना है। जिस तरह मछली पानी के बगैर नहीं रह सकती हु ब हु उसी तरह ही इंसान उम्र के दरिया के बगैर सनीचर के मगरमच्छ की ताक़त का दम नहीं मार सकता। दरिया से छोटी छोटी शाख़ें अगर दरिया की रवानी की तरफ़ (चलने की तरफ़) निकल भागें तो गो इन में दरिया के पानी की रवानी न होगी लेकिन फिर भी दरिया कभी न कभी उन में थोड़ा बहुत पानी जब कभी इस में पानी का ज़ोर होवे छोड़ ही जायेगा। पिछली तरफ़ की निकली हुई शाख़ों या नालियों में बार बार पानी का आना नहीं गिना जा सकता।

(बे) इसी तरह ही जब उम्र रेखा से कोई शाख़ सनीचर की तरफ़ यानी सनीचर के बुर्ज़ की तरफ़ निकले तो ऐसी शाख़ से दूसरे किसी उम्र के साथी की परवरिश से मुराद होगी या इस शाख़ की लंबाई की उम्र के अर्से तक ज़िंदगी और कमाई दूसरों के लिए होगी।

(जिम) सनीचर के बुर्ज़ से अगर कोई शाख़ उम्र रेखा को काट ही देवें तो मौत पुरदर्द होगी।

(सनीचर शुक्र नंबर ३)

(दाल) लेकिन अगर काटने की बजाए उम्र रेखा में ही मिल कर ख़तम हो जावे तो भी ज़िंदगी और कमाई दूसरों के लिए होगी।

(रे) उम्र रेखा से निकली हुई शाख़ अगर सिर रेखा को अबूर कर के सनीचर की तरफ़ का ही रुख़ रखे तो कोई निहायत नजदीकी रिश्तेदार लड़के या लड़की का नजदीकी रिश्तेदार वगैरह होगा, ऐसे आदमी की कमाई से परवरिश पायेगा। जिस का आम कारोबार मकानात के सामान के मुतलका होगा। ये शाख़ जिस बुर्ज़ का रुख़ रखेगी उस का (अज़ीज़ या रिश्तेदार का) ही असर इस के ज़रिये मुआश में होगा। बशर्ते की ऐसी शाख़ सिर रेखा को अबूर कर के ऊपर के हिस्से में चल रही हो।

रे
सनीचर
सिर रेखा
उम्र रेखा

(सनीचर शुक्र नंबर १०)

(सनीचर शुक्र नंबर ७-१२)

(सीन) अगर ऐसी शाख़ सिर रेखा से नीचे ही रह जावे तो सिर्फ़ खाने पीने वाला ही होगा। खिलाए - पिलाएगा बिलकुल नहीं।

(क़ाफ) उम्र रेखा से अगर शाख़ अगर क़िस्मत रेखा में मिल जावे तो क़िस्मत का साथी होगा। जिस के साथ मिलने से क़िस्मत जागेगी।

(बृहस्पत के दोस्त ग्रह)

या औरत होगी जो शादी होते ही क़िस्मत जगायेगी या कोई और ताल्लुकदार होगा। जिस के साथ मिलते ही क़िस्मत जागेगी।

(लाम) उम्र रेखा की शुरू होने की तरफ़ की दो शाखी तो कोई मंदी नहीं होती।

(मीम) मगर खात्मे की दो शाखी बुढ़ापे में सेहत बलिहाज़ नज़र हल्की होने की निशानी है।
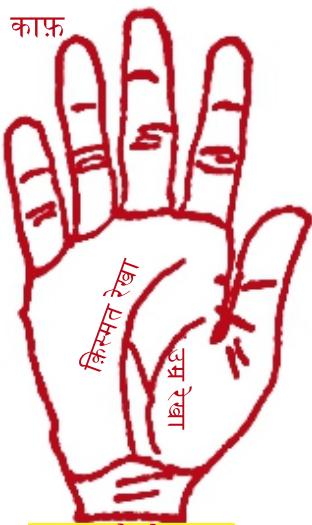
(मंगल सनीचर नंबर ३)

(नून) उम्र रेखा जब शुक्र के बुर्ज़ की गोलाई पर क़िस्मत रेखा के शुरू होने के हिस्से से मिल कर दो शाखी बना देवे और इस दो शाखी का अंगूठे की तरफ़ का ख़त बड़ा और लंबा होवे (चंदर सनीचर नंबर ७) तो मौत मातृभूमि में होगी। चंदर की तरफ़ की शाख़ लंबी हो तो परदेश में मौत होगी। (चंदर सनीचर नंबर ४ में)

मीम

उम्र रेखा

(मंगल सनीचर नंबर ७)

(वाओ) उम्र रेखा पर मंगल नेक के बुर्ज़ पर केतु का निशान हो तो भाइयों से दुखी देश परदेश की ज़िंदगी बसर करेगा।

(केतु नंबर ३)

(हे) उम्र रेखा पर शुक्र कें बुर्ज़ पर विसर्ग का निशान आंखों की बीमारियाँ और नज़र ख़तम होने का निशान है। **सफा १९७ जुज १६ जुज १३ से मुतलका**

(चंदर सनीचर नंबर ७)

(ये) उम्र रेखा का शुरू बृहस्पत के बुर्ज़ की जड़ और सेहत रेखा से कटने का सनीचर का हेड़ क्वाटर **(कुंडली का खाना नंबर ८)** आख़री मुक़ाम है।

रेखा पर निशान	मौत का बहाना क्या होगा
२। मंगल बद पर सूरज का सितारा हो या पेट पर सिर्फ़ एक ही बल पड़े।	लड़ाई या जंग व जदल।
सनीचर के बुर्ज़ पर से कोई रेखा उम्र रेखा को आ काटे	पुरदर्द मौत।
सूरज के बुर्ज़ पर सूरज का सितारा होवे	अचानक मौत
दिल व सिर रेखा का मिल जाना दिल रेखा और गृहस्त रेखा कनिष्का या मद्धमा के पास मिल जाना, सिर रेखा का दिल रेखा को काट कर सनीचर पर ख़तम हो जाना दोनों की एक ही रेखा मालूम होवे। **सफा २१५-२१६ जुज १७-१८**	सदमे से मौत होगी।
श्रेष्ठ रेखा का सनीचर को झुक जाना	जानवरों से ख़तरा मौत।
अंगूठा छोटा और मद्धमा बहुत लंबी। दिल, सिर और उम्र रेखा का मिल जाना। सूरज रेखा का हाथ में बिलकुल न होना।	ख़ुदकुशी करे।
पापी ग्रहों से बुध का साथ...	**बिजली से मौत हो**
सिर रेखा का चंदर के बुर्ज़ में ख़तम होना।	
सिर रेखा से ऊपर दिल रेखा तक ही शाख़ हो	ख़ूनी होवे।
पितृ रेखा की शाख़ मातृ रेखा को काट कर अनामिका तक चली जावे।	क़ैद में मारे
उम्र रेखा से निकली हुई क़िस्मत रेखा सूरज में या सूरज तक चली जावे। **सफा २१ की ऊपर की सतर**	तपेदिक़ से मरे
पितृ रेखा के उपर + त्रिशूल होवे।	घोड़े की सवारी से मरेगा।
पितृ रेखा के नीचे ▦ राहु हो।	फांसी पा कर मरे।
सिर रेखा पर + त्रिशूल हो तो	सिर कटने से मौत हो।
पितृ रेखा मातृ रेखा से अलाहदा हो कर कटी हुई और टेढ़ी हो या **चंदरमा की चीजों की आमद से चंदर नष्ट का सबूत पहले होगा**	अधरंग होवे। **सफा २८२ जुज १४**
क़ब्ज़े (जोड़) से जुदा हो कर टेढ़ी होवे।	सनिपात हो।
चांद के निचले हिस्से पर + त्रिशूल हो।	पानी से मरे।
शुक्र पर सूरज का सितारा (उम्र रेखा पर) हो	दरिया नदी से हो।

रेखा पर निशान	मौत का बहाना क्या होगा
उम्र रेखा यकायक टूट जावे।	मौत आने की निशानी है।
क़िस्मत रेखा की शुरू की दो शाखी अंगूठे की तरफ़ की शाख़ अगर लंबी हो। यानी शुक्र की तरफ़ की बड़ी हो तो अपने ग्रहस्ती और अगर चंदर की तरफ़ बड़ी हो तो परदेश में मौत।	मौत मातृभूमि में होगी।
३) तबीयत बदल जावे यानी गरम सुभाओ नरम और नरम सुभाओ सख़्त तबीयत हो जावे।	बाकी उम्र कितनी है एक साल।
शुमाली कुत्ब का सितारा (ध्रुव) रात को नज़र न आवे।	४० दिन।
घी, तेल या पानी में अपना अक़्स नज़र न आवे।	७ दिन।
आईने में अपना अक़्स नज़र न आवे।	१ दिन।
सांस लेते वक़्त पेट न हिले या आंख पथराने लगे।	चंद घंटे।
सांप का काटा हुआ। (मौत चार दिन शक्की ज़हर से मरा हुआ। ख़ून मुंह के रास्ते जारी या बदस्तूर जारी या बह रहा हो)	शक्की हालत।
गेस से मुआ हुआ। (जिस्म वैसे का वैसा ही नरम हो और न अकड़े। हथेली को रोशनी की तरफ़ कर के देखने पर हाथ में ख़ून मालूम न हो या लाली सी नज़र न आवे या जिस्म अकड़ जावे।	यक़ीनी मुर्दा हो।
कान लंबे और बड़ी सी दीवार के या ठोड़ी बड़ी और उभरी हुई बाहर की तरफ़ को या गरदन पर सिर्फ़ एक ही बल या शिकन पड़ता होवे या लंबा सा चेहरा आंख बड़ी मुंह चौड़ा और रान मोटी मोटी।	लंबी उम्र होगी।
कलाई पर क़िस्मत रेखा की जड़ में चार शाखी ख़त	

माथे पर कौए के पांव का निशान या मर्द के दाएं पांव की कनिष्का व अनामिका उंगली बाहम बराबर हों।	कम उम्र होगा।
चंदर सिंह राशि में और सूरज मकर या कुम्भ राशि में हों एक ही वक़्त में।	१२ दिन वरना १२ साल
चंदर और सूरज दोनों इकट्ठे ही कुम्भ पर	९ साल
सूरज और राहु दोनों इकट्ठे मकर पर या कुम्भ पर होवें।	२२ साल
बोलते वक़्त दातों का मांस नज़र आवे या नाक और कान ऊपर को चढ़े हुए हों या उंगलियों के जोड़ बहुत ही छोटे छोटे हो या पीठ बहुत ही तंग होवे।	२५ साल
माथे पर बाल बक्सरत होवें।	४० साल
296/3 पीठ पर उर्ध रेखा या आंख के नीचे चहेरे पर दो या तीन रेखा हों तो उम्र होगी।	७० साल
पेशानी के ख़त टूटे फूटे हों और इन का जुकाओ भी नीचे नाक की तरफ़ को होवे। या पेशानी पर दोनों अब्रू के एन दरमियान **मगर तिलक की जगह छोड़ कर** में मंगल बद तिकोन, शुक्र बुध तुला तराज़ू, मछली, त्रिशूल - सनीचर, पद्म, पंखा, अंकुश, तलवार या परिंद के निशानों में से कोई भी एक निशान होवे। अल्प आयु। **सफा ४३ जुज ६-१० सफा १६८ जुज ३६**	८-८ कुल ६४ साल
जिस्म के तमाम हिस्से मुनासिब मिक़दार पर	१०० साल

उम्र रेखा का साल ब साल पैमाइश का जुदा नक़्शा है।

	दिल रेखा की लंबाई (मर्द ख़्वाह औरत)	उम्र के साल
५		
	कनिष्का तक ही होवे तो उम्र	१०-१५ साल
	कनिष्का व अनामिका के दरमियान तक हो	२५ साल
	अनामिका तक	५० साल
	अनामिका व मद्धमा के दरमियान तक हो	७५ साल
	मद्धमा तक	९० साल
	मद्धमा और तर्जनी के दरमियान तक हो	१०० साल
	तर्जनी तक	१२० साल
६	कलाई की रेखा की तादाद	उम्र के साल
	सिर्फ़ एक हो	३० साल
	सिर्फ़ दो हो	६० साल
	सिर्फ़ तीन हो	९० साल
	सिर्फ़ चार हो	१२० साल

७ पेशानी की रेखा

दुरस्त व साफ रेखा

तादाद	साल: मर्द	साल: औरत
एक लकीर	२०	४०
दो लकीर	३०	६०
तीन लकीर	६०	७०
चार लकीर	८०	८०
पांच लकीर	१००	१००
छ लकीर	१२०	८०
सात या ज़्यादा	५०	
बगैर लकीर	१००	

टूटी फूटी रेखा

तादाद	साल: मर्द	साल: औरत
एक लकीर	१०	२०
दो लकीर	२०	४०
तीन लकीर	३०	५०
चार लकीर	४०	

अगर माथे पर सुर्ख़ रंग रगहाए का भी साथ हो तो चालीस साल यकीनी हो।

	रेखा	
दोनों कान तक दुरस्त व सालिम (मर्द औरत)	एक	१००
दोनों कान तक दुरस्त व सालिम (मर्द औरत)	दो	७०

८ क़द खुद अपने जिस्म के लिहाज़ से उम्र के साल जिस का पैमाना खुद अपने उंगलियों का हो यानी अपनी ही उंगलियों से तीन उंगली की एक गिरह, ४ गिरह की एक बालिश्त, दो बालिश्त का एक हाथ, दो हाथ का एक गज़ या ३६ इंच = ४८ उंगल।

अपना क़द	उम्र के साल	क़द	उम्र
नब्बे अंगुल	३०	सौ एक सौ एक अंगुल	८५
९१ अंगुल	३५	१०२ अंगुल	९०
९२ अंगुल	४०	१०३ अंगुल	९५
९३ अंगुल	४५	१०४ अंगुल	१००
९४ अंगुल	५०	१०५ अंगुल	१०५
९५ अंगुल	५५	१०६ अंगुल	११०
९६ अंगुल	६०	१०७ अंगुल	११५
९७ अंगुल	६५	१०८ अंगुल	१२०
९८ अंगुल	७०	फ़ी अंगुल पांच साल होती गिनी है।	
९९ अंगुल	७५		
१०० अंगुल	८०		

९ - चंदरमा वाक़े हो

मौत का दिन	नंबर	राशि में	घर का मालिक	उम्र के साल
बुधवार	१	मेख	मंगल	९०
शूककरवार	२	बृख	शुक्र ९६	
बुधवार	३	मिथुन	बुध	८०
मंगलवार	१०	मकर	सनीचर	९०
सनीचर	११	कुम्भ	सनीचर	९०
बिरवार	१२	मीन	राहु-बृहस्पत	९०
शूककरवार	४	कर्क	चंदर	८५ वरना ९६
मंगलवार	५	सिंह	सूरज	१००
इतवार	६	कन्या	केतु - बुध	८०
शूककरवार	७	तुला	शुक्र	८५
बुधवार	८	बृछक	मंगल	९०
बिरवार	९	धन	बृहस्पत	७५

जब खाना नंबर १२ में कोई ग्रह न हो तो चंदर जिस राशि में होगा उस के हिसाब से मौत का दिन होगा। मौत का दिन खाना नंबर १२ और ८ के ग्रहों के ताक़त के मुक़ाबले से गिना जाता है। **सफा ३२३ नोट से मुतलका**

१०। मुआवन उम्र रेखा इस रेखा का ज़िक्र इसी बुर्ज़ पर आगे है। जो उम्र रेखा से ख़ास मुतलका है।
उम्र के साल
हथेली के खाना नंबर में चांद की जगह फ़ैसला करेगी। उंगलियों की राशियों के हिसाब से चंदरमा और चंदरमा की दिल रेखा की लंबाई से उम्र की हद्द।
८५ वरना ९६
१००
८०
९०
९०
९०
८०
९०
९६
८०
८५
९०
७५
१२०
८५
९०
७५
१० १५ २५ ३५ ४५ ५०
दिल रेखा
उम्र रेखा
मुआवन उम्र रेखा
जब मधुनस ग्रह इन दोनों के साथ हों तो भी उम्र ९६ साल होगी।
नोट :- चंद्र और शुक्र दोनों ही ग्रह हैं इस लिए जब अकेले हों उम्र ८५ साल और जब नर ग्रह का साथ हो उम्र ९६ साल
कलाई रेखा की तादाद
बृहस्पत ७५ साल
बुध/केतु ८० साल
सूरज १०० साल
सनीचर/राहु ९० साल
मंगल ९० साल
शुक्र ८५ वरना ९६ साल
चंदर ८५ वरना ९६ साल

फ़रमान नंबर १७२

मुआवन उम्र रेखा

ये रेखा जैसा की इस के नाम से ज़ाहिर है उम्र रेखा की मददगार है। सिर्फ़ उम्र रेखा की ही मददगार नहीं यानी ये रेखा सिर्फ़ उम्र लंबी होने में ही मदद नहीं देती बल्कि इंसान की तमाम उम्र या जिंदगी की मदद ज़ाहिर करती है। अगर किसी को फांसी लटकाया होवे तो ये रेखा इस के पांव तले मरने से बचने के लिए तख्त दे देगी ताकि गला न घुट जावे। दूसरे लफ़्ज़ों में अगर कोई दुश्मन मारने की तैयारी कर के आ पहुंचे तो इस रेखा के प्रताप से बचाने वाला भी खद-ब-ख़ुद मदद के लिए आ पहुंचेगा। जिस तरह दुश्मन को बुलाया न था इसी तरह ही मदद करने वाला भी बिन बुलाये आ जायेगा।

जिस हाथ में ये रेखा मौजूद हो वह दूसरों से पूरी मदद और आराम पाता रहेगा। दुश्मन के मुक़ाबले में दोस्त भी ख़ुद-ब-ख़ुद पैदा होंगे और मुसीबत को दूर कर जायेंगे। ऐसा आदमी उम्र की तमाम बीमारियों या टूट फुट से बचा रहता है। पूरी उम्र भोगता है। मौत के यम के खिलाफ़ भी इस को मदद मिल जाती है और मदद की हद यहां तक गिनते है की ऐसा आदमी क़ब्र से भी फिर वापिस आ जाता है। गर्जे की बाप की ख़ास कर मदद और सुख सागर लंबा होगा। जीतने साल तक उम्र रेखा के साथ जायेगी उतनी ही उम्र तक ये मदद होगी। इस रेखा वाला औलाद से भी सुख पाता है और बाक़ी तमाम मददगारों से भी आराम पाता है।

फ़रमान नंबर १७३

सनीचर के बुर्ज़ का असर खाना नंबर १०

नीच हालत

१। इस बुर्ज़ के बिलकुल न होने से फ़र्जी खतरात में तमाम ज़िंदगी तबाह होगी। दरमियानी ऊंचाई मुबारक है। जो सेहत के लिए उम्दा है। मगर तंगदस्त होगा। शराब खोरी इस बुर्ज़ की निशानी है। **बददियानती बे-बुनियाद खयालात हादसा बाइसे मौत वगैरह**

उंच हालत

२। उत्तम सनीचर बृहस्पत का नेक फल देगा। अमीर कबीर (बड़ा ही अमीर) साहिब मूलक और अमलाक (बहुत ही जायदाद)। आंख के इशारे से दौलत पैदा करने वाला। दुष्ट भागवान होगा। **कम गो, मतलब परस्त, आंख की चालाकीव होशियारी ख़्वाह अकाल का अंधा मगर गांठ का पूरा होगा।**

३। सनीचर राशि नंबर १० - ११ का मालिक है इस लिए उम्र ९० साल होगी। नीच सनीचर मेख राशि नंबर १ का है और उंच सनीचर तुला राशि नंबर ७ का है। ये आँख की पुतली से काला पहाड़ कर देता है और पहाड़ को पुतली बना देता है। मगरमच्छ भी बन जाता है और मछली भी।

नोट :- मौत का आख़री साल व दिन

बमुजब आख़री सतर सफ़ह ३२०। मुक़ाम चंदर मौत का आख़री दिन और साल कुंडली में चंदर का मुक़ाम और खाना नंबर ८-१२ के मुश्तरका असर से ज़ाहिर हो जाता है। मतलब ये की चंदर का मुक़ाम तो कुंडली में मालूम ही होगा और खाना नंबर ८ में जो कोई ग्रह भी होगा वह नीच होगा। इन निचों के असर से जो साल भी पहला साल होगा वह ख़राब साल होगा। इस आठवें खाने को बारहवे खाने के ग्रह २५ फ़ीसदी अच्छा या बुरा करेंगे। यानी बारहवे घर वालों की अगर अच्छी नज़र हो तो जिस साल वह अच्छी नज़र खतम होगी मौत होगी और अगर बुरी नज़र होवे तो जिस साल से वह बुरी नज़र शुरू होगी वह आख़री साल होगा।

फ़रमान नंबर १७४ व १७५

सनीचर के निशान का असर + और विसर्ग ⁛

खाना नंबर

१ सूरज के बुर्ज़ पर

सूरज के बुर्ज़ पर + हो - दोनों बाहम दुश्मन और ज़बरदस्त ग्रह बाप बेटा एक ही ताक़त के सूरज बाप बेटा सनीचर है। ऊंट ४० तो बोता (ऊंट का बच्चा) ४५ दर्जा होगा। दोनों का अपना अपना और नतीजा ख़राब, हर काम अधूरा बेवजह गरीबी ख़ास कर तालीम तो ज़रूर ही अधूरी हो। बाप कमाए बेटा उड़ाए। नहौसत इन के घर में अव्वल दर्जा हो या ऐसा शख़्स कंगाल निर्धन हो। मच्छ रेखा और काग रेखा मुश्तरका होंगी। मछली हर चीज़ को मुंह में डाल ले। ख़्वाह बेचारी गले में कन्टी से मारी जावे। मगर कौआ हर एक पर बीठ (अपना फुजला) गिरा देवे। औरत भी बदसूरत होवे। यानी शुक्र जो सनीचर का दोस्त है दोनों के दरमियान तबाह होवे। मगर वह ब्रह्म ज्ञानी होगा और त्रिशूल के निशान हों तो बेहया बेशर्म खोटे काम वाला होगा।

१ सूरज के बुर्ज पर

कुंडली में सनीचर का असर

मेख राशि घर क मालिक मंगल है। जो सनीचर का दुश्मन है। सूरज उंच करता है। सनीचर जिस का भी दुश्मन है। सनीचर ख़ुद इस को नीच करता है। नेकी फ़रामोश। ५ साल बीमारी, निर्धन सब काम अधूरे।

२ बृहस्पत के बुर्ज पर

बृहस्पत के बुर्ज पर : दोनों बराबर, जुदा जुदा असर। सनीचर की बुराई और बृहस्पत की भलाई। अदल और रहम का दरमियानी इंसाफ़ है। वज़ीर बा-तदबीर हो। ज़मीन व जायदाद का मालिक हो। उम्दा सेहत और राहत व आराम हो। जितना जावे उतना आवे। जितना सखी सरवर उतना ही दूसरों से छिन लावे। अगर एक सांस आवे दूसरा जावे। इसी तरह ही दोनों हालतें रहें। हस्बे हैसियत गुज़रान होवे।

खाना नंबर — कुंडली में सनीचर का असर :

२ (बृहस्पत के बुर्ज पर) बृख राशि : घर का मालिक शुक्र जो सनीचर का दोस्त है। चंदर उंच करता है जो सनीचर का दुश्मन और बराबर का है। नीच नदारद। असर के लिए बृहस्पत का घर है। जो सनीचर के मुसावी है। औरत का सुख हो वरना हंमेशा बीमारी।

३ मंगल के बुर्जों पर : दोनों बराबर। मंगल दुश्मनी करे। झगड़े की जड़। झगड़े में ख़ुश। झगड़े से फ़ायदा उठावे। दूसरों का काम बिगाड़ेगा। मगर ख़ुद आराम पावे। मगर मंगल नेक की दौलत फिर भी साथ न देवे, कम दौलत ही होगा। मंगल बद पर हथेली के अंदर की तरफ़ हो तो लड़ाई झगड़े में ही मारा जावे।

३ (मंगल के बुर्ज पर) कुंडली में सनीचर का असर :-

मिथुन राशि : बुध का घर है। जो सनीचर का मुसावी और दोस्त है। राहु (दोस्त) उंच करता है केतु मुसावी नीच करता है। वायदे क कच्चा। ज़बान का मलामती। १० बरस तकलीफ़ के बाद आराम पावे।

४ चंदर के बुर्ज़ पर : दोनों मुसावी मगर चंदर दुश्मनी करता है। दोनों का जुदा जुदा मगर चंदर का खराब असर हो जो ख़ुद ही दुशमनी करे। अज़ीज़ों से सुखी तो वाल्दा दुखी करे। चांद के निचले हिस्से में + हो तो पानी से ख़तरा मौत हो। चंदर के बुर्ज़ या दिल रेखा पर विसर्ग ꞉•• हो तो मोतिया वगैरह से अंधा होवे। अपनी बेवकूफ़ी से सनीचर की नज़र को धक्का देवे। चोट लग कर आंख ख़राब न होगी।

४ (चंदर के बुर्ज पर) कर्क राशि : घर का मालिक चंदर है। जो सनीचर का दुश्मन है। बृहस्पत मुसावी उंच करता है। मंगल (दुश्मन) नीच करता है। वाल्दा और अज़ीज़ों से रंजीदा होवे।

५ औलाद

सिंह राशि : घर का मालिक सूरज (दुश्मन) है। उंच नीच नदारद। अहले क़लम मगर निर्धन। चोर फ़रेबी फिर भी तंग हाल। भोला बादशाह।

६ केतु

कन्या राशि : घर का मालिक बुध (दोस्त) और केतु (मुसावी) है। बुध (दोस्त) और राहु (दोस्त) उंच करते है। केतु (मुसावी) नीच करता है। खोटे काम करने वाला वरना (केतु के असर में) २४ साल लड़के पैदा हों। माँ पर घी पिता पर घोडा, बहुत नहीं तो थोड़ा थोड़ा।

यानी

खाना नंबर ४ चंदर (माता) कन्या धी या लड़की। राशि नंबर ६ केतु (केतु जब चंदर के घर हो) केतु का घर) में हो तो लड़की ही होगी यानी लड़कियां लड़कियां ही होंगी और जब बृहस्पत (पिता बुर्ज़ नंबर २ या असल उंच बृहस्पत राशि नंबर ४ कर्क जो चंदर का घर है) पर चंदर (घोडा) हो तो अगर बहुत नहीं तो पिता का थोड़ा बहुत असर ज़रूर होगा। जो अमूमन पूरे का पूरा ही होता है। जैसा की जगा-ब-जगा दर्ज है। मगर सनीचर जो सूरज का लड़का अजीब है। जब ये इसी धी लड़की कन्या राशि केतु के घर होवे तो लड़कियों की जगह लड़के वही चंदर (माता) की मियाद तक २४ साल और जब पिता (सूरज के बुर्ज़ नंबर १) पर हो या सूरज के घर सिंह राशि खाना नंबर ५ पर हो तो पिता या सूरज के असर का नेक निशान का नाम तक भी न होगा।

बाप तो कुल दुनिया को रोशन करता है। बेटा निर्धन बनाता और सब की चोरी करता फिरता है। वह दौलत बख़्शता था तो ये दौलत चुराता है। वह सब से बड़ी १०० साल की उम्र देता है तो ये मौत के घर खाना नंबर ८ बृछक राशि में मंगल बद से मिल कर सब के लिए मौत का जाल लिए बैठा है। वह जैसा बाहर से साफ चमकता है, वैसा ही अंदर से सच्चा है। सनीचर उलट हालत में बाहर अंदर दोनों रंग में स्याह हो गया है। माड़ा पूत और खोटा सिक्का फिर भी कभी न कभी काम आ ही जाता है। सनीचर जब तारेगा

दुनिया की सब स्याही धो देगा और बृहस्पत का असर उत्तम देगा।

७ शुक्र के बुर्ज़ पर : दोनों दोस्त है। शुक्र औरत तो सनीचर इस की आंख बना रहेता है। औरत की आंख दुनिया को बचाती है। औरत की आंख में अगर सनीचर है तो गोया दुनिया की आंख (शुक्र मिट्टी या दुनिया, सनीचर शरारत) शरारत बामुजस्सम है। कोई उसे शरम से दबा नहीं सकता। दोनों ग्रहों का जुदा जुदा और उत्तम फल होगा। राज दरबार से आसुदा हाल और बाइज़्ज़त होगा। मगर जीनाकार इश्क़ से बेइज्जत होगा। नेक हुआ तो सब की आंख में मिट्टी डाली और अगर बद हुआ तो ख़ुद अपनी आंख में मिट्टी डाली। अंगूठे की जड़ में स्त्री भाग में त्रिशूल + इस बुर्ज़ पर मुबारक होगा। मगर गंदा आशिक़ बेगर्ज़ होगा। उम्र रेखा पर विसर्ग : आंखें ख़राब। **जद्दी मकान में स्तुन थम गड़ा हुआ पत्थर सबूत देगा।**

बुध के बुर्ज़ पर : + बुध सनीचर मुसावी है। सिर्फ़ बुध दोस्ती करता है। दोनों का अपना अपना फल होगा। बुध का दोस्ताना मगर सनीचर का ऐतबार नहीं। दस्तकारी, हुनरमंद, परोपकारी होगा। वरना चोर, राहजन, फ़रेबी होगा। अगर दो त्रिशूल हो तो कम नसीब होगा। सिर रेखा पर विसर्ग : आंख ख़राब हो। अगर सिर रेखा पर त्रिशूल हो तो सिर कटने से मौत हो।

७ राशि में सनीचर का असर :

तुला राशि घर का मालिक शुक्र (दोस्त) है। सनीचर ख़ुद उंच करता है। सूरज (दुश्मन) नीच करता है। शुक्र पर : परोपकारी मगर औरत उम्र भर बीमार रहे। बुध पर : ख़ुद अक़्ल का अंधा गांठ का पूरा हो।

८ बृछक राशि : घर का मालिक मंगल है जो सनीचर का दुश्मन है।

मौत

चंदर नीच करता है, सनीचर इस का भी दुश्मन है। उंच इस राशि का है ही नहीं। हर तरह का डर, भय, नुक़सान और मौत का घर होवे। **क़िस्मत की हार और मौतों का आम ताल्लुक होवे**

९ धन राशि : घर का मालिक बृहस्पत (मुसावी) है। राहु (दोस्त) नीच करने वाला है। केतु (मुसावी) उंच करता है। हमदर्द व सखी हो मगर १४ साल फ़िक्र व ग़म में रहे।

करम धरम

१० सनीचर के बुर्ज़ पर : अपना घर। अक़्लमंद तो साहिब तदबीर। अगर उलट हो तो बद बख़्त, बद नसीब, पुरदर्द मौत हो। सनीचर का कोई ऐतबार नहीं। इस का निशान त्रिशूल + मुशबश चारों तरफ़ मार करता है। चारों तरफ़ देखता है। (एक त्रिशूल हो तो जादू मंत्र में माहिर और अगर दो हों तो साहिब तदबीर होगा।) मनहूस भी दर्जे अव्वल में हफ़्ते का आखिर अगर नेकी की तरफ़ मूड जावे। यानी + के किनारे मूड जावे यानी 卐 हो जावे तो गणेश जी की शक़्ल सब से उत्तम होगी। सिफ़र और एक की जमा १+० दस का खाना सब की क़िस्मत का घर है। **(ROLLING STONE) माड़ा शाह व मन की दलीलें होंगी**

१० राशि में सनीचर का असर :

सनीचर का बुर्ज

मकर राशि : घर का मालिक ख़ुद सनीचर है। मंगल उस का दुश्मन ही उंच करता है। बृहस्पत (मुसावी) नीच करता है। अमीरों से अमीर हो मगर २७ बरस हथियार का खौफ़ हो।

११ कुम्भ राशि पानी का घड़ा : घर का मालिक ख़ुद सनीचर। जिसे कोई उंच नीच नहीं करता। २४ साल धन दौलत व जायदाद

आमदन

की खूब आमद फ़ायदा। मगर अय्याश ज़नाकार होवे।

१२ कुंडली में सनीचर का असर :

ख़र्च, दौलत का सुख, राहु

मीन राशि : घर का मालिक बृहस्पत (मुसावी) और राहु (दोस्त) है। शुक्र (दोस्त) और केतु (मुसावी) उंच करते हैं। बुध (दोस्त) राहु (दोस्त) नीच करते हैं। असर के लिए बृहस्पत का घर। ब्योपारी, साहिब कमाल। मगर १५ साल झगड़े में हार या हानी हो। **खाना नंबर १२ के आखिर पर सफा १३१-१३२, खाना नंबर १२ की चीजें**

सनीचर

सुबह से शाम हुई शाम से दूजा पहरा

महर[1] गया था माह[2] आया कोई न इस जा ठहरा।

हर एक चीज़ के हंमेशा ही बैठे रहने से इस के चले जाने की हालत के असर की वह क़दर नहीं होती। ये ग्रह अदली-बदली और फ़ौरन तबदीली या रोशनी से अंधेरा बना देने का कामिल वजूद है। इस लिए ही किसी ने कहा है की " बाबर बइश कोश के आलम दोबारा नेस्त"

यानी की दुनिया पायेदार नहीं। ऐश व इशरत की कोशिश बादल या ज़माने की हवा के साथ ही कर लेनी चाहिए। गो बात में उदासी है मगर सनीचर से मौत का भय, डर का नतीजा चालाकी और वक़्त से पहले ही सोच विचार होता है। सनीचर का बुरा असर कर देने का डर ज़रूरी है। मगर मुमकिन है की वह टार ही देवे। उस वक़्त न उम्र घटे न दौलत हटे।

नंबर १ महर - सूरज, नंबर २ माह - चंदर

राहु आसमान चोटी और समंदर की तह दोनों नीले रंग मिला देने वाला
मस्त हाथी
जिस का कोई रंग न हो, या जो हर रंग में
बदल सके, नक़्शे में नीला रंग होगा।
नीला रंग
ज़िंदा (नीच) क़ीमत एक लाख मुर्दा (उंच) क़ीमत सवा लाख

फ़रमान नंबर १७६

राहु का ग्रह

सनीचर ख़तम मगर सनीचर की रात के शुरू का वक़्त या शाम के बाद का अंधेरा मगर रात से पहले। ज़मीन के नीचे आतिश खेज़ माद्दा की लहर, बगैर धड़ वाले सिर का साया या दिमाग़ में नक़ल व हरकत पैदा होने की लहर। बदी की तरफ़ ले जाने की ताक़त। स्याह रंग हाथी के मानिंद ताक़त का ज़ोर। नीला रंग आसमानी और समंदरी नीला। हर बुर्ज़ की ताक़त गुम या मद्धम करने वाला ग्रह है। इसे बुर्जों के साथ हाथ पर कहीं मुकर्ररा जगह नहीं मिली और न ही ये राशियों में अलहदा राशि का मालिक हुआ।

बृहस्पत की राशि मीन नंबर १२ में इस का निवास गिना गया है। जिसे मछली गिना है यानी नीले समंदर की मछली जो सनीचर या मगरमच्छ की सन्यास की उंगली पर अपना घर रखती है या जिस में कुल ज़माना की हवा या बृहस्पत भी रहेता है जा बैठा है और मछली, मगरमच्छ और हाथी की ताक़तों का जोड़ है। इस में बृहस्पत तो अपने घर का है। केतु का फल उत्तम होता है। मगर बुध का फल ख़राब होगा या दिमाग़ (बुध) नक़ल व हरकत में चला जाएगा। मंगल नेक के होते हुए राहु का फल नदारद मगर चंदर को नीच और सूरज को सूरज ग्रहण देगा।

फ़रमान नंबर १७७

राहु का असर

खाना नंबर १

सूरज के बुर्ज़ पर : सूरज ग्रहण के मानिंद असर देगा। सूरज की सब ताक़त के ऊपर स्याही का बादल कर देगा यानी सब कुछ होते हुए क़िस्मत मदद न देगी। दिन होगा मगर सूरज ग्रहण के वक़्त का नज़ारा हु-ब-हु यही क़िस्मत के असर का हाल होगा।

अब अगर सूरज की सेहत रेखा या तरक़्क़ी रेखा बुध से शुक्र तक चली गई हो तो सूरज अपने दूसरी तरफ़ के हिस्से से पूरी रोशनी देगा यानी सूरज ग्रहण भी है तो इक तरफ़ या इक इलाके या दुनिया के टुकड़े में अंधेरा होगा कुल आलम में अंधेरा नहीं हो सकता। इस लिए ये सूरज की तरक़्क़ी रेखा के क़ायम होते हुए धन दौलत खूब आएगी ब्योपार में फायदा होगा उम्र और दिल व सिर रेखा के सदमों से बचाएगी। अगर ग्रहण होगा तो सिर्फ़ चमक, शान व शौकत, इज्ज़त व मान और ख़ुद दस्ती कमाई में नुक़सान हर्ज़ मर्ज़ होगा। इस ग्रहण के वक़्त या सूरज पर राहु के ज़माने में जिस क़दर सेहत रेखा शुक्र के बुर्ज़ की तरफ़ होगी इसी क़दर ही मदद मिलेगी। ख़ुद अपनी ज़ाती कमाई के ताल्लुक में ख़राबी से बचाव होगा। दान कल्याण माना गया है। ग्रहण के बाद सूरज फिर वही असर उम्दा देगा या राहु के अर्से के बाद फिर कमी पूरी हो जाएगी।

राहु का असर

बृहस्पत के बुर्ज़ खाना नंबर २ में

१। बृहस्पत के बुर्ज़ में मुफ़सिल ज़िक्र है। वज़ीर बातदबीर होगा। बृहस्पत अब

शुक्र का अरसा २५ साल दौलत का आराम देगा। मगर राहु हंमेशा ख़र्चा खड़ा ही रखेगा। जो क़बीलेदारी के नेक कामों में लगेगा। पैसा रुपैया बाकी नहीं बचेगा। यही असर इस वक़्त होगा। जब राहु कलाई पर क़िस्मत रेखा की जड़ में हो और कलाई पर शुक्र और चंदर के बुर्जों को तबाह न करता हो अगर शुक्र की तरफ़ हो तो बुरा असर देगा अगर कलाई पर चंदर की तरफ़ हो तो चंदर के बराबर का है न चंदर को नीच कर सकता है न उंच दोनों अपना अपना फल देंगे मगर चंदर का मद्धम।

राहु का असर खाना नंबर ३
मंगल नेक के बुर्ज पर

राहु मंगल नेक के वक़्त बिलकुल ही फल नदारद यानी मंगल नेक तो है ही वही, वो जिस में राहु न हो और सूरज का असर पूरा हो। इस लिए स्त्री सुख दौलत का सुख पूरा हो स्त्री की उम्र लंबी और दौलत जमा हो।

राहु का असर खाना नंबर ४
चंदर के बुर्ज पर

मद्धम फल होगा। इंसान शास्त्री (इल्म व अक़्ल वाला) तो ज़रूर होगा मगर बाकी फल चंदर का मद्धम होगा। ४५ साल (केतु का ४८ साल और राहु का ४२ साल मगर अब ४५ साल) पानी से खौफ़ होगा यानी उम्र का निस्फ़ अरसा क्यूंकी मीन राशि में चंदर की उम्र ९० साल होती है का निस्फ़ ४५ साल होगा। अगर असल उम्र कोई और निकले तो उसका निस्फ़ अरसा होगा। दौलत व जायदाद का मद्धम फल होगा। राहु का अरसा ए बद पूरा होते ही सब कमी पूरी हो जाएगी और चंदर पूरी ताक़त पर आ जाएगा।

राहु का असर खाना नंबर ५

खाना नंबर ५ में राहु का असर बृहस्पत और राहु का बराबर का होगा। जो की

दुश्मनाना और ख़राब हो।

राहु का असर खाना नंबर ६

(१) खाना नंबर ६ केतु का घर है। जिस में दोनों का दोस्ताना न होगा। राहु इस घर में उंच होगा। बाकी खानों के लिए हर बुर्ज़ में खाना नंबर १२ में जो है वही होगा। (राहु का असर)

(२) केतु के साथ : केतु का कोई घर नहीं बुर्ज़ मुकर्रर नहीं। दोनों ग्रह ख़राब है। इन का काम खराबी की तरफ़ ले जायेगा। राहु मस्त हाथी आंखों से अंधा (हाथी की आँखें हंमेशा छोटी छोटी और नीचे को ही देखती है और आदमी को निस्फ़ ही समझता है। मगर ज़मीन से दुअन्नी उठा लाता है यानी राहु नीचे को ही ध्यान ले जायेगा या वह ध्यान या दिमाग़ को नीचे की तरफ़ ही ले जायेगा या बुरे ख़याल पैदा करेगा। **खाना नंबर ५ सूरज के ताल्लुक में औलाद पर ४२ साल उम्र तक मंदा फल देगा**

अब अगर केतु भी साथ मिला यानी एक ऐसा आदमी जिस में राहु केतु दोनों इकट्ठे ही हों तो कोई भी बदी बाकी न रह जायेगी। केतु धड़ की तमाम बुरी हरकतों का मालिक है। केतु सूअर है और रंग बिरंगा जिस में लाल रंग न हो यानी मंगल की नेकी या इंसान सुर्ख़ रोई न हो। बाकी रंग ख़्वाह कोई हो यानी इज्ज़त और आदर न होगा। विषय विकार सूअर का काम देव (१२ (सुअरी) बेंगन - ८ (कुत्ती)अठेंगन, ४ (गाय) चक - दो (बकरी) तोरयां या सूअर के बच्चे सब से ज़्यादा और ये जानवर ख़ुद इस का नर भी कामदेव में ज़्यादा होता है यानी दो सुअर एक सुअरनी के मुश्तरका मिलापी हो जाते है) और दीगर जिस्मानी ताक़तें जो बदी की तरफ़ ले जाती हैं दर्जा कमाल की होंगी। गर्ज़े की दोनों का मुश्तरका असर हर तरह से ख़राब होगा।

राहु का असर खाना नंबर ७

(१) शुक्र के बुर्ज़ पर : औरत का सुख तो ज़रूर हल्का होगा। सूरज अपना पूरा

असर देगा। राज दरबार से मरतबा। दुश्मन मगलूब और हर एक से आराम हो। मच्छ रेखा शुक्र के बुर्ज़ पर मुबारक निशान है। जो मछली मीन या बारहवी राशि या राहु का घर है यानी शुक्र के बुर्ज़ पर निशान ▦ तो ज़रूर ही ख़राब असर देगा। लेकिन मच्छ रेखा जिस में सनीचर या बुध रेखा भी शामिल हो जायेगी मुबारक असर देगी। क्यूं की सनीचर (उम्र रेखा) और बुध सेहत या तरक़्क़ी रेखा दौलत के लिए तो शुक्र के दोस्त हैं। बुध और सनीचर का शुक्र से ताल्लुक कई जगह मुफ़सिल ज़िक्र है। अय्याशी और होशियारी का ताल्लुक आम होगा। मगर जहां तक राहु ख़ुद का ताल्लुक है दुश्मनाना असर होगा जो स्त्री भाव या स्त्री सूख या दौलत का सुख वगैरह या हद से ज़्यादा फिज़ूल ख़र्चा से मुराद है।

(२) बुध के बुर्ज़ पर : बुध का ये दोस्त है और बुध के होते ये कभी ख़राबी की तरफ़ न ले जायेगा। दिमाग़ की नक़ल व हरकत तो कराएगा मगर बदी की तरफ़ न ले जायेगा मगर ख़र्चा वगैरह बहुत कराएगा। धन दौलत व ब्योपार का कोई सुख न होगा। पराई दौलत का राखा होगा। दूसरों के लिए जोड़ने वाला होगा। ख़ुद खाना-पीना और ख़र्चने वाला न होगा।

राहु का असर खाना नंबर ८

मंगल बद के बुर्ज़ पर : दोनों बद और बदी के मालिक अक़ल बेलगाम के कामों में "आ बैल मुझे मार" के किस्सों में स्त्री व दौलत का सुख तबाह और ख़र्चा होवे। ५ साल नुक़सान का डर है।

राहु का असर खाना नंबर ९

खाना नंबर ९ या खाना नंबर ५ में राहु का असर बृहस्पत और राहु का बराबर का होगा। जो दुश्मनाना और ख़राब हो।

राहु का असर खाना नंबर १०

सनीचर के बुर्ज़ पर : सनीचर का दोस्त। ब्योपारी, साहिब कमाल होगा मगर १० साल झगड़े पैदा हो और हार और हानी होवे। सनीचर जो राहु का दोस्त है अपना दोस्ती का असर धन दौलत पर करते है। राहु का काम बुरी तरफ़ ले जाने का है और सनीचर दोनों पहलू चल जाता है। इस लिए हंमेशा शक्की मालूम होगा।

राहु का असर खाना नंबर ११

खाना नंबर ११ बृहस्पत का है और राशि सनीचर की। राहु सनीचर का दोस्त है और बृहस्पत के बरखिलाफ़। सनीचर व राहु दोनों ही बृहस्पत के बरखिलाफ़ होंगे।

असर राहु का इस खाना में बुरा होगा यानी धन दौलत उम्दा बृहस्पत के वक़्त उम्दा बाद में तंगदस्ती।

राहु का असर खाना नंबर १२

बाकी खानों के लिए हर बुर्ज़ में खाना नंबर १२ में जो है वही होगा।

केतु : गोली की जगह आकर मरने वाला सूअर दुनिया की आवाज़ दरगाह में पहुचाने वाला दरवेश कुत्ता मौत के यम की आमद पहले ही बता दे।

हर रंग में रंग बिरंगा मगर लाल रंग न होगा।

फ़रमान नंबर १७८

केतु का ग्रह

सनीचर की रात ख़तम हुई मगर इतवार का दिन नहीं चढ़ा रात के अंधेरे के बाद मगर सूरज निकलने से पहले का अरसा ज़मीन के ऊपर या आसमान के नीचे तूफ़ानी हवा की लहर बगैर सिर के धड़ का साया सिर छोड़ कर बाकी तमाम जिस्म की नक़ल व हरकत पैदा करने वाली बुरी लहर बदी की तरफ़ ले जाने वाली ताक़त रंग बिरंगा सूअर मगर लाल रंग का इस में निशान न हो। (मुफ़सिल राहु के ग्रह में लिखा है।) हर बुर्ज़ की ताक़त ख़राब करने वाला है। बुर्जों के साथ हाथ की हथेली पर इसे जगह मुकर्ररा कोई नहीं मिली। सिर्फ साया और निशान जाहीर होता है। राशियों में भी मुकर्ररा राशि नहीं मिली। जिस तरह धड़ का ताल्लुक सिर से है और सिर का ताल्लुक सांस या हवा से हु-ब-हु इसी तरह केतु का ताल्लुक बुध से हुआ है यानी इसे बुध (सिर) की राशि जो छठी राशि कन्या या लड़की जिस में अभी ज़माने के बुरे भाव का माद्दा मौजूद न हो जगह दी गई है। जिसे बुध राहु तो उंच करते है मगर ये कामदेव का फ़रिश्ता ख़ुद ही उसे नीच करता है यानी जब लड़की में बदफ़ैली या कामदेव या धड़ की बुरी हरकत करने या पांव की नक़ल व हरकत करने की आदत हुई केतु का असर या अहद हुआ। दरअसल राहु केतु दोनों के लिए कहा जाता है की

"गल पई सलाहें वह भी गई, रन पई राहें वह भी गई"

यानी जो बात लोगों के सलाह मशवरे में पड़ गई वह भी चलती बनी, यानी पता नहीं क्या नतीजा देवे और जो औरत रास्ते वगैरह में एक से दूसरे के हां आने जाने लगी उस का भी कोई ऐतबार नहीं।

राहु ने सूरज ग्रहण और चंदर को मद्धम किया था मगर केतु चंदर को चांद ग्रहण और सूरज को मद्धम करता है चांद ग्रहण में भी दुनियावी शान

और चंदरमा की नेक ताक़त के असर का भी वही हाल है जो सूरज ग्रहण के वक़्त था यानी सूरज ग्रहण के वक़्त अगर एक जगह अंधेरा था तो दुनिया के किसी दूसरे इलाक़ों में रोशनी थी। बुध एक ऐसा ज़बरदस्त ग्रह है जो दो दुशमनों के दरमियान दोस्ती से काम निकाल लेता है या दो दुश्मनों के दरमियान आकर एक का असर दूसरे पर बुरा नहीं होने देता या दो के दरमियान (Buffer - बफर रेलगाड़ी में दो गाड़ीयों के दरमियान टक्कर से नुक़सान के बचाव करने वाली चीज़) होकर दोनों को अपना अपना काम करने में लगाए रखने वाला। सूरज ग्रहण राहु से हुआ तो सेहत या सूरज रेखा बुध से मिली और सूरज की चमक का असर दिया। इसी तरह जब चंदर केतु से चांद को ग्रहण हुआ तो बुध की दूसरी रेखा जिसे सिर की श्रेष्ठ रेखा कहेते हैं। चंदर की पूरी ताक़त बहाल करा देगी। ग्रहण का वक़्त गुज़रने के बाद चांद की फिर वही ताक़त हो जाएगी। ऐसी हालत में भी दान कल्याण नेकी के नतीजे पर ले जायेगा। सूरज ग्रहण और चंदर ग्रहण दोनों वक़्त में हद दर्जे की मंदी हालत के यानी दुनिया के पिता सूरज और माता चंदर दोनों ही ज़ेरबार बोझ के नीचे दबे हुए हो जाते हैं मगर ग्रहण का वक़्त गुज़रते ही फिर वही हालत उम्दा।

फ़रमान नंबर १७९

केतु का असर खाना नंबर १

सूरज के बुर्ज पर सूरज का मद्धम असर होगा। मामुं तरफ ज़्यादा खराबी करेगा। स्त्री सुख हल्का होगा। (मुफ़सिल सूरज के बुर्ज़ में)। राज दरबार से फ़ायदा मगर ऐसा ज़्यादा नहीं सिर्फ ३ साल (सूरज के तमाम अरसा में ख़ूब ऐश का ज़माना होगा।) **यानी कुंडली के जिस घर में सूरज हो उस जगह की मुतलका चीजों का असर उम्दा होगा**

केतु का असर खाना नंबर २

मुफ़सिल बृहस्पत के बुर्ज़ में लिखा है सखी सरवर जो कमाएगा खाएगा या खिला देगा अपने पास पैसा जमा न रखेगान जमा रहेगा। एक सांस आया या दुसरा गया तो पहला आया या आई चलाई होती रही। क़िस्मत रेखा की जड़ में शुक्र की तरफ़ मुबारक चंदर की तरफ़ ख़राब।

केतु का असर खाना नंबर ३

नेक मंगल पर : ख़ुद ज़ात के लिए नेक मगर भाईबंदों की तरफ़ से दुश्मनाना। परदेश की जिंदगी और बे-आराम वगैरह भाइयों के सबब होती रहे। मंगल नेक **(वाले के लिए)** पर ख़र्चे का टुकड़ा मुस्तैल हथेली के राशि १२ मीन का असर उत्तम करेगा। **मगर ससुराल की लड़कियां वगैरह (औरत ज़ात) के दुख दिखलायेगा**

केतु का असर खाना नंबर ४

चंदरमा के बुर्ज़ पर : मुफ़सिल चंदर के बुर्ज़ में लिखा है। अक़्ल क़ायम

साहिब तदबीर मगर लड़कियां ज़्यादा, ६ साल नुक़सान। चांद ग्रहण। सिर की श्रेष्ठ रेखा चांद ग्रहण और चंदर नीच के बुरे असर से बचाएगी जिस तरह सूरज ग्रहण के वक़्त सूरज की तरक़्क़ी रेखा से फिर वही सूरज चमका था इसी तरह ही सिर की श्रेष्ठ रेखा पर चंदर की चमक बहाल करा देगी। ये दोनों रेखा बुध की रेखा हैं। इस लिए ३४ साल से शुरू हो कर ३४ साल ही असर देती है।

सूरज के साथ दोस्त है और इस लिए बुध चुप रहता है और अपने वक़्त का निस्फ़ कोई जुदा असर नहीं देता यानी १७ साल चुपचाप फिर अपना जुदा असर देना शुरू कर देगा।बुध के साथ चंदर की दुश्मनी है यानी बुध के वक़्त दुश्मनाना असर देगा या बुध के बैठे चंदर नेक फल न देगा। चंदर ग्रहण केतु से हुआ जो बुध के बिलकुल बराबर का है अब चंदर केतु से दब गया जो ४८ साल तक असर करेगा मगर बुध जो ख़ुद चंदर का दोस्त है। (चंदर का कोई दुशमन नहीं सिवाय केतु के और राहु के) चंदर ख़ुद ही दुशमनी करता है। दोनों ग्रह अपना पूरा पूरा वक़्त और पूरा पूरा असर करते हैं।

अब अगर सूरज ग्रहण हो और सेहत रेखा क़ायम हो तो सूरज २२ साल अपने और १७ साल बुध या ३९ साल में और ३९ साल चमक देगा और इसी तरह जब चंदर के वक़्त केतु से चांद ग्रहण हो तो बुध की श्रेष्ठ रेखा २४ साल चंदर का वक़्त चंदर ग्रहण के बाद आख़री हिस्से में ३४ साल यानी २४ साल की उम्र से ५८ साल तक जुदा असर उत्तम देगा।

दोनों ग्रहों के वक़्त का अरसा राहु केतु के दर्जे असर पर थोड़ा या बहुत या सारा ग्रहण जुदा जुदा होगा। राहु से सूरज ग्रहण २२ साल तक और केतु से चंदर ग्रहण २४ साल तक हो सकता है। जो सूरज और चंदर की अपनी अपनी मियाद है। मगर राहु केतु दोनों अगर ख़राब असर करना शुरू

कर दें जिस में चंदर और सूरज का कोई ताल्लुक न हो तो राहु ४२ साल तक और केतु ४८ साल तक मार कर सकता है यानी इन सालों की उम्र तक हो सकता है और इतने इतने ही साल ज़्यादा से ज़्यादा हद तक रह सकता है यानी पूरी शांति ४८ साल के बाद ही होगी मगर सेहत रेखा और सिर की श्रेष्ठ रेखा दोनों हालतों में अपना अपना पूरा असर दे कर मदद करेंगी।

सूरज ग्रहण वाले को चंदर का सितारा भी मदद देगा। चंदर ग्रहण वाले को सूरज का सितारा मददगार होता है। जिस तरह राहु केतु **(बाहम)** मददगार हैं, इसी तरह ही चंदर सूरज बाहम दोस्त हैं।

केतु का असर खाना नंबर ५

खाना नंबर ५ बृहस्पत के घर हैं। केतु बृहस्पत के बराबर का है इस लिए केतु का असर उम्दा होगा। **खाना नंबर ५ सूरज का ताल्लुक - ४५ साल उम्र तक लड़के की जगह कुत्ते के रोने की आवाज़ होगी।**

केतु का असर खाना नंबर ६

खाना नंबर ६ केतु का घर है। बाकी खानों के लिए हर बुर्ज़ का खाना नंबर ६ का जो असर दिया है वही केतु का असर होगा। **मामुं व मामुं ख़ानदान पर खराबी का सबब हो सकता है।**

केतु का असर खाना नंबर ७

शुक्र के बुर्ज़ पर : मुफ़सिल शुक्र के बुर्ज़ में दर्ज़ है। खूब दौलतमंद वरना ४० साल दुश्मन। बाद अज़ान हर एक मददगार या जो दुश्मनी करे ख़ुद बरबाद होगा।

केतु का असर खाना नंबर ७

बुध के बुर्ज़ पर : अहले क़लम मगर ३४ साल दुश्मन ज़्यादा हों।

केतु का असर खाना नंबर ८

मंगल बद पर : हर तरह की बुरी हालत और हानी गले लगी रहे। **४५ साल उम्र तक औलाद से महरूम होगा।**

केतु का असर खाना नंबर ९

खाना नंबर ९ बृहस्पत के घर है। केतु बृहस्पत के बराबर का है इस लिए केतु का असर उम्दा होगा **ख़ुद अपने लिए, मगर मामुं घर व औलाद के लिए नाक़िस ही होगा सफह १६३ जुज़ २०**

केतु का असर खाना नंबर १०

सनीचर के बुर्ज़ पर : बुरे काम करने वाला वरना २४ साल लड़के पैदा हों और सनीचर उत्तम फल देवे और हर तरह से बृहस्पत का फल उत्तम फल पैदा होगा। ४८ साल की उम्र पर तब्दीली हालात फैसला करेगी। सनीचर उल्टा निकला तो हर तरह से हानी, जिस्मानी तकलीफ़, रूहानी गड़बड़, ज़मीन, मकान और ज़र व मान का नुकसान और हर जगह तीन काने और अगर सनीचर मददगार हुआ तो पग बारह और मिट्टी को हाथ डाला तो सोना ही मिल गया वाला असर होगा।

केतु का असर खाना नंबर ११

खाना नंबर ११ बृहस्पत का घर व सनीचर की राशि है। केतु सनीचर के बराबर का

है इस लिए दौलत की आमद तो उम्दा मगर सनीचर व केतु का फल ख़राब होगा।

केतु का असर खाना नंबर १२

मीन राशि : (घर का मालिक बृहस्पत) जो केतु के बराबर का है। ये राशि राहु का भी घर है जो केतु का दोस्त है। जिस तरह राहु खाना नंबर ६ में उंच फल देता है और दुश्मनों का नाश करता है उसी तरह केतु खाना नंबर १२ में उंच होता है और औलाद क़बीले की पैदाइश की ज़्यादती में उत्तम फल देता है। **इज्जत व मान का सरोवर या चश्मा होगा।**

वैसे हर ग्रह के अपने हाल में खाना नंबर १२ का जो असर दिया है उन तमाम बातों में केतु अपना असर उत्तम करेगा जब की केतु खाना नंबर १२ में होवे मगर भाइयों से बे-आरमी कराएगा। **सफ़ा १३१-१३२ खाना नंबर १२ की चीजें।**

केतु

केतु व राहु को दुम और सर भी माना है यानी अगर राहु वक़्त की गिनती के हिसाब से पहले घर हो तो इल्म जोतिश में केतु उस घर से सातवें होगा यानी के दोनों के दरमियान ५ घर और होंगे या केतु को बगैर गिने ही सातवें घर लिख लेंगे मगर सामुद्रिक में जिस जगह निशान केतु हो वहां ही केतु को लिखेंगे सातवें घर होने की कोई शर्त ज़रूरी न होगी। ये ग्रह भी वैसा ही ज़रूरी है जैसे की दूसरे ग्रह। सूरज के साथ या लाल रंग से केतु का नाश माना है। लेकिन अगर रंग बिरंग चीज़ हो और लाल रंग का साथ हो तो इस वक़्त केतु तो बेशक़ न होगा मगर रंग बिरंग होने की वजह से खाली असर ही हो जाएगा यानी बुध की तासीर पैदा होगी और अरसा असर भी ३४ से शुरू होगा। केतु का निशान न होने से केतु अपने घर का होगा। जो खाना नंबर ६ है।

फ़रमान नंबर १८०

मुत्फ़र्रिक योग

ग्रह	राशि पर चला जावे	बुर्ज़ पर चला जावे	असर
सूरज	मेख	मंगल नेक	मुशीर बातदबीर
चंदर			मीसल राजा होवे
चंदर	मेख	मंगल नेक	हर क़िस्म की सवारी
बृहस्पत	कर्क	चंदर	का आराम होवे।
सनीचर	कुंभ	सनीचर	--------------
शुक्र	} मेख	मंगल	
सनीचर		नेक	दलिदरी
चंदर	मीन	बृहस्पत	
सूरज	बृख	शुक्र	आलसी
मंगल	कर्क	चंदर	

ग्रह	राशि पर चला जावे	बुर्ज़ पर चला जावे	असर
सूरज बृहस्पत	मेख	मंगल नेक होवे	दुनिया का आराम 4
शुक्र सनीचर	मेख	मंगल	ज़ानी अय्याश 5
मंगल सनीचर चंदर	मेख	मंगल	बीमारी होवे। 6
सनीचर चंदर मंगल	बृख	शुक्र	फूलबहरी होवे। 7

ग्रह	राशि पर चला जावे	बुर्ज़ पर चला जावे	असर
तमाम ग्रह	बृख	शुक्र	हुक्मरान होवे
चंदर शुक्र	बृख	शुक्र	दवाइयों के काम से फ़ायदा होवे
सूरज चंदर	बृख	शुक्र	औरतों से झगड़ा हुआ करे।
शुक्र बुध	बृख	शुक्र	शहवत परस्त ज़ानी।
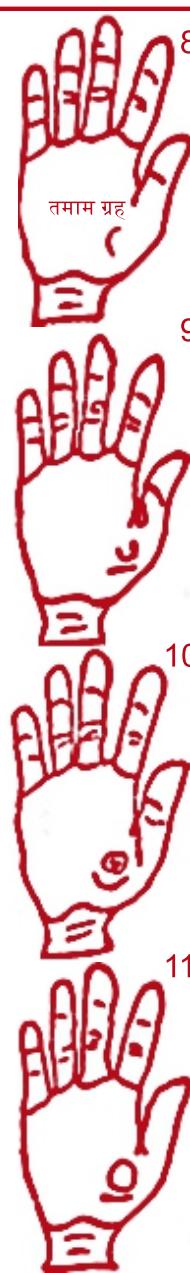
ग्रह	राशि पर चला जावे	बुर्ज़ पर चला जावे	असर
चंदर सनीचर	बृख	शुक्र	हथियार से मौत होवे।
तमाम गह	मिथुन	बुध	साहब इक़बाल
सूरज चंदर	मिथुन	बुध	मतलब परस्त
मंगल शुक्र	मिथुन	बुध अय्याश	ज़नाहकार
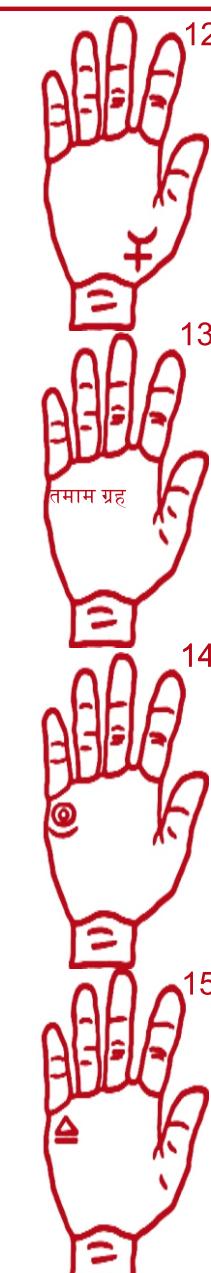
ग्रह	राशि पर चला जावे	बुर्ज़ पर चला जावे	असर
सनीचर बृहस्पत	मिथुन	बुध	ज़िंदगी औसत दर्ज़ा। आख़री उम्र में आराम पावे। 16
बुध बृहस्पत	मिथुन	बुध	साबिर शाकिर 17
शुक्र बृहस्पत	मिथुन	बुध	भागवान ख़ुशहाल होवे। 18
सूरज मंगल सनीचर चंदर	मकर कुंभ कुंभ कन्या	सनीचर सनीचर सनीचर बुध	भागवान 19

ग्रह	राशि पर चला जावे	बुर्ज़ पर चला जावे	असर
सूरज मंगल	मकर	सनीचर	अज़ीज़ों से बे-वजह ज़र व माल झगड़ा होवे।
राहु चंदर	मकर क़ायम	सनीचर	सर फट जावे
सनीचर मंगल	मकर	सनीचर	हुक्मरान जायदाद वाला।
शुक्र बुध	मकर	सनीचर	साहब अक़्ल

ग्रह	राशि पर चला जावे	बुर्ज़ पर चला जावे	असर
शुक्र मंगल	मकर	सनीचर	निर्धन झगड़ालू 24
चंदर मंगल	मकर	सनीचर	लालची, पैसे का पुत्र (लड़का) 25
सूरज राहु	मकर	सनीचर	उम्र सिर्फ़ २२ साल 26
सूरज राहु	कुंभ	सनीचर	उम्र सिर्फ़ २२ 27

ग्रह	राशि पर चला जावे	बुर्ज़ पर चला जावे	असर
सनीचर सूरज चंदर	कुंभ मेख बृख	सनीचर मंगल शुक्र	आली मरतबा साहब जायदाद 28
चंदर सूरज	कुंभ	सनीचर	उम्र ९ साल 29
मंगल चंदर	कुंभ	सनीचर	वहमी 30
बुध शुक्र	कुंभ	सनीचर	अज़ीज़ों से जुदाई रहे 31

ग्रह	राशि पर चला जावे	बुर्ज़ पर चला जावे	असर
राहु चंदर	कुंभ क़ायम	सनीचर	सिर फट जावे
चंदर बृहस्पत	मीन	बृहस्पत	मिसल राजा
सूरज चंदर बुध मय राहु व केतु	मीन	बृहस्पत	वालिद डूब मरे
सनीचर चंदर	मीन	बृहस्पत	हथियार से मौत होवे।

ग्रह	राशि पर चला जावे	बुर्ज़ पर चला जावे	असर
सनीचर	कर्क	चंदर	पानी से
चंदर	मकर	सनीचर	मौत होवे
बृहस्पत	कर्क	चंदर	साहब इक़बाल
चंदर			
बुध	कर्क	चंदर	
बृहस्पत	धन	बृहस्पत	राज योग
सूरज	क़ायम		
सूरज	कर्क	चंदर	
मंगल	मेख	मंगल	उम्र १०० साल
मंगल	बृख	शुक्र	
मंगल	तुला	शुक्र	

ग्रह	राशि पर चला जावे	बुर्ज़ पर चला जावे	असर
सूरज चंदर	कर्क	चंदर	दुनिया का पूरा आराम। 40
सूरज मंगल	कर्क मकर	चंदर सनीचर	आँख से काना होवे 41
सनीचर मंगल	कर्क मकर	चंदर सनीचर	चोरी से हंमेशा सज़ा पावे। 42
सूरज राहु	सिंह	सूरज	कम दौलत 43

ग्रह	राशि पर चला जावे	बुर्ज़ पर चला जावे	असर
चंदर सूरज बृहस्पत	कर्क सिंह क़ायम	चंदर सूरज	साहब इक़बाल
सूरज चंदर	सिंह	चंदर	ज़िंदगी भर आराम।
मंगल चंदर	मकर सिंह	सनीचर सूरज	आँख से काना होवे।
बृहस्पत शुक्र	सिंह	सूरज	बज़रिया इल्म दौलत कमावे।

44
क़ायम

45

46

47

ग्रह	राशि पर चला जावे	बुर्ज़ पर चला जावे	असर
सूरज	मकर या कुंभ	सनीचर सनीचर	उम्र १२ दिन या १२ साल होवे। (48)
चंदर	सिंह	सूरज	
सूरज चंदर चंदर	सिंह कर्क क़ायम	सूरज चंदर सितारा	मिसल राजा हो। (49)
सूरज चंदर राहु केतु	कन्या	बुध	अज़ीज़ के क़त्ल से मौत होवे। (50)
बुध चंदर	कन्या	बुध	मिसल राजा हो (51)

ग्रह	राशि पर चला जावे	बुर्ज़ पर चला जावे	असर
सूरज सनीचर	कन्या मीन	बुध सनीचर	औरत पर औरत मरती जावे। 52
सूरज मंगल	कन्या मकर	बुध सनीचर	लड़के पर लड़का मरता जावे। 53
बुध बृहस्पत	कन्या	बुध	इबादतगार होवे 54
सनीचर मंगल	कन्या	बुध	नेकी फ़रामोश 55

ग्रह	राशि पर चला जावे	बुर्ज़ पर चला जावे	असर
चंदर	मेख	मंगल	
सूरज	कर्क	चंदर	ना-मर्द
शुक्र	सिंह	सूरज	वरना बुज़दिल
सनीचर	तुला	शुक्र	
मंगल	तुला	शुक्र	साहब तदबीर
शुक्र			हो।
बुध	तुला	शुक्र	नेकी फ़रामोश
सनीचर			हो।
बृहस्पत	तुला	शुक्र	नेक किरदार
सनीचर			होवे

56

57

58

59

ग्रह	राशि पर चला जावे	बुर्ज़ पर चला जावे	असर
शुक्र सूरज	तुला	शुक्र	नज़र कम। औरत से झगड़ालू।
बृहस्पत चंदर	तुला	शुक्र	बचपन में तकलीफ़ हो।
सूरज शुक्र	मेख मकर कर्क या तुला	मंगल सनीचर चंदर शुक्र	वालिद मर जावे।
चंदर सनीचर	तुला	शुक्र	हथियार से मौत हो।

ग्रह	राशि पर चला जावे	बुर्ज़ पर चला जावे	असर

64

क़ायम मंगल

क़ायम मंगल

मंगल क़ायम

खाली

65

खाली

66

ग्रह	राशि पर चला जावे	बुर्ज़ पर चला जावे	असर
सूरज	मीन	बृहस्पत	मुतम्मिल मिज़ाज
	कर्क	चंदर	
	बृछक	मंगल	
मंगल	क़ायम		
चंदर	बृछक	मंगल	ना-मर्द
शुक्र	मकर	सनीचर	बुज़दिल
	कर्क या	चंदर	
	तुला	शुक्र	
शुक्र	बृछक	मंगल	हर एक की
मंगल			निंदया करे।

ग्रह	राशि पर चला जावे	बुर्ज़ पर चला जावे	असर
बृहस्पत बुध सूरज	धन कर्क क़ायम	बृहस्पत चंदर	राज योग। 67
सूरज मंगल	धन	बृहस्पत	आली मरतबा 68
शुक्र मंगल	धन	बृहस्पत	आसुदा हाल 69
बृहस्पत शुक्र	धन	बृहस्पत	दुनिया का आराम। 70

ग्रह	राशि पर चला जावे	बुर्ज़ पर चला जावे	असर	
सूरज सनीचर	धन	बृहस्पत	दौलतमंद मगर मतलब परस्त	71
तमाम ग्रह	बृख	शुक्र	हुक्मरान	72 तमाम ग्रह
तमाम ग्रह	मिथुन	बुध	साहब इक़बाल	73 तमाम ग्रह
तमाम ग्रह	बृछक	मंगल	आली मरतबा	74 तमाम ग्रह

फ़रमान नंबर १८१

मिसाल

इल्म सामुद्रिक में ग्रहों को रोशनी के घरों में जलते हुए लैम्प माना गया है और राशीयों को उन के लिए जगने या चमकने की हद बंदी की जगह या ग्रहों का घर माना है। मियाद असर से मुराद ये है की वह कितने कितने अरसे तक जग सकते हैं ये जगने का वक़्त हर ग्रह की बिजली के लैम्प की तरह इस की मियाद कैंडल पावर (बत्ती की ताक़त है) मसला सूरज का लैम्प जग रहा है इस का रंग गंदुमी है इस के साथ ही अगर बृहस्पत का लैम्प जग पड़े जिस का रंग ज़र्द है तो दोनों लेंपों की रोशनी जो रंग देगी वही रंग ज़िंदगी में इन ग्रहों के असर का होगा यानी ज़र्द रंग कच्चे पीले की बजाये रोशनी अब पक्के पीले रंग की होगी। इसी तरह से ही सब ग्रहों के लेंपों के रंगों का आपस में इकट्ठे या जुदे जुदे जगने पर होगा। अब एक राशि में जब कोई ग्रह या लैम्प क़ुदरत की तरफ़ से जगाया हुआ होवे तो इस घर से रोशनी दूसरे घर में कितने दर्जे जायेगी ये भी इस इल्म में मुकर्रर है यानी १०० फ़ीसदी* या कुल की कुल, नीस्फ़ और चौथाई ताक़त से दूसरे घर में रोशनी के जाने का असूल मुकर्रर है। हर एक घर की ताशीर यानी जिस्म खाना नंबर एक इज्ज़त, दौलत खाना २ इसी तरह से ही बाद खानों का असर मुकर्रर है। इसी तरह एक ग्रह का शुरू होना लैम्प का जग जाना समझा गया है और अपने वक़्त पर ख़तम होने से मुराद इस लैम्प से बुझ जाने से होगी। लैम्प बुझ गया या जगने लगा मगर ग्रह का घर वही रहा। ख़्वाह इस घर में कोई भी और ग्रह आवे। मगर मकान की मलकीयत असल मालिक की ही रहेगी। इस में मुखालफ़ाना कब्ज़ा असर न करेगा।

ख़ास फ़र्क

अगर किसी शख़्स का दायां और बायां दोनों हाथ आपस में फ़र्क करते हो तो

दोनों हाथों का हाल जुदा जुदा देख कर फिर दोनों के असर खुलासा ले कर मुकम्मल नतीजा होगा।

इस का आम ज़िंदगी में दायां हाथ ज़्यादा असर करेगा मगर बायें का असर भी अचानक होगा जो चंदरमा के वक़्त ज़रूर असर देगा। यही हाल शुक्र के ग्रह का भी होगा। नर ग्रह सूरज, बृहस्पत और मंगल का फल दायें हाथ पर ज़्यादा होगा बाकी ग्रह मखुन्नस (न ही नर न ही मादा यानी खुसरे ग्रह)हैं। इस लिए दोनों तरफ यानी दायें और बायें के हिसाब वह अपना अपना असर दोनों के वक़्त में दे दिया करते हैं।

इल्म जोतिश के मुताबिक बनाई हुई कुंडली के असर देखने का आसान तरीका

दी हुई जनम कुंडली के जिस खाना में चंदरमा होवे। वही राशि इस शख़्स की जनम राशि होगी। इस खाना नंबर को एक का हिंदसा दे कर बाकी सब ग्रह तरतीबवार कुंडली में पूरे कर लें। फिर इस किताब के ब-मुजब असर देखें।

जनम कुंडली के खाने हाथ पर

दायां हाथ

अगले सफ़ह पर मुलाहीज़ा फ़रमाएँ
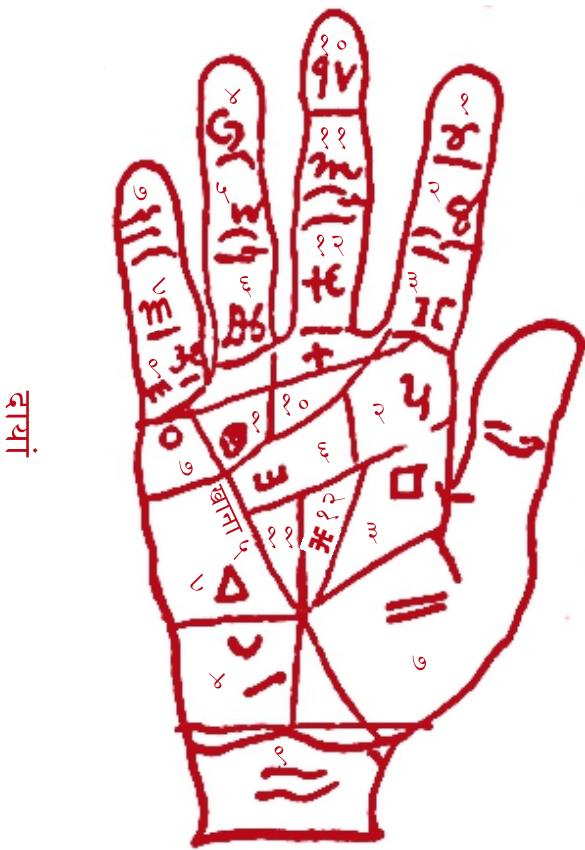
फ़रमान नंबर	
११९	तारीख पैदाइश व जनम दिन मालूम करने के बाद ग्रह कुंडली और रेखा कुंडली बनायेंगे।
६७-७०	तबीयत का आम झुकाओ ब-मुजब हाथ व क्याफ़ा।
५८-९७	बचपन, जवानी, बुढ़ापा मुख़तसर तौर पर।
(११०-१२१) १२२	पैदाइश के वक़्त वालदैन की हालत खाना नंबर ९ कुंडली।
११३	उंच ग्रह / नीच ग्रह कोन कोन से हैं।

फ़रमान नंबर	
१४०	सफर मामूली व ज़रूरी, सफर से वापसी की ज़िंदगी।
९५	मकान रिहाइश का असर व तादाद वगैरह।
१४१	मकान की तह ज़मीन, खेती की ज़मीन, जंगल, दरिया पहाड़ का ताल्लुक।
१३४	तालीम व तजुर्बेकारी, सेहत - बीमारी।
१८१	अचानक हालात। (बायां हाथ)
१२६ } १२९	खुलासा ज़िंदगी। (चक्कर, शंख, सदफ़) ख़ास ख़ास मोटी मोटी बातें।
११३	ज़िंदगी में आइंदा हालात की वक़्त से पहले ग्रहों की निशानियाँ असर के लिए क्या क्या होंगी।
१०८	कुल उम्र, मौत का बहाना, मौत का दिन, वक़्त मौत व सेहत का हाल और आख़िर गृहस्त में या परदेश में।

एक शख़्स का दायां हाथ

अनामिका
मद्धमा
तरजनी
कनिष्का
सनीचर
सूरज
बृहस्पत
बुध
झुकाओ बाहर को
मंगल नेक
मंगल बद
चंदर
शुक्र
कलाई रेखा

चक्कर १
शंख १
सदफ़ ८

नोट : ये असल फोटो नहीं
खाके की पैमाइश की गई है।

हथेली की शुमाल पर
चौड़ाई = ३.३"
हथेली की जनूब पर
चौड़ाई = २"
मद्धमा की लंबाई = २.९"
हथेली की मद्धमा तक
लंबाई = ४.१"

उंगलियों पर लकीरें
दायें हाथ पर १९
बायें हाथ पर २४
कुल लकीरें ४३
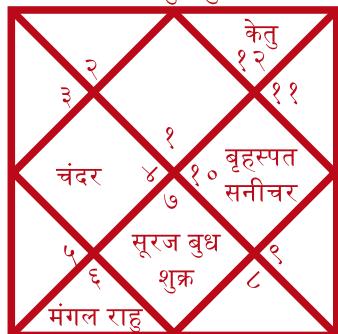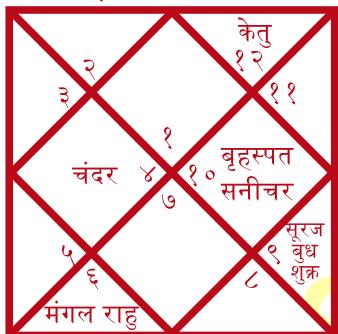
ऊपर की बनाई हुई कुंडलीयां बमुजब पंडित का बनाया हुआ टिपडा है। तारीख पैदाइश १३ पोह १९५९ मुताबक जनवरी सन १९०२ बीरवार हाथ देखने का दिन २३ माघ संवत १९९५ यानी ३७ साल शुरू हुआ।

बमुजब हाथ रेखा

ग्रह कुंडली

मंगल	खाना नंबर १
चंदर	खाना नंबर २
केतु	खाना नंबर ३
राहु	खाना नंबर ७
बृहस्पत सनीचर	खाना नंबर १०
सूरज बुध शुक्र	खाना नंबर १२

चंदर २ — मंगल १ — सूरज बुध शुक्र १२ — ११ — केतु ३ — ४ — बृहस्पत सनीचर १० — ७ — ५ — ६ — राहु — ९ — ८

रेखा कुंडली

३ मंगल बद पर भी□ सिर रेखा दुरस्त हद तक

२ बृहस्पत रेखा चंदर व सनीचर से मिली

१ ४९ तक सूरज रेखा सूरज के बुर्ज़ पर □ ◎ सदफ़ सूरज

१२ सूरज रेखा ३४ से क़ायम □

११ हथेली बड़ी, क़िस्मत रेखा अकेली शाख़, सेहत व बुध रेखा शुक्र तक

४ चंदर पर □□ क़िस्मत रेखा की जड़

१० मशलश दिल के आख़िर पर

५ औलाद सूरज बुध के दरमियान ४ लड़के लड़की हो

७ शादी रेखा ३ ऊपर छोटी बाकी दो में ७ साल फ़र्क

९ बुर्ज़ बृहस्पत क़ायम नीचे मंगल को शाख़ें

६ बृहस्पत पर कुशादा

८ तीन कलाई रेखा शुक्र पर उम्र रेखा की बड़ी शाख दोशाखी की
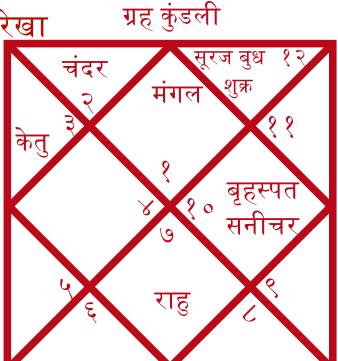
ग्रह कुंडली किस तरह बनाई गई

कुंडली का खाना नंबर	ग्रह का नाम लिखने की वजह	फ़रमान नंबर
१	सूरज के बुर्ज़ पर चोकोर□ है। जो मंगल का निशान है और सूरज के बुर्ज़ को खाना नंबर एक दिया गया है।	११९E
२	चंदर के बुर्ज़ से रेखा सीधे बृहस्पत के बुर्ज़ पर चली गई है। जिसे खाना नंबर २ दिया गया है।	११९C
३	ш केतु का निशान मंगल नेक के बुर्ज़ पर वाक़े है जिसे खाना नंबर ३ मिला हुआ है।	११९g
७	▦ राहु शुक्र के बुर्ज़ पर वाक़े है जिसे खाना नंबर ७ दिया गया है।	११९g
१०	तर्जनी और मद्धमा उंगली के नीचे सनीचर और बृहस्पत के बुरजों को मिलाने वाली दो शाखी क़ायम है यानी बृहस्पत खाना नंबर १० जो सनीचर के बुर्ज़ को दिया गया है पर वाक़े है और सनीचर रेखा	११९H ११९A

		फ़रमान नंबर
	से सनीचर ख़ुद अपने घर नंबर १० पर हो।	
१२	सूरज के बुर्ज़ और बुध के बुर्ज़ से रेखाएँ में हर दों की जुदा जुदा खर्च के खाना नंबर १२ में चली गई है।	११९B ११९g
	रेखा कुंडली साल-ब-साल के लिए हाथ पर मौजूद रेखा से मालूम की गई है।	
	अब ग्रहों के असर देखने के लिए मदद की बातें	
१ व ७	इन घरों के ग्रह एक दूसरे को १०० फ़ीसदी की नज़र से देखते हैं।	१०८
	मंगल के साथ बैठा हुआ राहु चुप रहता है। और मंगल बद के बुर्ज़ पर जिसे खाना नंबर ८ दिया गया है भी चोकोर □ वाक़े है। इस लिए खाना नंबर १-७ के असर के लिए मंगल का असर नेक होगा। मंगल के ज़ोर से गो राहु चुप रहेगा मगर मंगल से दूर बैठा होने की वजह से ज़रूर बुरा असर ही अंदरूनी तौर पर करता जायेगा।	१०९
	और मंगल के असर का तमाम अरसा यानी २८ साल तक स्त्री नज़र व स्त्री सुख पर ज़रूर बुरा असर करेगा।	११९A
	मंगल के असर के अरसा के बाद १४ साल तक (राहु व मंगल) दोनों इकट्ठे असर करने लगे। राहु के असर की मियाद ४२ साल होती है और	१०५
	मंगल की कुल मियाद २८ साल है। इस लिए एक ही वक़्त में शुरू होने पर राहु १४ साल बाद तक अकेला ही होगा।)	११३A १०५
	मगर शुक्र व बुध के मुश्तरका घर खाना नंबर ७ और सूरज का घर खाना नंबर एक पर अकेले राहु का असर होगा। मगर वह तीनों ही इकट्ठे उठ कर खाना नंबर १२ में बैठे हुए हैं यानी राहु जुदा एक तरफ़ शुक्र के घर महमान बैठा है और शुक्र अपने दोस्त बुध को साथ लेकर सूरज के हमराह राहु के घर चला गया है। इस लिए न राहु शुक्र का कुछ बिगाड़ सकता है और न ही शुक्र राहु	

	फ़रमान नंबर
का नुक़सान कर सकता है। सिर्फ़ एक दूसरे के घरों की इमारत खराब कर सकते है।	
खाना नंबर २-१२ आपस में २५ फ़ीसदी की नज़र से देखते हैं।	१०८
चंदर खाना नंबर २ में उंच होता है। सूरज और बुध बाहम दोस्त है मगर सूरज व शुक्र बाहम दुश्मन है और दूर बैठा हुआ चंदर बुध और शुक्र दोनों से दुश्मनी करने वाला है। इस तरह पर सूरज व चंदर तो शुक्र का फल खराब करेंगे और बुध का फल चंदर से खराब होगा। मगर चंदर और सूरज का फल उत्तम होगा। सूरज के साथ बैठे हुए बुध अपने असर का निस्फ़ अरसा तक यानी १७ साल चुप रहता है और बाद में १७ साल अकेला फल नेक देता है।	११३
खाना नंबर १० सनीचर व बृहस्पत इकट्ठे बैठे हैं। इस हालत में दोनों का अपना अपना मगर सनीचर का फल खराब होगा। बृहस्पत भी दुश्मन या पापी ग्रह के साथ अपना निस्फ़अरसा यानी ८ साल	११० १३२A / १०
ज़रूर नेक फल देता है। इन ग्रहों का ताल्लुक पिता से है।	११८
खाना नंबर ३ केतु मंगल के घर पड़ा है जो मंगल का दुश्मन है।	१०९
लेकिन मंगल अपने घर से उठ कर सूरज के घर खाना नंबर एक में चला गया है।	१७९
मंगल के साथ सूरज हो तो मंगल का फल हंमेशा मंगल नेक का	१६१
होगा और सूरज भी मंगल के साथ उंच होता है।	११३

खुलासा के तौर पर हर एक ग्रह का असर मंदरजे जेल होगा

बृहस्पत : इस ग्रह की मियाद कुल १६ साल होती है। जिस में से	११
पहले आठ साल का अरसा हंमेशा नेक असर का होता है। इसलिए	११८
पहले आठ साल के बाद बृहस्पत का फल सनीचर खराब कर देगा। क्यूंकी	१३२A

	फ़रमान नंबर
बृहस्पत तो किसी से दुश्मनी नहीं करता। मगर पापी ग्रह बुरा असर कर दिया करते हैं। लेकिन वह भी इस वक़्त जब वह बृहस्पत के घर या खाना नंबर २ पर आ जावें। लेकिन बृहस्पत जब पापी ग्रह के घर पर जावे तो बृहस्पत तो अपना नेक ही फल रखेगा। पापी ग्रह या वह ग्रह जिस के घर में की बृहस्पत जा कर बैठा है अपना फल जैसा चाहे देवे। अब चूंकि सनीचर अपने घर यानी खाना नंबर १० में बैठा है। और बृहस्पत इस के घर आया है। इस लिए बृहस्पत तो अपना सारा ही अरसा नेक फल देगा। और सनीचर बुरा फल देगा। जो बृहस्पत के अरसे के बाद शुरू हो सकता है। यानी बृहस्पत के १६ साल के बाद ३६ साल सनीचर की कुल मियाद में से बाकी २०साल सनीचर अकेला असर कर सकता है।	११
हर ग्रह अपने वक़्त के निस्फ़ और चौथाई में असर ज़ाहिर कर दिया करता है। इस तरह पर सनीचर अपने ३६ साल के निस्फ़ यानी १८ साल में अपना बुरा असर ज़ाहिर करेगा। जब की बृहस्पत पहले ही ख़तम हो चुका है। सनीचर का बृहस्पत के साथ बुरा असर तब ही हो सकता है जब की बृहस्पत इस के साथ चल रहा हो और बृहस्पत था १६ साल तक इस लीए सनीचर का बुरा असर बृहस्पत के पहले ८ साल के बाद १६ साल तक ही हो सकता है।	११३A
सूरज : इस ग्रह का अपना तमाम अरसा तो अपनी ज़ात के लीए उत्तम ही होगा लेकीन ये ग्रह अपने साथी शुक्र के फल का तमाम अरसा खराब या नीच ही करेगा और चंदर भी २५ फ़ीसदी अपनी बुरी नज़र शुक्र पर करता रहेगा मगर सूरज को चंदर २५ फ़ीसदी मदद और देगा।	१०८
चंदर : इस ग्रह से कोई ग्रह दुश्मनी नहीं करता। ये ख़ुद ही दूसरे ग्रहों से दुश्मनी करे तो बेशक़ करे। इस लीए इस ग्रह का अपना फल तो बृहस्पत के घर बैठे हुए उंच होगा।	१०९

मगर ये ख़ुद शुक्र और बुध दोनों से ही दुश्मनी करता जाएगा।

शुक्र : सूरज का अरसा २२ साल होता है। चंदर का २४ साल। ये दोनों ही शुक्र के दुश्मन हैं। शुक्र की मियाद २५ साल है। सूरज और शुक्र इकट्ठे बैठे होने की वजह से दोनों का असर इकट्ठा शुरू हुआ। सूरज की दुश्मनी २२ में साल ख़तम हुई। चंदर की २५ फ़ीसदी नज़र बुरी नजर भी २४ साल में जा कर हटी। अब शुक्र का अरसा सिर्फ एक साल बाकी रहा। उधर शुक्र के घर को राहु भी खाना नंबर ७ को ख़राब कर रहा है और शुक्र ख़ुद उसके घर खाना नंबर १२ में बैठा हुआ है इस का दोस्त बुध बेशक़ इस के साथ है मगर बह अपने दोस्त सूरज के निस्फ़ अरसे तक यानी १७ साल चुप है न बुध शुक्र से बिगाडता है न सूरज से १८ साल के बाद शुक्र की मदद शुरू कर सकता है मगर बुध की मियाद ३४ साल में शुरू होती है इस लीए शुक्र का अपना पहला अरसा तो सारे का सारा २५ साल ही ख़राब हो गया। बुध की मदद या बुध की उंच हालत से शुक्र सिर्फ़ लड़कियां ही पैदा करता है। इस लीए शुक्र अपने पहले ही दौरे में मदद न दे सकेगा।

गो शुक्र और चंदर की दुश्मनी हुई मगर दूसरे चक्कर में शुक्र जो मीन राशि खाना नंबर १२ में उंच होता है। अपने वक़्त से उंच फल देगा।

मंगल नेक : २८ साल तक राहु की अंदरूनी पापी चाल के सबब से औलाद, भाईबंद और नज़र पर ज़रूर बुरा असर देगा। मगर दूसरी बातों में मंगल का नेक असर ही होगा।

मंगल बद : इस पापी ग्रह का मुंह पहले ही मंगल बद के बुर्ज़ खाना नंबर ८ पर चोकोर □ ने पहले ही बंद कर दिया है। इस लीए ये ग्रह इस कुंडली में किसी जगह भी बुरा असर न देगा ये ग्रह सामुद्रिक में सिर्फ़ सूरज की ख़राब हालत देखने के लीए रखा गया है। यानी जब सूरज नीच

फ़रमान नंबर ११ १०९

११

१५३

	फ़रमान नंबर
होवे। या जब सूरज मंगल के साथ न होवे तो मंगल को मंगल बद कह देते है। एक वक़्त में सिर्फ़ एक ही नाम होगा ख़्वाह मंगल नेक ख़्वाह मंगल बद। अगर हाथ में △ मशलश जुदा ही पाई जावे तो बेशक़ ये ग्रह एक जुदा ग्रह गिना जाएगा।	१६०
बुध : इस ग्रह का अरसा ३४ साल होता है। ये अपने साथी शुक्र जिस की मियाद २५ साल है और सूरज जिस की मियाद २२ साल है। दोनों की मदद करेगा। मगर चंदर की २५ फ़ीसदी नज़र चंदर की मियाद २४ साल तक इस ग्रह के अपने असर के लीए बुरी ही होगी। ये चंदर से दुश्मनी न करेगा।	११
सनीचर : बृहस्पत के असर को इस कुंडली के हिसाब से ख़राब करेगा। मगर ख़ुद इस के अपने असर में दखल देने के लीए कोई दूसरा ग्रह खाना नंबर ४ में मौजूद नहीं है।	
राहु : ये मस्त हाथी मंगल (✕ जंगी ग्रह) की तलवार (✕ अंकुश) के रोब से ज़ाहिरा चुप रहेगा। मगर दूर खड़ा होने की वजह से मंगल से दुश्मनी करेगा। (मंगल व राहु इकट्ठे ही बैठे हों तो सिर पर तलवार या अंकुश से हाथी चुप रहेगा मगर जब तलवार या अंकुश हाथी से दूर और उस की १००फ़ीसदी नज़र के सामने होवे मस्त हाथी तलवार को ख़राब करने की कोशिश करेगा।	
(बे) : शुक्र के घर खड़ा होने की वजह से शुक्र की इमारत को ख़राब करेगा। मगर शुक्र का बिच्छू बिगाड़ नहीं सकता। जो राहु के घर खाना नंबर १२ में।	
केतु : इस पापी ग्रह से बचने के लीए मंगल अपने घर से पहले उठ कर खाना नंबर १ में चला गया है। इस लीए केतु सिर्फ़ मंगल के मकान को ही ख़राब कर सकता है। भाईबंदों को ख़राब नहीं कर सकता। ये ग्रह खाना नंबर ११ को ५० फ़ीसदी नज़र से देखता है। जो खाली है। इस लीए	

ये कभी कभी बृहस्पत के खाना नंबर ११ (क़िस्मत व लाभ उम्र) पर धब्बे मारता चला जायेगा है।

फ़रमान नंबर

खाली खाने

खाना नंबर ४ : चंदर का घर है। इस घर को खाना नंबर दस के ग्रह १०० फ़ीसदी की नज़र से देखते हैं। खाना नंबर १० का बृहस्पत नेक नज़र रखेगा। मगर सनीचर चंदर के घर की दीवारों पर अपनी स्याही फिर फिरा कर चला जायेगा।

खाना नंबर ११ में केतु ही अपनी टांग फंसा सकता है खाना नंबर ६ से खाना नंबर २ में बैठा हुआ चंदरमा २५ फ़ीसदी नज़र से देखता है। केतु का घर चंदर के लीए चांद ग्रहण होता है अब चंदर केतु पर २५ फ़ीसदी नज़र करने के सबब से (४८ साल केतु का अरसा का एक चौथाई हिस्सा) १२ साल के बाद चांद ग्रहण में होगा। चंदर का ताल्लुक ज़मीन व माता से है।

११८

खाना नंबर ५-९ दोनों खाली हैं इस का असर औलाद करम धरम दूसरे ग्रहों से लेंगे।

खाना नंबर ८ (मौत का घर) इस घर को खाना नंबर १२ के ग्रह २५ फ़ीसदी नज़र से देखते हैं। ये घर सनीचर व मंगल बद का है। इस कुंडली में मंगल बद तो है ही नहीं बाकी रहा सनीचर और खाना नंबर १२ के ग्रह। जिस में से सनीचर शुक्र व बुध का दोस्त है बाकी रहा सूरज जिस का दुश्मन सनीचर है अब दोनों के बाहमी मुक़ाबले में सूरज ज़ोरावर होगा इस लीए मौत का साल चंदर की राशि और मृत्यु का दिन सूरज का दिन या इतवार होगा। जब की केतु का वक़्त ख़तम हो चुका होगा।

ज़िंदगी के हालात

ग्रह कुंडली और जनम की रेखा कुंडली को मिला कर पढ़ने से मालूम होता है की ऐसे हाथ वाला शख़्स जंगी खून और शाही जंगी धन से शाहाना

परवरिश और ख़ुद उसी ज़रिये मुआश (पैसा धेला के लिए कारोबार से) शाहाना हालत वाला होगा। जिसे मुतलका दुनिया में हुकूमत करने का मौका और धन जमा करने का वक़्त बहुत मिलेगा। दुनिया के मैदान में चमकीले चांद की तरह हर जगह जंगल में मंगल करेगा। इस में शक़ नहीं की तन- तन्हा अकेला ही ख़ुद अपनी क़िस्मत को आप ही रोशन करने वाला होगा दुश्मन पीठ पीछे दुश्मनी कर सकते हैं मगर चंदरमा उंच के सामने आकर फ़ौरन ही चुप होंगे। पोशीदा दुश्मनी करने वाले लोग इस की तलवार के सामने आकर मस्त हाथी की तरह अंकुश के ड़र से ज़मीन से गिरि हुई दुअन्नी उठा कर देने का काम करेंगे दुश्मन भी अपनी दुश्मनी ज़रूर करते जायेंगे। मगर ऐसा शख़्स क़ुदरती मदद के सबब हंमेशा ही बचता चला जायेगा और गैबी ताक़त इस का पूरा बचाव करती रहेगी। रंग का सफ़ेद होगा। जिस में मंगल का सुर्ख रंग चमकता होगा। यानी रंग क़ुदरती ऐसा होगा की जिस तरह एक लाल रंग कागज़ पर सफ़ेद चांदी का टुकड़ा लेटा या रखा हुआ होवे।

तबीयत आदिलाना (निरपक्ष) और दिल की पूरी शांति वाला होगा। अहले क़लम, तलवार का धनी, जंगी तदबीरों में माहिर और अक़्लमंद होगा। ज़बान और जिस्म की कभी बीमारी न होगी। मगर १३-१४ साल की उम्र के क़रीब नज़र या आंखों की बीमारी और २८ साल की उम्र के क़रीब नज़र कमजोरी का सबूत देगी अगर ख़राब न होगी। यानी ऐनक वगैरह का इस्तेमाल राहु की पोशीदा दुश्मनी की निशानी होगी। पापी ग्रह सनीचर के असर से शराब का इस्तेमाल बृहस्पत के असर में ख़राबी डालने का सबब होगा और मंगल के लाल जैसे रंग में स्याही की झलक देगा।

कुत्ते का शौक़ (जो कुत्ता की केतु का रंग बिरंगा मगर सुर्ख रंग निशान इस के जिस्म पर न होंगे) भाइयों से तकलीफ़ ख़्वाह उन की बीमारी ख़्वाह माली हालत कमजोरी ख़्वाह कोई और अचानक तकलीफ़ कुछ भी कहो। भाई

फ़रमान नंबर
१२२
१४
१२२
आख़री
सतरे
१५८
(१)
१५७
(२)
११३

बंदों, रिश्तेदारों, ताए-चाचे, औरत ज़ात खानदान या यार दोस्तों कीमदद, औलाद वगैरह खाना नंबर ३ के असरों में जिस का असर खाना नंबर ११ पर भी ५० फ़ीसदी हो ख़राबी का सबब हुआ करेगा। इस ग्रह का अपनी ज़ात पर कभी बुरा असर न होगा सिर्फ़ मुतलका दुनिया के दूसरों की तरफ़ का दुख इस के लाभ, क़िस्मत और उम्र पर धब्बा देगा। ये ग्रह ४८ साल तक असर करता चला जायेगा। इस पापी ग्रह का पाप इस के मुतलका साथियों पर मार करेगा। मगर राहु (स्याह रंग हाथी के रंग से मिलती हुई या नीली चीज़ें) अंदरूनी तौर पर इसी मंगल के दूसरे असर नज़र और आदिलाना तबीयत में ज़हर का निशान होंगे। सनीचर जो बृहस्पत के बिलकुल साथ बैठा है। अपनी स्याह रंग चीजों से पानी में स्याह रंग मछली का ज़माना करता रहेगा यानी बिलकुल साथ मिली हुई स्याह रंग चीज काला रंग का आदमी जब बिलकुल साथ ही होगा या अपने घर पर ही आयेगा नुक़सान का सबब होगा और सोने का मुंह काला करने का सबब होगा। मुख़्तसर तौर पर सफ़ेद रंग (दहीं शुक्र का रंग केतु से बचने के लिए जो भाईबंदों के दुख हटाएगा। दुध या पानी के सफ़ेद रंग की चीज़ें ख़ुद अपनी कमाई में बरकत के लिए चंदर और बृहस्पत के घर का असर दौलत व इज्ज़त खाना नंबर२ और क़िस्मत, उम्र और दुसरें लफ़्ज़ों के लिए खाना नंबर ११।) मुबारक होगा। दायें हाथ पर अंगूठी में नीलम राहु (४२ साल उम्र तक) की गैबी और पोशीदा दुश्मनी से बचाएगा। शराब और आंख की होशियारी (दुष्ट भागवानी) से दूर रहने पर बृहस्पत का उत्तम फल होगा। मंगल नेक का उत्तम फल गंदुमी रंग की चीज़ें जो सूरज का रंग है पैदा करेंगी। सूरज की उपासना या दोस्ती से राज दरबार में उत्तम फल देगी और सूरज जो शुक्र को नीच करता है, तमाम गृहस्त, औरत ज़ात, धन-दौलत, आराम, बुरी तरफ़ का ख़र्चा गर्जे की खाना नंबर १२ का उत्तम फल होगा। घर में दूध

फ़रमान नंबर

११४

१६८

१७३

१५३

फ़रमान नंबर ११८ (४)

की मौजूदगी में चंदर भी शुक्र को मुआफ करता रहेगा। चंदर उंच की निशानी मकान के लिए तह ज़मीन खरीदने के दिन से होगी। जिस से मालूम होगा की अब चंदर शुक्र से दुश्मनी न करेगा। बुध से चंदर ने दुश्मनी छोडने का ज़माना ३४ साल उम्र से पूरी तसल्ली का होगा। बुध वैसे तो २४ साल से अपना आप चंदर से बचायेगा। मगर ३४ में वह (बुध) अपना पूरा नेक असर देगा सनीचर ३६ के बाद यानी ३७ से नेक असर देगा। वैसे तो वह १६ साल बाद बृहस्पत को मुआफ कर चुका है। इस कुंडली में शुक्र, (दूसरी दफ़े)चंदर, सूरज, मंगल उत्तम है। (दौलत का सुख व ख़र्च) बुध तिजारत ब्योपार का नाश करता है। क्यूं की खाना नंबर १२ में है।

१६६ (१२)

इस ग्रह का उपाओ दुर्गा पाठ, तोते को चुरी, सफ़ेद कबूतर को मुंगी बुध के दिन मुबारक करेगा और ज़ाया होने वाली दौलत शुक्र के काम आएगी। ३४ साल के बाद बुध सूरज का उत्तम फल शुरू होगा। ३६ के बाद सनीचर भी मदद देगा। ४२ के बाद राहु मदद करेगा। ४८ के बाद केतु शुभ होगा।

११४

शुक्र जब उंच होगा अपनी मियाद २५ साल की बजाए ३४ साल निहायत उत्तम फल देगा। लड़का पैदा होने के दिन से सूरज दुनिया में रोशन होगा। (दरअसल सूरज का **दुनिया में निकलने का** वक़्त बच्चे के माता के पेट में आने के दिन से **या वक़्त** ही शुरू गिन सकते हैं।) और २२ साल तक रोशन रहेगा। तह ज़मीन की खरीददारी की तारीख से चंदर उंच २४ साल तक रहेगा। मकान बनने के दिन से ३६ साल तक सनीचरका उत्तम फल क़ायम रहेगा। घर में स्याह रंग कुत्ता की मौत या कोई और काली नीली चीज़ के गुम होने के दिन से ४२-४३ से राहु उत्तम होगा और इसी तरह से दो रंगी चीज़, रंग-बिरंग कुत्ता जो लाल रंग वगैरह न हो के चले जाने के वक़्त से केतु ४८-४९ इतने साल ही उत्तम होगा। कमाई में हराम का पैसा धेला न होगा। सादा लो साधूपन साधू।

११५

११३

१५०(२)

सेवा। मुन्सफाना तबीयत से लिए हुए काम, सफ़ेद पोशी बुज़ुर्गों की सेवा, इतवार या सोमवार के शुरू किए हुए काम ख़ुद अपनी ज़ात के लिए निहायत मुबारक होंगे और सूरज के ज़रिए (गंदुमी रंग) से हर तरह की शांति नसीब होगी। — फ़रमान नंबर ११३ (९)

मोटी मोटी बातें

बचपन निहायत उम्दा था जवानी (३४) में आराम देगी। — ५८

बुढ़ापा निहायत तसल्ली बख़्श होगा। — ९७

१३-१४ साल के क़रीब माता का सुख नाश होगा।

१५-१६ साल के क़रीब पिता का सुख नाश होगा

माता पिता इस की स्त्री का सुख न देख सकेंगे।

१८ साल के क़रीब मुलाज़मत शुरू करे।

२१ साल के क़रीब शादी हो। २८ साल तक स्त्री का सुख और औलाद के कोई मायने न होंगे। सब कारवाई फिज़ूल होगी। — ११५

२४-२६के क़रीब पैदाशुदा लड़की बुध का वक़्त ज़ाहिर करेगी। — १४९ (४)

३४-३५ साल की उम्र में पैदाशुदा लड़का बुध सूरज का उत्तम फल देगा। (तरक़्क़ी)

३०-३१ के क़रीब की औरत शुक्र उंच का फल देगी। (दूसरी शादी) — १४९ (२)

३८-३९ के क़रीब का मकान सनीचर उंच का फल देगा। (तरक़्क़ी होगी)

३३ में बिलकुल बनने के लिए तैयार मगर बंद हुआ और उसी दिन ४९ साल तक सूरज राज दरबार से ताल्लुक होगा।

५१ साल की उम्र के क़रीब लड़का मुलाज़म होगा। उस के बाद सन्यास या परोपकार का ताल्लुक होगा।

कुल उम्र ९३ साल होगी।

मुतफ़र्रिक बातें

माली हालत : जिस साल की आमदन माहवार देखनी होवे। इस साल तक की उम्र में मुलाज़मत शुरू करने का अरसा यानी १८ साल — १५८ (१)

	फ़रमान नंबर
तफ़रीक़ करें। बाकी को ७-१/२ (७.५) से ज़रब दें जो औसत अमदन माहवार होगा। ३७ साल की उम्र में से १८ तफ़रीक़ हों तो १९ साल को ७-१/२ से ज़रब दी तो १४२-१/२ या १४० - १४५ के क़रीब माहवार आमदन होगी। यही असूल मंगल का सारा अरसा २८ साल तक होगा यानी २१० रुपए माहवार तक होगा।	
३४ से पहले की उम्र तक सिर्फ़ माया का राखा होगा यानी जो कमाया दूसरों पर लगाया या किसी दूसरी तरफ लग लगा गया। ३४ से ४२ तक आमदन माक़ूल होगी। मगर मकान, ब्याह, शादी वगैरह गृहस्त के नेक कामों में लगेगी। ४३ से ५१ तक इतना ही फिर जमा हो जायेगा जितना पहले खर्च किया था - कर्ज़ा कभी न होगा।	१६६ (२)
बवक़्त ज़रूरत तीन रुपये की ज़रूरत अचानक दो रुपए हाजर होंगे। इस शरत का आमदन से कोई ताल्लुक नहीं है।	९८
औलाद : कुल चार लड़के और २ लड़कियां आख़री दम क़ायम होंगे। औलाद नेक होगी और सुख देने वाली होगी। पहली औरत लड़की और दूसरी औरत का पहला लड़का क़िस्मत के ख़ास मददगार होंगे।	१२३ (२)
सफ़र : चंदर सूरज के ताल्लुक से सफ़र तो ज़रूर है मगर दूसरे मुल्क का न होगा। सफ़र का नतीजा हंमेशा नेक होगा।	१४०
भाईबंद : भाई ४२ से उम्दा हालत में होगा। मगर इस हाथ वाले को अपने भाई से कोई ऐसा फ़ायदा न होगा। मगर भाई को ज़रूर फ़ायदा होता रहेगा। मदद के लिए तो सब हाज़िर होंगे मगर दरअसल मदद सिर्फ अपनी ही जान की होगी। न ताया, न चाचा, न मामुं, न ससुराल सिर्फ़ ख़ुद ही अपना आप मियां फज़ल इलाही या मालिक का भरोसा होगा।	
ख़र्च - बचत : ख़र्च गिन नहीं सकता। रुपए से ग्यारह आने ख़र्च पाँच आने बचत होगी। ख़र्च बड़ा है मगर इसे घटा नहीं सकता। अगर ख़र्च घटावे तो आमदन घट जावे। लड़कियों की	

	फ़रमान नंबर
क़िस्मत के लिए अगर ख़र्च बढ़े तो आमदन ख़ुद-ब-ख़ुद बढ़ेगी अपने लिए अपने पेट का सर्फ़ बेशक़ करे मगर दूसरों के लिए सेवाभाव के तौर पर ख़र्चा ज़्यादा हो जावे और ख़ुद करे दूसरों को दिया हुआ पैसा ज़रूर वापिस आवे। साहूकारा उम्दा मगर खैरातनामा यानी बिला सूद रक़्म वापिस न आवे।	९९
खुशी - ग़मी : १९ खतों (दायां हाथ) से धर्मात्मा, राज दरबार में इज्ज़त। दोनों हाथों पर कुल ४३ निशान होने के सबब ३२ ग़मी के हिन्दसे के मुक़ाबले ४३ ख़ुशी होगी।	९६
स्त्री का साथ : २८ के बाद की औरत अपनी उम्र के कम अज़ कम ५९-६० साल साथ निभाये।	
करम धरम : मंगल अपने घर है इस लिए धरम के बरखिलाफ़ ये हो ही नहीं सकता। इस हाथ की इज़्ज़त और क़दर तो है ही क़ीमती लाल की तरह से सूरज की तरह चमकने पर। वरना मंगल बद होगा। इस लिए ये हाथ करम धरम का ही देवता होगा। जो साधारण कहे खाली न जावे ज़रूर सच होगा।	
ये शख़्स काम देवता से दूर और ज़हनी लियाक़त का मालिक होगा। अपने नफ़्स पर काबू रखने वाला होगा। नेक काम के लिए इस की ताक़त ३:३ और बुराई के लिए २:० होगी। यानी बदी की निस्बत नेकी की तरफ ज़्यादा होगा। इस का दोस्त वही हो सकता है या इस से फ़ायदा वही उठा सकता है जो अंदर बाहर से सफ़ा दिल होवे। चालाक की चालाकी फ़ौरन ताड़ेगा या चालाक इस से ज़रूर नुक़सान पायेगा और सफ़ा दिल इस से फ़ायदा पायेगा।	६९
जायदाद जद्दी : हथेली गहरी की वजह से आमदन ख़र्च के लिए क़र्ज़ा न उठायेगा। ख़ुद कमा कर ख़र्च करेगा। २:९ दुश्मन (ख़र्च - बुरे दिन) और १:४ (बचत - अच्छे दिन) दोस्त होंगे।	१००B

या दोनों का फ़र्क १:२ जायदाद जद्दी में इज़ाफ़ा करेगा। ये बचत तमाम ख़र्च निकाल कर होगी।

फ़रमान नंबर

खुलासा ज़िंदगी

एक चक्कर से राजा या हाकिम होने की दलील है और एक शंख से हंमेशा आराम पावे और आठ सदफ़ से बड़ी इज्ज़त की ज़िंदगी होवे और तर्जनी और मद्धमा बराबर होने से मशहूर ज़िंदगी का मालिक होवे।

१२६
१२७
१२८
७०
(७)

क़िस्मत के दरिया में ये हाथ अगर दुनिया में सूरज नहीं तो पूरा चंदरमा तो ज़रूर होगा। अंगूठा बाहर को झुकने के सबब नरम तबीयत होगा और जब नुक़सान उठायेगा। खुद नरमी तबीयत से होगा। मामूली उकसाहट से रुपये पैसा छोड़ देगा। और मामूली मन्नत समाजत से मान जाने वाला होगा।

आख़री दिन अपने गृहस्त में सनीचर की रात ख़तम मगर इतवार का सूरज चढ़ा न होगा। सब से राम राम और जे हरी कर जायेगा।

१७१
(९)
१०८

आख़री वक़्त ज़ुबान बंद न होगी और खयालात शुद्ध होंगे। सूरज का उत्तम दिन दूसरा दरबार बख्शेगा। छुपता हुआ सूरज दुनिया के लिए जंगल में मंगल लाली छोड़ जायेगा यानी गृहस्ती कुटुंभी सब खुशहाल होंगे।

बच्चे की साथ लाई हुई बंद मुट्ठी अब बंद न हो सकी और तमाम मुतलकिन को इस की बंद मुट्ठी में साथ लाये हुए खजाने के खर्चने का बहाना होगा। जिन को भी अपने मंगल बद के शुरू होने के वक़्त से ९ - १३ - १५ आख़िर २८ साल के बुरे असरों से मौत के डर से नेकी कर जाने की आदत को याद करते रहेना पड़ेगा।

ख़तम शुदा।

इंडेक्ष

ज़रूरी नोट

सरसरी नोट के मुताबिक बार बार पढ़ने के बाद ये बात भी क़ाबिले गौर मालूम होगी की हर एक बात व असूल का असल मतलब हासिल किया जावे। मतलब ये की रेखा की गलत फ़हेमियों से बचाव के लिए एक आतशी शीशे की मदद मुफ़ीद होगी और रंगदार हाथ के नक्शे के पूरे मायने ये होंगे की जिस ग्रह का जो रंग भी दिया गया है जब कभी उस ग्रह के असर का वक़्त होगा। वह ग्रह उस रंग की चीज़ों पर या उस रंग की चीज़ों से अपना असर ज़ाहिर करेगा यानी रंग के हिसाब से असर करने वाली चीज़ों को पहले तो देखना है की वह किस ग्रह से मिलती है फिर देखना है वह चीज़ दरअसल किस ग्रह की चीज़ है।

मसलन एक सुर्ख़ रंग गाय है रंग सुर्ख़ (गंदुमी) सूरज का है मगर चीज़ खुद गाय शुक्र की चीज़ माना है इस लिए सुर्ख़ गाय के वक़्त सूरज और शुक्र का मुश्तरका असर

लेंगे। स्याह भेंस का रंग व जिस्म दोनों ही सनीचर हैं। मगर भेंस पर सुर्ख़ रंग (भूरा) होने पर सूरज का उत्तम फल होगा और सनीचर का बिलकुल न होगा क्यूंकी ये दोनों ग्रह इकट्ठे काम नहीं करते और किसी वक़्त करें तो जमा (सूरज) तफ़रीक़ (सनीचर) दोनों का नतीजा सिफ़र ही करते जायेंगे। अगर रंग भेंस का स्याह होवे मगर माथा उस का सफ़ेद होवे तो सनीचर चंदर भी मुखालिफ़ होंगे। अब केतु (दो रंगा रंग) और सनीचर दोनों का ही असर होगा। केतु और सनीचर के मदद पर हों तो मददगार होगा और सनीचर व केतु के दुश्मन ग्रहों की चीज़ों पर बुरा असर देंगे। लेकिन अगर भेंस का रंग भूरा होवे और माथा सफ़ेद हो तो सूरज व चंदर का नेक असर होगा। इसी तरह से दो रंगा कुत्ता (स्याह रंग के धब्बे वाला) केतु होगा। लेकिन जब सुर्ख़ धब्बे हों वह केतु का असर न देगा। सूरज का ही असर देगा। लेकिन ऐसा कुत्ता सुर्ख़ व सफ़ेद रंग होवे तो सूरज चंदर का नेक असर होगा। जब कोई चीज सूरज, चंदर या सनीचर किसी भी ग्रह के असर की साबित होगी तो फिर देखना होगा के अब ये चीज जो फ़रजन सूरज के असर की है वह उस हाथ वाले के किस किस बात में फ़ायदामंद होगी यानी उस सूरज के दोस्त ग्रह कौन कौन से हैं उन पर वह नेक असर देगी। जो ग्रह सूरज के दुश्मन हैं उन ग्रहों की चीज़ों पर बुरा असर देगी। यही हाल हर वक़्त के ग्रह के असर का होगा।

जिस्म इंसानी पर असर करने के लिए तमाम ग्रह व राशियों के असर के इलावा बाकी चीज़ें भी जिस का ज़िक्र फ़रमान नंबर ६ में हुआ है ग्रहों की तरह असर करने वाली होंगी। मगर आख़री फ़ैसले की बात तमाम ही को इकट्ठा गिन गिना कर सब पर ज़बरदस्त असर करने वाली बात का नतीजा होगी।

मज़मून गो दिमाग़ पर बड़ा भारी असर होने से थकाएगा। मगर महेनत से निकाला हुआ नतीजा ही लाल किताब के ज़रिए निकाला हुआ फ़रमान एक कारामाद चीज़ होगी+